इस पञ्चाङ्ग में प्रतिदिन के तिथि नक्षत्र योग का मान और द्वादश लग्नों का समाप्ति काल घं. मि. में तथा विवाह-उपनयन-चौल-वधूप्रवेश-द्विरागमन-गृहप्रवेश-जलाशयारामकूपदेवालयारम्भ एवं प्रतिष्ठादि के शुद्धातिशुद्ध मुहूर्त लिखे जाते हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग को पास रखने से मनुष्य ज्योतिषी हो जाता है।

विवाह में प्रयुक्त पञ्चशलाका चक्र

कृ. रो. मृ. आ. पुन. पु. श्ले.

भ. अ. रे. उ.भा. पू.भा. श. ध. — मघा पू.फा. उ.फा. हस्त चित्रा स्वाती विशाखा

श्र. अभि. उ.षा. पू.षा. मू. ज्ये. अनु.

विवाह सम्बन्धित कार्यों में पञ्चशलाका एवं अन्य कार्यों में सप्तशलाका चक्र द्वारा वेध देखना चाहिए।

बाण पञ्चक

सूर्य के गतांशों द्वारा बाण निर्णय

८।१७।२६ गतांश से रोगबाण
२।११।२०।२९ गतांश से सशल्य अग्निबाण
४।१३।२२ गतांश से नृपबाण
६।१५।२४ गतांश से चौरबाण तथा
१।१०।१९।२८ गतांश से मृत्युबाण होता है।
इन पञ्चबाणों को क्रमशः व्रतबन्ध, गृहच्छादन, राजसेवा, यात्रा एवं विवाह में त्याग देना चाहिए।

रामायण द्वारा शकुनावलोकन

नवराशिषु व्रीहीनां ध्यात्वा
कार्यन्तु विन्यसेत्।। चतुः
पूंगीफलानीह पूर्वेणकाण्डमुच्यते।
द्वितीयेन हि सर्गस्तु तृतीयेन फलेन हि।।
दशकोऽस्यविजानीयाच्चतुर्थेन
फलेन च।। श्लोकोज्ञेयः पूर्वराशेः
सर्वेषां गणनेरिता।। सर्वत्रान्त्येन
श्लोकेन विपरीतं फलं स्मृतम्।।
शुभ-कथाप्रसङ्ग से शुभफल एवं अशुभ कथाप्रसङ्ग से अशुभफल जानना चाहिए।

श्रीकाशीविश्वनाथ पञ्चाङ्ग
शिवमूर्ति हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग

।।श्रीमङ्गलमूर्तये गणाधिपतयेनमः।।



प्रधान सम्पादक पं. शिवमूर्ति उपाध्याय

सप्तशती द्वारा शकुन ज्ञान

सम्पूज्य विधिवद्देवीं कुमारीरूपधारिणीम्। कृत्वाष्टदलमुर्वीस्थं तत्र तत्पुस्तकं न्यसेत्।।१।। पूजितायाः करे दद्यात् कन्यकायास्तु मुद्रिकाम्।। शलाका हेममय्याङ्ग गजदन्तस्य वा शुभाम्।।२।। द्वादशांगुलमात्रन्तु विन्यसेतपुस्तकान्तरे। सम्पश्ये त्प्रथमां पंक्तिं यत्स्वरूपं कथानकम्।।३।। आदिशेत्तत्स्वरूपं हि फलं शास्त्रविशारदः।।४।।

ग्रहों की अरिष्ट हरण क्षमता

राहु का दोष बुध, इन दोनों का शनि, इन तीनों का मंगल, इन चारों का शुक्र, इन पांचों का गुरु, इन छवों का चन्द्रमा तथा सबके दोषों का सूर्य नाश कर देता है। सूर्य यदि उत्तरायण में हो तो विशेष दोषनाशक होता है। **स्थान विशेष में ग्रहों की विफलता**-सूर्य के साथ चन्द्रमा, लग्न से चौथे भाव में बुध, पांचवें भाव में बृहस्पति, दूसरे में मंगल, छठें में शुक्र और सातवें में शनि हो तो विफल होते हैं।

विवाहेतर कार्यों हेतु सप्तशलाका चक्र

कृ. रो. मृ. आ. पुन. पु. श्ले.

भ. अ. रे. उ.भा. पू.भा. श. ध. — मघा पू.फा. उ.फा. हस्त चित्रा स्वाती विशाखा

श्र. अभि. उ.षा. पू.षा. मू. ज्ये. अनु.

समस्त कार्यों में सप्तशलाका चक्र द्वारा परन्तु विवाह में पञ्चशलाका चक्र द्वारा नक्षत्र वेध देखना चाहिए।

इस वर्ष राजा शनि।। मन्त्री मंगल ।। सस्येश शुक्र।। दुर्गेश चन्द्र।। धनेश गुरु।। रसेश सूर्य।। धान्येश बुध।। नीरसेश शुक्र।। फलेश चन्द्र।। मेघेश चन्द्र।। रोहिणी निवास समुद्र तट पर।। वर्षविश्वा १८ सस्तीकारक।। गतकलि ५११६।।

स्वस्ति श्रीमन्महाराजाधिराजद्विजराज काशिराज श्री १०८ महाराज डॉ० श्रीविभूतिनारायणसिंहशर्मदेव 'एम.ए.' वीरपुङ्गव पदवी प्राप्त के आज्ञानुसार।।

उत्पात फल ज्ञान के लिए चतुर्विध मण्डल

अग्नि मण्डल	वरुण मण्डल	वायु मण्डल	चन्द्र मण्डल
कृत्तिका	मूल	पुनर्वसु	अभिजित
भरणी	श्लेषा	उत्तराफाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा
पुष्य	शतभिष	अश्विनी	अनुराधा
मघा	आर्द्रा	हस्त	श्रवण
पूर्वाभाद्र	रेवती	चित्रा	धनिष्ठा
विशाखा	उत्तराभाद्रपद	स्वाती	ज्येष्ठा
पूर्वाफाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा	मृगशिरा	रोहिणी
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

उत्पात जिस मण्डल के नक्षत्रों में भूकम्प, उत्पात आदि होते हैं, उस मण्डल वर्णित प्रभावों के द्वारा द्रव्य, जन्तु एवं देशों को पीड़ा देते हैं। इनमें भी वायु एवं अग्निमण्डल विशेष अनिष्टकारक होते हैं।

इस पञ्चाङ्ग में - देशान्तर ११९, अक्षांश २५।१८, पलभा ५।४५, तिथि, नक्षत्र, योग आदि मकरन्दीय, दैनिक स्पष्टग्रह ग्रहलाघवीय तथा अयनांश केतकरीय है।

विंध्य से उत्तरवासियों के लिए विंशोत्तरीमत से आय-व्यय चक्र।।

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशि	योग
८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५	आय	आययोग ८१
५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११	व्यय	व्यययोग ११७

।। जन्मलग्न से जगल्लग्न फल ।।

१	देहसुख	७	स्त्रीसुख
२	धनलाभ	८	रोगभय
३	कुटुम्बवृद्धि	९	धर्मलाभ
४	मित्रप्राप्ति	१०	सुतार्थाप्ति
५	पुत्रप्राप्ति	११	लाभसुख
६	शत्रुजय	१२	व्यय, दुःख

जगल्लग्न ४।२१।४२।५९

रा. ६ — गु. ४ — ७ — ५ — ३ — श. ८ — शु. २ — ९ — चं. ११ — सू.मं.१बु. — १० — के. १२

हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग

दोनों आय-व्यय चक्रों द्वारा विशेष विचार

आय-व्यय का योगकर एक घटा दें और आठ से भाग दें, एकादि शेष रहने पर निम्न फल होता है - १ लाभ, २ सुख, ३ क्लेश, ४ रोग, ५ लोकोपवाद, ६ सम्मान, ७ विजय, ८ हानि अथवा दोनों चक्रों के आयों का योग लाभ तथा व्ययों का योग व्यय होता है। लाभ योग अधिक होने पर शुभ होता है।

ज्येष्ठशुक्ल ति. १० गुरु को (२८-५-२०१५) १२/१४ (दि. १०/११) इष्ट पर "सौम्य" संवत्सर का प्रवेश ।।

श्रीकाशिराजराजेन्द्र का अभिनव 'माटो' नामक चिह्न।।

श्री १०८ विश्वनाथकृपयाऽत्र तदीयमूर्त्ति श्री काशीराजकरकल्पतरुप्रपन्नम्।
सिद्ध्यै सदाखिलसनातनधर्मकालज्ञप्तेः सतां विजयतां तिथिपत्रमेतत्।।

श्री संवत् २०७२ शक १९३७ कीलक नामाब्द

ईसवीय सन् २०१५-२०१६। फसली १४२२-२३। बङ्गसंवत् १४२१-२२। हिजरी १४३६-३७

अन्नपूर्णाविश्वनाथौ जननीजनकाविव। सर्वस्वं मम तावेव विश्वस्मिन्मङ्गलप्रदौ।
नेत्रनगखाब्धि-विक्रमाब्दतिथिपत्रं प्रात्यहिकग्रहस्पष्टलग्नोदयसहितम्।।

श्रीकाशीस्थ प्रधान राजकीय संस्कृत पाठशाला के प्रधानाध्यापक

श्रीपण्डित हृषीकेश उपाध्याय - ज्योतिषाचार्य द्वारा प्रवर्तित

आचार्य पण्डित श्रीनागेश उपाध्याय 'ज्यौतिषी', विद्यार्णवेन्दु 'एम.ए.' द्वारा प्रवर्द्धित।

परमावश्यक सूचना : पञ्चाङ्गापेक्षित निर्णय के लिये उ.प्र., बिहार, दिल्ली, मुम्बई, बंगाल, आसाम सहित सम्पूर्ण भारतवर्ष में **पं० शिवमूर्ति उपाध्याय** द्वारा सम्पादित **हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग** ही प्रधान माना जाता है। ग्रहण, उदयास्त, व्रत, विवाहादि मङ्गल कार्यों का निर्णय इसके द्वारा ही सर्वत्र किया जाता है। सम्प्रति प्रचलित सभी पञ्चाङ्ग **'हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग'** का ही अनुसरण व नकल करने लगे हैं।

विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन - बी. २/९५, सी. भदैनी, वाराणसी

विंध्य से दक्षिणवासियों के लिए अष्टोत्तरी मत से आय-व्यय चक्र।।

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशि	योग
१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२	आय	आययोग ९३
१४	८	५	५	१४	५	८	१४	८	२	२	८	व्यय	व्यययोग ९३

वर्षाज्ञानार्थ सप्तनाड़ी चक्र।

शनि	रवि	भौम	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	श्ले.	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उ.	पू.	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अभि.	श्र.	नक्षत्र
भ.	अ.	रे.	उ.	पू.	श.	ध.	नक्षत्र
चंडा	वात	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृत	संज्ञा

आर्द्राप्रवेशाङ्ग ११।९।१२।१६

१ — ११ — बु. २ — के. १२ — १० — सू. ३ मं. — ९ — गु. ४ शु. — रा. ६ — श. ८ — चं. ५ — ७

हस्ताक्षर - [illegible]

आर्द्रा आदि नक्षत्रों में वर्षा प्रमाण

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा	मघा
३	२	२	२	२
पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती
१।।	१।।	१	१।।	१

आषाढ़ ३ श्रावण ४ भाद्रपद ४ आश्विन १ कार्तिक में १, मार्गशीर्ष एवं पौष में भी साधारण।

सूर्य के नक्षत्र प्रवेशकाल द्वारा वृष्टि विचार

सूर्य के नक्षत्र प्रवेशकाल में सूर्य एवं चन्द्रमा दोनों यदि सूर्य के नक्षत्र में हो तो वायुचलन, चन्द्रनक्षत्र में हो तो अनावृष्टि एवं एक सूर्य तथा दूसरा चन्द्र के नक्षत्र में स्थित हो तो सुवृष्टि होती है। अन्य प्रकार - जिस समय बुध, शुक्र, मंगल एवं गुरु एक नाड़ी के नक्षत्रों में स्थित होते हैं, उस समय अवश्य ही वृष्टि होती है।

श्री संवत् २०७२ वर्ष की समयशुद्धि।

गुरु	श्रावणकृष्ण १२ बुध (१२-८-२०१५) गुरु का अस्त पश्चिम में। भाद्रपदकृष्ण ९ सोम (७-९-२०१५) गुरु का उदय पूर्व में।
शुक्र	श्रावणकृष्ण ७ गुरु (६-८-२०१५) शुक्र का अस्त पश्चिम में। श्रावणशुक्ल ६ गुरु (२०-८-२०१५) शुक्र का उदय पूर्व में।
शनि	वर्षारम्भ में अनुराधा नक्षत्र तथा वृश्चिकराशि पर। चैत्रशुक्ल २ रवि को वक्री। शुद्ध आषाढ़शुक्ल १० रवि को मार्गी। चैत्रकृष्ण ९ शुक्र को वक्री। वर्ष के अन्त में ज्येष्ठा २ चरण तथा वृश्चिकराशि पर।
राहु	वर्षारम्भ में हस्त २ चरण तथा कन्याराशि पर राहु उ.भा. ४ चरण तथा मीनराशि पर केतु। शुद्ध आषाढ़शुक्ल ७ गुरु को उ.फा. ४ चरण में राहु उ.भा. २ चरण में केतु। माघकृष्ण ३ बुध (२७-१-२०१६) को उ.फा. १ चरण तथा सिंहराशि में राहु पू.भा. ३ चरण तथा कुम्भराशि में केतु। चैत्रकृष्ण ७ बुध को पू.फा. ४ चरण में राहु पू.भा. २ चरण में केतु।
विवाह	वैशाखशुक्ल, ज्येष्ठ, शुद्ध आषाढ़कृष्ण, कार्तिकशुक्ल, मार्गशीर्ष, पौषशुक्ल, माघ तथा फाल्गुन में।

मूल्य ४०.०० (चालीस रूपये मात्र)

श्रीगणेशाय नमः। श्रीविश्वनाथः शरणम्। श्रीभगवते रामचन्द्राय नमः।

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्।१। विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्।। संवत्सरफलं वक्ष्ये जगतां हितकाम्यया।२। अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधारमूर्त्तये ब्रह्मणे नमः।३। तिथि, वार, नक्षत्र यो, एवं करण ये पञ्चाङ्ग के पांच अंग होते है, इनके फल श्रवण मात्र से मनुष्य गङ्गास्नान का फल प्राप्त करता है। नूतन संवत्सर के आगमन काल में प्रतिगृहों में ध्वजारोपण कर ब्राह्मणों के साथ पूजनादि मंगलकार्यों का आयोजन करनाचाहिए तथा देवता, गुरु, स्त्री एवं बालकों का वस्त्रालंकार आदि से पूजन कर, पूजित दैवज्ञ द्वारा पञ्चाङ्गफल श्रवण करना चाहिए। तिथिफल श्रवण से राज्य अचल, मन्त्रीफल श्रवण से कौशल, धान्येश से स्थिर लक्ष्मी, मेघेश से सरसवाणी, रसेश से धर्मबुद्धि तथा दीर्घायु एवं सस्येश के फल श्रवण से विमल बुद्धि एवं शुभफल की प्राप्ति होती हे। वर्ष के प्रथम दिन निम्ब के कोमल पत्रों को पुष्प के साथ चूर्ण बनावें तथा उस चूर्ण में मरीचि, नमक, हिंग, जीरा, एवं अजवाइन मिश्रित कर रोगशान्त्यर्थ भक्षण करें। पुराण पुरुष ब्रह्मा जी की ब्रह्ममान से परमायु १०० वर्ष की है। ब्रह्मादि देवताओं का दिनमान- १००० महायुग का एक ब्रह्मादिन, तथा ब्रह्मादिनमान से १०० वर्ष की ब्रह्मा की पूर्णायु होती है। १००० ब्रह्मादिन की १ विष्णुघटी तथा १२००००० विष्णुदिन का रुद्र की आधी कला तथा १००००००००० रूद्र दिन का १ ब्रह्माक्षर होता है।

प्रसङ्गानुसार चतुर्युग व्यवस्था- कार्तिक शुक्ल नवमी, प्रथम प्रहर, श्रवण नक्षत्र एवं वृद्धि योग में कृतयुग की उत्पति हुई। सन्ध्या -सन्ध्यांश के सहित कृतयुग का मान १७२८००० सौर वर्ष है। इस युग में भगवान के मत्स्य, कूर्म, वराह एवं नरसिंह अवतार हुए। पाप-० तथा पुण्य- २० था। इस युग में हिरण्यकश्यप, प्रहलाद, बलि, बाणासुर, आदि धर्मिष्ठ एवं राजा थे। वैशाख शुक्ल तृतीया, सोमवार, रोहिणी नक्षत्र द्वितीय प्रहर एवं शोभन योग में त्रेता युग का आरम्भ हुआ। सन्ध्या एवं सन्ध्यांश के सहित इसका मान १२९६००० सौरवर्ष है। इस युग में वामन, परशुराम एवं राम ये तीन अवतार हुए, पाप-५, तथा पुण्य- १५ था। इस युग में विश्वामित्र, भगीरथ, दिलीप, मकरध्वज, दशरथ, राम, लव, कुश इत्यादि राजा हुए। माघ कृष्ण अमावस्या, शुक्रवार, तृतीय प्रहर, घनिष्ठा नक्षत्र एवं वरीयान योग में द्वापर युगारम्भ हुआ। सन्ध्या-सन्ध्यांश के सहित इसका मान ८६४००० सौर वर्ष है। इस युग में पाप- १० तथा पुण्य भी १० था। भगवान कृष्ण एवं बुद्ध ये दो अवतार तथा अङ्गपाण्डु, युधिष्ठिर, परीक्षित आदि धर्मनिष्ठ राजा हुए। भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी, रविवार, रात्रि, कृत्तिका नक्षत्र एवं व्यतिपात योग में कलियुग का आरम्भ हुआ। सन्ध्या-सन्ध्यांश के सहित इसका मान ४३२००० सौरवर्ष है। इस युग में पाप- १५ तथा पुण्य- ५ रहेगा। इस युग में वर्णव्यवस्था नहीं रहेगी तथा भूमि बीजहीन हो जाएगी। कलियुग का स्वरूप- पिशाच वदन, क्रूर, कलहप्रिय, कलियुग वाम हस्त से लिङ्ग एवं दायें से जिह्वा पकड़कर नृत्य करता है। कलियुग में गङ्गा की स्थिति- कलियुग के अन्त में पृथ्वी से गङ्गा लुप्त हो जायेगी तथा विष्णु भी पृथ्वी छोड़कर चले जायेंगे। भगीरथ के प्रति गङ्गा का वचन- जब तक गुरु, आकाश, देवता एवं तुलसी की पृथ्वी पर पूजा होगी, समुद्र में बड़वानल रहेगा तब तक मैं तुम्हारे चले हुए मार्गों में पृथ्वी पर रहूँगी। ऊपर कथित स्थितियाँ कलियुगान्त में उत्पन्न होगी। समग्र कलियुग में नहीं।

कलियुग का महात्म्य- धर्म से विरत तप होगा सत्य भी चला जाएगा, पृथ्वी अल्प फलादि उत्पन्न करेगी, मनुष्य कपटी हृदय तथा मूर्ख होंगे। राजा प्रजा के रक्षक नहीं अपितु अर्थ लोलुप होंगे। पुत्र पिता से वैर करेगा तथा दुर्जन सज्जनों को कष्ट देंगे।।

चौरासीलाख योनियों की व्यवस्था- नव लाख जल में, २० लाख पृथ्वी पर निवास करने वाली, ११ लाख कीड़े, दस लाख पक्षियाँ, ३० लाख पशु तथा ४ लाख मानव योनियां हैं। कलियुग में मनुष्य तथा हाथियों की आयु १२० वर्ष ५ दिन, महल तालाब, कुआँ, नगर, वृक्ष, काक, सिंहों की आयु १०००। घर तथा ग्रामों की ५०००। बिल्लों की १५०। कछुआ एवं मगरमच्छ की १५०, व्याघ्रों की ६४, सूकर की १०, गायों की २५, मृग की २४, घोड़ो की ३२, भालू बन्दर एवं मण्डूकों की ३०। गर्दभ तथा ऊँटों की २५, पक्षियों की २०, बिल्ली तथा शृङ्गाल की १२, कुकुट की ८, मूषक की ४, चिटियों की १ वर्ष मक्षिकादियों की ३१ दिन परमायु है।

कलियुग में छः शक तथा स्थापको के सौरवर्षनाम- कलियुगारम्भ के पूर्व इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठिर का ३०४४। उसके बाद उज्जयिनी में विक्रमादित्य का १३५। नर्मदा के दक्षिण में शालिवाहन का १८००० भविष्य में विजयाभिनन्दन का १००००। नागार्जुन का ४०००००, उसके बाद ८२१ वर्ष कलियुग के शेष रहने पर सम्भल क्षेत्र के गौड़ ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा, पृथ्वी पर क्षार सिन्धु के उत्तर में जम्बूद्वीप, दक्षिण में शाक, शाल्मल, कुश, क्रौंच, गोमेद, पुष्कर द्वीप स्थित है। इस जम्बूद्वीप में पृथ्वी भारतवर्ष, हरिवर्ष, भद्राश्व, केतुमाल, रम्यक, हिरण्यवर्ष, कुरुवर्ष किन्नर एवं इलावृत्त वर्ष से आवृत्त है। सम्पूर्ण पृथ्वी लवण, क्षीर, दधि, घृत, इक्षुरस, मद्य, एवं स्वादुजल रूप सप्त समुद्रों से घिरी हुई है। इस भूमि के अन्तः पट में तल, अतल, सुतल, वितल, तलातल, रसातल, एवं पाताल ये सात विभाग है। सम्प्रति ब्रह्मा की आधी आयु समाप्त हो गयी है, उत्तरार्द्ध में प्रथमवर्ष प्रथम दिन एवं सूर्योदय से १३ घटी २२ पल व्यतीत हो चुके है। इसी क्रम में वर्तमान सहस्त्रवर्षात्मक कल्प के स्वयंभु, स्वारोचित, उत्तम, तामस रैवत एवं चाक्षुष ये छः मनु तथा वर्तमान वैवस्वत मनु के २७ महायुग तथा अठाइसवें महायुग के कृत- त्रेता तथा द्वापर नामक तीन पाद व्यतीत होकर वर्तमान कलियुग चल रहा है।

कल्पारम्भ से १९५५८८५११६वर्ष कलियुगादि से ५११६ महाराजाधिराज विक्रमादित्य के शासनारुढकाल से २०७२ तथा शकारम्भ से १९३७ वर्ष व्यतित हो गये। इस वर्ष के आरम्भ से 'कीलक' नामक संवत्सर रहेगा। ज्येष्ठशुक्ल १० गुरुवार को १२।१४ इष्ट पर (दि. २०।११ बजे, २८ मई सन् २०१५ ई.) 'सौम्य' नामक संवत्सर प्रारम्भ होगा। किन्तु संकल्पादि में वर्षपर्यन्त 'कीलक' संवत्सर का ही विनियोग करना चाहिए।

'कीलक' संवत्सर का फल- तोयपूर्णो भवेन्मेघो वर्षते च धरातले। उपद्रवस्तु राज्ञां वै कीलके सर्वदा प्रिये।। कीलक संवत्सर में पृथ्वी पर मेघपूर्ण वर्षा तथा राजाओं का उपद्रव बढ़ेगा। इसके बाद 'सौम्य' नामक संवत्सर का फल- जायन्ते सर्वधान्यानि स्वस्थं च निरुपद्रवम्। सौम्यवृष्टि वरारोहे सौम्ये सौम्यं प्रजायते।। सौम्य संवत्सर में सभी फसलों का उत्पादन, लोग स्वस्थ, उपद्रव रहित तथा अच्छी वर्षा होती है। राजाशनिफल- शनैश्चरे भूमिपतौ संकृज्जलं प्रभूत रोगैः परिपीडिता जनाः। युद्धं नृपाणां बहुतस्कराद्भयं भवन्ति लोकाः क्षुधया प्रपीडिताः।। यदि शनि राजा हों तो एक ही बार वर्षा, जनता भयंकर रोगों से पीड़ित, राजाओं में युद्ध, चोरों का आतंक तथा लोग भूख से पीड़ित होते हैं। मन्त्रीमंगलफल- अवनिजो ननु मंत्रिपदं गतो भवति दस्युगदादिजवेदना। जनपदेषु जयं सुखसंचयं न बहु गोषु पयो द्विजकर्म च।। यदि मंगल मन्त्री हों तो चोर तथा रोग से लोगों को पीड़ा, जनपदों में जय, सुख की वृद्धि, गायों में अल्प दूध तथा विप्र लोग निजकर्म में निरत रहते हैं। सस्येशशुक्रफल- शुक्रो यदा धन्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं च। गोधूमशालीक्षुघनप्रियंगुवृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि।। यदि शुक्र सस्येश हों तो सुन्दर वर्षा, गेहूँ, धान, ईख, नागरमोथा, कंगुनी का उत्पादन अधिक तथा वृक्षों में फल-पुष्प सुखप्रद होते हैं। दुर्गेशचन्द्रफल- गवपतिर्मृगलांछनको यदा नृपसुराज्यविलासित पौरजाः। बहुधनेक्षुजगोरसभोगिनो नरवरानरवर्णितविग्रहाः।। यदि दुर्गेश चन्द्रमा हों तो सुव्यवस्थित शासन से जनता प्रसन्न, अधिक वर्षा, गोरस, ईख तथा रस पदार्थों का उपभोग तथा लोगों के द्वारा शासकों का यशोगान किया जाता है। धनेशगुरुफल- सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो वणिजवृत्तिपराः सुखभाजनाः। फलितपुष्पितभूमिरुहाः सदा विविधद्रव्ययुता भुवि मानवाः।। यदि धनेश गुरु हों तो व्यापारी तथा फूल के रोजगारी को लाभ, वृक्ष फल-पुष्प से सुशोभित तथा मनुष्य विविध द्रव्यों से युक्त रहते हैं। रसेशसूर्यफल- रसपतौ तरणौ धरणी तदा विरसभोगतथाल्पपयोधरा। वसनतैलघृतप्रियमानवाः सुखरसं च भुनक्ति महीपतिः।। यदि रसेश सूर्य हों तो वर्षा की कमी, रस पदार्थों का अल्प उत्पादन, भोग्य साधनों की कमी, मनुष्यों को वस्त्र, तेल, घी अधिक प्रिय तथा राजा लोग सुख भोग करते हैं। धान्येशबुधफल- बहुसस्ययुता पृथ्वी रसानां च महर्घता। नीतियुक्ताः सदा भूपा बुधे धान्याधिपे सति।। यदि बुध धान्येश हों तो पृथ्वी अधिक धान्य से युक्त, रसपदार्थों में महँगी, राजा लोग नीतिपूर्वक कार्य करने वाले होते हैं। नीरसेशशुक्रफल- कर्पूरागरुगन्धानां हेममौक्तिकवाससाम् । अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदि।। यदि नीरसेश शुक्र हों तो कपूर, अगर-तगर सुगन्धित वस्तु, सुवर्ण, मोती तथा वस्त्रों का भाव महँगा होता है। फलेशचन्द्रफल- यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता व्रतिभिः कुसुमैर्युताः। द्विजमुखा वरभोगसमन्विता नृपतयो नयनाटनतत्पराः।। यदि फलेश चन्द्रमा हों तो वृक्षों में अधिक फूल, विप्र लोग उत्तम भोग पदार्थों का उपभोग करें तथा राजा लोग नीति निपुणता से व्यवहार करते हैं। मेघेशचन्द्रफल- चन्द्रे मेघाधिपे जाते बहुतोयप्रदा घनाः। नन्दन्ति पार्थिवाः सर्वे प्रजानां च सुखं सदा।। यदि मेघेश चन्द्रमा हों तो वर्षा, राजा लोग प्रमुदित तथा प्रजा को सदा सुख रहता है। नवमेघों के मध्य वरुण नामक मेघ का फल- वरुणस्त्वर्णवाकारम्।। वरुण मेघ में अत्यधिक वर्षा होती है। द्वादश मेघों के मध्य कंबल नामक मेघ का फल- कंबले मध्यमा वृष्टिः। कम्बल मेघ में वर्षा मध्यम, खेती अच्छी होती है। रोहिणी निवास समुद्र तट का फल- समुद्रतटे वृष्टिः सुशोभना। समुद्र तट पर हो तो सुवृष्टि होती है। संवत्सर निवास धोबी के घर का फल- वापीकूपतडागानि नदीनदवनानि च। जलपूर्णानि दृश्यन्ते वासो रजकवेश्मनि।। यदि संवत्सर का निवास धोबी के घर हो तो बावली, कुँआ, तालाब, नदी, नद तथा वन जल से भरपूर रहते हैं। समय वाहन घोड़ा का फल- अश्वारुढो वत्सरश्च भूमिकम्पो महाभयम्। राजानो विग्रहं यांति वृष्टिनाशो महर्घता।। यदि समय वाहन घोड़ा हो तो भूकम्पादि उत्पात, महाभय की स्थिति, राजाओं से युद्ध तथा वर्षा की कमी होती है। वर्षा प्रमाण ९६, पर्वत पर ४८, समुद्र में २४, भूमि पर २४। आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश- अधिक आषाढ़ शुक्ल ६ सोम (२२।६।१५) ४७।२० इष्ट (रा. १२।१९) पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र सिद्धियोग गरकरण में हो रहा है। तिथि सप्तमी फल- सप्तम्यां क्षेममुत्तमम्।। सप्तमी में आर्द्रा प्रवेश उत्तम तथा क्षेमकरक होता है। सोमवार फल- सोमे सुभिक्षम् प्रोक्तम्।। सोमवार को हो तो सुभिक्षकारक होता है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र फल- स्यात्कुर्यो कीर्तिकरं भवेत्।। पूर्वाफाल्गुनी में आर्द्रा प्रवेश कीर्तिवर्द्धक होता है। सिद्धियोगफल- सिद्धिः सर्वाभिवृद्धिः। सिद्धियोग में आर्द्रा प्रवेश सब प्रकार से अभिवृद्धिदायक होता है। वेलाफल- क्षेमं सुभिक्षं स्थिरं मध्य रात्रौ।। अर्धरात्रि में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करें तो जनता का कल्याण, सुभिक्ष तथा सभी वस्तुओं में स्थिरता रहती है।

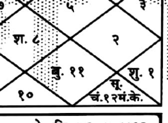
।। संवत्सर शकाङ्काभ्यां सुभिक्षादि विचार।।

प्रभवादि द्विगुणमित्यादि के अनुसार शेष (४) फल दुर्भिक्ष। त्रिघ्ने संवत्सर इत्यादि सौमनस्य तुरेग के अनुसार शेष (५) फल सुभिक्ष। द्विघ्नसंवत्सर इत्यादि के अनुसार शेष (४) फल दुर्भिक्ष। शक से शेष (६) फल समता। सभी संक्रान्ति एवं मुहूर्तों का योग (४३५) तथा चन्द्रदर्शन (३७५)। अतः इस वर्ष सस्तीकारक रहेगा। अष्टोत्तरीआययोग (९३) व्यययोग (९३)। अतः विन्ध्य से दक्षिण में रहने वाले लोग अर्थ एवं सुखी रहेंगे। विशोत्तरी आययोग (८१) व्यययोग (११७)। अतः विन्ध्योत्तरजन अर्थ एवं सुखी रहेंगे। इस वर्ष सोमवती (३) भौमवती अमावस्या (१) शुभवारयुक्त अमावस्या (९) वर्षविश्वा (१८)। इस वर्ष सस्तीकारक योग है। वर्षारम्भ में पाँच सेर के बराबर तथा इसके बाद सामान्य ह्रास-वृद्धि होगी।

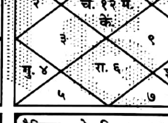
।। अथ विंशोपक ।।

वर्षा	७	आलस्य	७	पापप्रवृत्ति	५	चौरशम	३	अतिवृष्टि	१७
धान्य	१५	उद्यम	१३	पुण्यत्व	३	अग्निभय	१३	अनावृष्टि	१९
तृण	७	शान्ति	१५	व्याधि	१७	अग्निनाश	१५	स्वचक्र	३
शीत	७	क्रोध	१३	भैषज्य	१७	विषभय	९	परचक्र	५
उष्ण	१७	दम्भ	५	उग्रता	५	विषनाश	१३	नायकत्व	७
वायु	१३	भेद	३	आचार	१९	सेवकत्व	११	रत्न	१५
वृद्धि	१५	मैत्री	१५	अनाचार	११	स्वामित्व	३	वस्त्र	१३
विनाश	१५	रसनिष्पत्ति	९	मरण	१७	निजधन	७	घृत	१३
विग्रह	११	फलनिष्पत्ति	१३	जन्म	५	परधन	७	तैल	९
क्षुधा	१५	उत्साह	११	देशोपद्रव	११	शलभा	१३	दुकूल	९
तृष्णा	३	उग्रप्रवृत्ति	१७	देशस्वा.	३	शूल	९	ऊर्णवस्त्र	३
निद्रा	५	सौम्यप्रवृत्ति	१७	चौरभय	१७	मूषक	१७	सौक्ष्मव.	१३

वर्षलग्न ४।१।७।१०



नवरोजप्रवेशाङ्क ११।१६।२१।४९



शारदधान्योत्पत्ति ४।२५।५८।१३



ग्रैष्मिकधान्योत्पत्ति ९।१२।३७।१



।। श्री संवत् २०७२ शक १९३७ वर्ष का ग्रहण विवरण।।

श्री संवत् २०७२ में विश्व में चार ग्रहण लग रहे हैं। जिनमें से दो सूर्यग्रहण तथा दो चन्द्रग्रहण होगा। किन्तु भारतवर्ष में केवल दो चन्द्रग्रहण व एक सूर्यग्रहण ही दृश्य होगा। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

१. चन्द्रग्रहण- चैत्रशुक्ल १५ शनिवार (४ अप्रैल २०१५) को लगने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण भारत में ग्रस्तोदित खण्ड चन्द्रग्रहण के रुप में दृश्य होगा। यह ग्रहण एशिया के अधिकांश भाग, ऑस्ट्रेलिया, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, हिन्द और प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा।

चन्द्रास्त के समय ग्रहण का प्रारम्भ अर्जेन्टिना, ब्राजील का पश्चिमी भाग, संयुक्त राज्य अमेरिका का पूर्वी भाग एवं कनाडा में दिखाई देगा।

चन्द्रोदय के समय ग्रहण का मोक्ष पाकिस्तान के कुछ भाग, कजाकिस्तान एवं रुस के कुछ भागों में दिखाई देगा।

सम्पूर्ण भारत में खण्डचन्द्र ग्रहणका मोक्ष दृश्य होगा। खग्रास चन्द्रग्रहण का मोक्ष भारत के सुदूर उत्तर-पूर्वी भाग एवं अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में दिखाई देगा। खग्रास ग्रहण का प्रारम्भ अरूणाचल प्रदेश के सुदूरपूर्वी भाग में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ दिन में ३ बजकर ४५ मिनट पर, मध्य सायं ५ बजकर ३० मिनट पर तथा मोक्ष रात्रि ७ बजकर १५ मिनट पर होगा। ग्रासमान- १.००६

२. सूर्यग्रहण- भाद्रपदकृष्ण ३० रविवार (१३ सितम्बर २०१५) को लगने वाला खण्डसूर्यग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। यह ग्रहण दक्षिण अफ्रीका, मेडागास्कर का दक्षिणी भाग, दक्षिण हिन्द महासागर और अन्टार्कटिका के पूर्वी भाग में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ दिन में १० बजकर १२ मिनट पर तथा मोक्ष दिन में २ बजकर ३६ मिनट पर होगा। ग्रासमान- ०.७८७३

३. चन्द्रग्रहण- भाद्रपदशुक्ल १५ सोमवार (२८ सितम्बर २०१५) को लगने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण भारत में गुजरात और राजस्थान के सुदूर पश्चिम भागों में अति सूक्ष्मरूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण पश्चिम एशिया, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका (अलास्का के पश्चिमी भाग को छोड़कर) और आर्कटिक क्षेत्र में दिखाई देगा।

चन्द्रास्त के समय ग्रहण का प्रारम्भ अफगानिस्तान, पाकिस्तान, कजाकिस्तान के कुछ भाग, रुस के पश्चिमी भाग में दिखाई देगा।

चन्द्रोदय के समय ग्रहण का मोक्ष उत्तरी एवं दक्षिणी प्रशान्त महासागर, अलास्का के पूर्वी भाग में दिखाई देगा। भारत में इस ग्रहण का स्पर्श चन्द्रास्त के समय गुजरात के पश्चिमी क्षेत्र एवं राजस्थान में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ प्रातः ६ बजकर ३७ मिनट पर, मध्य दिन में ८ बजकर १७ मिनट पर तथा मोक्ष दिन में ९ बजकर ५७ मिनट पर होगा। भारत के जिन स्थानों में चन्द्रास्त के पूर्व यह ग्रहण दिखेगा वो हैं- भुज (चन्द्रास्त प्रा. ६।४०), जामनगर (चन्द्रास्त प्रा. ६।३८), पोरबन्दर (चन्द्रास्त प्रा. ६।४१)। ग्रासमान- १.२८२

४. सूर्यग्रहण- फाल्गुनकृष्ण ३० बुधवार (९ मार्च २०१६) को लगने वाला खग्राससूर्यग्रहण भारत में ग्रस्तोदित खण्डसूर्यग्रहण के रुप में दिखाई देगा। यह ग्रहण दक्षिण-पूर्व एशिया में थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, दक्षिण कोरिया, जापान, ऑस्ट्रेलिया और उत्तर प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा।

खग्रास ग्रहण सुमात्रा, बोर्नियो, इण्डोनेशिया, और उत्तर प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। खण्डग्रास रुप में यह ग्रहण भारत के उत्तर-पश्चिम और पश्चिमी भाग को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि में ४ बजकर ४१ मिनट पर, मध्य दिन में ७ बजकर २७ मिनट पर तथा मोक्ष दिन में १० बजकर ५ मिनट पर होगा। ग्रासमान - १.०४४

अनिष्ट ग्रहण फल निवारणार्थ दान- स्वर्ण निर्मित सर्प कांसे के बर्तन में तिल वस्त्र, एवं दक्षिणा के साथ श्रोत्रिय ब्राह्मण को दान करना चाहिए अथवा अपनी शक्ति अनुसार सोने या चाँदी का ग्रह बिम्ब बनाकर ग्रहण जनित दुष्ट फल निवारण हेतु दान करना चाहिए। मन्त्र- तमोमय महाभीम सोम सूर्य विमर्दन हेमताराप्रदानेन मम शान्तिप्रदो भव। विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाच्युत दानेनानेन नागस्य रक्षमां वेधनाद्भयात।। विशेषतः ग्रहण जनित दुष्ट फल निवारण के लिए गौ, भूमि तथा स्वर्ण का दान दैवज्ञ के लिए करना चाहिए। जिस राशि के लिए अरिष्ट हो उनहें ग्रहण नहीं देखना चाहिए। सूर्य ग्रहण में गंगा, पुण्यप्रयाग, पुष्कर अथवा कुरुक्षेत्र में स्नान करना महापुण्यदायी होता है। ग्रहण के समय भोजन में विशेष- रविवार के दिन सूर्यसंक्रान्ति एवं चन्द्र-सूर्य ग्रहण में रविवार के दिन पारण एवं उपवास पुत्रवान गृहस्थ को नहीं करना चाहिए।

।। श्री संवत् २०७२ शक १९३७ ।।

चैत्रशुक्ल १५ शनि (दिनांक ४ अप्रैल २०१५ ई०) को काशी में ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्रग्रहण।

खण्डचन्द्रग्रहण		
काशी में		घं. मि. (I.S.T)
स्पर्श	--	--
मध्य	--	--
मोक्ष	रात्रि	७।१५
चन्द्रोदय	सायं	६।१३

वायुमण्डल में



'हस्त' नक्षत्र तथा 'कन्या' राशि पर

ग्रहणफल	
मेष	सौख्य
वृष	चिन्ता
मिथुन	व्यथा
कर्क	श्री
सिंह	क्षति
कन्या	घात
तुला	हानि
वृश्चिक	लाभ
धनु	सुख
मकर	माननाश
कुम्भ	मृत्युतुल्य कष्ट
मीन	स्त्रीपीडा

भारत के वह प्रमुख स्थान जहाँ पर ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (४ अप्रैल २०१५ ई०) का केवल मोक्ष दृश्य होगा।

स्थान	चन्द्रोदय (I.S.T)	स्थान	चन्द्रोदय (I.S.T)
अगरतला	सा. ५।३९	कोलकाता	सा. ५।५१
अहमदाबाद	सा. ६।५६	लखनऊ	सा. ६।२४
इलाहाबाद	सा. ६।२०	मुम्बई	सा. ६।५४
अमृतसर	सा. ६।५२	मुजफ्फरपुर	सा. ६।५
बैंगलौर	सा. ६।३१	नागपुर	सा. ६।२८
भोपाल	सा. ६।३६	नासिक	सा. ६।५०
चण्डीगढ़	सा. ६।४१	पटना	सा. ६।५
चेन्नई	सा. ६।२०	पुणे	सा. ६।५०
कटक	सा. ६।१	पुरी	सा. ६।१
देहरादून	सा. ६।३७	रायपुर	सा. ६।१८
दिल्ली	सा. ६।३९	राँची	सा. ६।३
डिब्रूगढ़**	सा. ५।२५	शिमला	सा. ६।४१
गया	सा. ६।७	उदयपुर	सा. ६।५३
गुवाहाटी	सा. ५।४०	उज्जैन	सा. ६।४४
हरिद्वार	सा. ६।३६	बड़ोदरा	सा. ६।५३
जालंधर	सा. ६।४७	आइजॉल*	सा. ५।३४
इम्फाल**	सा. ५।३०	पोर्टब्लेयर**	सा. ५।२९
इटानगर*	सा. ५।३२	कोहिमा**	सा. ५।२८
सिलचर*	सा. ५।३४	आरा	सा. ६।७

(*) चिह्नित स्थानों पर खग्रास चन्द्रग्रहण का मोक्ष दृश्य होगा।
(**) चिह्नित स्थानों पर खग्रास चन्द्रग्रहण का मध्य और मोक्ष दोनों दृश्य होगा।

ग्रहण सूतक- धर्मशास्त्रों के अनुसार चन्द्रग्रहण में ग्रहण से पूर्व ९ घंटे और सूर्यग्रहण में १२ घंटे पहले ग्रहण का सूतक होता है। इसमें बालक, वृद्ध और रोगी को छोड़कर अन्य लोगों के लिए भोजन निषिद्ध है।

''सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम्।
चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना।।''

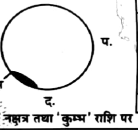
श्रद्धालु धार्मिक जनता को धर्म शास्त्रीय वचन के अनुसार भोजन निवृत्ति के साथ-साथ धार्मिक कृत्य श्राद्ध दान आदि भी करना चाहिए। ग्रहण में जपा गया मंत्र सिद्धिप्रद होता है। यह अनुभूत है।

।। श्री संवत् २०७२ शक १९३७ ।।

फाल्गुनकृष्ण ३० बुध (९ मार्च २०१६ ई०) को काशी में ग्रस्तोदित खण्डग्रास सूर्यग्रहण।

खण्डसूर्यग्रहण		
काशी में		घं. मि. (I.S.T)
स्पर्श	--	--
मध्य	--	--
मोक्ष	प्रातः	६।४७
सूर्योदय	प्रातः	६।१३

अग्निमण्डल में



'पू.भा.' नक्षत्र तथा 'कुम्भ' राशि पर

ग्रहणफल	
मेष	लाभ
वृष	सुख
मिथुन	माननाश
कर्क	मृत्युतुल्य कष्ट
सिंह	स्त्रीपीड़ा
कन्या	सौख्य
तुला	चिन्ता
वृश्चिक	व्यथा
धनु	श्री
मकर	क्षति
कुम्भ	घात
मीन	हानि

भारत के वह प्रमुख स्थान जहाँ पर ग्रस्तोदित खण्डग्रास सूर्यग्रहण (९ मार्च २०१६ ई०) का स्पर्श, मध्य और मोक्ष दृश्य होगा।

स्थान	स्पर्श (I.S.T)	मध्य (I.S.T)	मोक्ष (I.S.T)	सूर्योदय (I.S.T)
अगरतला	--	प्रा. ६।९	प्रा. ६।५२	प्रा. ५।४०
आइजॉल	--	प्रा. ६।९	प्रा. ६।५३	प्रा. ५।३५
कोहिमा	प्रा. ५।३५	प्रा. ६।१३	प्रा. ६।५३	प्रा. ५।२८
इलाहाबाद	--	--	प्रा. ६।४७	प्रा. ६।११
बैंगलोर	--	--	प्रा. ६।४७	प्रा. ६।३२
भागलपुर	--	प्रा. ६।१०	प्रा. ६।४८	प्रा. ५।५९
भोपाल	--	--	प्रा. ६।४७	प्रा. ६।३६
शिवसागर	प्रा. ५।३१	प्रा. ६।१५	प्रा. ६।५२	प्रा. ५।२७
चण्डीगढ़	--	--	प्रा. ६।४३	प्रा. ६।४०
चेन्नई	--	--	प्रा. ६।४८	प्रा. ६।२१
कूचबिहार	--	प्रा. ६।१२	प्रा. ६।४९	प्रा. ५।४८
दार्जलिंग	--	प्रा. ६।१३	प्रा. ६।४८	प्रा. ५।५१
देहरादून	--	--	प्रा. ६।४३	प्रा. ६।३५
इटानगर	प्रा. ५।४१	प्रा. ६।१५	प्रा. ६।५१	प्रा. ५।३२
दिल्ली	--	--	प्रा. ६।४५	प्रा. ६।३८
गुवाहाटी	--	प्रा. ६।१२	प्रा. ६।५०	प्रा. ५।४०
गया	--	प्रा. ६।८	प्रा. ६।४८	प्रा. ६।७
जयपुर	--	--	प्रा. ६।४६	प्रा. ६।४४
इम्फाल	प्रा. ५।३२	प्रा. ६।११	प्रा. ६।५३	प्रा. ५।३१
कोलकाता	--	प्रा. ६।७	प्रा. ६।५०	प्रा. ५।५१
लखनऊ	--	--	प्रा. ६।४६	प्रा. ६।२३
मुर्शिदाबाद	--	प्रा. ६।९	प्रा. ६।५०	प्रा. ५।५२
मुज्जफ्फरपुर	--	प्रा. ६।११	प्रा. ६।४७	प्रा. ६।४
डिब्रूगढ़	प्रा. ५।४२	प्रा. ६।१६	प्रा. ६।५२	प्रा. ५।२५
पटना	--	प्रा. ६।१०	प्रा. ६।४८	प्रा. ६।५
पुरी	--	प्रा. ६।३	प्रा. ६।५०	प्रा. ६।१
रायपुर	--	--	प्रा. ६।४८	प्रा. ६।१८
राँची	--	प्रा. ६।७	प्रा. ६।४९	प्रा. ६।४
शिमला	--	--	प्रा. ६।४२	प्रा. ६।३९
उज्जैन	--	--	प्रा. ६।४७	प्रा. ६।४३
तमिलांग	प्रा. ५।३४	प्रा. ६।१२	प्रा. ६।५३	प्रा. ५।३१

☞ ग्रहण गणित तथा उदयास्त खगोल विज्ञान केन्द्र कोलकाता के सौजन्य से प्राप्त।

संवत्सरफल

इस वर्ष के प्रारम्भ में 'कीलक' नामक संवत्सर रहेगा। ज्येष्ठशुक्ल १० गुरुवार (२८ मई २०१५) को १२।१४ इष्ट (दि. १०।११) पर 'सौम्य' नामक संवत्सर का प्रवेश होगा। किन्तु वर्षपर्यन्त संकल्पादि में 'कीलक' संवत्सर का ही विनियोग करना चाहिए। इस वर्ष राजा 'शनि' तथा मन्त्री 'भौम' है। राजा तथा मन्त्री में परस्पर मधुर सम्बन्ध नहीं है। अत: शासकों में मतभेद की स्थिति बनी रहेगी। जगल्लग्न के विचार से लग्नेश सूर्य उच्चराशि का होकर भाग्येश मंगल से सम्बन्ध कर रहे हैं। अत: विश्व के राष्ट्रों में परस्पर मैत्री पूर्ण व्यवहार होगा। संसार के सभी राष्ट्र शान्ति की इच्छा रखेंगे। प्रक्षेप्यास्त्रों के निर्माण में तरह-तरह की चर्चायें होंगी, किन्तु प्रभावशाली राष्ट्रों का इसके निर्माण में कोई शिथिलता नहीं दीख पड़ेगी। वर्षलग्न के विचार से लग्नेश सूर्य अष्टम भाव में मित्र गृही होकर विद्यमान है। अत: सुरक्षा के क्षेत्र में भारत सक्षम रहेगा। यातायात के कार्यों में विशेष प्रगति होगी। भारत का पड़ोसी राष्ट्रों से मधुर सम्बन्ध रहेगा। सुरक्षा कार्यों में धन-व्यय होगा। व्यापार के क्षेत्र में भी प्रगति होगी। आर्द्रा प्रवेशाङ्ग के विचार से वर्षाधिपति बृहस्पति उच्चराशि का होकर त्रिकोण में विद्यमान है। अत: वर्षा अच्छी होगी। फसलों का उत्पादन संतोषजनक होगा। शारदधान्य के विचार से लग्नेश सूर्य केन्द्रवर्ती होने से खरीफ का उत्पादन संतोषजनक होगा। कहीं-कहीं दैविक प्रकोप के कारण कृषि नाशक परिस्थितियाँ भी उत्पन्न होगी। ग्रैष्मिकधान्य के विचार से लग्नेश शनि त्रिकोणवर्ती होने से ग्रैष्मिकधान्य का उत्पादन संतोषजनक रहेगा।

सूचना

पाठकगण इस बात का विशेष ध्यान दें कि असली हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग (हृषीकेश पञ्चाङ्ग के आद्य प्रधान सम्पादक स्व० पं० श्यामभूर्ति उपाध्याय के सुपुत्र) पं० शिवमूर्ति उपाध्याय द्वारा सम्पादित होता है तथा विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन- बी. २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी द्वारा ही प्रकाशित होता है।

मेषादि १२ राशियों का वार्षिक फल

मेष- मेषराशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य शुभदायक रहेगा। शनि की अढ़ैया के कारण आर्थिक चिन्ता, मानसिक सन्ताप की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में माँगलिक कृत्य होंगे। ऋण भार के कारण आर्थिक कष्ट होगा। संतान सुख की प्राप्ति होगी। व्यापार से स्वल्प लाभ होगा। कचहरी के कार्यों में सफलता मिलेगी। भूमि-मकान, वाहन इत्यादि के क्रय-विक्रय सम्बन्धी कार्यों में व्यस्तता बढ़ सकती है। वर्ष के प्रारम्भ में चोट-चपेट या नेत्र विकार से कष्ट होगा। विरोधी परास्त होंगे। माता-पिता को धार्मिक कार्यो का अवसर मिलेगा। ४,८,१२ मास कष्टदायक रहेंगे।

वृष- वृषराशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य शुभदायक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्ध से वर्ष का उत्तरार्ध अधिक सकारात्मक रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष कुछ कष्टदायक रहेगा। बाल-बच्चों को पीड़ा होगी। दाम्पत्य जीवन में कटुता बढ़ेगी। व्यापार तथा नौकरी से लाभ होगा। माँगलिक कार्यों में धन-व्यय होगा। नौकरी में प्रगति तथा व्यापार में लाभ होगा। अध्ययन-अध्यापन में बाधा पहुँचेगी। पारिवारिक विवाद के कारण मन खिन्न रहेगा। शिव जी की आराधना करनी चाहिए। २,५,९ मास कष्टदायक रहेंगे।

मिथुन- मिथुनराशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य शुभदायक रहेगा। आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी। उदर जन्य विकारों से कष्ट होगा। धन-सम्पत्ति के मामलों में विवाद हो सकता है। जल्दबाजी में निर्णय न लें। विरोधी पराजित होंगे। निर्माण कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा। परिवार में माँगलिक कृत्य होंगे। माता-पिता को कष्ट होगा। किसी निकट सम्बन्धी का निधन सम्भव है। वाहन से भय की सम्भावना रहेगी। नौकरी में उन्नति होगी। २,६,१० मास कष्टदायक रहेंगे।

कर्क- कर्कराशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य शुभदायक रहेगा। भाइयों को कष्ट होगा। पठन-पाठन में बाधा पहुँचेगी। निर्माण कार्यों में कठिनाई आयेगी। वर्ष के पूर्वार्ध में स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियाँ हो सकती है। आर्थिक मामलों में धन की बचत का ध्यान रखना चाहिए। माता-पिता को कष्ट होगा। नौकरी में उन्नति तथा व्यापार में लाभ होगा। धार्मिक कार्यों में धन-व्यय होगा। ३,७,११ मास कष्टदायक रहेंगे।

सिंह- सिंहराशि वालों के लिए इस वर्ष शनि की अढ़ैया होने से मानसिक चिन्ता, पारिवारिक विवाद तथा आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। धन सम्बन्धी कार्यों में सावधानी रखें। वर्ष के उत्तरार्ध में स्थिति में सुधार हो सकता है। व्यापारिक यात्रायें सफल होंगी। परिवार में माँगलिक कृत्य होंगे। ऋण का भार बढ़ेगा। शनि की आराधना तथा हनुमान चालीसा का नित्य पाठ करना लाभदायक रहेगा। नौकरी में उन्नति तथा व्यापार के कार्यों में स्वल्प लाभ होगा। वर्ष के अन्त में परिवार में विशेष लाभ की स्थिति दीख पड़ेगी। १,५,९ मास कष्टदायक रहेंगे।

कन्या- कन्याराशि वालों के लिए यह वर्ष कष्टदायक रहेगा। भाइयों को कष्ट होगा। पत्नी को शारीरिक पीड़ा होगी। धन के लेन-देन में आवश्यक सावधानी रखें। चोट-चपेट दुर्घटना की सम्भावना बनी रहेगी। किसी सम्बन्धी का निधन सम्भव है। मुकदमे के कार्यों में सफलता मिलेगी। पहले से रुके हुए कार्य बनने की सम्भावना है। व्यापार की कोई नयी योजना बनेगी। नौकरी में प्रगति तथा व्यापार से सामान्य लाभ होगा। १,५,९ मास कष्टदायक रहेंगे।

तुला- तुलाराशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। पारिवारिक विवाद तथा आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। विरोधी शान्त होंगे। पत्नी को पीड़ा होगी। माता-पिता को तीर्थयात्रा या अन्य धार्मिक कार्यों का अवसर मिलेगा। माँगलिक कार्यों में धन-व्यय होगा। लेन-देन के कार्यों में कठिनाई उपस्थित होगी। नौकरी में उन्नति तथा व्यापार में लाभ होगा। आर्थिक क्षेत्र में किये गये प्रयासों में सफलता मिलेगी। वाहन इत्यादि से चोट-चपेट का भय हो सकता है। निरर्थक दौड़-धूप होती रहेगी। न्यायालय से सम्बन्धित कार्य यथावत रहेंगे। शनि का जप-दान तथा हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। २,६,१० मास कष्टदायक रहेंगे।

वृश्चिक- वृश्चिकराशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती का विशेष प्रभाव रहेगा। वर्ष भर संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। मित्रों से अनबन तथा स्वजनों से विवाद होगा। आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। वाहन चलाने में सावधानी रखनी होगी। कार्य क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। पारिवारिक मामलों में मतभेद रहेगा। बाल-बच्चों को पीड़ा होगी। विरोधियों का प्रभाव बढ़ेगा। माँगलिक कार्यों में धन-व्यय होगा। हनुमान जी की आराधना करनी चाहिये। ३,७,११ मास कष्टदायक रहेंगे।

धनु- धनुराशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य कष्टदायक रहेगा। शनि की साढ़ेसाती के कारण आर्थिक विषमता, पारिवारिक विवाद तथा स्वजनों से विरोध होगा। दाम्पत्य जीवन में कटुता बढ़ेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियाँ हो सकती है। आर्थिक क्षेत्र, व्यापार क्षेत्र में किये गये प्रयासों में सफलता प्राप्त होने में बाधा पहुँचेगी। शनि की आराधना तथा हनुमान जी का दर्शन करना चाहिये। माता-पिता को कष्ट होगा। पठन-पाठन में बाधा पहुँचेगी। बाल-बच्चों को पीड़ा होगी। वर्ष के मध्य में नेत्र विकार, वाहन हानि की सम्भावना रहेगी। व्यापार में लाभ होगा। २,५,८ मास कष्टदायक रहेंगे।

मकर- मकरराशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य शुभदायक रहेगा। भाई-बन्धुओं को कष्ट होगा। चोट-चपेट, दुर्घटना की सम्भावना रहेगी। माता-पिता को पीड़ा होगी। धार्मिक क्रिया कलापों में अभिरुचि बढ़ सकती है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। दाम्पत्य सुख की प्राप्ति होगी। निर्माण कार्यों में बाधा पहुँचेगी। किसी नये व्यापार की सम्भावना बढ़ेगी। सुख-साधनों का अभाव रहेगा। लेन-देन के कार्यों में कठिनाई उपस्थित होगी। १,५,९ मास कष्टदायक रहेंगे।

कुम्भ- कुम्भराशि वालों के लिए यह वर्ष शुभदायक रहेगा। आर्थिक सुविधा बढ़ेगी। भाइयों को पीड़ा होगी। विरोधियों से संधि वार्ता चलेगी। उदर जन्य विकारों से कष्ट होगा। व्यापार से लाभ तथा नौकरी में उन्नति होगी। आर्थिक मामलों में योजनाबद्धरूप से कार्य करने का लाभ मिल सकता है। वर्ष के उत्तरार्ध में माँगलिक कार्यों में धन-व्यय होगा। २,६,१० मास कष्टदायक रहेंगे।

मीन- मीनराशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य कष्टदायक रहेगा। संतान सुख की प्राप्ति तथा विद्या के क्षेत्र में प्रगति होगी। पत्नी को पीड़ा होगी। निर्माण कार्यों में बाधा उत्पन्न होगी। माँगलिक कार्यों में धन-व्यय होगा। वाहन खरीदने की योजना बनेगी। भूमि, भवन, वाहन सम्बन्धी उपलब्धियाँ या उनसे आय सम्भव है। वर्ष के उत्तरार्ध में माँगलिक कृत्य होंगे। व्यापार तथा नौकरी से लाभ होगा। ३,७,११ मास कष्टदायक रहेंगे।

चैत्रादि मासफल

चैत्रशुक्ल से वैशाखकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। मेवे, चावल, चीनी तथा सूती वस्त्रों के मूल्य में तेजी का रुख रहेगा। सर्राफा बाजार में सामान्य सस्ती दीख पड़ेगी। साग-तरकारी तथा गोरस के मूल्य में तेजी का रुख रहेगा। चावल, गुड़ तथा दलहन का संग्रह करना भविष्य के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। यत्र-तत्र संक्रामक रोगों की स्थिति दीख पड़ेगी। वायु वेग के साथ हल्की वर्षा भी होगी। वैशाखकृष्ण के अन्त में सर्राफा बाजार में तेजी आयेगी। **चैत्रशुक्ल** २,४,९,११,१५ तथा **वैशाखकृष्ण** ३,८,१०, ३० उपद्रवकारी रहेंगे।

वैशाखशुक्ल से ज्येष्ठकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। गोरस, तरकारी तथा गुड़ के भाव में तेजी आयेगी। सर्राफा बाजार में भी तेजी का रुख रहेगा। ज्येष्ठकृष्ण के प्रारम्भ में श्वेत पदार्थों के मूल्य में विशेष महँगी आयेगी। चौपायों को रोग होंगे। गर्मी की अधिकता के साथ आँधी, तूफान की सम्भावना रहेगी। तेलहन का संग्रह करना भविष्य के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। ग्रह योग वश दुर्घटना तथा भौमान्तरिक्ष उत्पात की सम्भावना रहेगी। ज्येष्ठकृष्ण में आँधी, तूफान की अधिकता तथा प्रखर गर्मी से जनसामान्य को कष्ट होगा। सूर्य, मंगल का योग लाल पदार्थों के मूल्य में तेजी लाने वाला है। **वैशाखशुक्ल** १,३,७,१०,१४ तथा **ज्येष्ठकृष्ण** १,९,१३,१४ उपद्रवकारी रहेंगे।

ज्येष्ठशुक्ल से शुद्धआषाढ़कृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में सस्ती का रुख रहेगा। मेवा, फल तथा साग-तरकारी के मूल्य में तेजी बनी रहेगी। पीले पदार्थ सस्ते होंगे। दलहन-तेलहन तथा गुड़ का संग्रह करना भविष्य के लिए लाभदायक रहेगा। गर्मी उत्तरोत्तर बढ़ेगी। आँधी-तूफान तथा अपहरण की घटनायें घटित होंगी। यान दुर्घटना तथा उत्पातों की अधिकता रहेगी। सर्राफा बाजार में तेजी का रुख रहेगा। तेलहन के मूल्य में उत्तरोत्तर तेजी आयेगी। **ज्येष्ठशुक्ल** १,६,८,१५ तथा **शुद्धआषाढ़कृष्ण** ४,७,१२,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

अधिकआषाढ़शुक्ल से अधिकआषाढ़कृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में तेजी आयेगी। सर्राफा बाजार में सस्ती का रुख रहेगा। ईंधन, तेलहन तथा दलहन के मूल्य में विशेष तेजी आयेगी। वायुवेग के साथ सामान्य वर्षा होगी। पशुओं को रोग होंगे। भूसी वाले अन्न में कीड़े पड़ेंगे। फलों के मूल्य में तेजी बनी रहेगी। सूर्य, मंगल, बुध का योग अपहरण, यान दुर्घटना तथा भौमान्तरिक्ष उत्पातों को देने वाला है। **अधिकआषाढ़शुक्ल** ४,७,९,१३ तथा **अधिक आषाढ़कृष्ण** ४,६,१०,१३ उपद्रवकारी रहेंगे।

शुद्ध आषाढ़शुक्ल से श्रावणकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में तेजी का रुख रहेगा। वर्षा की स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी। खण्डवृष्टि के कारण कहीं-कहीं सूखे का प्रभाव रहेगा। ईंधन तथा तेलहन के मूल्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। श्वेत पदार्थ सस्ते होंगे। सोने, चाँदी के मूल्य में सस्ती का रुख रहेगा। दुर्घटना, अपहरण तथा जनसंघर्ष की स्थिति दीख पड़ेगी। पूर्वोत्तर राज्यों में अधिक वर्षा होगी। खण्डवृष्टि के कारण यत्र-तत्र वर्षा की कमी से जनता को कष्ट होगा। कहीं-कहीं बाढ़ की विभीषिका भी दिख पड़ेगी। मंगल-शुक्र का योग लाल पदार्थों के मूल्य में तेजी का सूचक है। मेवे तथा फलों के मूल्य में तेजी बनी रहेगी। पशुओं को रोग होंगे। **शुद्धआषाढ़शुक्ल** २,५,१०,१२ तथा **श्रावणकृष्ण** २,४,९,१२, ३० उपद्रवकारी रहेंगे।

श्रावणशुक्ल से भाद्रपदकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। ग्रह स्थिति के कारण इति-भीति की सम्भावना रहेगी। यान दुर्घटना, जनापहरण की स्थिति उत्पन्न होगी। सूर्य, बृहस्पति का योग दलहन के मूल्य में विशेष तेजी लाने वाला है। पूर्वोत्तर राज्यों में वर्षा की अधिकता से जन-धन की हानि होगी। सूती पदार्थ महँगे होंगे। फलों के मूल्य में तेजी बनी रहेगी। **श्रावणशुक्ल** २,४,८,१०,१५ तथा **भाद्रपदकृष्ण** १,३,७,१०,१४,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

भाद्रपदशुक्ल से आश्विनकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। वर्षा की कमी के कारण कहीं-कहीं किसी को क्षति पहुँचेगी। सूर्य-राहु का योग लाल पदार्थों के मूल्य में तेजी लाने वाला है। सोने-चाँदी के मूल्य में सामान्य सस्ती रहेगी। विषैले जीवों से यत्र-तत्र जनता को कष्ट होगा। ईंधन और तेलहन के मूल्य में उत्तरोत्तर महँगी आयेगी। पीले पदार्थ महँगे होंगे। भौमान्तरिक्ष उत्पात होंगे। दुर्घटनायें घटित होंगी। **भाद्रपदशुक्ल** २, ७, ९, १४ तथा **आश्विनकृष्ण** १, ७, ९, १४ उपद्रवकारी रहेंगे।

आश्विनशुक्ल से कार्त्तिककृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में तेजी का रुख रहेगा। यान-दुर्घटना तथा अपहरण की घटनायें घटित होंगी। वर्षा प्राय: अच्छी होगी, किन्तु खण्डवृष्टि का प्रभाव होने से यत्र-तत्र वर्षा की कमी दीख पड़ेगी। खरीफ की फसल का भविष्य उज्ज्वल रहेगा। पशुओं को रोग होंगे। भूसी वाले अन्न में कीड़े पड़ेगे। लाल पदार्थों के मूल्य में तेजी बनी रहेगी। सूती कपड़े महँगे होंगे। वायु वेग के साथ थोड़ी वर्षा भी होगी। दिव्यान्तरिक्ष उत्पात होंगे। **आश्विनशुक्ल** १,४,७,११,१५ तथा **कार्तिककृष्ण** ४,५,७,१२,१४ उपद्रवकारी रहेंगे।

(शेष पृष्ठ ४२ पर)

आवश्यक सूचना

पाठकों को सूचित किया जाता है कि पञ्चाङ्ग संवत् २००१ से २०७० तक की पुराने पञ्चाङ्गो की प्रतियाँ दस-दस वर्ष की एक जिल्द में प्रकाशित हो चुकी हैं। कृपया संपर्क करें-

विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन-
बी. २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी।
मो. : ०९३३५६६०६३१।

नोट- *पाठकों को किसी एक वर्ष की प्रति अलग से दे पाना सम्भव नहीं है।*

श्रद्धेयविद्वज्जन,

'हृषीकेश पञ्चाङ्ग' देश का सर्वमान्य पञ्चाङ्ग है। इसकी लोकप्रियता से हतोत्साहित होकर कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा इसकी नकल करके जनमानस को धोखा दिये जाने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है।

प्रिय पाठक बन्धु इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि 'पं हृषीकेशोपाध्याय द्वारा प्रवर्तित एवं पं श्यामभूर्ति उपाध्याय द्वारा सम्पादित' हृषीकेश पञ्चाङ्ग कई वर्षो से अपने पुराने स्थान विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन, बी. २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी द्वारा प्रकाशित हो रहा है। जिसका सम्पादन पं शिवमूर्ति उपाध्याय द्वारा किया जा रहा है। असली हृषीकेश पञ्चाङ्ग लेते समय श्रीकाशीविश्वनाथ का 'ॐ' चिह्न तथा प्रधान सम्पादक पं शिवमूर्ति उपाध्याय का नाम देखकर ही पञ्चाङ्ग खरीदें।

श्रीकाशी विश्वनाथ पञ्चाङ्ग
ॐ
हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग

कृपया असली हृषीकेश पञ्चाङ्ग लेते समय मुख पृष्ठ पर हृषीकेश पञ्चाङ्ग के संस्थापक पं हृषीकेश उपाध्याय व हृषीकेश पञ्चाङ्ग के भूतपूर्व प्रधान सम्पादक स्व. पं श्यामभूर्ति उपाध्याय का छायाचित्र (फोटो) देखकर ही असली पञ्चाङ्ग खरीदें और धोखाधड़ी से बचें।

श्रीकाशीविश्वनाथ पञ्चाङ्ग
(हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग)

- प्रधानसम्पादक
पं शिवमूर्ति उपाध्याय

पञ्चाङ्गस्थ विषय से सम्बन्धित समस्या के समाधान हेतु सम्पर्क कर सकते हैं। पत्र व्यवहार का पता विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन बी. २।९५ सी., भदैनी, वाराणसी (उ०प्र०)। मो०- ०९३३५६६०६३१

चैत्रादि मासों की मन्वादि तिथियाँ

चैत्र शुक्ल	ज्येष्ठ शुक्ल	आषाढ़ शुक्ल	भाद्र शुक्ल	आश्विन शुक्ल	कार्तिक शुक्ल	पौष शुक्ल	माघ शुक्ल	फाल्गुन शुक्ल	श्रावण कृष्ण
३।१५	१५	१०।१५	३	९	१२।१५	११	७	१५	८।३०

युगादि तिथियाँ

कार्तिकशुक्ल ९	वैशाखशुक्ल ३	मार्गशीर्षकृष्ण ३०	माघ कृष्ण १३
सतयुगादि	त्रेतायुगादि	द्वापरयुगादि	कलियुगादि

☞ मन्वादि एवं युगादि तिथियों में विद्याध्ययन का निषेध है।

सामान्य सुभिक्षादि ज्ञान

प्रभवादि वर्तमान संवत्सर को द्विगुणित कर तीन घटा दें तथा सात का भाग दें, एकादि शेष रहने पर निम्न फल होता है- १ दुर्भिक्ष, २ सुभिक्ष, ३ सम, ४ दुर्भिक्ष, ५ सुभिक्ष, ६ सम, ० पीड़ा।

कल्पादि- चैत्रशुक्ल१, वैशाखशुक्ल ३, कार्तिकशुक्ल ७, मार्गशीर्षशुक्ल ९, माघशुक्ल १३, चैत्रकृष्ण ३।

भगवान के दस अवतारों का काल- मत्स्य- चैत्रशुक्ल ३ (अपराह्न में), **राम-** चैत्रशुक्ल ९ (मध्याह्न में), **परशुराम-** वैशाखशुक्ल ३ (प्रदोष में), **नृसिंह-** वैशाखशुक्ल १४ (सायं), **कूर्म-** वैशाखशुक्ल १५ (मध्याह्न में), **कल्कि-** श्रावणशुक्ल ६ (सायं), **कृष्ण-** भाद्रपद-कृष्ण ८ (निशीथ में), **वामन-** भाद्रपदशुक्ल १२ (मध्याह्न में), **बौद्ध-** आश्विनशुक्ल १० (सायं), **वाराह-** भाद्रपदशुक्ल ३ (अपराह्न में)।

वर्ष के शुभाशुभ का ज्ञान

प्रश्नकर्ता के नामाक्षर के साथ तिथि, वार, नक्षत्र एवं संवत्सर की संख्या जोड़कर तीन से भाग दें। एक शेष से क्लेश, दो से समता एवं तीन से सुख होता है।

चरणी विचार

गृहस्वामी के हाथ से चरणी की ल., चौ. जो हो उसका योग कर आठ से भाग दें एकादि शेष से क्रमशः निम्न फल होता है- पशुहानि, पशुरोग, पशुलाभ, पशुक्षय, पशुनाश, पशुवृद्धि, पशुभेद तथा बहुपशु।

जन्मकुण्डली से प्रतिवर्ष प्रतिभाव विचार

जन्माङ्ग के लग्नादि द्वादशभावों को बारह वर्षों के रूप में जानना चाहिए। पुनः दुसरी आवृति में १३ से २४, तीसरी में २५ से ३६ आदि के क्रम से दस आवृति में मनुष्य की सम्पूर्ण आयु अर्थात् १२० वर्ष की कल्पना कर लेनी चाहिए।

फल- वर्ष संज्ञक भावों से त्रिकोण (१,५,९) में यदि शुभग्रह स्थित हों तो उस वर्ष में समस्त दैहिक सुखों की प्राप्ति होती है। लग्न की ही भाँति उस वर्ष के लग्न से धनादि द्वादशभाव भी कल्पित होते हैं। अतः धनादि जिस भाव से त्रिकोण में शुभग्रह स्थित होते है उस वर्ष, उस भाव जनित शुभफल की प्राप्ति होती है। यदि पापग्रह उन त्रिकोणों में बलवान होकर स्थित हों तो भाव के नाशक तथा निर्बल हों तो सुखकारक होते हैं। शुभग्रहों से शुभता तथा पापग्रहों से अशुभता प्राप्त होती है। पाप एवं शुभ दोनों प्रकार के ग्रहों की स्थिति से मिश्रफल प्राप्त होता है। परन्तु इसका विचार ग्रहों का बलाबल देखकर ही करना चाहिए।

जन्मलग्न का निश्चय एवं उसके द्वारा प्रसव कालिक कुछ पदार्थों का ज्ञान

माता के वस्त्र एवं भोजन का ज्ञान

लग्न के नवमांशेश के अनुसार माता के वस्त्र तथा चतुर्थेश से प्रसव पूर्व किये गये भोजन का विचार करना चाहिए ।।१।। कठिनं, मधुरं, रूक्षं, लेह्यपेयादिकं मृदुः।। चोष्याम्लगुडं दुग्धं विचित्रं स्वल्पभोजनम्।। वटकाद्यं बहुरसं पेयादि मधुरं हितम्।। क्रोधादिना कदन्नं स्यात्सूर्यादिः श्लोकपादतः।।३।। इति।।

सूर्य लग्न के द्वादशांश द्वारा दीप ज्ञान

गर्ग- लग्न के प्रथम भाव में सूर्य हो तो पूर्व, २,३ में हो तो ईशानकोण, ४ भाव में हो तो उत्तर ५,६ में हो तो वायव्यकोण, ७ में हो तो पश्चिम, ८,९ में हो तो नैऋत्यकोण १० में हो तो दक्षिण तथा ११,१२ भाव में हो तो अग्निकोण में प्रसव के समय दीपक होता है। इसमें भी चर लग्न से चर दीपक, स्थिर लग्न से स्थिर तथा द्विस्वभावलग्न से घूमता हुआ दीपक प्रसवकाल में होता है। प्रसवकाल में चन्द्रमा प्रथम द्रेष्काण में हो तो दीपक में पूर्ण तेल भरा हुआ, द्वितीय से आधा भरा तथा तृतीय द्रेष्काण से तेलहीन दीपक जानना चाहिए।

सूर्य के राशि द्वारा दीपक के दिशा का ज्ञान

सूर्यराशि	१,२	३	४,५	६
दीपस्थान	पूर्व में	आग्नेय में	दक्षिण में	नैऋत्य कोण में
सूर्यराशि	७,८	९	१०,११	१२
दीपस्थान	पश्चिम में	वायव्य में	उत्तर में	पृथ्वी पर

जन्माङ्ग द्वारा घर में सूतिका कक्ष ज्ञान

प्रसवकाल में १,४,७,८,११ लग्न से पूर्व ९,१२,३,६ लग्न से उत्तर, २ लग्न से पश्चिम तथा ५,१० लग्न से दक्षिण दिशा में गृहमध्य सूतिका कक्ष जानना चाहिए।

प्रसवकाल में मातृकष्टज्ञान

चन्द्रयुक्त पापग्रह यदि जन्मकाल में लग्न से चतुर्थ या सप्तम में स्थित हो अथवा चन्द्रमा से चतुर्थ या सप्तम में पापग्रह स्थित हों तो प्रसवकाल में माता को कष्ट कहना चाहिए। प्रसव काल पापग्रहों के अधिकार में हो अथवा पापग्रहों से युत या दृष्ट ४ एवं ७ भाव हों तो (इसका ठीक-ठाक विचार कर) मातृ कष्ट कहना चाहिए।

सूर्य आदि ग्रहों के अधि एवं प्रत्यधि देवता

अ.दे.	ईश्वर	उमा	स्कन्द	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	यम	काल	चित्रगुप्त
ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
प्र.दे	अग्नि	अप	पृथिवी	विष्णु	इन्द्र	इंद्राणि	प्रजापति	सर्प	ब्रह्मा

प्रसव प्रकार ज्ञान

शीर्षोदय राशिलग्न में हो तो शिर से, पृष्ठोदय हो तो पैर एवं उभयोदय हो तो हाथ से प्रसव होता है। लग्न पर शुभ दृष्टि होने से सुखपूर्वक एवं पापदृष्टि होने पर कष्ट से प्रसव होता है। प्रसवकाल में सर्वप्रथम स्कन्ध दर्शन पर शिर, जंघा दर्शन से पैर एवं मणिबन्ध दर्शन से हाथ द्वारा प्रसव होता है।

लग्नेश एवं नवमांशेश वक्री होकर लग्न में हो अथवा परस्पर विपरीत गृह में हो तो कष्ट पूर्वक गर्भ का मोक्ष जानना चाहिए।

अन्तरिक्ष में जन्म का ज्ञान

यहा अन्तरिक्ष का अर्थ उच्चभूमि से है। ९,१२,६ तथा विशेषतः ३, लग्न में जन्म हो तो अन्तरिक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्माङ्ग द्वारा बालक के रोदन का ज्ञान

१,३,५ एवं ९ लग्न में जन्म से बालक पूर्व सोचकर बहुत होता है। ११,६,७ लग्न में अल्प तथा २,४,८,१०,१२ में जन्म से बालक ज्ञान बल से रोता है। रोदन का विचार चन्द्रमा एवं लग्न दोनों में जो बलवान हो उसके द्वारा करना चाहिए।

जन्माङ्ग द्वारा बालक के मस्तक का ज्ञान

जन्म काल में १,५,९ लग्न हो तो पूर्व, २,६,१० लग्न हो तो दक्षिण ३,११,७ लग्न हो तो पश्चिम तथा ४,८,१२ लग्न हो तो जन्मकाल में जातक का शिर उत्तर दिशा में होता है।

जन्माङ्ग द्वारा सूतिका के वस्त्र एवं चूड़ी का वर्ण ज्ञान

मेषादि बारह राशियों के लग्न से प्रसूता क्रमशः लाल, स्वच्छ, हरित, पाटल, पाण्डु, विचित्र, कृष्ण, पिशंग, पिंगल, अनेक वर्ण युक्त, धूम्र, एवं मलिन वर्ण का वस्त्र धारण किये हुए होती है। जितने ग्रहों की जन्मकाल में चतुर्थ एवं दशम भाव पर दृष्टि होती है, उतनी संख्यक उन ग्रह वर्णों की चूड़ियां प्रसूता के हाथ में होती है।

आधान कालिक चन्द्रमा द्वारा प्रसवकाल ज्ञानार्थ चक्र।				
चन्द्रराशियाँ				दिन
१	४	७	१०	२७१
२	५	८	११	२९७
३	६	९	१२	२८१ या २७६ दिन

प्रश्नकाल या आधान काल के द्वारा प्रसव कालिकचन्द्रमा का ज्ञान

गर्ग। प्रश्नकाल या आधान काल में चन्द्र जिस द्वादशांश में स्थित होता हो समय पूर्ति पर उतनी ही संख्यक राशि में चन्द्रमा के जाने पर प्रसव होता है।।

प्रमाण (सारावली)

यस्मिन् द्वादशभागे गर्भाधाने व्यवस्थितश्चन्द्रः। तत्तुल्यर्क्षे प्रसवो गर्भस्य नियतमादिशेत्प्राज्ञः।२। समुद्रजातकेऽपि। यतमे द्वादशभागेसुतिकास्त-त्संख्यके विश्वाविति। अत्रलग्नचन्द्रयोर्मध्ये यो बलवान् तस्य द्वादशांशकवशेन चन्द्रराशिर्ज्ञेयः इत्युक्तं लघुजातके लग्नेन्द्वोर्योबलवान् तस्यद्विर-सांशकान्विते विधौ प्रसवः।। अथकालज्ञानम्। तत्काले दिवसनिशासंज्ञो समुदेति राशिभागोयः। यावानुदयस्तावान् वाच्योदिवसस्य रात्रेर्वा।।

जातक तत्वोक्त सूत्रबद्ध सूतिका तत्व का ज्ञान

जन्मलग्न चन्द्रमा से अदृष्ट हो तो पिता के परोक्ष में जन्म होता है। सूर्य स्थिर राशि का होकर ८,९,११,१२ में होता है तो स्वदेशगत पिता के परोक्ष में तथा यदि चरराशिस्थ हो तो विदेश गत पिता के परोक्ष में जन्म होता है। सूर्य चर राशि का हो तो भी विदेशगत पितृकाल में जन्म होता है। शनि लग्न अथवा मंगल सप्तम में हो तो भी पितृ परोक्ष में जन्म होता है। सूर्य से त्रिकोण में शनि एवं मंगल पापग्रहों की राशि में स्थित हों तो जन्मकाल में जातक का पिता बन्धन में होता है। मातृ एवं पितृ कारक ग्रहों में जो बली हो उसके घर में जन्म होता है। मंगल से दृष्ट सूर्य बलवान हो तो बहुत दीपों वाले घर में जन्म होता है। चन्द्रमा से तेल तथा लग्न से दीप की बत्ती का ज्ञान करें। चरराशिस्थ सूर्य से चर, स्थिर से स्थिर एवं द्विस्वभाव से भ्रमणशील दीपक कहना चाहिए। शीर्षोदय लग्न में शिर, पृष्ठोदय में पैर, एवं उभयोदय में हाथ से प्रसव होता है। जन्मकाल एवं चन्द्रमा से चतुर्थ एवं सप्तम में पापग्रह हो तो मातृकष्ट होता है। केन्द्रस्थ बलीग्रह की दिशा में प्रसूतीगृह का द्वार होता है। सूर्यादि ग्रहों के बलवान रहनें पर क्रमशः काष्ठनिर्मित, नवीन, दग्ध, चित्र युक्त, मजबूत, मनोहर एवं प्राचीन प्रसूती गृह जानना चाहिए। १,२ लग्न से भवन के पूर्व, ३ से अग्निकोण, ४,५ से दक्षिण, ६ से नैऋत्य, ७,८ से पश्चिम, ९ से वायव्यकोण, १०,११ से उत्तर तथा १२ लग्न से ईशान कोंण में प्रसूती प्रकोष्ठ होता है। इसी प्रकार शैय्या विचार भी होता है। लग्न की दिशा में शैय्या का शिर तथा ३,६,९,१२ में पाये होतें हैं। जहाँ पापग्रह स्थित हों वहाँ शैय्या टूटी हुई होती है। लग्न से चन्द्रमा की बीच जितनें ग्रह हों उतनी उपसूतिकाएं होती है। उपसूतिका संख्या ज्ञान में वक्री एवं उच्चस्थ ग्रहसंख्या को त्रिगुणित, स्वराशि एवं स्वनवमांशगत संख्या को द्विगुणित तथा नीच एवं अस्तगत ग्रह संख्या को आधा करके रखना चाहिए। २,१,३,५ लग्न हो तो बहुत रोते हुए जन्म हो। लग्न में चन्द्रमा सभी ग्रहों से अदृष्ट हो तो निर्जन स्थान में जन्म कहें। दशम एवं चतुर्थ में शुभ ग्रह हो तो सुखपूर्वक तथा त्रिकोण एवं सप्तम में पापग्रह हो तो कष्ट से प्रसव होता है। चतुर्थ या दशम में सूर्य, मंगल एवं शनि का योग हो तो जन्म से पूर्व ही पिता का मरण जानें।

अनिष्ट नक्षत्रों में रोगोत्पत्ति की शान्ति- जिस अनिष्ट नक्षत्र में रोग उत्पन्न हो उसके अधिपति देवता की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर गन्धाक्षतपुष्प आदि से पूजन कर ब्राह्मणों को दान करने से उसकी शान्ति हो जाती है।

रोग से मुक्त होने पर स्नान मुहूर्त विचार- रे.पुन.कृ. उ३.स्वा.रो.श्ले. तथा मघा को छोड़कर अन्य नक्षत्रों, रिक्ता (४,९,१४) तिथियों, चरलग्नों तथा सू.मं.बु.बृ.श. वारों में चन्द्रमा के निर्बल तथा पापग्रहों के १।४।७।१०।५।९।११ में होने पर रोगी को रोग मुक्त होने पर स्नान करना चाहिए।

रोगोत्पत्ति में विशेष- आर्द्रा श्ले. ज्ये. श. भ. पू३. वि. ध. तथा कृत्तिका नक्षत्रों सू. मं. तथा शनिवारों, ४।९।१२।६।१४ तिथियों के योग काल में रोग उत्पन्न होने पर मृत्यु हो जाती है तथा प.ऽश्ले. मू. म. वि. कृ. एवं आर्द्रा नक्षत्रों में अगर सर्पदंश हो तो भी मृत्यु हो जाती है।

उत्पन्न रोग में शुभाशुभ विचार- स्वाती,श्ले, आर्द्रा पू३. ज्ये. नक्षत्रों, सू.मं.श. वारों एवं १।६।११। ४।९।१४ तिथियों के योग में रोगोत्पत्ति हो तो भगवान शंकर से रक्षित मनुष्य की भी मृत्यु हो जाती है।

कणमर्दन मुहूर्त विचार- अनु.श्र.मू.रे.पू.फा.ज्ये. रो. तथा मघा नक्षत्रों, शुभ तिथियों, शुभ वारों एवं शुभ लग्नों में कणमर्दन उत्तम होता है।

दुकान खोलने का मुहूर्त- अनु.उ३.पुष्य,रे.रो. मृ. ह. चि. अश्वि. नक्षत्रों एवं शुभ दिनों में व्यापार आरम्भ करना चाहिए।

धान्यसंग्रह मुहूर्त विचार- रो. उ३. स्वा. मू. रे. मृ. ह. अश्वि. ध. श्र. अनु. पुन. चि. पुष्य तथा शतभिषा नक्षत्रों, बृ. बु. चं. शु. वारों रिक्ता तथा अमावस्या से रहित तिथियों तथा स्थिर लग्नों में शुभ ग्रहों की स्थिति रहने पर धान्यसंग्रह शुभ होता है। वार प्रवृत्ति का विचार वारों के क्षण ज्ञानार्थ किया जाता है, परन्तु समस्त कार्यों में दिन का आरम्भ सूर्योदय काल से ही मान्य होता है।

धान्य स्थापन मुहूर्त विचार- मृ.पु.रे.अनु.श्र.ध.श. अश्वि.पुष्य.रो.उ३. नक्षत्रों, शुभतिथियों तथा सू.चं.बृ.शु. वारों में धान्य रखना तथा उ३.रो.ध.श. नक्षत्रों, शुभवारों, शुभ तिथियों एवं शुभलग्नों में धान्य निकालना शुभ होता है।

धान्यरोपण तथा फल पुष्पोत्तारण मुहूर्त- ह. चि. स्व. उ३. ध. रो. मू. पु. अश्वि. अनु. तथा मघा नक्षत्रों, शनि एवं भौम रहित दिवसों, शुभ तिथियों एवं शुभ लग्नों में उत्तम होता है।

वृक्ष-लता एवं गुल्म रोपण मुहूर्त- ह.पुष्य अश्वि. उ३. रो.वि.मृ.रे.चि.अनु.मू.शत. नक्षत्रों में गुरु के केन्द्रवर्ती तथा दशम को पाप ग्रह से रहित, तथा चन्द्रमा के जलचरराशि में रहने पर शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट लग्नों में शुभ होता है।

वृक्षारोपण मंत्र- ॐ वसुधेति शीतेतिपुण्यदेति धरेति च।। नमस्ते शुभगे देवि द्रुमोऽयं त्वयि रोप्यते।।

वाहनारोहण मुहूर्त- रे.अश्वि.श.स्वा.मृ.चि.पुन.श्र. ह. पुष्य नक्षत्रों तथा बृ.चं.सू.शु.बु. वारों में हाथी, घोड़ा, रथ तथा अन्य वाहनों पर प्रथम आरोहण करना शुभ होता है।

शस्त्रकर्म मुहूर्त- उ३.एवं रो.को छोड़कर अन्य नक्षत्रों तथा सूर्य एवं मंगलवारों में रवि एवं मंगल के केन्द्रस्थ रहने पर शस्त्रकर्म (आपरेशन) कराना शुभ होता है।

तैल लेपन में वर्ज्य काल- रवि, मंगल वारों, व्यतिपात, संक्रान्ति, वैधृति, षष्ठी एवं अष्टमी तिथि, भद्रा एवं पर्वकाल में तैल लेपन नहीं करना चाहिए।

तैल लेपन दोष का अपवाद- प्रतिदिन, उत्सव में वातरोग में, जलने-कटने पर तथा अभिमंत्रित, क्वाथरूप, सरसो के फूल से युक्त, तथा अन्य द्रव्य से युक्त तैल के लेपन में दोष नहीं लगता है।

	नैसर्गिकचक्र १			चलचक्र २			योगचक्र ३		
जन्म	६	४	३	६	४	३	३	०	०
कर्म	२	०	०	६	४	३	५	४	०
आधान	५	०	०	२	०	०	४	०	०
पिण्ड	६	४	३	५	०	०	२	०	१
छिद्र	६	४	३	६	४	३	३	०	०

वारक्रम से तेल लगाने का फल तथा अनिष्टनिवारण हेतु तेल में डालने वाले वस्तु का नाम

सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
ताप	सुकान्ति	मृत्यु	धनप्राप्ति	वृत्तिहानि	विपत्तिहानि	सुख	फल
पुष्प	०	मिट्टी	०	दूर्वा	गोमय	०	पातन

शुभाशुभ ज्ञानार्थ पञ्चस्वरा द्वारा शून्यानयन का उदाहरण

जन्म	कर्म	आधा	पिण्ड	छिद्र
उदित	भौम	भ्रात	सध्वा	अस्त
८१	८७	९३	९९	१०५
अ	इ	उ	ए	ओ
आ	ई	ऊ	ऐ	औ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह
नामाद्याक्षर	नामाद्याक्षर	नामाद्याक्षर	नामाद्याक्षर	नामाद्याक्षर

जिस व्यक्ति का जिस वर्ष में अरिष्ट ज्ञात करना हो उसकी गत वय की संख्या तथा वृषराशि से आरम्भ कर जन्मराशि तक की संख्या और वर्णस्वरचक्र के अनुसार जन्मनाम के प्रथमाक्षर से वर्णस्वराङ्क को जोड़कर तीन स्थानों पर रखें। पुनः प्रथम स्थान में २ से गुणाकर सात से द्वितीय स्थान में चार से गुणाकर ८ से एवं तृतीय स्थान में तीन से गुणाकर छः से भाग देवें। जो शेष प्राप्त हो उसे क्रमशः उर्ध्व मध्य तथा अधः स्थापित करने से जन्मकोष्ठ का निर्माण होता है। पुनः वयराशिस्वरांक योग में ५ जोड़कर उपर्युक्त अंको से गुणन एवं भजन की क्रिया करने से शेषांक द्वारा कर्मकोष्ठक, योग में ९ जोड़कर क्रिया करने से आधान चक्र, योग में १४ जोड़कर क्रिया करने से शेषांक द्वारा पिण्डचक्र तथा योग में २८ जोड़कर उक्त क्रिया करने से छिद्र कोष्ठक के अंक प्राप्त होते हैं।

उदाहरण- गतवर्ष ३३, जन्मराशि ६, नामाद्यवर्ण (ठ) का स्वराङ्क- १०५, वृषादिगणना के अनुसार राशि = ५, वयराशि एवं स्वाराङ्क योग = १४३, इसे तीन जगह क्रमशः २,४,३ से गुणा करने पर गुणनफल = २८६।५७२।४२९, इसमें क्रमशः ७।६।८ से भाग करने पर शेषफल = ६।४।३, इस शेष को जन्म कोष्ठचक्र में अधोधः क्रम से लिखें। कर्मकोष्ठक साधनार्थ पिण्डयोग (१४३) में ५ जोड़कर उपर्युक्त अंको से क्रमशः गुणा करने पर गुणनफल २९६।५९२।४४४ में भाजक संख्याओं में भाग देने से शेष = २।०।० इसे अधोध क्रम से नैसर्गिक कर्म कोष्ठक में स्थापित करें। आधान चक्र हेतु पिण्डयोग में ९ जोड़कर योगफल १५२ में गुणक से गुणाकर भाजक संख्याओं से भाग देने पर शेषफल = ५।०।०, पिण्ड चक्र हेतु पिण्डयोग में १४ जोड़कर योगफल में गुणन भजन की क्रिया करने से शेषफल = ६।४।३, पुनः छिद्रचक्र हेतु पिण्ड अंक में २८ जोड़कर योगफल में गुणन भजन से शेष =६।४।३, इस प्रकार शेषफलों को पूर्ववत स्थापित करने से नैसर्गिक चक्र बनता है। इसके बाद चलचक्र का आनयन कर योगजफल प्राप्त कर जो उत्पन्न होता है वह वर्षफल के रूप होता है। नैसर्गिक चक्र साधन के अन्य भी प्रकार है परन्तु अधिकांश विद्वानों ने इसी मत का समर्थन किया है। **योग चक्र साधन-** नैसर्गिक एवं चल दानों चक्रों के जन्मकोष्ठकाङ्क के योग १२।८।६ में २।४।३ से गुणाकर गुणनफल = २४।३२।१८ में ७।८।६ से भाग देने पर क्रमशः शेषफल ३।०।० योगचक्र के जन्मकोष्ठक के अंक होगें। इसी प्रकार कर्मस्वर योग साधन में दोनों चक्रो के कर्मकोष्ठक के योगफलों ८।४।३ से ५ ध्रुवांक जोड़ने से १३।९।८ में गुणन भजन करने से शेषफल = ५।४।०, आधान कोष्ठक के योगफलों में ०, पिण्ड में १४ तथा छिद्र कोष्ठक के योगफलों में २८ जोड़कर उक्त अंकों के गुणा भाग से क्रमशः शेषफल = ४।०।०, २।०।१, ३।०।० इस प्रकार योग चक्र के सभी कोष्ठक सिद्ध होते हैं। **चलचक्रसाधन-** में नैसर्गिक चक्र में साधित छिद्र कोष्ठक को जन्म, जन्म को कर्म कर्म को आधान, आधान को पिण्ड तथा पिण्ड को छिद्र कोष्ठक जानना चाहिए।

शक्ति यामलोक्त वाटिका चक्र- सूर्यनक्षत्र से दैनिक (चन्द्र) नक्षत्र तक गणना करनें से वाटिका चक्र होता है। इसके फल ज्ञान के लिए चक्र-

शक्ति यामलोक्त वाटिका चक्र

नक्षत्र संख्या	३	३	४	२	३	१	५	२	४
भाग	मूल	त्वचा	शाख	पत्र	शीर्ष	पूर्व	याम्य	पश्चिम	उत्तर
फल	रोग	धनागम	लाभ	दरिद्रता	शुभ	मृत्युकारक	उपाय	धनलाभ	लाभ

शक द्वारा अनुमान से अनेक पदार्थों के चैत्रादि बारह महीनों में समर्घता (सस्ती) एवं महर्घता (महँगी) ज्ञानार्थ ध्रुवांकचक्र।

सं	मासा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा	पौ	मा	फा
१	यव	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
२	चना	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
३	गोधूम	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
४	धान	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
५	तिल	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
६	खांड	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
७	गुड़	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
८	घृत	१	०	२	१	०	२	२	०	१	०	२	१
९	लवंग	१	०	२	१	३	२	२	०	१	१	२	१
१०	शहद	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
११	अरहर	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
१२	मूंग	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
१३	कपास	१	०	२	१	०	०	२	०	१	०	२	१
१४	रेंड़ी	१	०	२	१	०	०	२	०	१	०	२	१
१५	सूत	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
१६	वस्त्र	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
१७	कम्बल	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
१८	पाट	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
१९	सुपारी	१	०	२	१	०	०	२	०	१	०	२	०
२०	अलसी	०	२	१	०	२	२	१	२	१	२	१	०
२१	तैल	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
२२	फिटकरी	०	२	१	०	०	०	१	२	०	२	२	१
२३	हींग	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
२४	हल्दी	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
२५	लौंग	०	२	१	०	१	२	१	२	०	२	१	०
२६	जीरा	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
२७	अजवाइन	१	०	२	१	१	१	२	०	१	०	२	२
२८	कपूर	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
२९	कलुंजी	०	२	१	०	२	२	२	२	०	१	१	०
३०	धनिया	१	१	२	१	०	०	१	०	१	०	२	१

चैत्रादि जिस मास में जिस वस्तु की समर्घता-महर्घता का विचार करना हो उसके ध्रुवांक को १६४९ घटे हुए शक संख्या में जोड़कर तीन से भाग दे, एकादि शेष से क्रमशः मध्यम, वृद्धि तथा हानि होती है।

चैत्रादि १२ मासों के नाम

चैत्र वैकुण्ठ	वैशाख जनार्दन	ज्येष्ठ उपेन्द्र	आषाढ़ यज्ञपुरुष	श्रावण वासुदेव	भाद्रपद त्रिविक्रम	मास नाम
आश्विन योगीश	कार्तिक पुण्डरीकाक्ष	मार्गशीर्ष कृष्ण	पौष अनन्त	माघ अच्युत	फाल्गुन चक्रधर	मास नाम

।।अङ्गस्फुरण फल।।

स्थान	फल
मस्तकस्फुरण	पृथ्वीलाभ
ललाटस्फुरण	स्थानलाभ
स्कन्धस्फुरण	भोग,समृद्धि
भ्रुवमध्य	सुखप्राप्ति
भ्रुवयुग्म	महत्सौख्य
कपालस्फुरण	शुभप्राप्ति
नेत्र २ स्फुरण	धनप्राप्ति
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ
नेत्रपक्षस्फुरण	राज्यलाभ
नेत्रपक्षरस्फुरण	संग्राम में जय
नेत्रकोपांगदेशर	कलत्रलाभ
नासिकारस्फुरण	प्रीति,सुख
हस्तस्फुरण	सद्द्रव्यलाभ
वक्षस्फुरण	विजय
हृदयस्फुरण	वांछितसिद्धि
कटिस्फुरण	प्रमोदबल
कटिपार्श्व	प्रीतिरनुत्तमा
नाभिस्फुरण	स्त्रीनाश
आंत्रिकस्फुरण	कोशवृद्धि
भगस्फुरण	पतिप्राप्ति
कुक्षिस्फुरण	सुप्रीतिलाभ
उदरस्फुरण	कोशप्राप्ति
लिङ्गस्फुरण	स्त्रीलाभ
गुदस्फुरण	वाहनप्राप्तिं
वृषणस्फुरण	पुत्रलाभ
ओष्ठस्फुरण	प्रियवस्तुलाभ
हनुदेशस्फुरण	महत् भय
कण्ठस्फुरण	ऐश्वर्यलाभ
ग्रीवार्धस्फुरण	रिपुभय
पृष्ठस्फुरण	युद्धपराजय
कपोलस्फुरण	वरांगनाप्राप्ति
मुखस्फुरण	मित्रप्राप्ति
बाह्यस्फुरण	मधुरभोजन
बाहुमध्य	धनागम
वस्तिदेशस्फुरण	अभ्युदय
उरुस्फुरण	वस्त्रलाभ
जानुस्फुरण	शत्रुवृद्धि
जंघस्फुरण	स्वामिप्रीति
पादस्फुरण	स्थानलाभ
पादतलस्फुरण	नृपत्व
पादद्वयस्फुरण	अलाभ

स्त्रियों के प्रथम रजोदर्शन में श्रेष्ठ मास, पक्ष एवं तिथियाँ

मास	वैशाख, फाल्गुन, मार्गशीर्ष, श्रावण, आश्विन, माघ, ज्येष्ठ
पक्ष	शुक्ल पक्ष शुभ, कृष्ण पक्ष दशमी तक मध्यम, आगे अशुभ।
तिथियाँ	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ इन तिथियों में शुभ है।
वार	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र।
नक्षत्र	अश्वि. मृग. ध. रे. चि. अनु. ह. श्रव. पुष्य उ३. तथा रोहिणी में शुभ, मू. पुन. म. वि. कृ. इनमें मध्यम तथा शेष में अशुभ।
लग्न	२।३।४।६।७।९।१२ इन राशियों के लग्न में शुभ दृष्ट रहने पर शुभ, विवाह की तरह ग्रह स्थिति भी विचारणीय होती है।
विशेष	श्वेतवस्त्र में, दिन में, भद्रादि अशुभ से विरत कालों में शुभ।

रजोदर्शन में निषिद्ध समय

अष्टमी, द्वादशी, षष्ठी, रिक्ता (४,९,१४), अमावस्या तिथियों में, सूर्य संक्रान्ति, भद्रा, निद्रा, व्यतिपात, ग्रहण, वैधृति, रोगावस्था दूसरे के घर, मार्ग, अशुभ स्थल एवं काले वस्त्र में प्रथम रजोदर्शन अशुभ होता है अतः इसकी शान्ति करानी चाहिए। शान्ति से अशुभ फल नष्ट हो जाते हैं।

रजस्वला स्नान मुहूर्त्त विचार

ह.स्वा. अश्वि. मृ. अनु. ध. रा. उ३, ज्येष्ठा, नक्षत्रों, शुभ तिथियों, शुभ वारों एवं शुभ लग्नों में रजस्वला स्नान शुभ होता है।

गर्भाधान मुहूर्त्त विचार

नक्षत्र, तिथि एवं लग्न गण्डान्त, जन्मतारा, मू. ध. अश्वि. रे. नक्षत्र, ग्रहण दिन, व्यतिपात, वैधृति, माता-पिता का श्राद्ध दिन दिन, परिघ योग का पूर्वार्द्ध, अन्तरिक्षोत्पात हस्त नक्षत्र, जन्मराशि एवं लग्न से अष्टम तथा पापग्रह युक्त राशि या नक्षत्र, भद्रा, पर्व दिन, ४।६।९।१४ तिथियाँ संध्याकाल, सूर्य, भौम एवं शनिवार, रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रियाँ, इस सबको छोड़कर तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श. इन नक्षत्रों में लग्न से १।४।५।७।९।१० भावों में शुभ तथा ३।६।११ वें पाप ग्रहों की स्थिति में, लग्न के सू. मं. बृ. से दृष्ट रहने पर तथा चन्द्रमा के विषमराशि नवमांशगत होने पर युग्म (६।८।१०।१२) रात्रियाँ गर्भाधान में शुभ होती है। चि.पुन.अश्वि. एवं पुष्य नक्षत्र में मध्यम।

अशुभ रजोदर्शन निवृत्ति के लिए शान्ति

घी, दूर्वा, तिल एवं चावल मिश्रित शाकल्य से १०८ बार हवन कर स्वर्ण, गाय तथा भूमि का दान करें। विस्तृत विधि निबन्ध ग्रन्थों में वर्णित है।

जातकर्म के अनन्तर कृत्य

बारह दिन के बाद जातक का जन्माङ्ग देखकर अशुभ ग्रहों के शान्त्यर्थ उनका जप-दान कराना चाहिए। मूलोत्पन्न जातक के मुखावलोकन के पश्चात स्नान करें।

गर्भ के दश महीनों के स्वामी

१	२	३	४	५	६	मास
शु.	मं.	गु.	सू.	चं.	श.	स्वामी
७		८		९	१०	मास
बु.	गर्भलग्नपति			चं.	सू.	स्वामी

गर्भाधान संस्कार में विशेष

विवाह, गर्भाधान आदि संस्कारों में स्त्री का एवं अन्य संस्कारों एवं कर्मों में पति का चन्द्र बल देखना चाहिए।

षोडश संस्कार- गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकरण (मुण्डन), कर्णवेध, व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत), वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह अन्याधान तथा अन्त्येष्टि ये सनातन धर्म के प्रमुख सोलह संस्कार हैं।

सहोदरों का मंगलकार्य- नारद के अनुसार पुत्र विवाह के अनन्तर छः मास तक कन्या का विवाह वर्जित है। इसी प्रकार विवाह के बाद छः मास तक व्रतबन्ध भी नहीं करना चाहिए। वशिष्ठ के अनुसार मुण्डन के छः मास आभ्यन्तर विवाह शुभ होता है परन्तु विवाह के अनन्तर मुण्डन नहीं। पुत्र के विवाहानन्तर छः मास तक कन्या का विवाह शुभ प्रद नहीं होता परन्तु पुत्री विवाह के बाद पुत्र का विवाह शुभ है। संवत्सर परिवर्तन हो जाने पर छः मास के भीतर भी उक्त (वर्जित) कर्म किये जाते हैं।

पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त- गर्भ से दूसरे या तीसरे मास में पुंसवन तथा छठे या आठवें मास में मासपति के बलवान रहने पर सीमन्तोन्नयन संस्कार शुभ होता है इसमें गुरु-शुक्र के अस्तादि का विचार नहीं होता है।

शुभ वार	सू. मं. एवं बृ. वारों में मतान्तर से बुध एवं चन्द्र एवं शुक्र वारों में दम्पति के चन्द्र तथा तारा के शुद्ध रहने पर पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन शुभ होता है।
शुभनक्षत्र	मृ. पुष्य, मूल, श्रवण, पुन., हस्त, रेवती, रो. तथा उ३. नक्षत्रों में पुरुष के जन्मनक्षत्र को छोड़कर शुभ होता है।
शुभतिथियाँ	शुक्लपक्ष की १।२।३।५।७।१०।११।१३ तथा कृष्ण पक्ष की उपर्युक्त दशमी पर्यन्त, तिथियाँ पूर्वाह्न में शुभ होती है।
लग्न शुद्धि	ये दोनों संस्कार पुरुष ग्रहों के लग्न एवं नवमांश में, लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ एवं ३।६।११ में पापग्रहों की स्थिति में तथा चन्द्रमा के १।६।८।१२ से अन्यत्र रहने पर शुभ होते हैं।

सूतिका का सूतिका गृह में प्रवेश मुहूर्त्त

रो. मृ. पुष्य. स्वा. श. पुन. ह. ध. अनु. चि. अश्वि. उ३. श्र. इन नक्षत्रों, शुभवारों, रिक्ता, षष्ठी एवं अष्टमी रहित शुभ तिथियों, शुभलग्नों, लग्न से केन्द्रस्थ शुभग्रहों तथा ३।६।११ में पापग्रहों की स्थिति रहने पर एवं शुभग्रहों के नवमांश में शुभ होता है।

विहित कालातिक्रमण में जातकर्म मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ	१।२।३।५।६।७।१०।११।१३ तिथियों, में व्यतिपात, भद्रा, संक्रान्ति तथा दोषरहित रहने पर शुभ है।
शुभ वार	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वार शुभ है। जन्म दिन से ग्यारह एवं बारहवाँ दिन विशेष शुभ होता है।
शुभ नक्षत्र	मृ. रे. चि. अनु. उ३. रोहि. पुन. स्वा. ध. श्र. श. पुष्य, हस्त. अश्वि. इन नक्षत्रों तथा शुभ लग्नों में शुभ है।

स्तनपान मुहूर्त्त

उ३. रो. अश्वि. रे. पुष्य. पुन. अनु. ह. चि. मृ. ध. श्र. श. इन नक्षत्रों, शुभ दिनों, शुभतिथियों तथा स्थिर लग्नों में नवजात शिशु को प्रथम बार स्तनपान प्रशस्त होता है।

सूतिका पथ्य भक्षण मुहूर्त्त।। अन्नप्राशन मुहूर्त्त के नक्षत्रों तथा तिथियों में शुभ काल रहने पर उत्तम होता है।

बालक का प्रथम दुग्धपान (ऊपर का) समय

इक्कीसवें दिन बालक को शंख द्वारा दुग्धपान कराना चाहिए। अन्नप्राशन मुहूर्त्त में कहे हुए नक्षत्र, दिन लग्न एवं राशियों में शुभ होता है। इन्द्र, वायु, यम, शूल, पणि, वर्हिष, श्रवण, राक्षस के क्रम में मनुवासारोदित दिशाओं में अर्द्धयाम के अनुसार चर योगिनियाँ घूमती है।

ई.४	पू.१	आ.६
उ.७	चरयोगिनी	३द.
२वा.	५प.	८नै.

जन्म से प्रथमादि मासों में बालकों के दन्तोत्पत्ति का फल

मास	फल
१	स्वयंनाश
२	कनिष्ठ भ्रातृनाश
३	भगिनीनाश
४	मातृनाश
५	ज्येष्ठ भ्रातृनाश
६	सुखागम
७	तात से सुख
८	पुष्ठता
९	लक्ष्मीप्राप्ति
१०	सुख
११	सुख
१२	धनसम्पत्ति

सदन्त उत्पन्न बालक के लिए शास्त्रोचित शान्ति करानी चाहिए।

नामकरण मुहूर्त्त विचार- बृहस्पति के मत से सूतक की समाप्ति पर अपने कुल के अनुसार नामकरण करना चाहिए। अथवा वर्णक्रम से १२।१६।२० एवं २२वें दिन भी नामकरण शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र	मृ.रे.चि.अनु.उ३.रो.ह.पुन.पुष्य,अश्वि.अभि.स्वा.श्र.ध.श. शतभिष।
शुभ वार	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र।
शुभ तिथि	१।२।३।५।७।११।१२।१३ तिथियाँ भद्रादिदोष से रहित रहने पर शुभ है।
शुद्धलग्न	२।५।८।११ लग्न, अष्टम शुद्ध रहने पर शुभ है।
लग्नशुद्धि	लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थान में शुभ ग्रह एवं ३।६।११वें पापग्रह हों तथा ६।८।१२ ग्रह रहित हो तो पिता-पुत्र का तारा बल विचारकर दिन के पूर्वार्द्ध में नामकरण शुभ तथा मध्याह्न में मध्यम होता है।

विशेष- व्यतिपात, संक्रान्ति, अमावस्या, वैधृति, ग्रहण एवं श्राद्ध दिन, पक्ष की छिद्र एवं रिक्ता, पूर्णा तिथियाँ, शकुनी, किंस्तुघ्न, विष्टि करणों को छोड़कर अन्य उपर्युक्त तिथियाँ ही नामकरण में ग्राह्य है। विहितकालतिक्रमण के बाद गुरु-शुक्र के अस्तादि दोष से रहित उत्तरायण में शुभ होता है।

अन्नप्राशन मुहूर्त्त विचार

छठे से आरम्भ कर सम मासों में बालकों तथा पाचवें से आरम्भ कर विषम मासों में बालिकाओं को अन्नप्राशन कराना चाहिए।

शुभ नक्षत्र	(सप्तशलाका से विद्ध एवं ग्रहण नक्षत्रों को छोड़कर) रो. उ३. मृ. रे. चि. अनु. ह. पुष्य, अश्वि. अभि. पुन. श्र. ध. स्वा. श. शुभ है।
शुभ तिथियाँ	२।३।५।७।१०।१३।१५ शुभ तथा अन्य सम।
वार	चं. बु. बृ. शु. ये श्रेष्ठ तथा अन्य अशुभ।
लग्नशुद्धि	जन्म लग्न से आठवें लग्न-राशि एवं नवमांश को छोड़कर २।३।४।५।६।७।१०।११ लग्नों में शुभ होता है।

जल पूजन मुहूर्त्त- प्रसव दिन से एक मास की पूर्ति होने पर गुरु, शुक्र की अस्त स्थिति, चैत्र, पौष एवं अधिमास को छोड़कर अन्य मासों श्र.पुष्य,पुन.मृ.ह.मू.म. अनु. नक्षत्रों, चं.बु.गु. वारों तथा रिक्तावर्जित अन्य तिथियों में प्रसूता द्वारा जल पूजन शुभ होता है।

कर्णवेध मुहूर्त्त ज्ञानार्थ चक्र- जन्म दिवस से १२।१६वें दिन तथा उसके बाद ६।७।८वें महीने अथवा विषम वर्ष में कर्णवेध शुभ होता है। कर्णवेध में समवर्ष, चैत्र, पौष, अधिक जन्म तथा चतुर्मास, रिक्ता एवं अमावस्या तिथि और जन्मतारा का त्याग कर देना चाहिए।

शुभ नक्षत्र	पु.अश्वि.ह.पु.अ.मृ.चि.अनु.रे.श्र.ध. नक्षत्र, चन्द्रबल रहने पर शुभ होते हैं।
वार	चं. बु. बृ. तथा शुक्रवार उत्तम है।
शुभतिथियाँ	१।२।३।५।७।१०।१२।१३।१५ शुक्लपक्ष में तथा १।२।३।५।७।१० कृष्ण पक्ष में भद्रादि कुयोग के नहीं रहने पर शुभ होती है।
शुभ लग्न	२।३।४।६।७।९।१२ इन राशियों के लग्न तथा नवमांश शुभ है।
लग्न शुद्धि	लग्न से १।३।४।५।७।१० स्थानों में शुभ ग्रहों तथा ३।६।११वें पाप ग्रहों की स्थिति में अष्टम शुद्ध रहने पर शुभ है। लग्नस्थ गुरु कर्णवेध में विशेष शुभकारक होता है।

चौल (मुण्डन) मुहूर्त्त ज्ञापक चक्र- जन्मकाल से तीसरे से विषम वर्षों तथा चैत्र रहित उत्तरायण सूर्य के मासों में शुभ है। मनु के अनुसार प्रथम वर्ष में भी शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र	ज्ये.मृग.रे.चित्रा.हस्त,अश्वि.पुष्य,अभि.स्वाती,पुन.श्रवण,धनि.शत. इन नक्षत्रों में चन्द्रमा तथा तारा के अनुकूल रहने पर शुभ।
शुभ वार	चं. बु. गु. शु. भद्रादि कुयोग रहित।
शुभतिथियाँ	२।३।५।७।११।१३ शुक्ल पक्षीय ये तिथियाँ पूर्वाह्न में शुभ होती है।
शुभ लग्न	२।३।४।६।७।९।१२ लग्न तथा इनके नवमांश शुभ है।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त विचारार्थ चक्र

जन्म से पाँचवें वर्ष के उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा कुल देवताओं का सविधि पूजन तथा नमस्कार कर बालक को अक्षरारम्भ कराना चाहिए।

शुभ नक्षत्र	अश्वि. आर्द्रा, पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे. शुभ हैं।
शुभ वार	चं. बु. बृ. शु. इन वारों के दुर्योगादि रहित कालों में शुभ हैं।
शुभ तिथि	२।३।५।६।१०।११।१२ शुक्लपक्ष की भद्रा रहित तिथियाँ उत्तम है।
लग्न शुद्धि	२।३।६।९।१२ इन राशियों के लग्न तथा नवमांश अष्टम शुद्ध तथा कुम्भ नवमांश के बिना उत्तम हैं। दशम के गुरु एवं लग्न के बुध-शुक्र के बलवान रहने पर श्रेष्ठ होता है।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त विचार

सौम्यायन तथा कन्यार्क रहने पर आश्विन में बुध के बलवान रहने पर गणेश तथा सरस्वती का पूजन कर विद्यारम्भ शुभ होता है।

शुभ तिथि	शुक्ल पक्ष की २।३।५।६।१०।१२ तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथियाँ शुभ है।
शुभ वार	बु.सू.बृ. तथा शुक्रवार शुभ है।
शुभ नक्षत्र	अश्वि.पु.आ.अनु.मृ.पुन.ह.चि.स्व.र.ध.मू.पू३.श्ले.शत. शुभ है।
लग्न शुद्धि	२।३।६।९।१२ इन लग्नों में, लग्न से १।२।३।४।५।७।९।१०वें शुभ ग्रह, ३।६।११वें पापग्रहों तथा आठवाँ ग्रह वर्जित (शुद्ध) हो तो उत्तम होता है।

यज्ञोपवीत मुहूर्त्त बोधक चक्र

गुरु, शुक्र के वृद्ध-अस्त एवं शिशुत्व से अतिरिक्त उत्तरायण सूर्य के माघादि पाँच मासों में सूर्य, चन्द्र एवं गुरु की शुद्धि वश व्रतबन्ध शुभ होता है। चैत्र मास में मीन राशि का सूर्य रहने पर भी ब्राह्मणों का यज्ञोपवीत प्रशस्त है।

शुभ नक्षत्र	अश्वि. ह. पुष्य, उ३.रो. श्ले. स्वा. पुन. श्रव. ध. श. मू. चि. मृ. अनु. पूर्वा३. रेव. तथा आर्द्रा, वेध रहित नक्षत्र शुभ है।
शुभ तिथि	२।३।५।१०।११।१२ शुक्लपक्षीय तथा २।३।५ कृष्णपक्षीय भद्रादि रहित तिथियाँ मध्याह्न पर्यन्त शुभ है।
शुभ वार	सू. चं. बु. बृ. शु. इन वारों में रोगबाण के नहीं रहने पर शुभ।
लग्नशुद्धि	व्रतबन्ध में ३।६ में सभी पापग्रह, २।७।३।१०वें चन्द्रमा १।४।५।७।९।१० के शुभ ग्रह तथा ११वें सभी ग्रह शुभ होते हैं। व्रतबन्ध लग्न से ६।८ में चं.शु.बृ. तथा लग्नेश शुभ नहीं होते। चन्द्र एवं शुक्र १२वें में अशुभ, १।५।८ में पापग्रह अशुभ, ६।८।१२ शुभ ग्रह अशुभ तथा ३।६।११ के पापग्रह शुभ होते हैं। पूर्ण चन्द्रमा वृष एवं कर्कराशि का होकर लग्न में श्रेष्ठ होता है अन्यथा नहीं, लग्न में सूर्य भी शुभ है, परन्तु चन्द्र नवमांश न हो।

दीक्षाग्रहण मुहूर्त्त बोधक चक्र

मास	चै.वै.श्रा.आश्वि.का. मार्ग. माघ, फा. तथा अधिमास शुभ है।
शुभ नक्षत्र	अश्वि.रो.उ३.रे.अनु.पुष्य,स्वा.पुन.मू.श्र.ध.श.पू३.चि. इन नक्षत्रों में शुभ होता है।
शुभ वार	सू. चं. बु. बृ. शु. इन दिनों के भद्रादि दोष रहित काल में प्रशस्त है।
शुभ तिथि	२।३।५।७।१०।११।१२ शुक्ल पक्षीय तथा कृष्ण पक्षीय २।३।५ तिथियों में शुभ है।
शुभ लग्न	२।३।४।५।६।७।९।१२ इन लग्नों में चन्द्रमा तथा तारा के अनुकूल रहने पर करना चाहिए।
लग्न शुद्धि	लग्न से ३।६।११ में पापग्रह तथा १।४।५।७।९।१० में शुभ ग्रह शुभ हैं। अष्टमी को संक्रान्ति में तथा सूर्य एवं चन्द्रग्रहण काल में भी उत्तम होता है। गुरु-शुक्र, के उदयकाल में विशेष श्रेष्ठ है।

द्वादशस्थ चन्द्रमा का शुभत्व- विवाह, स्त्री प्रसङ्ग, अभिषेक, यात्रा, व्रतबन्ध, व्रत, उपवास आदि में गर्गादि महर्षियों के अनुसार द्वादशस्थ चन्द्रमा शुभ होता है।

देव प्रतिमा आदि भङ्ग होने पर शान्ति विधि- देव प्रतिमा, शिवलिंग, प्रसाद तथा कलश आदि के भंग होने पर स्वामी को मरणतुल्य कष्ट होता है। अतः इसकी शान्ति करनी चाहिए। शान्तिविधि- विधि पूर्वक कुण्डस्थापन कर चरु निर्माण पूर्वक यम देवता के लिए विधिवत हवन करें, पुनः दधि, खीर, घी एवं पीपल की लकड़ी द्वारा १०८ बार "इमारुद्रेति" मन्त्र से होम करें। पुनः माष, मूँग, तिल, घी एवं मधु द्वारा शक्ति बीज 'ह्रीं' मन्त्र से ५००० हवन करें। पुनः भूमि, गाय, बैल, स्वर्ण, धान्य एवं दक्षिणादान कर देवालय में पञ्चगव्य से स्नान कराना चाहिए। यम के लिए तिलौदन एवं पायस की बलि तथा ईशान के लिए भी बलि देवें। ऐसा करने से प्रतिमा भङ्ग दोष की शान्ति हो जाती है।

अन्य मुहूर्त्तविचार

क्रयविक्रय मुहूर्त्त- पुष्य,पू.भा.,उ.भा.,अनु.,श्रव.,अश्वि.,ह.,उ३.,मृग.,स्वा., श्ले.,रे. नक्षत्रों तथा चन्द्र, गुरु, शुक्र वारों में क्रय-विक्रय करना शुभ होता है।

कर्ज लेन-देन में त्याज्यकाल- मंगलवार को ऋणग्रहण तथा बुधवार को ऋण दान नहीं करना चाहिए। परन्तु इसके विपरीत मंगल को दान तथा बुध को ग्रहण शुभ होता है। हस्त नक्षत्र, रविवार एवं संक्रान्ति में दिया गया ऋण वृद्धि को प्राप्त होता है।

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त- ह.,चि.,अनु.,रे.,अश्वि.,मृग., एवं पुष्य नक्षत्रों बुध, गुरु तथा शुक्र वासरों एवं शुभ तिथियों में सेव्य-सेवक की योनियों में मैत्री रहने पर सेवाकार्य (नौकरी) आरम्भ करना श्रेष्ठ होता है।

गन्ना पेराई आरम्भ मुहूर्त्त विचार- सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र (वर्तमान) नक्षत्र तक गणना करने से जो संख्या प्राप्त हो उसका फल निम्न चक्र द्वारा देखें, अथोक्त शुभ नक्षत्रों में शुभ फल होता है।

नक्षत्र संख्या	४	२	२	१	५	५	२	६
फल	श्रीप्राप्ति	हानि	सर्वलाभ	क्षय	मृत्यु	शुभ	पीड़ा	धनक्षय

तैलिक यन्त्र (तेलमिल) लगाने का मुहूर्त्त- अश्वि.,पुन.,पुष्य.,ह.,चि.,अनु., ज्ये., ध.,रे. नक्षत्रों शुभवारों तथा रिक्तादि कुयोग रहित शुभ तिथियों में तैलिक यंत्र लगाना शुभ होता है।

संगीत एवं नृत्यारंभ मुहूर्त्त- अनु.,हस्त,रे.,ध.,उ३.,पुष्य,शत.,ज्ये. नक्षत्रों में नृत्य तथा गुरु दृष्ट बुध के लग्नस्थ तथा शुभ ग्रहों के चतुर्थस्थ होने पर संगीत आरम्भ श्रेष्ठ होता है।

राज्याभिषेक मुहूर्त्त- मृग.,रे.,चि.,अनु.,ह.,अश्वि.,पु.,अभि., ज्ये., उ३.,रो., नक्षत्रों में जन्मलग्न से दशमेश के शुभ ग्रहों या भौम के साथ बलवान रहने पर स्थिर एवं मिथुन लग्न में तथा भौम को छोड़कर अन्यवारों में राज्याभिषेक शुभ होता है।

पुत्र प्राप्त्यर्थ शुभ नक्षत्र- रजो दर्शन से सोलह रात्रियां, स्त्रीयों के लिए ऋतु संज्ञक होती है। इनमें विहित सम रात्रियों में पुरुष सम्बन्ध से पुत्र तथा विषम रात्रियों में सम्बन्ध से कन्या की प्राप्ति होती है। पुष्य.ध.मृ.रे.चि.अनु.स्व.मू.उ३.रो. अश्वि. म. ह. एवं उ.षा. नक्षत्रों में पतिप्रसङ्ग वाली स्त्री अनेक पुत्र पौत्रादि एवं गुणों से युक्त होकर चिरकाल तक जीवन यापन करती है।

नवचण्डी-शतचण्डी एवं सहस्रचण्डी आदि देवी के अराधना हेतु मुहूर्त्त विचार- **मास विचार**- वैशाख, फाल्गुन, माघ, श्रावण, मार्गशीर्ष, आश्विन एवं कार्तिक मास देवी पूजा में शुभप्रद होते हैं। **तिथि विचार**- ३।५।१०।१५।७।१३। १२।६।४।९ कृष्णाष्टमी एवं चतुर्दशी तिथियाँ शुभ होती है। **देवीपूजनार्थ शुभवार विचार**- सू.चं.बु.शु. एवं बृ. शुभ होते हैं। **देवीपूजनार्थ नक्षत्र विचार**- अश्वि.रो.स्वा.रे.ज्ये.उ३. पुष्य तथा पुनर्वसु नक्षत्र श्रेष्ठ हैं। **होम आहुति विचार**- सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक क्रमशः तीन-तीन नक्षत्र सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्रमा, मंगल, गुरु, राहु एवं केतु के होते हैं। पाप ग्रहों के नक्षत्रों में आहुति देना शुभ नहीं होता हैं। **आहुतिदोष परिहार**- विवाह, यज्ञ, व्रतबंध, दीक्षा, सीमंतोन्नयन, चण्डी एवं गृहवास्तु शान्ति में उपर कथित सूर्य, शनि, मंगल, राहु एवं केतु दोष नहीं लगता है। **दुर्गा होम में आहुति चक्र विचार**- सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक क्रमशः तीन-तीन नक्षत्र ब्राह्मी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चण्डी, मेधा, माहेश्वरी तथा नारसिंही के होते हैं। इनमें हवन करने से क्रमशः श्री एवं पुत्र, शोक, भय, धन, राज्य सुख, रोग, विद्या सुख एवं राजसम्मान की प्राप्ति एवं लाभ होता है।

देवी होम में आहुति चक्र

ब्रा.	कौ.	वै.	वा.	ऐ.	चं.	मे.	मा.	ना.
३	३	३	३	३	३	३	३	३
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७
श्रे.	ने.	ने.	श्रे.	श्रे.	ने.	श्रे.	श्रे.	श्रे.
धन पुत्र	शोक	भय	धन	राज्य सुख	रोग	विद्या	सुख	राज सम्मा.

खट्वारोहण मुहूर्त्त विचार- जन्मदिन से १०।१२।१६ तथा २२वें दिन। मृ. रे. चि. अनु. उ३. रो. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. नक्षत्रों, शुभ वासरों, रिक्ता अमावस्या रहित तिथियों में पूर्व दिशा में शिर रखकर बालक को खट्वारोहण कराना शुभ होता है।

सूतिका का क्वाथ एवं औषधिभक्षण मुहूर्त्त-ह. अश्वि.पु.अभि.मृ.अनु.रे.चि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.मू. नक्षत्रों, सू.चं.बृ.शु. वासरों, रिक्ता तथा अमावस्या रहित तिथियों, ३।६।९।१२ लग्नों में, लग्न से ७।८।१२ भावों के शुद्ध रहने पर, पुरुष लग्न में पूर्ण चन्द्रमा के स्थित रहने पर औषधि रस भक्षण उत्तम होता है परन्तु जन्म राशि में ये सब भक्षण नहीं करना चाहिए।

सूतिका स्नान मुहूर्त्त विचार- रे.उ३.रो.हस्त.स्वा. अश्वि. तथा अनु. नक्षत्रों, सूर्य, भौम एवं गुरु वारों १।२।३।५।७।१०।१३।१५ तिथियों में सूतिका स्नान उत्तम होता है। आर्द्रा, पुन.पु.श्र. म. भ. वि. कृ. मू. चि. नक्षत्रों बुध एवं शनि वारों, ४।६।८।९।१२।१४ तिथियों में अशुभ तथा अन्य वार, तिथि, नक्षत्रों में मध्यम होता है।

जातक को प्रथम बार भूमि पर बैठाने का मुहूर्त्त- सर्व प्रथम पृथिवी तथा वराह का पूजन कर पांचवें मास में भौम के बलवान रहने पर उ३. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि.ह.पुष्य.अभि.नक्षत्रों, शुभ दिनों, रिक्ता अमावस्या रहित तिथियों तथा स्थिर लग्नों में कटिसूत्र (करधनी) बाँधकर प्रथम भूम्युपवेशन कराना चाहिए। उपवेशन मंत्र- रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभं। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये। भूम्युपवेशन के समय ही बालक के समक्ष-वस्त्र, शस्त्र, पुस्तक, लेखनी, स्वर्ण एवं चाँदी रखकर इनमें से जो बालक ग्रहण करे उसके अनुसार उसकी वृत्ति भी जान लेनी चाहिए।

निष्क्रमण मुहूर्त्त- जन्म से चौथे मास में यात्रा के मुहूर्त्त में अथवा बारहवें दिन प्रथम निष्क्रमण शुभ होता है।

विवाह मण्डप निर्माण का परिहार- धनिष्ठा नक्षत्र के अन्त की ५ घटी, शतभिषा नक्षत्र के आदि की ५ घटी, पूर्वाभाद्रपद के अन्त की ५ घटी, उत्तराभाद्रपद के आदि की ५ घटी तथा सम्पूर्ण रेवती नक्षत्र को छोड़कर विवाह में मण्डप निर्माण किया जा सकता है।

देवप्रतिष्ठा में मास विचार- चै.,फाल्गुन,ज्येष्ठ, वैशाख एवं माघ मास में समस्त देवों की प्रतिष्ठा शुभ दायक होती है। **प्रतिष्ठा के नक्षत्र**- ह.चि.स्वा. अनु. श्र.ध.श.रे. अ.पुन.पुष्य, उ३. रो. एवं मृग. नक्षत्रों में स्थापना शुभ होती है। **तिथि विचार**- जिस देवता का जो दिन होता है उसके दिन में उसकी प्रतिष्ठा करनी चाहिए। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३ एवं पूर्णिमा तिथि शुभ होती है। **पक्षविचार**- उत्तरायण का शुक्ल पक्ष शुभ है। **वार विचार**- चं.बृ.शु. तथा बुध प्रतिष्ठा एवं यज्ञ कर्म में शुभ होते हैं। **देव स्थापन में लग्न शुद्धि**- सिंह लग्न में सूर्य, मिथुन में शिव, कन्या में नारायण, कुम्भ में ब्रह्मा, द्विस्वभाव लग्नों में देवियों की स्थिर लग्न में क्षुद्र देव तथा समस्त देवताओं की स्थिर लग्न में स्थापना शुभ कारक होती है।

सूर्य नक्षत्र से शिखर स्थापन चक्र

९	मू.
९	मं.
९	कं.

श्री संवत् २०७२ शक १९३७, वैशाखकृष्णा ति. १० मंगल को दि. ३।२५ इष्ट पर सिंह लग्न में जगल्लग्न प्रवेश होगा।

जगल्लग्न फल विचार- लग्न के बलवान, अपने अधिपति या शुभ ग्रहों से युत दृष्ट होने, तथा शुभ ग्रहों के केन्द्रस्थ होने से उस वर्ष समस्त वस्तु सस्ती तथा विपरीत अवस्था में महँगी रहती है।

सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के समय- लग्नेश शुभग्रह अपनी उच्चराशि या स्वराशि का होकर केन्द्रस्थान में शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर बलवान हो तो उस वर्ष लोक में सुख, शुभता, आरोग्यता एवं सुवृष्टि होती है। परन्तु वर्ष प्रवेशकालिक लग्नेश यदि क्रूरराशिस्थ होकर क्रूरग्रहों के प्रभाव में हो तो प्रजाजनों में शारीरिक कष्ट तथा भय व्याप्त रहता है तथा अन्न महँगे होते है। राका पूर्णिमा एवं कुहू अमावस्या के समय वर्ष प्रवेश में लग्नेश शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो उस वर्ष सौख्य प्रद तथा पापग्रहों से युत दृष्ट होने पर रोग एवं राजभय कारक होते हैं। सूर्य के वर्ष प्रवेश कालिक लग्न स्वराशि से या केन्द्र में चन्द्रमा यदि पापग्रहों के साथ इत्थसाल कर रहा हो एवं युत या दृष्ट हो तो लोक में रोग एवं कष्ट व्याप्त होता है।

जन्मलग्न एवं वर्ष लग्न से जगल्लग्न यदि ८ या १२वें हो तो वह वर्ष शुभप्रद नहीं होता। जन्मलग्न से वर्ष प्रवेश कालिक लग्न बलवान होकर जिस भाव में होता है उस भाव की वृद्धि करता है। तथा विपरीत रहने पर हानि करता है। इस क्रम में जन्मलग्न से वर्ष प्रवेश कालिक लग्न के प्रथमादि भावों में रहने पर क्रमशः देहसुख, अर्थलाभ, कुटुम्बवृद्धि, सुहृतप्रप्ति एवं सुखवृद्धि, पुत्रप्राप्ति या पुत्र से सुख, शत्रुभय एवं पराजय, स्त्रीसुख की प्राप्ति, रोगभय एवं मृत्युतुल्य कष्ट, धर्मप्राप्ति, वित्त, सुख एवं सन्तान प्राप्ति, लाभ एवं सुख तथा धनक्षय एवं दरिद्रता कारक होता है।

पुत्र/पुत्री गोद लेने का मुहूर्त्त

ह.चि.स्वा.वि.अनु.अश्वि.धनि. तथा पुष्य नक्षत्रों, सू.मं.वृ.शु. वासरों रिक्ता रहित तिथियों तथा ८।११।४।२ लग्नों में पुत्र गोद लेना शुभ होता है।

नाड़ीपरिहार-द्विर्द्वादश दोष में ताम्र एवं स्वर्ण, षडाष्टक में दो गाय ।। **वर-कन्या के नक्षत्र मेलाकपयोगी होड़ा चक्र** ।। नवपंचम में चाँदी-काँसा एवं नाड़ी तथा पुजिभ दोष में गौ एवं स्वर्ण का दान कर विवाह करना चाहिए।

विविध वर्ण	चू. चे. चो.ला	ली.लू. ले.लो	अ. ई. उ. ए.	ओ.वा. वी.वू.	वे.वो. का.की.	कु.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.	मा.मी. मू.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रू.रे. रो.ता.	ती.तू. ते.तो.	ना.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.	ये.यो. भा.भी	भू.ध. फ.ढ.	भे.भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू	से.सो. दा.दी	दू.थ. झ.ञ.	दे.दो. चा.ची
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृग	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
राशि	मेष	मेष	मेष१ वृष३	वृष	वृष२ मिथुन२	मिथुन	मिथु३ कर्क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह१ कन्या३	कन्या	कन्या२ तुला२	तुला	तुला३ वृश्चि१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	धनु१ मकर३	मकर	मकर२ कुम्भ२	कुम्भ	कुम्भ३ मीन१	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्प	चतु२ मान२	मानव	मान३ जल१	जलचर	जलचर	चतुष्प	चतुष्प	चतु१ मान३	मानव	मानव	मानव	मानव३ कीट१	कीट	कीट	मानव	मान।। चतु३।।	चतुष्प	चतु१।। जल२।।	जचर२ मान२	मानव	मान३ जल१	चलच	जलच
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मर्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
यो.वै	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	भौम	भौम	भौम१ शुक्र३	शुक्र	शुक्र२ बुध२	बुध	बुध३ चन्द्र१	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सूर्य१ बुध३	बुध	बुध२ शुक्र२	शुक्र	शुक्र३ भौम१	भौम	भौम	गुरु	गुरु	गुरु१ शनि३	शनि	शनि	शनि	शनि३ गुरु१	गुरु	गुरु
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

गुरु एवं सूर्य बल का विचार- कन्या के विवाह तथा बटुक के उपनयन में गुरु बल एवं कुमार के विवाह तथा उपनयन में सूर्य तथा उपर्युक्त सर्वत्र चन्द्र बल का विचार करना चाहिए।

१ वर्ण सम्बन्धी गुण। (कन्या का वर्ण)

वर्ण	वि.	क्ष.	वै.	शू.
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्य सम्बन्धी गुण (कन्या का)

वश्य	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्प	२	१	१	०	१
मानव	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

३ ताराओं से प्राप्त गुण। (वर की तारा) (कन्या की तारा)

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

विवाह में रवि, चन्द्र एवं गुरु शुद्धि ज्ञानार्थ चक्र

रवि	चन्द्र	गुरु	ग्रह
३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११	शुभ स्थान
१।२।५।७।९	१।२।५।९	१।३।१०।६	पूज्य स्थान
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्दित स्थान

४ योनिकूट के गुण ज्ञानार्थ चक्र *(उपर वर तथा बगल से कन्या की योनि)*

योनियाँ	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	२	३	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	१	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	२	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	३	२	२	२	२	४

नैसर्गिक ग्रहमैत्री ज्ञानार्थ चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
चं.मं.बृ.	सू.बु.	सू.चं.बृ.	सू.शु.	सू.मं.चं.	बु.श.	बु.शु.	मित्र
बुध	मं.गु. शु.श.	शुक्र शनि	मं.बृ. शनि	शनि	भौम गुरु	गुरु	सम
शनि				शुक्र	चन्द्र	चं.मं.	

६ गण सम्बन्धि गुण (वर के; कन्या का)

गण	दे.	म.	रा.
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

८ नाड़ी के गुण (वर के; कन्या का)

नाड़ी	आ.	म.	अं.
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त	८	८	०

अष्टवर्ग एवं उनके अधिपति

ट.५	च.५	क.५	अ.७
श्वान	सिंह	मार्जार	गरुड़
श.४	य.४	प.५	त.५
अवि.	मृग	मूषक	सर्प

७ राशि कूट के गुण। *(उपर वर तथा बगल से कन्या का राशिकूट)*

राशियाँ	१मे	२वृ	३मि	४क	५सि	६कं	७तु	८वृ	९ध	१०म	११कु	१२मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

५ ग्रहमैत्री गुण। (वर के राशीश) (कन्या के राशीश)

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	।।	।।
मंगल	५	४	५	।।	५	३	।।
बुध	४	१	।।	५	।।	५	४
गुरु	५	४	५	।।	५	।।	३
शुक्र	०	।।	३	५	।।	५	५
शनि	०	।।	।।	४	३	५	५

गुणविचार

मेलापक द्वारा प्राप्त वर कन्या के गुणों का योग सोलह से न्यून होने पर अशुभ, उसके बाद बीस तक मध्यम, तीस तक उत्तम तथा तदनन्तर उत्तमोत्तम होता है।

मतान्तर से बीस से न्यून गुण प्राप्त कूट निन्द्य २५ तक मध्यम, ३० तक उत्तम एवं तदनन्तर उत्तमोत्तम होता है। अन्य विशेष- वर कन्या की एक राशि तथा पृथक नक्षत्र रहने पर अगर दोनों के चतुर्थ चरण हों तो अतीव शुभ।

नक्षत्र मेलापक चक्र। बगल में कन्या उपर वर के नक्षत्र

नक्षत्राणि	अश्वि.	भर.	कृ.१	कृ.३	रोहि.	मृग.२	मृ.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	श्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.३	हस्त	चि.२	चि.२	स्वा	वि.३	वि.१	अनु.	ज्ये.	मूल	पूषा।।	पूषा३।।	उषा१	उषा३	श्र.१।।	श्र.२।।	धनि२	धनि२	शत.	पू.भा३	पू.भा१	उ.भा.	रेवती
अश्विनी	२८	३३	२८।।	१८।।	२१।।	२३।।	२६	१७	१९	२३।।	३१।।	२८	२१	२५	१५।।	११	१०	१३	२२।।	२७।।	२२।।	१८।।	२५।।	१४	१३	२५	२६	२४।।	२६	२७	२६	२०	२०	१५	१६	१४।।	२४।।	२६
भरणी	३४	२८	२९	१९	२२।।	१४।।	१८	२६	२७	३१।।	२३।।	२५।।	२०	१८	२६	२२।।	२०	५	१४।।	२९।।	२२।।	१८।।	२६।।	२८।।	२०	१९	२०	२७	२८।।	२७	२६	१०	१०	२०	२४	२२।।	१७।।	२६।।
कृत्तिका१	२७।।	२९	२८	१८	११	१७।।	२२	३०	२१	२५।।	२६।।	२३।।	२४।।	१८	२०	१५।।	१५।।	१८	२७।।	१५।।	१९।।	१५।।	१९।।	२५।।	२४।।	१७।।	१९	१४	१५।।	१२।।	११।।	२५	२५	२७	१९	१७।।	१९।।	११।।
कृत्तिका३	१८।।	२०	१९	२८	२१	२७।।	१८।।	१७।।	१८।।	२२	२३	२०	१६।।	२०	२२	२२	३१	२३।।	२२।।	२०।।	२४।।	२०।।	२४।।	३०।।	२०	२३।।	२४।।	९।।	१४	११	१०	२३।।	२९।।	३१।।	२३।।	२०	२२	१४
रोहिणी	२३।।	२३।।	१२	२१	२८	३६	२७	२३।।	२३।।	२७	२८	१३	२०।।	२४।।	२६	१५।।	२६	२०	१९	१५।।	९।।	१५।।	२९।।	२३।।	१४	१९।।	२१	१२।।	१७	२९	१८	२०	२६	२४।।	३०।।	२७	२६	१९
मृगशिर२	२३।।	१४।।	२९।।	२८।।	३५	२८	१९	२४	२३।।	२७	२०	२२	१९।।	१५।।	२३।।	२२।।	२६	१३	१२	२५	१८।।	२४।।	२२।।	२४।।	१५	२०।।	१२	१८	२२।।	२७	२६	१३	१९	२७	२९।।	२६	१७	२७
मृगशिर२	२७	१८	२३	२०।।	२७	२०	२८	३३	३२।।	२०	१३	१५	२३।।	२१।।	२४।।	३०।।	३४	२१	१४	२७	२०।।	२५	१२	१५	२३	१९	१८	२४	२०।।	२५	२४।।	११।।	१२	२१	२३।।	२५।।	१६।।	२६।।
आर्द्रा	१९	२७	२१	१८।।	२४।।	२६	३४	२८	२५	१२।।	२०	१३	२२।।	२८।।	२१।।	२४।।	२४।।	२७	२०	२७	२०	१४।।	२८	४	१६	२८	२७	२७	२३।।	२३।।	२३	१७।।	१९	१२	१७	१९	२६।।	२६।।
पुनर्वसु३	१९	२६	२३	२०।।	२३।।	२४।।	३२।।	२४	२८	१५।।	२२।।	१७	२२।।	२६।।	२०।।	२३।।	२४।।	२६।।	१९।।	२७	२१	१५।।	२१।।	७	१६	२७	२६	२६	२२।।	२३।।	२३	१८	१९।।	१३	१७	१९	२७	२६।।
पुनर्वसु१	२१।।	२८।।	२५।।	२२	२५	२६	१९	१०।।	१४।।	२८	३५	२९।।	१६।।	२०।।	१५।।	१७	१८	२०	१९।।	२७	२२	१९	२५	१०।।	८	२२	२१।।	२१।।	२५	२६	२७	२२	१३।।	७	११	१७	२५	२४।।
पुष्य	३०।।	२१।।	२६।।	२३	२६	१९	१२	१८	२१।।	३५	२८	३०	१७।।	१३।।	२३।।	२६	२७	१२	११।।	२६।।	२२	१९	१८	२१	१७	२१	१९।।	२२।।	२६	२४	२५	१३	४।।	१४।।	१८	२४	१८	२७
श्लेषा	२५	२३।।	२२।।	१९	१२	२०	१३	१२	१५	२८।।	२९	२८	१५	१५।।	१७।।	२०	२०	२५	२४।।	११।।	१६।।	१४।।	१९	२५	२२।।	१६	१६।।	८।।	१२	१२	१३	२७	१८।।	१८।।	१२।।	१८।।	२०	१२
मघा	१९	१९	१५।।	१६।।	९।।	१७।।	२१।।	२१।।	२०।।	१६।।	१८।।	१६	२८	३०	२६।।	१५।।	१५।।	२२।।	२४।।	१०।।	१६।।	२२।।	२४।।	३२	२४	१९	१९	९।।	३।।	३।।	४।।	१७।।	२३।।	२४।।	१७।।	१७।।	१८।।	१२
पू.फा.	२५	१७	२१	२०	२३।।	१५।।	१९।।	२७।।	२६।।	२२।।	१६।।	१६।।	३०	२८	३४	२३	२२।।	७।।	१०।।	२४।।	१८।।	२४।।	२२।।	२४।।	१८	१७	१७	२५	१९	१७।।	१८।।	३।।	९।।	१८।।	२३।।	२३।।	१६।।	२४।।
उ.फा.१	१६।।	२५	२०	२१	२५	२३।।	२७।।	२०।।	२०।।	१६।।	२५।।	१८।।	२६।।	३४	२८	१७	१६	१३।।	१६।।	२५।।	१६।।	२२।।	३१।।	२७।।	१९।।	२५	२५	२६	२०	१९	२०	११।।	१७।।	११।।	१५।।	१५।।	२६।।	२४।।
उ.फा.३	१३	२१।।	१६।।	२१	२५	२२।।	३०।।	२३।।	२३।।	१९	२८	२१	१६।।	२४	१८	२८	२७	२४।।	१६।।	२५।।	१६।।	१९	२८	१४	१४	२९।।	२८।।	२९।।	२६	२५	२४।।	१६	१६।।	२०।।	१४।।	१७।।	२८।।	२६।।
हस्त	११	२०	१७।।	२२	२५	२६	३३	२२।।	२३।।	१९	२८	२२	१७।।	२१।।	१६	२६	२९	२८	२०	२६।।	१८।।	२२	२७	१४	२५	२७	२६	२७।।	२४	२५	२४।।	२०।।	२२	९।।	१५।।	१८।।	२६।।	२७।।
चित्रा२	१३	६	२१	२३।।	२०	१२	१९	२६	२४।।	२०	१२	२६	२२।।	८।।	१४।।	२४।।	२७	२८	२०	१९	२६।।	२९	१३	२७	२७	१३	१२	२१	१७।।	१८	१७।।	१६।।	१७	२४	१७।।	२०	१०।।	२०।।
चित्रा२	२२।।	१५।।	२८।।	२३।।	२०	१२	१३	२०	१८।।	१९।।	११।।	२५।।	२५।।	११।।	१७।।	२७।।	२०	२१	२८	२७	३४।।	२४।।	८।।	२२।।	२७	१३	१२	२१	२५।।	२६	२५।।	२४।।	१९	२६	१९।।	१३।।	३।।	१३।।
स्वाती	२६।।	२९।।	२७।।	१२।।	१५।।	२६	२७	२६	२७	२८	२७।।	१३।।	१२।।	२४।।	२५।।	२५।।	२७।।	२१	२८	२८	२०	१०	२२।।	१७।।	२३	२७	२६	१८	२२।।	२३।।	२३	२८।।	२३	२१	२७	२१	१९।।	१२।।
विशाखा३	२२।।	२३।।	२०।।	१५।।	२०।।	१८।।	२९।।	२०	२०	२१	२१	१७।।	१७।।	१९।।	१७।।	१७।।	१८।।	२७।।	३४।।	१९।।	२८	१८	१८	२२।।	२७	२१	२०	१३	१७।।	१६।।	१६	३१	२५।।	२६	२१	१५	१३	५।।
विशाखा१	१६।।	१७।।	१४।।	१९।।	२४।।	२२।।	१३	१३।।	१३।।	१८	१८	१४।।	२१।।	२३।।	२१।।	१८	१९	२८	२३।।	८	१७	२८	२८	३२।।	२२।।	२५।।	१६।।	९।।	१२	११	११	२६	२६	२६।।	२१।।	२०	१८	१०।।
अनुराधा	२४।।	१४।।	१९।।	२४।।	२७।।	२०।।	११	१६	२०।।	२५	१८	२०	२४।।	२०।।	२९।।	२६	२६	१२	७।।	२१।।	१७	२८	२८	३२	२६।।	२३।।	१४।।	२३।।	२५	२६	२६	१३	१३	२२	२६।।	२५	१८	२६
ज्येष्ठा	१२	१७।।	२४।।	२९।।	२२।।	२२।।	१३	३	५	९।।	२०	२५	३१	२३।।	१६।।	१३	१२	२५	२०।।	१५।।	२०।।	३१।।	३०	२८	१५	१६।।	१७।।	१७।।	२०	२०	२०	२६	२६	१९	१२	१०।।	२५	२०
मूल	१२	२०	२४।।	१९	१३	१३	२१	१५	१२	८	१९	२३।।	२४	१८	९।।	१३	१३	२६	२६	२१	२६	२३।।	१६।।	१६	२८	२८	२७	२५।।	१५।।	२५।।	१५	२०	२८।।	२१।।	१४।।	१६	२५	२६।।
पू.षा.।।	२६	१९	१८	१२।।	१९	११	१९	२७	२७	२३	१३	१७	१९	१७	२५	२८।।	२७	१२	१२	२७	२०	१७।।	१६।।	१८।।	२८	२८	२७	३३	२३	२३।।	२३	८	१६।।	२३।।	३०।।	३२	२३	३२
पू.षा.३।।	२७	२०	१९	१३।।	२०	१२	१८	२६	२६	२३।।	१३।।	१७।।	१९	१७	२५	२७।।	२६	११	११	२६	१९	१७।।	१६।।	१८।।	२७	२६।।	२८	३४	२४	२४।।	२३।।	८।।	१५।।	२२।।	२९।।	३२।।	२३	३२।।
उ.षा.१	२५।।	२७	१४	८।।	११।।	१८	२४	२६	२६	२३।।	२४।।	९।।	९।।	२५	२६	२८।।	२७।।	२०	२०	१८	१२	१०।।	२४।।	१८।।	२५।।	३३।।	३५	२८	१८	१६	१५	१५।।	२२।।	२२।।	२८।।	३१।।	३२।।	२३।।
उ.षा.३	२८	२९।।	२६।।	१४	१७	२३।।	२०।।	२२।।	२२।।	२७	२८	१३	४।।	२२	२१	२६	२५	१७।।	२४।।	२२।।	२६।।	१३	२७	२१	२६।।	२४।।	२६	१९	२८	२६	२५	२५।।	१७।।	२७।।	२३।।	२९।।	३०।।	२१।।
श्रवण२।।	२८	२८	१४।।	१२	१८	२७।।	२४	२१।।	२२।।	२७	२५	१४	५।।	१७।।	१९	२४	२५	२१	२६	२२।।	१६।।	१३	२७	२२	२७।।	२३	२४।।	१६	२५	२८	२७	२९	२१	१८।।	२३।।	२९।।	२८।।	२२।।
श्रवण१।।	२७	२७	१३।।	११	१७	२६	२३।।	२१	२२	२८	२६	१५	६।।	१८।।	२०	२३।।	२४।।	१८।।	२५।।	२२	१६	१३	२७	२२	१७	२३	२३।।	१५	२४	२७	२८	३०	३०।।	१८	२३	३०।।	२१।।	२३।।
धनिष्ठा२	२०	११।।	२६	२३।।	२०	१२	९।।	१६।।	१६	२२	१३	२८	१८।।	४।।	१२।।	१६	१९।।	१६।।	२३।।	२६।।	३०	२७	१३	२७	२१	२१	८।।	१६।।	२५।।	२७	२७	२८	१८।।	२३।।	१९	२६।।	१५।।	२२।।
धनिष्ठा२	२०	११	२६	३०।।	२७	१९	१२	१९	१८।।	१३।।	४।।	१९।।	२४।।	१०।।	१८।।	१७।।	२१	१८	१९	२०	२५।।	२७	१३	२७	२९।।	१७।।	२५।।	२३।।	१८।।	२०	१९।।	१८।।	२८	३३	२८।।	१८	७	१४
शतभिष	१५	२१	२८	३२।।	२५।।	२७	२०	१२	१३	८	१४।।	२०।।	२६।।	२०।।	१२।।	११।।	९।।	२५	२६	१९	२६	२७।।	२२	२०	२२।।	२४।।	२३।।	२३।।	१८।।	१८।।	१८	२४।।	३३	२८	१९	८।।	१७	१६
पू.भा.३	१८	२५	२०	२४।।	३१।।	३१।।	२४।।	१७	१८	१३	२०	१३।।	१८।।	२४।।	१६।।	१५।।	१७।।	१८।।	१९।।	२८	२१	२२।।	२८।।	१३	२५।।	३१।।	२९।।	२९।।	२४।।	२४।।	२४	२०	२८।।	१९	२८	१७।।	२२।।	२०
पू.भा.१	१४।।	२१।।	१६।।	१९	२६	२६	२५।।	१८	१९	१८	२५	१८।।	१६।।	२२।।	१४।।	१६।।	१८	१९।।	१२।।	२१	१४	२०	२६	१०।।	१५	३१	३०।।	३०	२८।।	२८।।	२९।।	२५।।	१७	७।।	१६।।	२८	३३	३०।।
उ.भा.	२४।।	१५।।	१८।।	२१	२५	१७	१६।।	२५।।	२७	२६	१९	२०	२७।।	१५।।	२५।।	२७।।	२६।।	९।।	२।।	१९।।	१२	१८	१९	२१	२४	२२	२२।।	३१।।	२९।।	२८।।	२९।।	१४।।	६	१६	२१।।	३३	२८	३४
रेवती	२५	२४।।	११।।	१४	१७	२६	२५।।	२४।।	२६।।	२५।।	२७	१४	१३	२३।।	२३।।	२५।।	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	५।।	११।।	२६	२१	२६।।	३०	१९।।	२१।।	१९।।	२०।।	२१।।	२२।।	१४	१६	१८	२९।।	३४	२८

समान गोत्र- प्रवर में विवाह से महापातक होता है- (आपस्तम्ब)- समान गोत्र- प्रवर की कन्या से विवाह एवं गमन से उत्पन्न ब्राह्मण जातक भी चाण्डाल हो जाता है। अन्य मत- समान प्रवर-गोत्र तथा माता के गोत्र में विवाह नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसे कुलों में उत्पन्न कन्या भगिनी होती है। पतित स्त्री से उत्न ब्राह्मणी एवं शुद्र से उत्पन्न तथा समान गोत्र प्रवर के पुरुष-स्त्री से उत्पन्न जातक चाण्डाल होता है। **समानक्रियादि विचार**- एक माता से उत्पन्न पुत्र-पुत्री का एक संवत्सर में समान क्रिया (संस्कार) नहीं करनी चाहिए। परन्तु माता के भेद होने पर हो सकता है। कन्या के भाई का वर के बहन से भी विवाह नहीं करना चाहिए। पुत्र के विवाह के बाद छः मास तक पुत्री का विवाह नहीं करना चाहिए। परन्तु संवत्सर परिवर्तन हो जाने पर छः मास के भीतर भी विवाह शुभ होता है। कन्या के विवाह के बाद पुत्र का विवाह श्रेष्ठ होता है। दो सहोदर कन्याओं का सहोदर भाइयों से विवाह नहीं करना चाहिए। दो सहोदर भाइयों या बहनों का विवाह भी छः मास के भीतर भी निषिद्ध है।

युजिभ ज्ञानार्थ चक्र

अ. भ. कृ. रो. मृ. रे.	आ.पुन.पु.श्ले.म.पू.फा.उ. फा.ह.चि.स्वा.विशा.अनु.	ज्ये.मू.पू.षा.उ.षा.श्र. धनि.शत.पू.भा.उ.भा.
पूर्वभाग ६	मध्यभाग १२	परभाग ९
पतिश्रेष्ठ	दोनों में प्रीति	कन्या श्रेष्ठ

विवाह लग्न में ग्रहप्रद रेखा

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।

सू. श. रा. के. ३।६।८।११, मं. ३।६।११, चं. २।३।११, बु. बृ. १।२।३।४।५।६।९।१०।११, तथा शु. १।२।४।५।९।१०।११ इन स्थानों में रेखाप्रद होते हैं, अतः रेखाप्रद ग्रहों के अंकों का योग कर विवाह लग्न में ग्रहबल विधा जानना चाहिए। विवाह काल में लग्नेश तथा नवमांशेश यदि १।४।७।१०।११वें स्थान में स्थित हों तो दोष समूहों को नष्ट करते हैं।।

वधूप्रवेश मुहूर्त्त विचार

विवाह दिवस से २।४।५।६।७।८।९।१०।१२ एवं १४वें दिन वधू प्रवेश शुभ होता है। सोलह दिन के बाद विषम मास, वर्षों में तथा पाँच वर्ष बाद कभी भी कर लेना चाहिए।

तिथियाँ	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ भद्रादि दोष रहित।
शुभ वार	चं.बृ.शु. कुछ आचार्य बुधवार का भी ग्रहण करते हैं।
शुभ नक्षत्र	उ३.रो.अश्वि.पु.ह.अभि.मृ.रे.चि.अनु.श्र.ध.पु.म.स्वा.ये नक्षत्र प्रशस्त हैं।

विशेष- रात्रि में विवाह नक्षत्र के स्थिर लग्न एवं सद्मुहूर्त में वधू प्रवेश शुभ होता है इसमें प्रतिशुक्र विचार नहीं करते हैं।

द्विरागमन मुहूर्त्त विचार

विवाह के बाद दूसरी बार पितृ गृह से कन्या के पति गृह गमन को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से विसम मास-वर्ष, मेष, वृश्चिक, कुम्भ राशि के सूर्य तथा शुक्ल पक्ष में वर को गुरु एवं रवि शुद्धि रहने पर द्विरागमन शुभ होता है। इसमें गुरु-शुक्र के अस्तादि काल तथा शुक्र के सम्मुख एवं दक्षिणस्थ स्थिति का त्याग अवश्य करना चाहिए।

शुभनक्षत्र	ह. अश्वि. पुष्य, उत्तरा३, रो. स्वा. पुन. अभि. श्र.ध. श. मू. मृ. रे. चि. अनु. ये नक्षत्र चन्द्रमा एवं तारा के अनुकूल रहने पर शुभ हैं।
शुभ वार	चं. बृ. बु. शु. भद्रादिदोष रहित इन दिनों में शुभ है।
शुभ तिथि	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ शुभ।
शुभलग्न	२।३।६।७।११ इन लग्नों के शुभ युक्त या दृष्ट रहने पर शुभ।
लग्नशुद्धि	गुरु ३।६।१०।११वें, शुक्र केन्द्र में तथा पाप ग्रहों के ३।६।११वें स्थितिवश शुभ एवं शुद्ध लग्नों में द्विरागमन शुभ है।

दोषयुक्त वर्णादि कूटों के परिहार- वर्गवैर, योनिवैर, गणवैर, नुदूर, एवं अन्य कूट सम्बन्धि समस्त दोष ग्रह मैत्री द्वारा नष्ट हो जाते हैं। वर्ण, वर्ग, गण, योनि, भकूट इत्यादि समस्त मेलापक सम्बन्धी दोष ग्रह मैत्री रहने पर नष्ट हो जाते हैं। सद् भकूट, योनि शुद्धि तथा ग्रह मैत्री इनमें से एक भी प्राप्त हो जाने पर कन्या के राक्षसगण जनित दोष की समाप्ति हो जाती है। राशीशों में या नवमांश पतियों में अगर मैत्री हो तो गण आदि दोष रहने पर भी विवाह पुत्र-पौत्र एवं समृद्धि को देने वाला होता है।

नवागत वधू पाककर्म मुहूर्त्त- मृ.उ३.पुष्य.कृत्ति.ज्ये.श्र.ध.शत.रो.वि. तथा रेवती नक्षत्रों, शुभ तिथियों एवं रवि-भौम रहित अन्य वारों में नववधू से पाकारम्भ कराना चाहिए। लग्नशुद्धि- स्थिर लग्नों में चतुर्थ एवं अष्टम के शुद्ध (ग्रह वर्जित) तथा सप्तम भाव के बलवान रहने पर नूतन वधू का प्रथम पाककर्म श्रेष्ठ होता है।

विवाह गणना में प्रयुक्त नृदूर विचार- कन्या के जन्म नक्षत्र से पति का जन्मनक्षत्र यदि द्वितीय हो तो छब्बमल के अनुसार शुभ न होकर पति नाशक होता है। परिहार- भिन्न नक्षत्र रहने पर भी यदि एक राशि हो अथवा भिन्न राशि होकर एक नक्षत्र हो तो गण, नाड़ी नृदूर एवं ग्रहमैत्री जन्य दोष नहीं होता। वश्याभाव तथा अन्योन्य परस्पर ताराशुद्धि से षडाष्टम सम्बन्धी दोष भी शुभ हो जाता है। वर की राशि का वर्ग कन्या के राशि वर्ग से हीन हो परन्तु अगर राशि पति उत्तम वर्ण का हो तो दोष कारक नहीं होता। नृदूर दोष दक्षिण देशों में ही त्याज्य है मध्य देशों में नहीं।

अथ ज्ञातगुण में निश्चय मुहूर्त्त- विवाह के नक्षत्रों तथा तथा पुष्य चित्रा ध.कृ. एवं रो. नक्षत्रों, शुभ दिनों में चन्द्रबल देखकर सत्यवाणी के द्वारा शुभ लग्न एवं अग्नि के सानिध्य में तत्कालोपस्थित पवित्र, पुण्य एवं आरोग्या कन्या को कन्या का पिता वर के लिए देता है। और कहता है कि अगर तुम सर्व दोष वर्जित हो परन्तु पतित न हो तो जल देवता एवं अग्नि के समक्ष (तुम कन्या चाहने वाले को) मैं कन्या देता हूँ। इसके निमित्त यह अक्षत सहित फल का दान ग्रहण करो।

विवाह में ग्राह्य नक्षत्र- पञ्चशलाका वेध रहित उ३.रो.अनु.मू.मृ.रे. हस्त, मघा एवं स्वा. नक्षत्रों में विवाह तथा इनके सहित कृ.पू.३ नक्षत्रों में वरवरण शुभ होता है। केन्द्र एवं त्रिकोण गत गुरु-शुक्र से विवाह के आदि में समागत समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। ग्रहदृष्टि जनित-मास-पक्ष-अभिव मुहूर्त्त-वार-सूर्यचक्र सूर्यशुद्धि एवं ग्रहलता आदि जनित समस्त दोषों का निवारण कर केन्द्र एवं त्रिकोणस्थ गुरु-शुक्र विवाह में शुभता प्रदान करते हैं। समस्त शुभाशुभकर्मों में लग्न से निषिद्ध स्थानगत ग्रहों का परिहार- बलवान बुध-गुरु-शुक्र तथा मित्रग्रहों से दृष्ट रहने पर निषिद्ध स्थानगत ग्रह भी शुभ हो जाता है। पाप ग्रह की दृष्टि, युति एवं गत्यन्तर में न हो तो।

अज्ञात जन्मराशि वालों के लिए विशेष- जिनके जन्म राशि का ज्ञान न हो उनके गुण, कूटादि का विचार नाम राशि द्वारा ही कर लेना चाहिए। इस प्रसङ्ग में नामराशि का नामराशि से तथा जन्मराशि का जन्मराशि से ही मेलापक शुभ होता है। अन्यथा अशुभ। सामान्य विवाह कृत्य- विवाह सम्बन्धि समस्त कार्य विवाह के नक्षत्रों में करना चाहिए। इनमें चन्द्रबल का विचार नहीं होता। विवाह से ३ या ९ दिन पूर्व मण्डपाच्छादन एवं तैललेपन शुभ होता है। इस क्रम में पहले कन्या तथा बाद में वर को रात्रि के प्रथम प्रहर में तैल लेपन करना चाहिए।

कन्या के वैधव्य आदि दोष का विचार- वर एवं कन्या की जन्म कुण्डली में लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ में मंगल हो तो कन्या पति तथा पति कन्या का नाशक होता है। इसी क्रम में कन्या की कुण्डली में लग्न या चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ में कोई बलवान पाप ग्रह भी बैठा हो अथवा सप्तमेश यदि ६।८।१२ गत हो तो भी अनिष्ट कारक होता है।

वैधव्य दोष परिहार- जिसकी कुण्डली में मंगल का दोष हो उसके प्रत्युत अगर दुसरे की कुण्डली में भी शनि, मंगल अथवा अन्य कोई पापग्रह उसी प्रकार अनिष्ट कारक अवस्था में बैठा हो तो भौमदोष समाप्त हो जाता है। कन्या की कुण्डली में जितने अनिष्ट कारक ग्रह स्थित हों उतने ही अथवा उससे भी अधिक यदि वर की कुण्डली में भी प्राप्त हो रह हों तो ही मेलापक शुभ होता है, अन्यथा नहीं। कन्या के सप्तमेश, शुक्र तथा शुभ ग्रहों की स्थिति वश सौभाग्य योग देखना चाहिए। अन्य परिहार- लग्न या चन्द्रमा से सप्तम स्थान में सप्तमेश या शुभग्रह स्थित हों तो अनपत्य, वैधव्य एवं विषकन्या योग का नाश करते हैं। १।४।५।७।९।१० में शुभग्रह तथा ३।६।११ में पापग्रह हों अथवा सप्तमेश सप्तम में हो तो भौमदोष नहीं लगता है।

वैधव्यदोष नाशक कुम्भ विवाह- पिता आदि विवाहकर्त्ता नाम-गोत्र-देशकाल-तत्वार-पूर्वक "कन्यावैधव्यहरं कुम्भविवाहं करिष्ये" का संकल्प कर नांदीश्राद्ध पर्यन्त पञ्चाङ्ग पूजन कर "महीद्यौरित्यादि" विधि एवं मंत्र से कलश स्थापन कर वरुण का पूजन करें। पुनः इसी कलश पर स्वर्ण निर्मित भगवान विष्णु की प्रतिमा का षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करें। प्रार्थना मंत्र- "वरुणाङ्गस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय। पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु। देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः" इति। तदनन्तर "विष्णुरूपिणे कुंभायेमां कन्यां श्रीरूपिणीं समर्पयामीति" कहकर विष्णु को कन्या समर्पित करें तथा परिवेत्यादि मंत्र के द्वारा कन्या एवं कलश को परिवेष्टित करें तथा पुनः कलश को निकालकर जलाशय नदी आदि में विसर्जित कर शुद्ध जल से कन्या को "समुद्रज्येष्ठे" आदि मंत्र से पचपल्लव द्वारा अभिसिंचित कर ब्राह्मण भोजन करावें। इति कुम्भ विवाह।।

रजोदर्शन के चतुर्थ दिन एरिणी दान- व्रत रखे हुए कन्या के माता-पिता द्वारा वर के माता के शुद्धि निमित्त एरिणी दान होता है। वर के माता को रजोदोष होने तथा उसकी शुद्धि की प्रतिक्षा न हो पाने की अवस्था में शुद्धि निमित्त कन्या के माता-पिता द्वारा शास्त्र विहित रीति से मनसोदिश्य एरिणी दान करना चाहिए।

विवाह के बाद माताओं की रजोदोष विधि- वर-कन्या के विवाह के उपरान्त एवं देव विसर्जन के पूर्व वर या कन्या की माता को रजोदोष हो तो उपर्युक्त शान्ति कर शुद्धि हो जाती है। संकट की स्थिति में शान्ति के बिना भी देवताओं का (कलश) विर्सजन किया जा सकता है।

विवाह बाद अशौच होने पर विधि- यदि विवाह के बाद तथा चतुर्थी कर्म के पूर्व वर या कन्या के कुलों में अशौच हो जाता है तो कन्या के पिता, कन्या एवं वर को अशौच नहीं लगता। कलश उत्थापन अशौच समाप्ति के बाद करना चाहिए। असम्भव होने पर कलशोत्थापन करके ही अशौच की शुद्धि हो जाती है।

जन्मराशि वश सूर्यादि ग्रहों का गोचर फल एवं वेध ज्ञापक चक्र

श्री	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१	स्थाननाश यात्रा	पुष्टि अन्नलाप	भय पीड़ा	बन्धन भय	अरिष्ट द्विभय	सुखशत्रु-नाश	सर्वनाश पीड़ामय	हानि कष्टभय	हानि रोगभय
२	हानि भय	धननाश सुख	धननाश नेत्रकष्ट	धनलाभ लाभ	धनादि लाभ	सुख धनप्राप्ति	शोक धनहानि	नैस्व व्यय	वैर वित्तनाश
३	सुख श्रीप्राप्ति	द्रव्यप्राप्ति सुख	सुख श्रीप्राप्ति	भय शत्रु	भय रोगाप्ति	सुख अर्थलाभ	सुखाय लाभ	नैरुज्य धनप्राप्ति	सुखलाभ बुद्धि
४	रोगभय माननाश	रोग मानार्थहानि	कष्ट शत्रु से भय	धनसुख प्राप्ति	धनहानि भय	धनागम	पीड़ामय शत्रुवृद्धि	वैर शोक	भीति पीड़ा
५	दैन्य अर्थनाश	सुख कार्यनाश	रोग भय धननाश	रोगभय शोक	लाभ सुख	सुख पुत्रलाभ	धनपुत्र-योर्नाश	हानि शोक	शोकोऽथ नाशस्व
६	रिपुनाश सुख	वित्त-लाभ	सुखार्थ-लाभ	अलाभ स्थिति	रोग शोक	शत्रुभय पीडा	सुख वित्तलाभ	सुख लक्ष्मीप्राप्ति	सुख वित्तलाभ
७	गमन धनहानि	द्रव्यप्राप्ति सुख	कार्श्य धननाश	पीड़ाभय विग्रह	सम्मान सुख	शोक अतिभय	दोष पीड़ाभय	दारिद्र हानि	दुर्गति पीड़ा
८	रोग भय	मृत्युसम क्लेशभय	भय पाप-बुद्धि	धनादि लाभ	मृत्युभय पीड़ा	विपत्ति धनक्षय	पीड़ाभय शोक	रुग्भय व्यसन	पीड़ाभय हानि
९	कान्तिक्षय पापवुद्धि	मान नृपभय	रोगभय अशुभ	रोगभय धननाश	सुख सम्मान	सुख लाभ	पाप धननाश	पापकर्म-रत	पाप दैन्य
१०	सुख कर्मसिद्धि	शुभ सुख	सुख शोक	सुख सुभाग	अति दैन्य	धनलाभ असुख	वैमनस्य शुचे	वैर सुख	भय शोक
११	धनप्राप्ति सुख	विविधार्थ लाभ	लाभ सुखाप्ति	शुभ अर्थागम	सौख्य वित्तलाभ	दुख धनागम	सुख वित्तलाभ	सुखवित्त-प्राप्ति	सुयशोऽथ लाभ
१२	द्रव्यनाश पीड़ाभय	रोग धननाश	रोग शोक	शोक धननाश	देहपीड़ा भय	धनागम लाभ	क्लेश-मनर्थ	हानि पीड़ा	पीड़ाभय वैर

ग्रहों के शुभ, पुज्य एवं निन्द्य स्थान

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि।राहु।केतु	ग्रह
३।६ १०।११	१।२।३।५।६ ७।९।१०।११	३।६ १०।११	३।६ १०।११	२।५।७ ९।११	१।२।३ ९।११	३।६ १०।११	शुभ
१।२।५ ७।९	*	१।२।५ ७।९	१।३।५ ७।९	१।३ ६।१०	५।६ ७।१०	१।२।५ ७।९	पूज्य
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्द्य

गर्भिणी प्रश्न ज्ञान- गर्भिणी के कन्या या पुत्र सम्बन्धिज्ञान में यदि पृच्छक अधोलिखित चक्र में सूर्य, मंगल या गुरु का स्पर्श करता है तो पुत्र, चन्द्र, बुध, शुक्र के स्पर्श से कन्या, शनि से गर्भपात, राहु से सुतासुत तथा केतु से क्लीब जानना चाहिए।

बुध	शुक्र	चन्द्र
गुरु	सूर्य	मङ्गल
राहु	शनि	केतु

गर्भ प्रश्न चक्र

पञ्चदशीयन्त्र प्रश्न- कार्य सिद्धि सम्बन्धि प्रश्नोत्तर ज्ञानार्थ यदि पृच्छक अधोलिखित चक्र में १।५।९ का स्पर्श करे तो तत्काल कार्य सिद्धि २।८ से कार्य सिद्धि नहीं तथा ३।४।६।७ का स्पर्श करे तो वार्ता चल रही है। ऐसा जानना चाहिए।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

पञ्चदशीय यन्त्र चक्र

ग्रहों के स्व गृह, उच्च, नीच, मूल, त्रिकोण, जाति, वर्ण, अवस्था एवं भाग्योदय वर्षादि बोधक चक्र

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
सिंह	कर्क	मे.वृश्चि.	मिथु.कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	मकर, कुंभ	कन्या	मीन	गृहराशि
मेष १०	वृष३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन	धनु	उच्चराशि
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	सन्ध्या	सन्ध्या	सन्ध्या	कालबल
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कुम्भ	सिंह	मूलत्रिकोण
ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	ह्रस्वादि
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	अन्त्यज	अन्त्यज	अन्त्यज	जातियाँ
चतुष्पद	सरीसृप	चतुष्पद	पक्षी	द्विपद	द्विपद	पक्षी	सरीसृप	सरीसृप	वश्यादि
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री
क्रूर	सौम्य	पाप	सौम्यपाप	सौम्य	सौम्य	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
रक्त	श्वेत	रक्त	हरित	पीत	कर्बुर	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	वर्ण
वनचर	जलचर	वनचर	ग्रामचर	ग्रामचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर	संज्ञान्तर
पृथ्वीलोक	पृथ्वीलोक	नाग	स्वर्ग	स्वर्ग	नाग	नाग	नाग	नाग	लोक
पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदयादि
पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	कफ	वात	वात	वात	प्रकृत्तियाँ
कटुक	लवण	तिक्त	मिश्रित	मधुर	क्षीराम्ल	तिक्त	तिक्त	तिक्त	रस
व्योमदृक्	समदृक्	व्योमदृक्	तिर्यग्दृक्	समदृक्	तीक्ष्णग्दृक्	अघोदृक्	अघोदृक्	अघोदृक्	अवलोकन
पू. मुख	प. मुख	द. मुख	उ. मुख	उ. मुख	पू. मुख	प. मुख	द. मुख	द. मुख	गृहदिङ्मु
मुक्ता	रजत	पुत्र	स्वर्ण	रत्न	रजत	लौह	अस्थि	अस्थि	पदार्थ
वृद्ध	मध्य	युवा	बाल्य	वृद्ध	मध्य	गलित	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पशुस्थान	जलगृह	दग्धम्	गोष्ठम्	देवस्थान	जलसमीप	ब्राह्मभू.	ब्रात्तभू.	ब्रात्तभू.	निवास
हरिवंशश्र	शिवार्चन	रुद्राभिषेक	कन्यादान	अमाङ्ग	गोप्रतिमा	मृत्युञ्जय	भुजगदा	ध्वाजागदा	क्षेमोपाय
२२वर्ष	२४वर्ष	२८वर्ष	३२वर्ष	१६वर्ष	२५वर्ष	३६वर्ष	४२वर्ष	४८वर्ष	भाग्योदय
शुष्क	सजल	शुष्क	जल	सजल	शुष्क	शुष्क	शुष्कादि	संज्ञा	
अयन	मुहूर्त्त	दिवस	ऋतु १	मास	पक्ष १	वर्ष	कालसंज्ञा	उच्चसेसातवीं राशि नीच होती है।	
सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	सत्वादिगुण		
वह्नि	अम्बु	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	देवी	ब्रह्मा	ग्रहो के देवता		

भाग्योदय वर्ष का प्रयोजन- जो ग्रह अपने गृह, उच्च, अथवा षड्वर्ग में स्थित होकर शुद्ध हो, उसके भाग्योदय वर्षों में मनुष्य का सुख एवं भाग्योदय होता है।

सूर्य नक्षत्र से काष्ठ संचय चक्र

अधः	६	पाकसुरस
शिर में	२	शवदाह
मध्य में	४	सर्पभय
पूर्व में	४	मित्रागम
दक्षिण में	४	रोगभय
पश्चिम में	४	क्वाथादि
उत्तर में	४	सुख

सूर्य नक्षत्र में अश्व चक्र

स्थान	नं.	फल
शीर्ष में	५	सुख
पृष्ठ में	१०	लाभ
पुच्छ में	२	स्त्रीनाश
पाद में	४	रणभंग
उदर में	५	अश्वनाश
मुख में	२	सुख

सूर्य नक्षत्र में शिविका चक्र

स्थान	नं.	फल
पूर्व	५	सुख
दक्षिण	५	रोग
पश्चिम	५	भय
उत्तर	५	पीड़ा
मौ.लौ.	३	शुभ
दण्डयो	४	शुभ

सफलं भद्राङ्ग चक्र

स्थान	नं.	फल
मुख	९	कार्यहानि
कण्ठ	१	पीडन
वक्ष	११	द्रव्यहानि
नाभि	४	कलह
कटि	६	अर्थनाश
पुच्छ	३	शुभ

राहु नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक बीजवपन चक्र

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

हलप्रवहण एवं बीजवपन मुहूर्त्त- भ.कृ.आर्द्रा,आश्ले.पू.ज्ये. रहित चक्रशुद्ध नक्षत्रों ४।६।९।१४।३० तिथि रहित अन्य तिथियों, ११।४।१।१०।७ वर्जित अन्य लग्नों में पाप ग्रहों के निर्बल तथा चन्द्रमा के जलचर राशिस्थ, शुक्र के चन्द्र नवमांशस्थ, लग्न में गुरु के रहने पर रवि एवं शनि वर्जित अन्य दिवसों में हल जोतना श्रेष्ठ होता है। हल प्रवहण के नक्षत्रों तथा श्र.श.पुन.वि. नक्षत्रों, भौम रहित दिनों में चक्रशुद्धि रहने पर बीज वपन शुभ होता है।

सूर्य नक्षत्र से तैलिक चक्र

स्थान	नं.	फल
शृङ्ग में	७	सम्पत्ति
अन्त्य में	३	शोक
तल में	२	विपत्ति
कर्ण	७	धन
दारुयु.	३	वृद्धि
सम्भार	५	सुख

अथ मेषादि राशियों की स्वामि, वर्ण, धातु, एवं संज्ञादि बोधक चक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशियाँ
भौम	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु	राशीश
रक्त	श्वेत	हरित	श्वेतारुण	पाण्डुर	विचित्र	कृष्ण	कनक	पिङ्गल	कर्बुर	बभ्रुव	स्वच्छ	वर्ण
क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	जातियाँ
पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	धातु
चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चरादिसंज्ञा
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पु.स्त्री.संज्ञा
पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	पृष्ठादिसंज्ञा
रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	दिन	दिन	दिन	दिन	रात्रि	रात्रि	दिन	समान	बल
चतुष्पद	चतुष्पद	द्विपद	जलचर	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	कीट	अर्द्धद्विपद अर्द्धचतुष्पद	अर्द्धचतुष्पद अर्द्धद्विपद	जलचर	जलचर	चतु:संज्ञा
शीर्ष	मुख	बाहु	हृदय	उदर	कटि	वस्ति	शिश्न	उरुद्वय	जानुद्वय	जंघाद्वा	पादद्वय	निवास
दक्षिण	अग्नि	उत्तर	वायव्य	पूर्व	उत्तर	अग्नि	याम्य	ईशान	पश्चिम	पश्चिम	ईशान	प्लवत्वादि
ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	सम	दीर्घादि
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	स्वभाव
पर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तद	दिशा
मेष	गोच	गीतनृत्य	युद्धजल	अरण्य	स्त्रीगृह	स्वसस्य	सर्पनि	युद्धभू	बनजल	शिल्पगृह	जल	निवास
भूमि	राख्य	स्थान	समीप	भूमि	नौका	नपरभू	वासभू	वाजिस्थान	समीप	भाण्डपार्श्व	समीप	स्थान

सूर्य नक्षत्र से गज चक्र

स्थान	नं.	फल
शीर्ष में	३	लक्ष्मी
कण्ठ में	३	श्रीलाभ
मुख में	२	मरण
हृदय में	३	सुख
अग्रपाद में	४	व्याधि
पृष्ठभाग में	४	क्षति
पुच्छ में	४	मृत्यु
पृष्ठ में	४	व्याधि

सूर्य नक्षत्र से प्रयोगारम्भ ज्ञान चक्र

स्थान	नं.	फल
शीर्ष में	३	हानि
मुख में	३	सिद्धि
कण्ठ में	३	मृत्यु
हस्त में	४	शत्रुभय
हृदय में	४	इष्टाप्ति
उदर में	३	हानि
कटि में	३	इष्टाप्ति
चरण में	४	धनद

सूर्य भुक्त नक्षत्र में नौका चक्र

स्थान	नं.	फल
स्तम्भाग्र में	३	अशुभ
मध्य में	६	शुभ
मुख में	३	अशुभ
हृदय में	३	अशुभ
पृष्ठ में	१	अशुभ
अग्र में	३	अशुभ
मुखाग्र	३	अशुभ
मध्य में	६	शुभ

शनि नक्षत्र से शनि चक्र

स्थान	नं.	फल
मुख में	१	अर्थनाश
द.भुज में	४	सुजयाप्ति
चरण में	६	भ्रमण
वा.भुज में	४	रोगभय
हृदय में	५	श्रियागम
मस्तक में	३	राज्यलाभ
नेत्र में	२	सुसौख्य
गुह्य में	२	मृत्युभय

सूर्य नक्षत्र से कुम्भ चक्र

नं.	फल
३	अशुभ
३	शुभ
४	अशुभ
२	अशुभ
३	शुभ
१	अशुभ
५	अशुभ
२	शुभ
४	शुभ

सूर्य नक्षत्र से तीन-तीन चन्द्र नक्षत्र में हवन फल ज्ञापक चक्र

३	सूर्य	अशुभ
३	बुध	शुभ
३	शुक्र	शुभ
३	शनि	अशुभ
३	चन्द्र	शुभ
३	मंगल	अशुभ
३	गुरु	शुभ
३	राहु	अशुभ
४	केतु	अशुभ

हवन हेतु अग्नि वास ज्ञान- शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक की संख्या में एक जोड़ कर वार संख्या भी जोड़े तथा चार से भाग दे, प्राप्त शेष के द्वारा निम्नलिखित फल जानना चाहिए-

हवन हेतु अग्नि वास चक्र

शेष संख्या	अग्निवास स्थान	फल
१	स्वर्ग	प्राणनाश
२	पाताल	धननाश
३,०	पृथ्वी	सुख

विशेष- वार की गणना रविवार से होगी।

गुरु एवं सूर्य का बल विचार- गर्ग के अनुसार स्त्रियों का गुरुबल, पुरुषों का सूर्यबल तथा दोनों का चन्द्रबल श्रेष्ठ होता है। विवाह काल में जन्मराशि से ५।९।११।२।७ स्थानों में स्थित गुरु श्रेष्ठ १।३।६।१० स्थानों में पूजा द्वारा शुभ तथा ४।८।१२ में नेष्ट होता है। इसके अतिरिक्त अगर गुरु, अपनी उच्चराशि, स्वराशि, स्वमित्रराशि, अपने नवमांश तथा अपने वर्गोत्तम नवमांश में स्थित हो तो भी शुभ कारक होता है।

तन्वादि द्वादशभावों के विचारोपयोगी तथ्य- जो-जो भाव शुक्र, बुध, वृहस्पति एवं अपने स्वामी से दृष्ट या युक्त होकर अन्य किसी ग्रह से दृष्ट या युक्त नहीं हों वे उस भाव से उत्पन्न शुभ फलों को देने वाले होते हैं। कोई भी भाव यदि शुभराशि एवं अपने अधिपति ग्रह से दृष्ट एवं युक्त होकर किसी अन्य पापग्रहों से दृष्ट या युक्त न हों तो उस भाव की पुष्टि करता है। नीचराशि एवं शत्रुराशि में स्थित ग्रह भाव के विनाशक तथा मूल त्रिकोण, उच्च एवं मित्र राशि में स्थित ग्रह भाव के पोषक होते हैं।

राशियों के अधिपति ज्ञापक चक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
मं	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	अधिपति

ग्रहों की उच्च नीच राशि एवं मूल त्रिकोणराशि ज्ञानार्थ चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्चराशि	०	१	९	५	३	११	६
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीचराशि	६	७	३	११	९	५	०
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
मूल त्रिकोण राशियाँ	५	२	१	६	९	७	११

सूर्यादिग्रहों की दीप्तादि अवस्थायें- सूर्यादिग्रहों की दीप्त, स्वस्थ, मुदित, शान्त, दीन, अतिदुखी, विकल, खल एवं क्रोधी, ये नव अवस्थायें होती हैं।

अवस्था ज्ञानार्थ चक्र

स्थिति	उच्चस्थ	स्वगृही	अधिमित्र	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	पापयुक्त	पापगृही	सूर्ययुक्त
अवस्था	दीप्त	स्वस्थ	मुदित	शान्त	दीन	दुखित	विकल	खल	क्रोधी

तन्वादि बारह भावों के स्थिर कारक- क्रमशः सूर्य, वृहस्पति, मंगल, चन्द्रमा, वृहस्पति, मंगल, शुक्र, शनि, वृहस्पति, बुध, वृहस्पति एवं शनि तन्वादि बारह भावों के कारक होते हैं।

जन्मांग द्वारा मृत्यु के कारण का ज्ञान- लग्नेश जिस राशि सम्बन्धी नवमांश में स्थित हो उस राशि के कोप से उत्पन्न रोग द्वारा उस जातक की मृत्यु होती है। लग्नेश के मेषादि राशियों के नवमांश में स्थित होने पर क्रमशः तापज्वर या अग्नि, श्वांस विकार एवं शूल, शिरोवेदना, वात व्याधि एवं उन्माद, विस्फोटक पदार्थ, जठराग्नि तथा गृह्यरोग, शोक, चतुष्पाद एवं ज्वर, पत्थर एवं शस्त्रादि, अत्यन्त वायु, व्याघ्रादि हिंसक पशुओं एवं शूल रोग, व्याघ्र एवं स्त्री, ज्वर एवं अतिसार द्वारा मृत्यु होती है।

कन्या का वैधव्य योग- कन्या की कुण्डली में चन्द्रमा से सप्तम में मंगल, शनि, राहु या सूर्य स्थित हों अथवा लग्न, अष्टम, या लग्न से सप्तम में स्थित हो तो वैधव्य कारक होते हैं। मंगल की राशि में पापग्रहों के साथ सूर्य बारहवें या आठवें में स्थित हो तो भी रण्डा होती है। सूर्य के साथ शनि, कर्क या तुला राशि का हो तो धन से हीन होती है। लग्न, चतुर्थ, अष्टम, द्वादश या सप्तम में पापयुक्त मंगल स्थित हो तो भी शुभ नहीं होता इसी प्रकार चन्द्रमा से इन स्थानों की स्थिति में भी जानना चाहिए। **विवाह में भौम दोष-** लग्न एवं चन्द्रमा से १।१२।४।७।८ इन स्थानों मंगल स्थित हो तो कन्या पति तथा पति कन्या का नाशक होता है।

नाड़ी दोष का परिहार- वर एवं कन्या दोनों के नक्षत्र यदि, रो.आ.मृग.वि.पुष्य,श्रवण,उ.भा. एवं रे. में से हों तो उन्हें नाड़ी दोष नहीं लगता है। कुछ लोग मृगशिरा के स्थान पर मघा नक्षत्र का ग्रहण करते हैं।

प्रमाण श्लोक- रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नि पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यभमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते।।

इष्टकाल वश रोगी का बाधा ज्ञान- तिथि, वार, नक्षत्र,लग्न एवं प्रहर इन सबको जोड़कर आठ का भाग दें, ३,७ के शेष रहने पर देवबाधा २,८ शेष से पितृबाधा, ६,४ से भूत तथा १,५ से ग्रहबाधा होती है। इसी प्रकार तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न एवं प्रहर के योग में १२ से भाग देकर शेष ३,५,६,८,९,११ हो तो जीवन तथा १,२,७,१०,४,१२ शेष से मृत्यु होती है। राजमार्तण्ड के अनुसार भी वार,नक्षत्र,तिथि, दिशा के योग में आठ से भाग दें, २,८ शेष से पितृ, ३,७ से देव, ६,४ से प्रेत तथा १,५ से ग्रहबाधा होती है। लब्धि को त्रिगुणित कर आठ जोड़ दें पुनः ४ से गुणा कर सात से भाग दें। एकादि शेष से क्रमशः कुलज, ग्राम्य, वन्यपशव, राजकुलज, अन्नज, एकिज तथा ग्रहज बाधा होती है। इन बाधाओं की विविध उपायों द्वारा शान्ति करनी चाहिए।

भद्राकृत्य- वधबंध विषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादियत्। तुरङ्गमहिषोष्ट्रादिकर्म विष्टयां हि सिद्ध्यति।। वध करना, बन्धक बनाना, विषकर्म, अग्न्यास्त्र निर्माण तथा प्रयोग, छेदन, उच्चाटन, घोड़ा, भैस एवं ऊंट, आदि से सम्बन्धित कर्म भद्रा में सिद्ध होते हैं।

भद्रादिदोषपरिहार- दिन की भद्रा रात्रि या रात्रि की भद्रा दिन में हो तो दोष कारक न होकर कल्याणकारक होती है। अन्य- भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, प्रत्यरी एवं जन्मतारा मध्याह्न के बाद शुभ होती है।

भद्राज्ञानार्थ चक्र

पक्ष	तिथियाँ	भाग
शुक्ल	८,१५	पूर्वार्द्ध
	११,४	परार्द्ध
कृष्ण	७,१४	पूर्वार्द्ध
	३,१०	उत्तरार्द्ध

राशिवश भद्रावास एवं फल ज्ञान

चन्द्रराशि	वासस्थान	फल
४,५,११,१२	मृत्युलोक	कार्यनाश
१,२,३,८	स्वर्गलोक	शुभ
६,७,९,१०	पाताललोक	धनागम

भद्रा परिहार- जहाँ भद्रा होती है वहीं उसका फल भी होता है। अतः अत्यावश्यक होने पर उक्त चक्र द्वारा भद्रावास का ज्ञान कर शुभ कार्य किया जा सकता है। दिन की भद्रा रात्रि में तथा रात्रि की भद्रा दिन में शुभ होती है।

स्थूल चन्द्रशृंङ्गोन्नति ज्ञान- मीन एवं मेषराशि के चन्द्रमा का शृंङ्ग दक्षिण में उन्नत, वृष एवं कुम्भ गत चन्द्र का सम तथा शेष राशियों में स्थित चन्द्रमा का शृंङ्ग उत्तर में उन्नत होता है। **फल-** याम्य उन्नत शृंङ्ग में दुर्भिक्ष, सम में समता तथा सौम्य उन्नत में सुभिक्ष होता है।

तात्कालिक करण द्वारा संक्रान्तियों के वाहनादि ज्ञानार्थ चक्र

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज्य	विष्टि	शकुनि	चतुष्प	नाग	किंस्तुघ्न
स्थिति	निवि	उपवि.	उर्ध्व	सुप्त	निविष्ट	निवि	निविष्ट	उर्ध्व	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्व
तत्फल	सम	मध्यम	श्रेष्ठ	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	श्वान	मेष	वृषभ	कुक्कुट
उपवा.	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गर्दभ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	बानर
तत्फल	भीति	भय	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कंबल	नग्न	घनाय
उपव.	श्वेत	रक्त	चित्र	पीत	नील	कंबल	पट्ट	अजिन	कुसुम	वल्कल	वेणव
आयुद्ध	बन्दूक	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	शस्त्र	बाण
भक्ष्य	अन्न	पावस	भक्ष	पक्वान्न	दुग्ध	दधि	चितान्न	गुड़	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कंकुम	चन्दन	मृति.	गौरी	महावर	ओतु.	हरिद्रा	कज्जल	अगर	कपूर
जातियाँ	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृप	द्विज	क्षत्रिय	वैश्य	शुद्र	वर्णसं.
पुष्प	पुन्नांग	जाती	वकुल	केतकी	विल्व	अर्क	दूर्वा	कमल	वेला	पाटल	जपा
भो.पा.	सुवर्ण	चांदी	ताम्र	कांस्य	लोहा	खप्पर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुंजा	कौड़ी	नीलम	वज्र	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पीत	हरित	भूर्जप	सित	पांडु	नील	कृष्ण	चर्म	वन्दल	धूम्र
स्नान	गङ्गा	यमुना	सरस्वती	मंदाकिनी	नर्मदा	कृष्णा	गोदावरी	भागीरथी	तुंगा	कावेरी	कृष्णा
वय	बाल	कुमार	गताल.	युवा	पौढ़ा	प्रगल्भा	वृद्धा	बन्ध्या	बन्ध्या	पुत्रार्थि	प्र.चा.

चैत्रादि मासों की शून्य तिथि आदि ज्ञानार्थ चक्र (शुभ कार्यो में त्याज्य)

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्र.	आश्वि.	कार्त्तिक	मार्ग	पौष	माघ	फाल्गुन	मास
९ ति.	१२	कृ.१४	कृ.६	३	१	१०	कृ.५	७	४	कृ.५	कृ.४	शू.ति.पर
८ ति.	१२	शु.१३	शु.	२	२	११	शु.१४	८	५	शु.६	शु.३	शू.ति.पर
अश्विनी रोहिणी	चित्रा स्वाती	उ.षा. पुष्य	पू.फा. धनिष्ठा	उ.षा. श्रवण	शत. रेवती	पू.भा.	कृत्तिका मघा	चित्रा विशाखा	आर्द्रा अ.ह.	श्रवण मूल	भरणी ज्येष्ठा	शून्य नक्षत्र
कु.११	मी.१२	वृ.२	मि.३	मे.१	कं.६	वृ.८	तु.७	ध.९	क.४	म.१०	सि.५	राशियाँ

तिथि एवं वारों के योग से मृत्युयोग ज्ञानार्थ चक्र

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५	तिथि

भद्रा का मुख एवं पुच्छ ज्ञापक चक्र

४	८	११	१५	३	७	१०	१४	इन तिथियों में
प.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	इन दिशाओं में
५	२	७	४	८	३	६	१	इन प्रहरों के आदि में
५	५	५	५	५	५	५	५	भद्रा की मुखघटी ५, कृष्णपक्ष में शुभ
८	१	६	३	७	२	५	४	इन प्रहरों के अन्त की
३	३	३	३	३	३	३	३	३घटी पुच्छ शुक्लपक्ष में शुभ

नक्षत्रतारकामानोक्त प्रयोजन- जिस नक्षत्र में विवाह होता है, उस नक्षत्र की तारा संख्या तुल्य वर्षो में विवाह का शुभ या अशुभ फल प्राप्त होता है। तथा ज्वरादि एवं अन्य प्रकार की व्याधियाँ जिस नक्षत्र में प्रारम्भ होती है, उस नक्षत्र की तारा संख्या तुल्य दिनों तक उस व्याधि से कष्ट होता है।

संक्रान्ति एवं वाहनादि का दुष्ट फल- संक्रान्ति काल में संक्रान्तियों के जो-जो वस्त्र, भोजन, शस्त्र, लेप, जाति आदि होते हैं, उनका नाश होता है अथवा उक्त वस्त्र, भोजन, वाहनादि से जीविका करने वालों की हानि होती है।

नक्षत्रों के स्वामी तथा शुभ-अशुभ आदि विशेष संज्ञाएं

नक्षत्र	स्वामि	शुभाशुभ	जातियाँ	संज्ञा	मुख	घ.उ.ने.	यात्रादि में दोहद
अश्विनी	अश्विनीकु.	शुभ	वैश्य	ल.क्षि.	तिर्यक	५०	तिलतण्डुल
भरणी	यम	नाशक	चाण्डाल	उ.क्रू.	अघ	२४	माषतमाष
कृतिका	वह्नि	अशुभ	ब्राह्मण	मि.सा.	अघ	३०	माष
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभ	शुद्र	ध्रु.स्थि.	ऊर्ध्व	४०	गव्य
मृगशिरा	चन्द्र	शुभ	कृषक	मृदुमै.	तिर्यक	१४	गोघृत
आर्द्रा	शिव	शुभ	क्रूरजाति	दा.ति.	ऊर्ध्व	२१	दुग्ध
पुनर्वसु	अदिति	शुभ	वैश्य	च.च.	तिर्यक	३०	हरिणमांस
पुष्य	गुरु	शुभ	क्षत्रिय	ल.क्षि.	ऊर्ध्व	२०	मृगरक्त
श्लेषा	सर्प	अशुभ	चाण्डाल	ती.दा.	अघ	३२	पायस
मघा	पितर	शोकद	शुद्र	उग्रक्रूर	अघ	३०	वाषमांस
पू.फा.	भग	अशुभ	ब्राह्मण	उग्रक्रूर	अघ	२०	मृगमांस
उ.फा.	आर्यमा	शुभ	क्षत्रिय	ध्रु.स्थि.	ऊर्ध्व	१९८	शशकमांस
हस्त	सूर्य	शुभ	वैश्य	लघु.क्षि.	तिर्यक	२१	शालि
चित्रा	त्वष्टा	शुभ	कृषक	मृ.मै.	तिर्यक	२०	प्रियगु
स्वाती	वायु	शुभ	क्रूरजाति	च.च.	तिर्यक	१४	अपूप
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभ	चाण्डाल	मि.सा.	अघ	१४	नानापक्षमांस
अनुराधा	मित्र	शुभ	शुद्र	मृ.मै.	तिर्यक	१०	सत्फल
ज्येष्ठा	इन्द्र	शुभ	कृषक	ती.दा.	तिर्यक	१४	कूर्ममांस
मूल	राक्षस	क्षय	क्रूरजाति	ती.दा.	अघ	५६	सारिकमांस
पू.षा.	जल	धनहानि	ब्राह्मण	उग्रक्रूर	अघ	२४	गोधिककमांसं
उ.षा.	विश्वेदेवा	हानि	क्षत्रिय	ध्रुव.स्थि.	ऊर्ध्व	२०	शल्वमांस
श्रवण	विष्णु	वृद्धि	चाण्डाल	च.च.	ऊर्ध्व	१०	कृशरान्न
धनिष्ठा	वसु	शुभ	कृषक	च.च.	ऊर्ध्व	१०	मुद्गमोदकं
शतभिष	वरुण	शुभ	क्रूरजाति	च.च.	ऊर्ध्व	१८	यवपिष्ठ
पू.भा.	अजैकच.	अशुभ	ब्राह्मण	उग्रक्रूर	अघ	१६	मत्यान्न
उ.भा.	अहिर्बु	शुभ	क्षत्रिय	ध्रु.स्थि	अघ	२४	चित्रितान्न
रेवती	पूषा	शुभ	शुद्र	मृ.मै.	तिर्यक	१०	दध्योदन

तिथि-वार एवं नक्षत्र-वार के योग से उत्पन्न अनेक योग बोधक चक्र

योग नाम	क्रकच	दग्ध	विषा.	हुताश	यम घंट	अमृत सिद्धि	दग्ध योग	यम दंष्ट्र	सर्वार्थसिद्धि
सूर्य	१२	१२	४	१२	मघा	हस्त	भरणी	म.ध.	ह.मू.पु.अश्वि.उ.
चन्द्र	११	११	६	६	विशाखा	मृग	चित्रा	वि.मू.	पु.श्र.रो.मृ.अनु.
भौम	१०	५	७	७	आर्द्रा	अश्वि.	उ.षा.	कृ.म.	अ.उ.भा.कृ.श्ले.
बुध	९	३	२	८	मूल	अनु	धनि.	पू.षा.पु	रो.अनु.ह.कृ.मृ.
गुरु	८	६	८	९	कृत्तिका	पुष्य	उ.फा.	उषा	रे.अनु.अ.पु.पु.
शुक्र	७	८	९	१०	रोहिणी	रेवती	ज्ये.	रो.अनु	रे.अनु.अश्वि.पु.पु.
शनि	६	९	७	११	हस्त	रोहिणी	रेवती	श्र.श.	श्र.रो.स्वा.

संक्रान्तियों के मुहूर्त्त ज्ञानार्थ चक्र

मु. संज्ञा	नक्षत्र
४५ वृहत्	उ.३,रो.विशा.पुन.
१५ जघन्या	श्ले. ज्ये. श.
	भ. स्वा. आ.
३० समा	मृ. रे. चि.
	अनु. ह. अ.
	पु. धनि. अभि.
	कृ. श्र. म.
	पु. ३, मू.

इसी प्रकार चन्द्रदर्शन में भी मुहूर्त्त का ज्ञान कर फल कहना चाहिए।

नक्षत्रपाद वश कष्टज्ञान चक्र

ज्वरादि रोगोत्पत्ति में दि.सं.	दानादि	नक्षत्र के पादवश दिन संख्या १च	२च	३च	४पा	जपार्थमंत्र
दि.९	भोजन	९	११	१०	२०	मृत्युञ्जयमंत्रजप
दि.११	गोत्रादि	०	८०	४०	११	यमयमत्वेतिमंत्र
दि.९	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निमूर्धेतिमंत्र
दि.७	घृतदान	७	५	१८	३०	ब्रह्मयज्ञेतिमंत्र
मा.१	तिलदान	९	१८	७	१०	इमं देवेतिमंत्र
मृत्यु	गोदान	०	१४	०	०	नमस्तेरुद्रमंत्र
दि.७	पित्तल	७	७	२	२१	अदितिर्द्योमंत्र
दि.७	तैलान्न	७	७	१०	२१	बृहस्पतेभिमंत्र
मृत्यु	गोजाउदि	०	७	६२	०	नमोस्तुसर्पेतिमंत्र
दि.२०	वस्त्राज्य	१५	१५	१७	२०	पितृभ्यइतिमंत्र
मृत्यु	भोजन	०	१४	०	३०	[illegible]णोत्तमंत्र
दि.७	अन्नदान	७	१७	७	६०	अर्यमणंमंत्र
दि.५	तिलदान	११	९	१५	०	उदुत्यंजातवेदमंत्र
दि.११	दुग्धदा.	११	१७	९	१६	त्वष्टातुर्येतिमंत्र
मृत्यु	गोवृत	६०	०	३०	०	वायोरानेतिमंत्र
दि.१५	गोस्वर्ण	१५	१२	४	१३	इन्द्राग्नि इतिमंत्र
स्थिर	गोघृत	६०	९	३६	६०	नमोमित्रैतिमंत्र
मृत्यु	तिलान	५९	९	६	४	त्रातारामन्देतिमंत्र
दि.९	रौप्योपान	०	१५	१५	६	मातापुत्रेतिमंत्र
मृत्यु	गोमुक्ता	०	२४	२४	१०	आपोघमैतिमंत्र
मा.१	भोजन	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवतिमंत्र
दि.११	श्रीफल	६०	४	६	९	विष्णोरराडितिमंत्र
दि.१५	अश्वान्न	१५	४५	२०	२१	वसौःपवित्रेतिमंत्र
दि.१२	भोजनान्न	०	१२	३	२२	वरुणस्यमंत्र
मृत्यु	भोजन	०	६	२१	१९	अजैकत्वरणोतमंत्र
दि.७	अन्नदान	१०	१९	९	१५	अहिर्बुध्न्येतिमंत्र
स्थिर	वृषदान	१८	६	१९	२०	पूषन्तवव्रतेतिमंत्र

वारबेलाज्ञानार्थ चक्र

वार	दिन	रात
सूर्य	४।५	६।४
चन्द्र	७।३	७।४
भौम	६।२	२
बुध	५।३	६।४
गुरु	६।८	५।८
शुक्र	३।४	३
शनि	६।८	६।१

दिन में- रविवार को ४।५, सोमवार को ७।२, मंगलवार को ६।२, बुधवार को ५।३, गुरुवार को ६।८, शुक्रवार को ३।४, शनिवार को १।६।८। रात्रि में- रविवार को ६।४, सोमवार को ७।४, मंगलवार को २, बुधवार को ६।४, गुरुवार को ५।८, शुक्रवार को ३, शनिवार को ६।१ बारवेलाएं त्याज्य हैं।

नष्ट वस्तु ज्ञानार्थ नक्षत्रों की सुलोचनादि संज्ञा

संज्ञा	नष्टवस्तु	लाभालाभ	भाना	स्वरूप
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	३	अश्वमुख
मध्य	पश्चिम	दूरेश्रव.	३	योनिस्वरूप
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	८	क्षुरक्षाकृति
अन्ध	पूरब	शीघ्रलाभ	५	शंकटवत्
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	३	मृगास्य
मध्य	पश्चिम	दूरेश्रव.	१	मंणिसदृश
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	४	गृहसदृश
अन्ध	पूरब	शीघ्रलाभ	३	वाणाकृति
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	५	चक्राकार
मध्य	पश्चिम	दूरेश्रव.	५	गृहसदृश
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	२	मंचकाकृति
अन्त्य	पूरब	शीर्घलाभ	२	खट्वाकार
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	५	हस्ताकार
मध्य	पश्चिम	दूरेश्रव.	१	मौक्तिक
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	१	प्रवालाकार
अन्ध	पूरब	शीर्घलाभ	४	तोरणसम
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	४	बलिसदृश
मध्य	पश्चिम	दूरेश्रव.	३	कुण्डलाकृति
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	११	सिंहपुच्छवत्
अन्ध	पूरब	शीघ्रलाभ	२	गजदन्तसम
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	२	मंचकसदृश
सुलोचन	उत्तर	दूरश्रव	३	विभानसदृश
अन्ध	पूरब	अलाभ	४	मृदङ्गाकृति
मन्द	दक्षिण	शीघ्रलाभ	१०	वर्तुल
मध्य	पश्चिम	यत्नलाभ	२	मंचाकाकर
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	२	युग्मसदृश
अन्ध	पूरब	शीघ्रलाभ	३२	मर्द्दलाकार

दिनमान का १६ कलांश जनित दुर्मुहूर्त्तादि ज्ञापक चक्र

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वासर
१४	९।१२	२।४	८	६।१२	४।६	१।२	दुष्टक्षण
१४	१२	१०	८	६	४	२	दि.कुलिका
१३	११	९	७	५	३	१	रा.कुलिका
६	४	२	१४	१२	१०	८	कंटकक्षण
८	६	४	२	१४	१२	१९	कालवेला
७।८	१०।१४	२।४	९।१०	१५।१६	५।६	११।१२	अर्धयाम्
१०	८	६	४	२	१४	१०	यमघंट

दोषकालज्ञान

वशिष्ठ के अनुसार- प्रहरार्ध में निधन, यमघंट में निर्धनता तथा कुलिक में सर्वनाश होता है, परन्तु रात्रि में ये दोषकारक नहीं होते हैं।

अरिष्ट शान्ति के लिए शताक्षर गायत्री मंत्र की जप विधि

विनियोग- ॐ अस्य श्रीशताक्षरागायत्रीमंत्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्टाऋषयो गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्दांसि सवितृजातवेदस्त्र्यम्बको देवताः गायत्र्यक्षराणि बीजानित्रिष्टुबक्षराणि शक्तयः अरिष्टशान्तये जपे विनियोगः। विश्वामित्र मरीचिकश्यपवशिष्टऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे।। सवितृजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः हृदये। गायत्र्यक्षराणिबीजानी गुह्ये।। त्रिष्टुवक्षराणि शक्तये नमः पादयोः।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नमः। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममारातीयतोनिदहातिवेदः शिखायै वषट्। ॐ स नः पर्षदातिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुंदुरतात्याग्निः कवचाय हुं। ॐ त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ उर्व्वारुकमिववन्ध नान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्। स्मर्तव्याखिललोकवर्त्ति सततं यज्जङ्गमस्थावरम्। व्याप्तं येन च यत्प्रपंचविहितं मुक्तिश्च यत्सिध्यति।। यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यं गीयते। तद्वत्कृक्षितिसिद्धयेऽस्तुवरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः।।१।। एवं ध्यात्वा शताक्षरां भावयेत्।

अथहोमार्थशताक्षरागायत्रीमंत्रः।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। ॐ जात वेदसेसुनवाम सोममारातीयतो निदहातिवेदः स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरिता-त्याग्निः।। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम। उर्व्वारुकमिव बन्धनानमृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा।।

अरिष्ट शान्त्यर्थ महामृत्युञ्जय वैदिक मंत्र जप विधि

आयाचम्य प्रणानायम्य, शान्तिपाठ, सुमुखश्चेत्यादि गणेशस्मरणं च कृत्वा।। संकल्पः। अमुकमासी-यामुकपक्षीयाऽमुक तिथि वमुकवासरे स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरेउत्पन्नोत्पत्स्यमानाऽखिलारिष्ट निवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादीर्घायुष्य सततारोग्यतावाप्तये श्रीमृत्युञ्जयमंत्रजपमहं करिष्ये।।

ऋष्यादिन्यास- वामदेवकहोलवशिष्ठाऋषयःमूर्ध्नि।। पंक्तिर्गायत्री अनुष्टुप्छन्दांसि वक्त्रे।। सदाशिव महामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदि।। ह्रीं शक्तये नमः लिङ्गे।। श्रीं बीजाय नमः पादयोः।। इति ऋष्यादिन्यास।। ॐ हौं ॐ जूं सः ॐभूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।। ऊर्व्वारुकमिवबन्धनानमृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ।। *अस्य श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेवकहोल वसिष्ठाऋषयः पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जय रुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।* ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं, ॐ नमोभगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं ॐ नमोभगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायै वषट्।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां हीं हौं कवचायं हुं।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीम ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममंत्राय नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐहौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्वलज्वाल मां रक्षरक्ष अघोराय अस्त्राय फट्।। इति षडङ्गन्यास।। त्र्यम्बकं शिरसि।। यजामहेभ्रुवो।। सुगन्धिं नेत्रयोः।। पुष्टिवर्द्धनं मुखे।। उर्व्वारुकं गण्डयोः।। इरा हृदये।। बन्धनात् जङ्घरे।। मृत्योः लिङ्गे।। मुक्षीय उरौ।। मा जान्वो।। अमृतात् पादयोः।। इति पदन्यास।। मूलेनव्यापकंकृत्वाध्यानंकुर्यात्।

अथ ध्यान।। हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः। सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ।। अक्षसंङ्गमृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषार्द्रतनुंभजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।। चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजंसुरपतिंपीयूषपात्रंवहद्धस्ताब्जेनदधत्सुदिव्यममलहास्यास्यपङ्के-रुहम्।। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।२।। इतिध्यात्वा।। मानसोपचारै संपूजय, ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।। ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि।। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।। ॐ सं सर्वात्मकं मुत्रपुष्पाञ्जलि समर्पयामि।। मंत्र जपेत। ॐ हौं ऽ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ।। ततोजपान्तरं देवदक्षिणकरे जपं समर्पयेत्।। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।१।। मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।।२।।

अर्पण।। अनेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम।। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं तु त्र्यम्बकं। जपसांगतासिद्ध्यर्थयथाकामनाद्रव्येणतद्दशांशदुग्धाज्यसंसिक्तासमानांसमिद्भिहोमः।। तद्दशांशमार्जनम्।। तद्दशांशतर्पणम्। तद्दशांशब्राह्मणभोजनं कुर्यात्।।इति।।

ग्रह कृत अनिष्ट फल निवारण हेतु सूर्यादि ग्रहों के दान पदार्थ

सूर्य का दान	चन्द्र का दान	भौम का दान	बुध का दान	गुरु का दान	शुक्र का दान	शनि का दान	राहु का दान	केतु का दान
माणिक्य	वंशपात्र	विद्रुम,पृथ्वी	कांस्यपात्र	पीताधान्य	श्वेतचन्दन	नीलम, तिल	सप्तधान्य	कम्बल,कस्तूरी
गोधूम, गुड़	श्वेतचावल	मसूर, द्विदल	हस्तिवस्त्र	पीतवस्त्र,सुवर्ण	श्वेतचावल	माषान्न, तेल	माषान्न,हेमनाग	माषान्न
सवत्सा गौ	श्वेतवस्त्र	गोधूम	गजदंत, घृत	घृत, पीतपुष्प	श्वेतचित्रवस्त्र	कृष्णवस्त्र	नीलवस्त्र,गोमेद	वैदूर्यमणि
कमलपुष्प	श्वेतचन्दन	रक्तवृषभ	मुद्ग, पन्ना	पीतफल	श्वेतपुष्प	कुरथी, लोहा	कृष्णपुष्प	कृष्णपुष्प
नूतनगृह	श्वेतपुष्प	गुड़, रक्तचन्दन	सुवर्ण, दासी	पुखराज	रजत, हीरा	महिषी	खड्ग, तिल	तिलतैल
रक्तचन्दन	चीनी, रजत	रक्तवस्त्र	सर्वपुष्प, रत्न	हरिद्रा	घृत, सुवर्ण	कृष्णधेनुः	तैल, लौह	रत्न, सुवर्ण
रक्तवस्त्र	वृषभ, घृत	रक्तपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	पुस्तक, मधु	श्वेताश्व, दधि	कृष्णपुष्प	शूर्प, कम्बल	लोहा, बकरा
सुवर्ण, ताम्र	शङ्ख, दधि	सुवर्ण, ताम्र	अनेक फल	लवण, शर्करा	सुगंधद्रव्याणि	उपानह	सतिलताम्रपात्र	शस्त्र
केशर, मूँगा	मोती, कर्पूर	केशर, कस्तूरी	षट्रसभोजन	भूमि, छत्र	शर्करागौ,भूमि	कस्तूरी,सुर्वण	सुर्वण, रत्न	सप्तधान्य
वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा
ज.सं.७०००	ज.सं.११०००	ज.सं.१००००	ज.सं.९०००	ज.सं.१९०००	ज.सं.१६०००	ज.सं.२३०००	ज.सं.१८०००	ज.सं.१७०००

योगिनी दशा जनित अनिष्ट फल शान्ति हेतु मंगलादि योगिनीयों के मंत्र

मंगला का मंत्र	पिंगला का मंत्र	धान्या का मंत्र	भ्रामरी का मंत्र	भद्रिका का मंत्र	उल्का का मंत्र	सिद्धा का मंत्र	संङ्कटा का मंत्र
ॐह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा	ॐग्लौं पिंगलेबैरिकारिणि-प्रसीदफट् स्वाहा	ॐश्रीं धनदे धान्यै स्वाहा	ॐभ्रामरिजगता-मधीश्वरी भ्रामरी क्लीं स्वाहा	ॐभद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा	ॐउल्के मम रोगं नाशय जृंभय स्वाहा	ॐह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा	ॐह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा

ग्रहों के एक राशि के भोगकाल एवं फलदायक काल का ज्ञान

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु/केतु	ग्रह
मा.१	दि.२।	मा.१।।	मा.१	मा.१३	मा.१	मा.३०	मा.१८	एक राशि का भोगकाल
आदिमें	अंत में	आदि में	सदा	मध्य में	मध्य में	अन्त्य में	अन्त्य में	फलसमय
दि.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गन्तव्यराशि से पूर्व फलदायक

सभी ग्रहों के दोष शान्ति हेतु सामान्य औषधियाँ

सर्षप	देवदारु	हरिद्रा	लोध	सरपुङ्खा	कुष्ठ	तीर्थोदक
धानकालावा	बरियरा		लजालू	नागरमोथा	कंगुनी	

इन समस्त औषधियों को जल में डालकर उससे स्नान तथा तदनन्तर दान करने से ग्रह जनित पीड़ा दूर होती है।

अथात्रषड्भानि

जन्म	९ मृत्युभय
कर्म	१० कर्मनाश
संघात	१६ बंधुनाश
समुदाय	१८ सुखनाश
विनाश	२४ देहनाश
मानस	२५ मनस्ताप

आवश्यकतावश अनिष्टतिथ्यादि निवारणार्थ दान

तिथि	वार	नक्षत्र	करण	योग
तण्डुल	रत्न	गौ	धान्य	सुवर्ण
चन्द्र	भद्रा	तारा		
शंख	धान्य	लवण		

तिथ्यादिदोष रहने पर उससे सम्बन्धितवस्तु का दान कर वह कार्य किया जा सकता है।

चान्द्र मासों में जन्मनक्षत्र का रविवारादि में फल

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
गमन	सुभोज्य	वह्निभय	सन्मति	वस्त्रलाभ	सौख्य	दुःख	फल

वार दोष शमन हेतु दान।। रविवारादि दोषो के शमनार्थ क्रमशः ताम्बुल, श्रीखण्ड, भोजन, पुष्प का दान, विष्णु को प्रणाम, सफेदवस्त्र का दान तथा तैल स्नान करना चाहिए।

वर्ष पत्र में मुन्थादान

मुन्थादान
दान
चावल
सुवर्ण
कांस्य
पात्र
घृत
श्वेतवस्त्र
वर्णदक्षिणा

ग्रहों का तंत्रसारोक्तमंत्र

ग्रह	मंत्र
सूर्य	ॐ घृणि सूर्याय नमः
चन्द्र	ॐ सों सोमाय नमः
भौम	ॐ अं अंगारकाय नमः
बुध	ॐ बुं बुधाय नमः
गुरु	ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र	ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि	ॐ शं शनैश्चराय नमः
राहु	ॐ रां राहवे नमः
केतु	ॐ कें केतवे नमः

धारणार्थ ग्रहों के रत्न

सूर्य	मणिक्य	विद्रुम
चन्द्र	मोती	चाँदी
भौम	मूँगा	मूँगा
बुध	पन्ना	सोना
गुरु	पुष्पराज	मोती
शुक्र	वज्र	चाँदी
शनि	नीलम	लोहा
राहु	गोमेद	लाजावर्त
केतु	वैदूर्य	लाजावर्त

एक ही कोष्ठात्मक यंत्र में रत्नन्यास क्रम

ईशान	पूर्व
बुध, पन्ना	शुक्र, हीरा
उत्तर	मध्य
गुरु, पुखराज	सूर्य, माणिक
वायव्य	आग्नेय
केतु, वैदूर्य	चन्द्र, मोती
पश्चिम	दक्षिण
शनि, नीलम	भौम, मूँगा
नैऋत्य राहु गोमेद	

सभी ग्रहों का राशिफल नियम- सूर्य मंगल राशि के आदि में शुक्र एवं गुरु, मध्य में बुध सर्वदा तथा चन्द्रमा एवं शनि राशि के अन्त में विशेष फलदायक होते हैं। रविवार के दिन चान्द्रमास में अपने जन्म नक्षत्र का प्रवेश हो तो उस मास में यात्रा, चान्द्रवार में अन्नप्राप्ति, मंगलवार में अग्निभय, बुधवार में सान्मति, गुरुवार में वस्त्रप्राप्ति, शुक्रवार में सुखप्राप्ति, शनिवार के दिन जन्म नक्षत्र का प्रवेश होने से उस मास पर्यन्त दुःख की प्राप्ति होती है। **ग्रहों के राशि भोग की दिन संख्या-** सूर्य, बुध एवं शुक्र ३० दिन, भौम ४५ दिन, गुरु १३ मास, चन्द्र २ दिन, राहु १८ मास तथा शनि ३० मास में एक राशि का भोग करते हैं। **शनि पाद विचार-** जन्मकाल में १,६,१२ में शनि हो तो स्वर्ण, २,५,९ में हो तो रजत, ३,७,१० में हो तो ताम्र तथा ४,८,१२ में हो तो शनि का लौह पाद होता है। फल- जन्मकालिक शनि लौह पाद में हो तो धन विनाश, स्वर्ण में सुख, ताम्र में सम्मता तथा रजत में हो तो सौभाग्य होता है। **शनि के अढ़ैया का फल-** जन्मराशि से ४,८ में शनि सिथत हो तो व्याधि, बंधुविरोध, प्रदेश गमन, क्लेश, दुर्जनों से भय, चिन्ता, मृत्यु, अग्निभय, लोहा एवं शस्त्र से भय तथा सर्वदा दुःख ही दुःख देता है। **शनि की साढ़ेसाती का फल-** यदि शनि राशि, राशि से द्वितीय तथा द्वादश में स्थित हो तो, अनेक प्रकार के कष्ट, दुर्जनों से भय, पुत्र तथा पशुओं को पीड़ा, हानि, मरण, विदेश यात्रा, साधारण सुख, अर्थ तथा ऋद्धि विनाश आदि करता है।

स्मार्तकर्म का क्रम। धर्मसिन्धु के अनुसार क्रमशः संकल्पशान्ति, विप्रवरण, दिग्रक्षण, पञ्चगव्यद्वारा भूमिशुद्धि, मुख्य देवताओं का पूजन, अन्य देवों का पूजन, पात्रासादन, हवनकर्म, यथाक्रमहोमकर्म, स्विष्ट होम, बलि, पूर्णाहुति, पूर्णपात्रदान, अग्निपूजन, अभिषेक, विसर्जन, श्रेयोदान, दाक्षिणादिदानकर्म, कर्मेश्वरार्पण आदि करना चाहिए।

ग्रहाणां बीजमन्त्राः

सूर्यः-	ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।
चन्द्रः-	ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।
भौमः-	ॐ हूँ श्रीं भौमाय नमः।
बुधः-	ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।
गुरुः-	ॐ ह्रीं क्लीं हूँ बृहस्पतये नमः।
शुक्रः-	ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।
शनिः-	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।
राहुः-	ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।
केतुः-	ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।

ग्रहों की होम समिधा। सूर्यादिग्रहों की क्रमशः अर्क (मन्दार), पलाश, खदिरा, अपामार्ग (चिचिड़ा), पिप्पल,गुलर, शमी, दुर्वा एवं कुशा होम समिधाएं होती हैं।

ग्रहों के होम प्रमाण। प्रत्येक ग्रह के लिए १०८ अथवा २८ आहुतियां देनी चाहिए। अथवा मधु एवं सरसों से १००८ आहुति देनी चाहिए। **सन्तानप्रद मन्त्र।** देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणंगतः। कौशल्या सुशुभे तेनपुत्रेणामित तेजसा। यथा वरेणदेवानामदितिर्वज्रपाणिना।। ऊपर लिखित मन्त्रों का १२५०००जप तथा इसके दशांश तिल, खीर एवं घी से हवन, हवन के दशांश तर्पण तथा तर्पण के दशंश ब्राह्मण भोजन कराने से पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है।

जन्म एवं नामराशि के प्रधानता का निर्णय। विवाह, समस्त मंगल कार्यों, यात्रा एवं ग्रहगोचर में जन्मराशि की प्रधानता होती है। यहाँ नामराशि का चिन्तन नहीं करना चाहिए। देश, ग्राम, गृह, युद्ध, सेवाकर्म तथा व्यवहार में नामराशि की प्रधानता होती है। अतः यहाँ जन्मराशि का चिन्तन न करें। **अन्य आवश्यक कार्यों में बृहस्पति का मत-** मास प्रयुक्त कार्यों में गुरु एवं शुक्र के मूढ़त्व, मलमास तथा गुर्वादित्य का विचार नहीं होता है।

ज्योति प्रकाश के अनुसार त्रिधा शान्ति- शास्त्र में कहे हुए ग्रहौषधियों से स्नान, ग्रह एवं ब्राह्मणों की पूजा तथा ग्रहों के उद्देश्य से होम, ये तीन प्रकार की ग्रह शान्ति होती है। **श्रीपति के अनुसार-** देव, ब्राह्मण की वन्दना तथा इनके वचनों के अनुपालन, साधुजनों के वचन श्रवण, भगवत कथा श्रवण, होम, तीर्थयात्रा एवं पवित्र मन से जप- दान करने वालों को ग्रह पीड़ा नहीं पहुँचाते हैं। **पिता के अभाव में कन्यादान का अधिकार-** (याज्ञवल्क्य) पिता, पितामह, भ्राता, स्वकुलपुरुष तथा जननी क्रमशः कन्यादान के अधिकारी होते हैं। इनके द्वारा कन्यादान नहीं करने पर ऋतुकाल में इनको भ्रूण हत्या का पाप लगता है। कन्यादान करने वालों के अभाव में कन्या स्वयं ही वर-वरण कर लेवे। **नारद-** पिता स्वयं ही अथवा पिता की अनुपस्थिति में भ्राता कन्यादान करे। अथवा क्रमशः मातामह, मामा, स्वकुलजन, जननी एवं इन सबके अभाव में स्वजातिजनों को कन्यादान करना चाहिए। अगर कन्या का ऊपर कहे हुए लोगों में कोई भी न हो तो कन्या को राजा के पास चले जाना चाहिए। इस प्रसङ्ग में ध्यातव्य है कि उपवीत संस्कार संस्कृत भाई ही कन्यादान का अधिकारी होता है। **पिता आदि के न रहने पर उपनयन का अधिकार-** पिता अथवा पिता के अभाव में पितामह उपनयन करें, इसके भी अभाव में चाचा तथा इसके भी अभाव में सहोदर तथा तदनन्तर क्रमशः संगोत्रपिण्ड, मामा, असपिण्डगोत्रजन उपनयन के अधिकारी होते हैं। परन्तु ये सब बटुक से बड़े होने चाहिए। किसी के भी न रहने पर श्रोत्रिय उपनयनाधिकारी होता है।

शिववास फल

द्विगुणित तिथि में ५ जोड़कर सात का भाग दें, एकादि शेष रहने पर क्रमशः कैलाश, गौरीसंग, वृषभारूढ़, सभा, भोजन, क्रीड़ा एवं श्मशान में शिव की उपस्थिति रहती है। जिससे क्रमशः सुख, सुख सम्पत्ति, अभिष्टसिद्धि, सन्ताप, पीड़ा, कष्ट तथा मरण होता है। **विशेष-** नित्य के शिवपूजन, श्रावणमास, तथा अधिक मास में शिव वास का विचार नहीं होता है।

नवग्रहाणां जपार्थ वैदिकमन्त्रा

सूर्यस्य।। ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतं मत्यञ्च।। हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो याति भुवनानि पश्यम्।

चन्द्रस्य।। ॐ इमन्देवाऽअसपत्नठसुबध्वं महतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठयायमहतेजान-राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।। इमममुष्यैपुत्रम मुष्यै पुत्रमष्यै विशऽएषवोमीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाठ राजा।।

भौमस्य।। ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।। अपाठ रेताठसिजिन्वति।।

बुधस्य।। ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहीत्वामिष्टापूतसठ सृजेथामयञ्च।। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वदेवा यजमानश्चसीदत।।

गुरोः।। बृहस्पतेऽतियदर्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु।। यद्दीदयच्छवसऋत-प्रजाततदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्।।

शुक्रस्य।। ॐ अन्नात्परिस्त्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानञ्च शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु।।

शनेः।। ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयेऽआपोभवन्तुपीतये।। शंयोरभिस्रवन्तु नः।।

राहोः।। ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा।। कयाशचिष्ठयावृता।।

केतोः।। ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे।। समुषद्भिरजायथाः।।इति।।

शुभछिक्का- भोजन, शयन, दान, आसन, वाम, पृष्ठ, युद्ध, औषधसेवन, अध्ययन, बीजवपन में छिक्का शुभ होती है।।

छिक्का के शुभाशुभ फल ज्ञानार्थ चक्र

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	वार
विघ्न	विलंब	उत्तम	मृति	शुभ	आगमन	लाभ	विलंब	रवि
लाभ	विलंब	मृति	लाभ	शुभ	उत्तम	अल्पलाभ	विलंब	चन्द्र
मित्रागमन	लाभ	विलंब	मृति	लाभ	विदेशयात्रा	सुख	लाभ	भौम
सिद्धि	देहकष्ट	अरिष्ट	विलंब	मृति	धननाश	चौरभय	देहकष्ट	बुध
चिन्ता	वार्ता	विलंब	उत्तम	चौरभय	मृति	कष्ट	वार्ता	गुरु
धनादि	कलह	मित्रागमन	अर्थलाभ	उत्तम	विलंब	मरण	कलह	शुक्र
अर्थनाश	कष्टनाश	वार्ता	मित्रागमन	उत्तम	शुभ	विलंब	कष्टनाश	शनि

रव्यादिवारों के प्रमुख कर्म

रविवार- राज्याभिषेक, उत्सव, यानसेवा, गौ, अग्नि, मंत्र, औषधि तथा शस्त्रकर्म, स्वर्ण, ताम्र, ऊन, चर्म, एवं काष्ठ सम्बन्धित कर्म, संग्राम एवं द्रव्य सम्बन्धित कर्म।

सोमवार- शंख, मोती, चांदी, सम्बन्धित कार्य इक्षुभक्षण, स्त्री, वृक्ष, आभूषण, गायन सम्बन्धित कर्म, वाटिकागमन, गजादआरोहण, वस्त्रादि से सम्बन्धित कार्य।

भौमवार- भेदकराना, मिथ्याभाषण, चोरी, विष, अग्नि, शस्त्र, वेध, अभिघात, शाठ्य एवं दम्भ सम्बन्धित कर्म, सेना, निवेश, संग्रह, धातु, स्वर्ण, मूंगां एवं रत्न सम्बन्धित कार्य।

बुधवार- निपुणता प्राप्ति, पुण्य, अध्ययन, कला, शिल्पादि कर्म, सेव, लिपि, लेखन, धातुक्रिया, स्वर्ण, संधि, व्यायाम एवं वाद आदिकर्म बुधवार को करने चाहिए।

गुरुवार- धर्मकार्य, पौष्टिकपुरश्चरण, यज्ञ, विद्यालय, मांगलिकर्म, वस्त्र, स्वर्ण, गृह, यात्रा, रथ, अश्व, औषधि, आभूषण आदि से सम्बन्धित कार्य।

शुक्रवार- स्त्रीयों से सम्बन्धित, शय्या, मणि, रत्न, गन्ध, वस्त्र, उत्सव, अलंकरण, भूमि, द्रव्य, गो, कोष, कृषि आदि कर्म।

शनिवार- लौह, पत्थर, शीशा, शस्त्र, दास, पाप, चौर, विष, विद्या, गृहप्रवेश, वध, दीक्षा एवं स्थिरकर्म।

अथ वर्षप्रवेशसारणी। जन्म, वार, इष्ट, घटी पलों में प्रतिवर्ष हेतु वारादि क्षेपक

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	गव.
१	२	३	५	६	०	१	३	४	०	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	वा.
१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	घ.
३१	३	३४	६	३७	०	४०	१२	४३	१५	४६	२८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	प.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	गव.
६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	वा.
३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	घ.
१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	प.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.
६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	गव.
४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	वा.
४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	घ.
७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	प.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.

ग्रहों का शुभाशुभ फलदातृत्व। (व्यास) लग्न में निषिद्ध स्थान में गये हुए पापग्रह भी यदि केन्द्र एवं त्रिकोणगत बुध, शुक्र एवं बृहस्पति से देखे जाते हो तो दोषकारक नहीं होते हैं। उच्चस्थ, स्वगृही एवं मित्रराशि में स्थित ग्रह फलदायक तथा अस्त, नीचराशिगत एवं शत्रुराशिगत ग्रह विफल होते हैं। सामान्य सभी कार्यों में अनुकूल ग्रह स्थिति- प्रायश: समस्त शुभकार्यों में लग्न में पापग्रह, षष्ठ में शुभग्रह, केन्द्र एवं त्रिकोण में पापग्रह तथा अष्टम एवं द्वादश में कोई भी ग्रह नहीं होने चाहिए। शुभकार्य के समय यदि शुभग्रह लाभ (११) स्थानगत हों तो श्रेष्ठ होते हैं। बृहस्पति के अनुसार- सर्वगुण सम्पन्न गुरु यदि स्ववर्ग का होकर लग्न से केन्द्र में स्थित हो तो लाखों दोषों को नष्ट कर देता है। गुरु की भाँति शुक्र एवं बुध यदि स्ववर्ग गत केन्द्र में स्थित हों तो क्रमश: १००००० एवं १००० दोषों को नष्ट करते हैं।

वाराहमिहिर के मतानुसार वस्तुओं का समर्घ चक्र- जिस वस्तु की तेजी मन्दी जाननी हो उसकी राशि देख लें, यदि उस राशि से बृहस्पति ४।१०।१।११।७।९।५, बुध २।१।११।५।८ में व शुक्र ६।७ को छोड़ कर शेष सब भाव में हो तो वह वस्तु सस्ती होगी। ग्रह सूर्य, मङ्गल, शनि व राहु के क्षीणचन्द्र वस्तु के राशि से ३।६।११।१ भाव में हो तो समर्घ अन्य में हो तो महर्घ जानना चाहिये। जिस वस्तु की राशि में ८वें पाप ग्रह हों तो वह वस्तु मँहगी रहेगी तथा जिसमें शुभ ग्रह हों वह वस्तु सस्ती रहेगी।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
सुवर्ण	चावल	बाजरा	कोद्रव	चावल	तीसी	उरदी	ऊख,गुड़	अश्व	वृक्ष	जलफल	मोपज
गेहूँ, जौ	वस्त्र	कपास	केला	षटरस	जवास	लाल	चीनी	गज	कपड़ा	पुष्प	मोती
मसूर, राल	गोधूम	रूई	जायफल	गुड़	मटर	गेहूँ	शक्कर	लवण	रसकूट	रत्न	हीरा
कम्बल	यव	कमलकंद	तमालपत्र	खाँड़	कुलथी	सरसो	लोई	धनिया	जमीकंद	पोस्त	तस
पश्मीना	महिष	जुवार	दालचीनी	सिंह	मूँग	यव	ककरी	मुराई	सुवर्ण	रस	अँतर
दुशाला	बैल	मकाशा		मृगादिचर्म	गेहूँ	रहर	चमड़ा	तिल	कृष्ण	अपानक	समुद्रदोष
स्थलज	पुष्प	लंक		तुष	सेमदाना	मटर	बल्लीफल	वस्त्र	ऊव	चित्र	मत्स्य
औषधि	सरसो	ककुनी				अरण्ड	पान	आयुध	मंजिष्ट	वि.वस्तु	गजमोती

।। सारणी द्वारा दृष्टि आयनन।। द्रष्टाग्रह को दृश्य में घटाकर जो शेष प्राप्त हो उसी के द्वारा कलादिफल लेना चाहिए। राशि रहित शेष को गत एवं गम्य कला के अन्तर से गुणाकर ३० से भाग देने से जो लब्धि प्राप्त हो उसका यथा योग्य राशिफल में धन-ऋण करने से स्पष्ट दृष्टि फल होता है।

अथ त्रिराशिप चक्र

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिवा	र.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्री	गु.	च.	बु.	मं.	र.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

अथ होरा चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	
सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	१५
चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	१५

अथ द्रेष्काण चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	१०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	
र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	२०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	
बु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	३०

अथ हद्दाचक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशय:
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अं.
गु.	शु.	बु.	मं.	गु.	बु.	श.	मं.	गु.	बु.	शु.	शु.	स्वा.
६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अं.
शु.	बु.	शु.	शु.	शु.	शु.	बु.	शु.	शु.	गु.	बु.	गु.	स्वा.
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अं.
बु.	गु.	गु.	बु.	श.	गु.	गु.	बु.	बु.	शु.	गु.	बु.	स्वा.
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९	अं.
मं.	श.	मं.	गु.	बु.	मं.	शु.	गु.	मं.	श.	मं.	मं.	स्वा.
५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अं.
श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.	स्वा.

।। केन्द्रायु साधन ।।

जन्मांग चक्र के केन्द्रस्थान में स्थित अंको का योग कर योगफल को त्रिगुणित करने से केन्द्रायु होता है। परन्तु यदि केन्द्रस्थान राहु एवं मंगल स्थित हों तो त्रिगुणित योगफल में राहु तथा मंगल के स्थित केन्द्रस्थान की संख्या घटाने से केन्द्रायु होता है।

राशियाँ	ध्रुवाङ्क
मेष	१०
वृष	६
मिथुन	२०
कर्क	५
सिंह	८
कन्या	२
तुला	२०
वृश्चिक	६
धनु	१०
मकर	१४
कुम्भ	३
मीन	४

जन्मांग चक्र में जो ग्रह जिस राशि में स्थित हो उन राशियों के ध्रुवांकों का योग आयु प्रमाण होता है।

वर्ष कुण्डली में तन्वादिभावस्थ ग्रहों का जातिकोक्त फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	क्लेश चिन्ता	शोक राजभय	पराक्रम धनलाभ	हानि पीड़ाभय	रोगभय पुत्रनाश	सुख शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट पीड़ाभय	शोक-कष्टादिभय	धर्मवृद्धि राज्यप्रद	सुखाप्ति राज्याप्ति	सुखार्थ लाभ	उद्वेग पीड़ा
चन्द्र	कफज्वर पीड़ा	नेत्रपीड़ा धनप्राप्ति	धनप्राप्ति हर्ष	सुख शत्रुनाश	सुख सुमति	अङ्गपीड़ा व्यय	ज्वरादि भय	विविध कष्टभय	पुण्योदय धनागम	सुकर्म जयाप्ति	यशोर्थ लाभ	व्यय नेत्रपीड़ा
भौम	वातव्याधि व्रण	नेत्ररोग वित्तनाश	आरोग्यता द्रव्यलाभ	व्यसन रोगभय	पुत्राप्ति दुर्बुद्धि	सुख शत्रुनाश	स्त्रीनाश कष्ट	ज्वरार्ति व्रण	पुण्योदय धनाप्ति	राज्यार्थ लाभ	धनादि लाभ	विरोध कर्णपीड़ा
बुध	सुख,यश, धनलाभ	द्रव्यप्राप्ति सुख	सुख सुमान	सुख द्रव्यलाभ	पुत्रवित्त सुखप्ति	रोगभय कलह	धनागम कफरोग	व्यांग्रता कफरोग	धन कीर्त्याप्ति	मानसुखादि लाभ	सुख जयाप्ति	शत्रु रोगादिभय
गुरु	सुख यशलाभ	कीर्तिधना दिलाभ	जय सुख	वाहन प्राप्तिसुख	पुत्राप्ति सुख	शत्रुरोगादि भय	सुख वित्तप्राप्ति	कठिन रोगभय	सुख भाग्यवृद्धि	राज्यार्थ लाभ	सुतार्थ लाभ	शोक रोगादिभय
शुक्र	सम्मान धनलाभ	धनाप्ति राज्यसुख	कीर्तिवृद्धि अर्थागम	सुख अर्थलाभ	धनाप्ति सुख	रिपुभति कष्ट	कलत्र सौख्य	ज्वरपीड़ा दिभय	धर्म धनागम	मानजया-दिलाभ	क्षेमार्थ लाभ	व्यय अर्थलाभ
शनि	शत्रुभय वातव्याधि	पीड़ाभय विरोध	धनाप्ति जय	सुख,अर्थ नाश, कष्ट	सुतहानि पीड़ा	धनप्राप्ति कष्टनाश	स्त्रीकष्ट कलह	दु:ख रोगादिभय	भाग्यवृद्धि शत्रुनाश	धनहानि पीड़ाभय	धनाप्ति पुत्राप्ति	क्लेश चिन्ता
राहु	शिरोवेदना कलह	नृपभय पीड़ा	शत्रुनाश शुभ	वातव्याधि दु:ख	बुद्धिनाश निर्धन	रिपुक्षय आरोग्य	पीड़ाभय धनक्षय	धनक्षय रोगभय	धनधर्म वृद्धि	वाहननाश जय	विपुत्र सुलाभ	व्याधि भय
केतु	पीड़ा,भय चिन्ता	क्लेश धनक्षय	आरोग्य धर्मनाश	कष्ट राजभय	पीड़ाभय दुर्बुद्धि	सुख धनागम	क्लेश रोग	ज्वरपीड़ा दिभय	भाग्य यशोर्थलाभ	कीर्ति अर्थलाभ	पुत्रार्थ सुखलाभ	शोक एवं कष्ट भय
मुन्था	सुख शत्रुनाश	सुयश अर्थागम	कार्यपुष्टि धन	अङ्गपीड़ा दु:ख	सुबुद्धि सुखाप्ति	रोगभय अर्थनाश	रोगभय व्यसन	दुर्व्यसन रोगभय	भाग्योदय	राज्यसुख धनाप्ति,	धर्मार्थ लाभ	सुव्यय लाभ

सप्तमांशचक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.
१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	४
मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	१७।९
२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	८
शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	३४।१७
३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	१२
बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	५१।२५
४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	१७
चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	८।३४
५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	२१
सू.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.	२५।४२
६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	२५
बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	४२।५१
७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	३०
शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	शु.	र.	गु.	०

अथ नवमांशचक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.क.
मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	३।२०
शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	६।४०
बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	१०।०
चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	१३।२०
र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	१६।४०
बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	२०।०
शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	२३।२०
मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	२६।४०
गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	३०।०

अथ वर्ष मुद्दादशाचक्र

सू.	च.	मं.	रा.	गु.	चं.	बु.	के.	शु.	पति
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

गतवर्ष की संख्या में जन्म राशि की संख्या जोड़कर दो घटा दे, पुन: नौ से भाग दें, शेष संख्यामित ग्रहदशापति होता है।

प्रश्न द्वारा वर्ष प्रवेश साधन- प्रश्नकाल में जो प्रश्नलग्न हो वही वर्षप्रवेश का लग्न एवं प्रश्नलग्न से चतुर्थेश बलसाधनार्थ जन्म लग्नेश होता है। प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि में १५ के भाग से प्राप्त फल राश्यादिक मुंथहा होती है। अथवा प्रश्नलग्न की कला में १५०के भाग से प्राप्तफल राश्यादिक मुंथहा होती है। प्रश्नकालिक सूर्य के तुल्य राश्यादि मान से सूर्य पुन: अग्रिम वर्ष में जब होगा उसी समय पुन: अग्रिमवर्ष प्रवेश होगा। अत: उसी काल का लग्न, ग्रह आदि साधन कर समीक्षा पूर्वक दैवज्ञों को विचार करना चाहिए। क्योंकि यहाँ पर किसी एक आचार्य का मत उपस्थापित है।

अथ द्वादशांशचक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.क.
मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	२।३०
शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	५।०
बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	७।३०
चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	१०।०
र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	१२।३०
बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	१५।०
शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	१७।३०
मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	२०।०
गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	२२।३०
श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	२५।०
श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	२७।३०
गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	ब.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	३०।०

वर्ष कुण्डली में प्रयुक्त द्रेष्काण चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंश
मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	अधिपति
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	अंश
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	अधिपति
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	अंश
शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	अधिपति

साधारणतया सभी नक्षत्रों का शान्ति प्रयोग

देशकाल आदि का संकल्प कर "ममोत्पन्नव्याधेर्जीवच्छरीराविरोधेन समलनाशाथ-ममुकनक्षत्रशांति करिष्ये" का संकल्प कर पुन: गणपत्यादि देवताओं के पूजन पूर्वक आचार्य वरण करें, पुन: कलश के पूर्ण पात्र पर द्वादशदल बनाकर स्वर्ण निर्मित नक्षत्रदेवता की प्रतिमा का पूजन कर पुन: द्वादशदलों पर संकर्षणादि द्वादश सूर्य का अवाहन एवं पूजन करें। पूजन के पश्चात दुर्वा, शमी, तिल, खीर एवं घी से गायत्री एवं नक्षत्र देवता हेतु १०८ बार अथवा विशेष कष्ट रहने पर १००८ आहुति प्रदान कर पुन: दधिभक्त का बलि देवें। आचार्य को प्रतिमा एवं गौ दान कर ब्राह्मण भोजन करावें। शान्ति मयूख में सभी नक्षत्रों के देवताओं का मन्त्र आदि विस्तार से वर्णित है। कर्मविपाक के अनुसार ज्वर नाशार्थ "जातवेदस" इत्यादि से १०००० या ५००००० जप अथवा रुद्र के लिए "नमनुवाक" से १००० कलशों से स्नान करावें अथवा विष्णु प्रीत्यर्थ पुरुषसूक्त की १००० आवृति से १००० कलश स्नान करावें। अथवा श्रीभागवतस्थ ज्वरस्तोत्र का जप करावें।

तन्वादि भावों के स्थिर कारक

भाव	कारक
तनु १	सूर्य
धन २	गुरु
स. ३	भौम
मातृ ४	चन्द्र
पुत्र ५	गुरु
रोग ६	भौम
जाया ७	शुक्र
मृत्यु ८	शनि
भाग्य ९	गुरु
कर्म १०	बुध
लाभ ११	गुरु
व्यय १२	शनि

वर्षेश के पञ्चाधिकारिगण

१	जन्मलग्नपति।	४	मुंथहापति।
२	वर्षलग्नपति।	५	दिवारविभप।
३	त्रिराशिपति।	६	रात्रौचन्द्रभप।

वर्षमुद्दा दशा का बारवाँ भाग मासदशा होता है।

वर्षेशनिर्णय- सारिणी में दर्शाये हुए वर्षेश के पञ्चाधिकारीगणों में जो सबसे अधिक बलवान होकर लग्न को देखता है वही वर्षेश होता है। यदि कोई ग्रह बलवान होता हुआ भी लग्न को न देखता हो तो वह वर्षेश नहीं होता है। यदि पञ्चाधिकारी ग्रह बलवान होकर लग्न को देख रहे हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि होती है वही वर्षेश होता है। यदि सबकी समान दृष्टि हो व सभी निर्बल हों तो मुन्थहा लग्न का स्वामी वर्षेश होता है। पाँचो अधिकारियों में अगर कोईभी लग्न को न देख रहा हो तो सबसे अधिक बलवान ग्रह ही वर्षेश हो जाता है। कुछ आचार्यो के अनुसार बलादि साम्य रहने पर रात्रि के वर्ष प्रवेश में चन्द्र राशिपति एवं दिन के वर्षप्रवेश में सूर्य राशिपति वर्षेश होता है। अथवा- यदि कोई भी लग्न को न देख रहा हो तो वर्ष लग्नेश ही वर्षेश हो जाता है। वर्ष में अरिष्टज्ञानार्थत्रिपताकीचक्र- वर्ष प्रवेश काल से गत वर्ष की संख्या में एक जोड़कर ९ से भाग देने पर प्राप्त शेष राशि तुल्य स्थान अपनी राशि से जन्म के चन्द्र को आगे बढ़ाकर त्रिपताकी चक्र में रखना चाहिए। इसी तरह गत वर्ष की संख्या में ४ का भाग देने से शेष संख्या तुल्य स्थान अपनी राशि से जन्मकालिक ग्रह आगे हो जाते हैं। इस चक्र में लग्न एवं चन्द्र शुभग्रह से विद्ध हो तो शुभ एवं पापग्रहों से विद्ध हों तो अशुभ फल होता है। मुंथहानयन- जन्मलग्न से प्रत्येक वर्ष में एक-एक राशियों की वृद्धि से मुंथहा भ्रमण करती है। मासदशानयन- गत वर्ष की संख्या को १२ से गुणा कर जन्मराशि की संख्या जोड़े एवं २ घटाकर ९ से भाग दें शेष दशामास होता है।

अङ्ग के विभिन्न विभागों में छिपकली पतन फल ज्ञापक चक्र

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
शिर	राज्यलाभ	कण्ठ	शत्रुनाश	हस्तद्वय	वस्त्रलाभ	वामपाद	नाश
नासाग्र	व्याधि	जंघा	शुभप्रद	वाममणिबन्ध	कीर्तिविनाश	अधरोष्ठ	ऐश्वर्य
वामभुज	राजभय	दक्षिण	मनस्ताप	दक्षिणपाद	गमन	द.भुज	नृपतुल्यता
जानुद्वय	शुभागम	मणिबन्ध	धननाश	उत्तरोष्ठ	धननाश	पृष्ठदेश	बुद्धिनाश
कटिभाग	अश्वलाभ	केशान्त	मरण	नेत्र	धनप्राप्ति	नासिका	बहुधन
गुल्फ	धनलाभ	भ्रुवमध्य	राजसंबंध	उदर	भूषणलाभ	मुख	मिष्ठान्न
ललाट	बंधुदर्शन	वामकर्ण	बहुलाभ	स्कन्ध	विजय	पादमध्य	श्रीनाश
दक्षिणकर्ण	आयुवृद्धि	स्तनद्वय	दौर्भाग्य	हृदय	धनलाभ	पादान्त	मरण

विशेष छिपकली पतन फल- दानों पैरों, जघनों, गुदा एवं गुह्य स्थान पर पल्ली पतन से मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। अन्यत्र पतन से शुभ होता है। पल्ली पतन के अनन्तर सतैल स्नान करना चाहिए। यही फल गिरगिट के आरोहण में भी होता है। स्त्रियों के लिए उक्त फल विपरीत होता है।

छिपकली पतन जनित दुष्ट फल निवारणार्थ जप-दान- अशुभ अङ्गो में पल्ली पतन पर स्नान करके तिल एवं उड़द का दान कर, नमस्कार पूर्वक शिव के षडाक्षर मंत्र का जप करना शुभ प्रद होता है। साथ ही शिवालय में १०८ या १००८ वार दीप दान भी करना चाहिए। अथवा मृत्युञ्जय का जप तथा स्वर्ण, गोदान आदि करना श्रेयष्कर होता है।

।। श्री गणेशाय नमः। श्रीकाशीविश्वनाथ शरणम्।।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण दक्षिणगोल वसन्तऋतु।।

चैत्रशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ३० फाल्गुन से १४ चैत्र तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक २१ मार्च से ४ अप्रैल तक सन् २०१५ ई.।।

☛ इस पक्ष में खरमास है।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.
२९	५८	१	श	१७	४०	दि	१	४	उ.भा.	११	०	दि	१०	२४	शुक्ल	०/५२	११/३८	प्रा	६/३	४/८	वव	१७	४०	वा	४४	५९
३०	२	२	र	१२	१८	दि	१०	५५	रेवती	७	२४	दि	८	५८	ऐन्द्र	४५	५१	रा	१२	२०	कौ	१२	१८	तै	३९	५३
३०	६	३	चं	७	२८	दि	८	५८	अश्विनी	४	२१	दि	७	४३	वैधृति	३९	२९	रा	९	४७	गर	७	२८	व	३५	२९
३०	१०	४	मं	३	२९	दि	७	२२	भरणी	२	१०	प्रा	६	५०	विष्कुम्भ	३३	४८	रा	७	२९	भ	३	२९	वव	३१	५७
३०	१३	५	बु	०/५८	२४/०	प्रा	६/५	७/११	कृत्तिका	०	४६	प्रा	६	१५	प्रीति	२८	५६	सा	५	३१	वा	०	२४	कौ	२१/५८	२४/२४
३०	१७	७	गु	५७	३७	रा	५	०	रोहिणी	०	२८	प्रा	६	८	आयुष्मान	२४	५८	दि	३	५६	गर	२८	१	व	५७	३७
३०	२१	८	शु	५८	७	रा	५	११	मृगशिरा	१	२२	प्रा	६	२९	सौभाग्य	२२	०	दि	२	४४	भ	२७	५२	वव	५८	७
३०	२५	९	श	६०	०	स	म	स्त	आर्द्रा	३	३१	दि	७	१९	शोभन	२०	२	दि	१	५६	वा	२९	४	कौ	६०	०
३०	२८	९	र	०	१	प्रा	५	५४	पुनर्वसु	६	५९	दि	८	४२	अतिगण्ड	१९	५	दि	१	३२	कौ	०	१	तै	३१	२९
३०	३२	१०	चं	२	५७	दि	७	५	पुष्य	११	३२	दि	१०	३१	सुकर्मा	१९	०	दि	१	३०	गर	२	५७	व	३५	०
३०	३६	११	मं	७	३	दि	८	४२	श्लेषा	१७	६	दि	१२	४३	धृति	१९	४१	दि	१	४५	भ	७	३	वव	३९	२८
३०	३९	१२	बु	११	५२	दि	१०	३७	मघा	२३	१८	दि	३	११	शूल	२०	५४	दि	२	१४	वा	११	५२	कौ	४४	३०
३०	४३	१३	गु	१७	८	दि	१२	४२	पू.फा.	२९	५४	सा	५	४९	गण्ड	२२	२४	दि	२	४९	तै	१७	८	गर	४९	४४
३०	४७	१४	शु	२२	२०	दि	२	४७	उ.फा.	३६	२३	रा	८	२४	वृद्धि	२३	५१	दि	३	२३	व	२२	२०	भ	५४	४४
३०	५०	१५	श	२७	७	दि	४	४१	हस्त	४२	२०	रा	१०	४६	ध्रुव	२४	५७	दि	३	४९	वव	२७	७	वा	५९	७

तिथि	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.- उ.+		रे. अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
१	धूम्र	२१	१६	६	७	३०			६	०	६	०	११	५	५५	२८	द.	७	+	६	७	१८
२	प्रवर्धमान	२२	१७	७	८	१	मेष	७।२४	६	०	६	०	११	६	५५	६	उ.	१७	+	५	८	२२
३	राक्षस	२३	१८	८	९	२			५	५९	६	१	११	७	५४	४३	०	४१	+	५	९	२५
४	मुसल	२४	१९	९	१०	३	वृष	१६।४९	५	५८	६	२	११	८	५४	१७	१	१	+	५	१०	२५
५	सिद्धि	२५	२०	१०	११	४			५	५७	६	३	११	९	५३	४९	१	२५	+	४	११	२२
७	उत्पात	२६	२१	११	१२	५	मिथुन	३०।५५	५	५७	६	३	११	१०	५३	१८	१	५१	+	४	१२	१५
८	मानस	२७	२२	१२	१३	६			५	५६	६	४	११	११	५२	४५	२	१५	+	४	१	४
९	मुद्गर	२८	२३	१३	१४	७	कर्क	५१।७	५	५५	६	५	११	१२	५२	९	२	३८	+	४	१	५०
९	ध्वज	२९	२४	१४	१५	८			५	५४	६	६	११	१३	५१	३१	३	२	+	३	२	३१
१०	धाता	३०	२५	१५	१६	९			५	५४	६	६	११	१४	५०	५१	३	२५	+	३	३	११
११	आनन्द	३१	२६	१६	१७	१०	सिंह	१७।३६	५	५३	६	७	११	१५	५०	९	३	३८	+	३	३	४८
१२	चर	१	२७	१७	१८	११			५	५२	६	८	११	१६	४९	२५	४	११	+	३	४	२३
१३	गद	२	२८	१८	१९	१२	कन्या	४६।३१	५	५१	६	९	११	१७	४८	३८	४	३४	+	२	४	५८
१४	शुभ	३	२९	१९	२०	१३			५	५१	६	९	११	१८	४७	४८	४	५७	+	२	५	३४
१५	मृत्यु	४	३०	२०	२१	१४			५	५०	६	१०	११	१९	४६	५७	५	२०	+	२	–	–

तिथि	चैत्रशुक्लपक्ष
१	◡चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। दक्षिणशृंग महँगीकारक। चान्द्रसंवत्सर तथा वासन्तनवरात्र का आरम्भ। कलशस्थापन ध्वजारोपण वर्षपतिपूजा◆
२	मेषराशि दि. ८।५८। मु. जमादिउस्सानी ६ हिजरी सन् १४३६। मत्स्यावतार ३ (अपराह्न में)। पञ्चक समाप्ति दि. ८।५८। राष्ट्रीय चैत्रमास दि. ३०।❖
३	भ. रा. ८।११ से। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। श्रीगणेशदमनक उत्सव। सौभाग्यसुन्दरी ३ व्रत। गणगौरी ३ व्रत (राजस्थान)। गौरीदोलोत्सव ३। आज ◐
४	भ. दि. ७।२२ तक। वृषराशि दि. १२।४२। श्रीरामराज्यमहोत्सव ५ (ल. ४)। लक्ष्मी पूजन। कल्पादि ५। भौम चतुर्थी। स्थायीजययोग प्रा. ६।५० से दि. ७।२२ तक।●
५	श्रीस्कन्दषष्ठी ६। श्री स्कन्ददमनक उत्सव ६। श्री सूर्यषष्ठी ६ व्रत (बिहार)। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। रवियोग प्रा. ६।१५ से। ☛ तक। रवियोग प्रा. ६।८ तक।
७	भ. रा.शे. ५।० से। मिथुनराशि सा. ६।१९। श्री भास्कर की दमनकपूजा। श्री अन्नपूर्णा परिक्रमा रा. ५।० से। ओली प्रारम्भ (जैन)। यायीजययोग प्रा. ६।८☛
८	भ. सा. ५।५ तक। श्री दुर्गाष्टमी ८ व्रत। श्री भवानी उत्पत्ति ८। ब्रह्मपुत्रस्नान। अशोककलिकाप्राशन। महानिशापूजा तथा बलिदानआदि। श्री अन्नपूर्णा परिक्रमा○
९	कर्कराशि रा. २।२२। श्रीरामनवमी ९ व्रत सबका। मध्याह्न में कर्कलग्न में श्रीरामजन्ममहोत्सव। अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमिदर्शन। राम अवतार ९। नवमी में होम ♍
९	दशमी में नवरात्र व्रत की पारणा। यायीजययोग प्रा. ५।५४ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।४२ से। रवियोग समस्त। ❖सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।५८ से।
१०	भ. रा. ७।५४ से। यायीजययोग दि. १०।३१ से.। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।३१ तक। रवियोग दि. १०।३१ तक। ●सर्वार्थसिद्धियोग प्रा. ६।५० से। रवियोग प्रा. ६।५० तक।
११	भ. दि. ८।४२ तक। सिंहराशि दि. १२।४३। कामदा ११ एकादशी व्रत सबका। श्री विष्णुदोलोत्सव। स्वयं दोला स्थित लक्ष्मी–नारायण का पूजन। ⊙रेवती नक्षत्र❖
१२	प्रदोष १२ व्रत। श्री अनङ्ग १३ व्रत (पूर्व विद्धा)। मदन द्वादशी। अप्रैल ४। ○ रा.शे. ५।११ तक। स्थायीजययोग प्रा. ६।२९ तक।
१३	कन्याराशि रा. १२।२७। श्रीमहावीरजयन्ती (जैन)। श्रीशिवनृसिंह दमनकारोपण तथा पूजन (अपराह्न व्यापिनी)। रवियोग सा. ५।४९ से।
१४	भ. दि. २।४७ से रा. ३।४५ तक। व्रत की १५ पूर्णिमा। यायीजययोग दि. २।४७ से। रवियोग रा. ८।२४ तक।
१५	स्नान–दान की १५ पूर्णिमा। श्रीहनुमज्जयन्ती (दक्षिण में प्रसिद्ध)। सर्वदेव दमनक उत्सव। वैशाख–स्नान–दान–यम–नियम का आरम्भ। काशी में ग्रस्तोदितखण्डचन्द्रग्रहण □

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				वक्रीगुरु				शुक्र				मार्गीशनि				राहु			
१	श	११	२८	१५	४८	१०	१९	४६	३०	३	२२	२०	१३	०	१०	१०	२९	७	९	५३	४९	५	१६	३५	०
२	र	११	२९	१	२५	१०	२१	३२	१	३	२२	१६	५०	०	११	२२	२६	व	९	५३	५५	५	१६	३१	४९
३	चं	११	२९	४७	३	१०	२३	१९	१६	३	२२	१३	२८	०	१२	३४	२४	७	९	५२	४८	५	१६	२८	३८
४	मं	०	०	३२	४०	१०	२५	६	३४	३	२२	१०	७	०	१३	४५	५३	७	९	५१	४२	५	१६	२५	२७
५	बु	०	१	१७	४०	१०	२६	५६	३४	३	२२	६	४५	०	१४	५६	५१	७	९	५०	३५	५	१६	२२	१६
७	गु	०	२	२	३९	१०	२८	४८	५७	३	२२	३	२३	०	१६	७	५०	७	९	४९	२८	५	१६	१९	६
८	शु	०	२	४६	५४	११	०	४१	२१	३	२२	०	१	०	१७	१८	४८	७	९	४८	२२	५	१६	१५	५५
९	श	०	३	३१	९	११	२	३३	४४	३	२१	५६	३५	०	१८	२९	४७	७	९	४७	१५	५	१६	१२	४४
९	र	०	४	१५	२४	११	४	२६	८	३	२१	५३	७	०	१९	४०	४५	७	९	४६	९	५	१६	९	३३
१०	चं	०	४	५९	३९	११	६	१९	३२	३	२१	४९	३९	०	२०	५१	४४	७	९	४५	२	५	१६	६	२२
११	मं	०	५	४३	५४	११	८	१३	१२	३	२१	४६	१२	०	२२	२	४२	७	९	४३	५६	५	१६	३	१२
१२	बु	०	६	२८	१०	११	१०	६	५३	३	२१	४२	४४	०	२३	१३	४१	७	९	४२	४९	५	१६	०	१
१३	गु	०	७	१२	२५	११	१२	१	१०	मा	२१	३९	३४	०	२४	२४	३९	७	९	४१	४१	५	१५	५६	५०
१४	शु	०	७	५६	४०	११	१३	५६	१७	३	२१	३९	४४	०	२५	३५	३८	७	९	४०	३५	५	१५	५३	३९
१५	श	०	८	४०	५५	११	१५	५१	२४	३	२१	३९	५४	०	२६	४६	३६	७	९	३९	३५	५	१५	५०	२८

ग्रहचार– मंगल– ति. ३ सोम को अश्विनी तथा मेषराशि में दि. १२।४८।। बुध– ति. १ शनि को पूर्वाभाद्रपद में दि. ९।४। ति. ७ गुरु को मीनराशि में रा. ९।७। ति. ९ शनि को उत्तराभाद्रपद में दि. ३।४८। ति. १५ शनि को रेवती में दि. ३।५८।। वक्रीगुरु– श्लेषा २ चरण में।। ति. १३ गुरु को मार्गी में रा. ४।३१।। शुक्र– ति. ३ सोम को भरणी में रा. ९।१७। ति. १४ शुक्र को कृत्तिका में रा. ३।३७।। मार्गीशनि– अनुराधा २ चरण में। ति. २ रवि को वक्री दि. ७।५८।। राहु– हस्त २ चरण में तथा केतु उ.भा. ४ चरण में।।

१ पं० चैत्रशुक्ल ८ शुक्र

अहर्गण ७३

अयनांश २४।३।१४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	०	११	३	०	७	५	११
११	६	२	०	२२	१७	९	१६	१६
५२	२२	४६	४१	०	१८	४८	१५	१५
४५	०	५४	२१	१	४८	२२	५५	५५
५९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	७०	१	३	३
२४	११	१५	२३	२६	५९	७	११	११
				व.		व.		



विविधमुहूर्त्त– ति. १ शनि को उ.भा. में सूर्ययुति है। ति. २ रवि को रेवती में सूर्यभोग्य है। दि. ८।५८ के बाद अश्विनी में भौमभोग्य है। ति. ३ सोम को अश्विनी में पूर्वदोष तथा वैधृतिदोष है। ति. ४ मंगल को चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। भद्रा के बाद कृत्तिका में आभूषण निर्माण शस्त्रनिर्माण वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति. ५ बुध को प्रा. ६।१५ के बाद रोहिणी में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन ईंट निर्माण सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण दँवरी विपणि मुहूर्त्त है। ति. ७ गुरु को प्रा. ६।८ के बाद भद्रा से पूर्व मृगशिरा में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सूतीस्नान गर्भाधान नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग वाटिकारोपण वृष के चन्द्रमा में पूर्व दिशा तथा मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि व्यापार वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ शुक्र को भद्रा के बाद आर्द्रा में फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ शनि को आर्द्रा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ९ रवि को रिक्ता के बाद पुनर्वसु में पुंसवनसीमन्त नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण पशुओं की खरीद–बिक्री उत्तर दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। दि. ८।४२ के बाद पुष्य में वाटिकारोपण पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा विप्रकुमारों का उपनयन (ल.३) विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १० सोम को पुष्य में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन (दशमी में) ☛

तिथि ल.अ.	१ श घं.	मि.	२ र घं.	मि.	३ चं घं.	मि.	४ मं घं.	मि.	५ बु घं.	मि.	७ गु घं.	मि.	८ शु घं.	मि.	९ श घं.	मि.	९ र घं.	मि.	१० चं घं.	मि.	११ मं घं.	मि.	१२ बु घं.	मि.	१३ गु घं.	मि.	१४ शु घं.	मि.	१५ श घं.	मि.
मीन	७	१०	७	७	७	३	६	५९	६	५६	६	५२	६	४८	६	४५	६	४१	६	३७	६	३४	६	३०	६	२६	६	२३	६	१९
मेष	८	४७	८	४४	८	४०	८	३६	८	३३	८	२९	८	२५	८	२२	८	१८	८	१४	८	११	८	७	८	३	८	०	७	५६
वृष	१०	४३	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	७	१०	३	९	५९	९	५६	९	५२
मिथुन	१२	५७	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	१०	१२	६
कर्क	३	१५	३	१२	३	८	३	४	३	१	२	५७	२	५३	२	५०	२	४६	२	४२	२	३९	२	३५	२	३१	२	२८	२	२४
सिंह	५	२९	५	२६	५	२२	५	१८	५	१५	५	११	५	७	५	४	५	०	४	५६	४	५३	४	४९	४	४५	४	४२	४	३८
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	७	४२	७	३९	७	३५	७	३१	७	२८	७	२४	७	२०	७	१७	७	१३	७	९	७	६	७	२	६	५८	६	५५	६	५१
तुला	९	५८	९	५५	९	५१	९	४७	९	४४	९	४०	९	३६	९	३३	९	२९	९	२५	९	२२	९	१८	९	१४	९	११	९	७
वृश्चिक	१२	१५	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	१	११	५७	११	५३	११	५०	११	४६	११	४२	११	३९	११	३५	११	३१	११	२८	११	२४
धनु	२	२१	२	१८	२	१४	२	१०	२	७	२	३	२	०	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३४	१	३०
मकर	४	८	४	५	४	१	३	५७	३	५४	३	५०	३	४७	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२१	३	१७
कुम्भ	५	३९	५	३६	५	३२	५	२८	५	२५	५	२१	५	१८	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५२	४	४८

२ पं० चैत्रशुक्ल १५ शनि

अहर्गण ८१

अयनांश २४।३२।१५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	०	११	३	०	७	५	११
१९	१४	८	१५	२१	२६	९	१५	१५
४६	४६	४०	५१	३९	४६	३९	५०	५०
५७	२६	५५	२४	५४	३६	३५	२८	२८
५९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	७०	१	३	३
६	४९	१५	६	९	५८	०	११	११
				मा.				



◆साम्यङ्गस्नान तथा पञ्चाङ्गफल श्रवण। पौसरादानारम्भ। असमर्थता में घर्मघटादिदान। आरोग्यविद्यातिलकव्रत १। आज से वर्षपर्यन्त तक संकल्प आदि में 'कीलक' नामक संवत्सर का विनियोग करना चाहिए। अभिजित् मुहूर्त्त दि. ११।३६ से दि. १२।२४ तक। गुडीपडवा (दक्षिण भारत)। श्रीझूलेलालजयन्ती (सिन्धी समाज)। सिन्धीनववर्षदिवस। ⊙सायन मेषराशि का सूर्य प्रा. ६।३१। कल्पादि १। यायीजययोग दि. १।४ तक। ◐दोलारुढ़ शिव पार्वती का पूजन। मन्वादि ३। सरहुल (बिहार)। यायीजययोग दि. ७।४३ से दि. ८।५८ तक। रवियोग दि. ७।४३ से। ♍आदि। यायीजययोग दि. ७।१९ से। रवियोग दि. ७।१९ से। ❖का सूर्य रा. २।४। स्थायीजययोग दि. १२।४३ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १२।४३ तक। □(विवरण पृष्ठ २ पर)। मन्वादि १५। ओली समाप्ति (जैन)। यायीजययोग रा. १०।४६ तक। यमघंटयोग रा. १०।४६ तक।

मूल विचार– रेवती/अश्विनी– ति. १ शनि को दि. १०।२४ से। ति. ३ सोम को दि. ७।४३ तक। श्लेषा/मघा– ति. १० सोम को दि. १०।३१ से। ति. १२ बुध को दि. ३।११ तक।

पञ्चक विचार– ति. २ रवि को दि. ८।५८ तक।

चैत्र मास के कृत्य– (मत्स्य पुराण)– चैत्र मास में दधि, दूध एवं घी का त्यागकर जो मनुष्य सपत्नीक ब्राह्मण का पूजन कर सर्व वर्ण युक्त वस्त्र का दान करता है, उससे गौरी प्रसन्न होती हैं। इसे शास्त्रों में गौरी व्रत के नाम से जाना जाता है। भविष्योत्तर पुराण के अनुसार– चैत्र मास में जो मनुष्य तीन दिनों तक नक्त व्रत का आचरण करते हुए नदी में स्नान कर पाँच दूध देने वाली बकरीयों का दरिद्र परिवार को दान करता है वह जीवन के आवागमन से मुक्त हो जाता है। वामन पुराण– चैत्र मास में विष्णु के प्रीति के लिए ब्राह्मणों को विचित्र वस्त्र एवं शय्या का दान करना चाहिए। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा में वायु परीक्षण– प्रतिपदा में सूर्योदय से पूर्व ग्राम के समतल भूमि में पताका का विन्यास एवं पूजन कर प्रार्थना करें। मन्त्र– ऐह्यात्मन्सर्वभूतानां कुरङ्गपतिवाहन। समादिश फलं चाष्मिन्वत्सरे हि समागते।। श्रीराम नवमी व्रत– चैत्र शुक्ल नवमी में स्वर्ण निर्मित रामचन्द्र की प्रतिमा का अग्नि उत्तारणपूर्वक प्रतिष्ठा तथा पुरुष सूक्त से षोडशोपचार पूजन करें। साथ ही दक्षिण भाग में अक्षत पुञ्ज पर दशरथ एवं कौशल्या, पृष्ठभाग में लक्ष्मण, बायें भरत–शत्रुघ्न तथा सम्मुख में हनुमान का आवाहन कर पूजन करें। फिर राम को अर्घ्य देवें।

☛ पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन विप्रकुमारों का उपनयन (ल.३) विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. १०।३१ के बाद श्लेषा में शनिवेध है। ति. ११ मंगल को श्लेषा में शनिवेध तथा भद्रा है। ति. १२ बुध को मघा में दँवरी फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १३ गुरु को पू.फा. में भौमवेध है। चतुर्दशी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १४ शुक्र को उ.फा. में सूर्यवेध तथा रिक्तादोष है। ति. १५ शनि को हस्त में राहुयुति है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण दक्षिणगोल वसन्तऋतु।।

वैशाखकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि १५ चैत्र से २८ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक ५ अप्रैल से १८ तक सन् २०१५ ई.।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे. अं. +	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
३०	५४	१	र	३१	७	सा	६	१६	चित्रा	४७	३३	रा	१२	५०	व्याघात	२५	३०	दि	४	१	कौ	३१	७	तै	६०	०	पद्म	५	१	२१	२२	१५	तुला	१४।५७	५	४९	६	११	११	२०	४६	३	५	४३	+	१	७	५
३०	५८	२	चं	३४	०	रा	७	२४	स्वाती	५१	३७	रा	२	२७	हर्षण	२५	१५	दि	३	५४	तै	२	३४	गर	३४	०	छत्र	६	२	२२	२३	१६			५	४८	६	१२	११	२१	४५	७	६	६	+	१	७	५७
३१	१	३	मं	३५	४८	रा	८	७	विशाखा	५४	३२	रा	३	३७	वज्र	२४	१०	दि	३	२८	व	४	५४	भ	३५	४८	श्रीवत्स	७	३	२३	२४	१७	वृश्चिक	३८।४८	५	४८	६	१२	११	२२	४४	८	६	२९	+	१	८	५०
३१	५	४	बु	३६	१४	रा	८	१७	अनुराधा	५६	११	रा	४	१५	सिद्धि	२२	२	दि	२	३६	बव	६	१	बा	३६	१४	सौम्य	८	४	२४	२५	१८			५	४७	६	१३	११	२३	४३	७	६	५२	+	१	९	४४
३१	१०	५	गु	३५	२३	रा	७	५५	ज्येष्ठा	५६	३७	रा	४	२५	व्यतिपात	१८	५३	दि	१	१९	कौ	५	४९	तै	३५	२३	कालदण्ड	९	५	२५	२६	१९	धनु	५६।३७	५	४६	६	१४	११	२४	४२	३	७	१४	+	०	१०	३८
३१	१५	६	शु	३३	१९	रा	७	५	मूल	५५	५२	रा	४	६	वरीयान	१४	४५	दि	११	३९	गर	४	२१	व	३३	१९	सुस्थिर	१०	६	२६	२७	२०			५	४५	६	१५	११	२५	४०	५८	७	३६	+	०	११	३२
३१	१९	७	श	३०	१०	सा	५	४८	पू.षा.	५४	६	रा	३	२२	परिघ	९	४४	दि	९	३८	भ	१	४५	बव	३० ५६	१० ९	मातङ्ग	११	७	२७	२८	२१			५	४४	६	१६	११	२६	३९	५०	७	५८	-	०	१२	२३
३१	२३	८	र	२६	८	दि	४	१०	उ.षा.	५१	३०	रा	२	१९	शिव	३ ५३	५६ ३१	प्रा	७ ४	१७ ४२	कौ	२६	८	तै	५३	४३	अमृत	१२	८	२८	२९	२२	मकर	८।२७	५	४३	६	१७	११	२७	३८	४०	८	२०	-	१	१	१४
३१	२७	९	चं	२१	१८	दि	२	१४	श्रवण	४८	१३	रा	१	०	साध्य	५०	२४	रा	१	५३	गर	२१	१८	व	४८	३४	सिद्धि	१३	९	२९	३०	२३			५	४३	६	१७	११	२८	३७	२८	८	४२	-	१	२	२
३१	३१	१०	मं	१५	५०	दि	१२	२	धनिष्ठा	४४	२७	रा	११	२९	शुभ	४३	५	रा	१०	५६	भ	१५	५०	बव	४२	५५	उत्पात	१४	१०	३०	१	२४	कुम्भ	१६।२०	५	४२	६	१८	११	२९	३६	१३	९	७	-	१	२	४९
३१	३४	११	बु	९	५९	दि	९	४१	शतभिष	४०	२३	रा	९	५०	शुक्ल	३५	३०	रा	७	५३	बा	९	५९	कौ	३६	५७	मानस	१५	११	१	२	२५			५	४१	६	१९	०	०	३४	५६	९	२८	-	२	३	३५
३१	३७	१२	गु	३ ५३	५५ ५७	प्रा	७ ४	१५ ५०	पू.भा.	३६	१२	रा	८	१०	ब्रह्म	२७	४५	दि	४	४७	तै	३	५५	गर	३० ५७	५४ ५२	मुद्गर	१६	१२	२	३	२६	मीन	२२।१५	५	४१	६	१९	०	१	३३	३६	९	५०	-	२	४	२०
३१	४१	१४	शु	५२	२	रा	२	२९	उ.भा.	३२	१०	सा	६	३२	ऐन्द्र	२०	९	दि	१	४४	भ	२४	५७	श	५२	२	ध्वज	१७	१३	३	४	२७			५	४०	६	२०	०	२	३२	१४	१०	११	-	२	५	६
३१	४४	३०	श	४६	३५	रा	१२	१७	रेवती	२८	२९	दि	५	३	वैधृति	१२	४५	दि	१०	४५	च	१९	१९	नाग	४६	३५	धाता	१८	१४	४	५	२८	मेष	२८।२९	५	३९	६	२१	०	३	३०	५०	१०	३२	-	२	-	-

- १ — तुलाराशि दि. ११।४८। मासपर्यन्त प्रपा (पौसरा) का दान। असमर्थता में घर्मघटादिदान। प्रतिदिन पीपलवृक्ष में ☾
- २ — यायीजययोग रा. ७।२४ से रा. २।२७ तक। यमघंटयोग रा. २।२७ से।
- ३ — भ. दि. ७।४६ से रा. ८।७ तक। वृश्चिकराशि रा. ९।१९। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।५०।
- ४ — सर्वार्थसिद्धियोग रा. ४।१५ तक। अमृतसिद्धियोग रा. ४।१५ तक। स्थायीजययोग रा. ८।७ से रा. ३।३७ तक।
- ५ — धनुराशि रा. ४।२५। रवियोग रा. ४।२५ से।
- ६ — भ. रा. ७।५ से। रवियोग रा. ४।६ तक।
- ७ — भ. प्रा. ६।२६ तक। रा. २।१९ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. २।१९ तक।
- ८ — मकरराशि दि. ९।६। श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत। आज वासी भोजन शास्त्र विहित है। यायीजययोग दि. ४।१० से
- ९ — भ. रा. १।९ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।० तक। ☾ जलदान। तुलसी पत्र से श्री विष्णुपूजन। कच्छपावतार १। द्विपुष्करयोग सा. ६।१६ से रा. १२।५० तक।
- १० — भ. दि. १२।२ तक। कुम्भराशि दि. १२।१४। ⊙ अश्विनी नक्षत्र तथा मेषराशि का सूर्य दि. ३।२५। मु. ३० समा। फल समता। संक्रान्ति से पूर्व तथा बाद ४ घन्टा❖
- ११ — वरुथिनी ११ एकादशी व्रत सबका। श्री वल्लभाचार्य जयन्ती ११। सौर वैशाखमासारम्भ। बंग सन् १४२२ प्रारम्भ। मृत्युबाणारम्भ दि. ३।५६।
- १२ — भ. रा. ४।५० से। मीनराशि दि. २।३५। दिन ७।१५ तक एकादशी व्रत की पारणा। प्रदोष १२ व्रत। मृत्युबाण समाप्ति दि. ४।२९। यायीजययोग रा. ८।१० से ☐
- १४ — भ. दि. ३।३९ तक। मासशिवरात्रि १४ व्रत। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ६।३२ से। अमृतसिद्धियोग सा. ६।३२ से। ☐ रा. ४।५० तक।
- ३० — मेषराशि सा. ५।३। स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। पञ्चक समाप्ति सा. ५।३। पापवार तथा अमावस्या की युति दुर्भिक्ष तथा प्रजा के लिए भयकारक होती है।

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ।।

ति.१२ गुरु को रा.८।१० के बाद उ.भा में केतुयुति है। इसके बाद मासान्तदोष है।

वैशाखमास के कृत्य –

जो मनुष्य वैशाख मास में एक वार भोजन तथा प्रातः स्नान करने से अपने वर्ग में श्रेष्ठता को प्राप्त होता है। (महाभारत)

सुगन्धित पदार्थ, माला तथा गौ दान देने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। (वामन पुराण)

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				मार्गीगुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	र	०	९	२५	१०	११	१७	४६	३०	३	२१	४०	३	०	२७	५७	३४	७	९	३८	३६	५	१५	४७	१७
२	चं	०	१०	९	२५	११	१९	४१	३७	३	२१	४०	१३	०	२९	८	३३	७	९	३७	३६	५	१५	४४	७
३	मं	०	१०	५३	४१	११	२१	३६	४४	३	२१	४०	२२	१	०	१९	३१	७	९	३५	५४	५	१५	४०	५६
४	बु	०	११	३७	५६	११	२३	३१	२६	३	२१	४०	३२	१	१	३०	३०	७	९	३३	२३	५	१५	३७	४५
५	गु	०	१२	२२	११	११	२५	२५	१५	३	२१	४०	४१	१	२	४१	२८	७	९	३०	५१	५	१५	३४	३४
६	शु	०	१३	६	२६	११	२७	१९	३	३	२१	४०	५१	१	३	५२	२७	७	९	२८	२०	५	१५	३१	२३
७	श	०	१३	५०	४१	११	२९	१२	५२	३	२१	४१	०	१	५	३	२५	७	९	२५	४९	५	१५	२८	१३
८	र	०	१४	३४	५६	०	१	६	३८	३	२१	४१	१०	१	६	१४	१८	७	९	२३	१७	५	१५	२५	२
९	चं	०	१५	१९	१२	०	२	५८	२५	३	२१	४१	१८	१	७	२४	५९	७	९	२०	४६	५	१५	२१	५१
१०	मं	०	१६	३	२७	०	४	४८	२१	३	२१	४१	२४	१	८	३५	३९	७	९	१८	१५	५	१५	१८	४०
११	बु	०	१६	४७	४२	०	६	३८	१७	३	२१	४१	३०	१	९	४६	२०	७	९	१५	४३	५	१५	१५	२९
१२	गु	०	१७	३२	१३	०	८	२८	१४	३	२१	४१	३५	१	१०	५७	२	७	९	१३	१२	५	१५	१२	१९
१४	शु	०	१८	१६	४७	०	१०	१८	६	३	२१	४१	४१	१	१२	७	१०	७	९	१०	४१	५	१५	९	८
३०	श	०	१९	१	२२	०	१२	४	३७	३	२१	४१	४७	१	१३	१५	२२	७	९	८	९	५	१५	५	५७

ग्रहचार- मंगल- ति. ६ शुक्र भरणी में दि. १।७।। बुध- ति. ७ शनि को अश्विनी तथा मेषराशि में दि. ३।४०। ति. ३० शनि को भरणी में रा. १०।४३।। मार्गीगुरु- श्लेषा २ चरण में।। शुक्र- ति. २ सोम को वृषराशि में रा. ११।१२। ति. ११ बुध को रोहिणी में दि. १०।१९।। वक्रीशनि- अनुराधा २ चरण में।। राहु- हस्त २ चरण में तथा केतु उ.भा. ४ चरण में ।।

३ पं० वैशाखकृष्ण ८ रवि

अहर्गण ८९

अयनांश २४।३।१६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	८	०	०	३	१	७	५	११
२७	२८	१४	१	२१	६	९	१५	१५
३८	२	३४	६	४१	१४	२३	२५	२५
४०	१३	५६	३८	१०	१८	१७	२	२
५८	८३६	४४	१११	०	७०	२	३	३
४८	१४	१६	४७	८ मा.	४१	३१ व.	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ रवि को चित्रा में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। रात्रिशेष में स्वाती में सूतीस्नान मुहूर्त्त है। ति.२ सोम को स्वाती में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन गर्भाधान शिल्पविद्या औषधसेवन वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ३ मंगल को विशाखा में भद्रा से पूर्व लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। ति. ४ बुध को अनुराधा में शनियुति तथा व्यतिपात है। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ गुरु को व्यतिपात के बाद ज्येष्ठा में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन पशुओं की खरीद-बिक्री दँवरी ईंट निर्माण ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ शुक्र को मूल में भद्रा से पूर्व शिशुताम्बूलभक्षण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ७ शनि को भद्रा के बाद पू.षा. में शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। ति. ८ रवि को उ.षा. में दि. ४।१० तक नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण नावनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ सोम को रिक्ता के बाद श्रवण में शिशुताम्बूलभक्षण गर्भाधान दक्षिणदिशा की यात्रा दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १० मंगल को भद्रा के बाद धनिष्ठा में लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण कुम्भ के चन्द्रमा में पश्चिम दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. ११ बुध को शतभिष में जातकर्मनामकरण☛

तिथि ल.अ.	१ र घं.	मि.	२ चं घं.	मि.	३ मं घं.	मि.	४ बु घं.	मि.	५ गु घं.	मि.	६ शु घं.	मि.	७ श घं.	मि.	८ र घं.	मि.	९ चं घं.	मि.	१० मं घं.	मि.
मीन	६	१५	६	१२	६	९	६	४	६	१	५	५७	५	५३	५	५०	५	४६	५	४३
मेष	७	५२	७	४९	७	४५	७	४१	७	३८	७	३४	७	३०	७	२७	७	२३	७	२०
वृष	९	४८	९	४५	९	४१	९	३७	९	३४	९	३०	९	२६	९	२३	९	१९	९	१६
मिथुन	१२	२	११	५९	११	५५	११	५१	११	४८	११	४४	११	४०	११	३७	११	३३	११	३०
कर्क	२	२०	२	१७	२	१३	२	९	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५१	१	४८
सिंह	४	३४	४	३१	४	२७	४	२३	४	२०	४	१६	४	१२	४	९	४	५	४	२
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	६	४७	६	४४	६	४०	६	३६	६	३३	६	२९	६	२५	६	२२	६	१८	६	१५
तुला	९	३	९	०	८	५६	८	५२	८	४९	८	४५	८	४१	८	३८	८	३४	८	३१
वृश्चिक	११	२०	११	१७	११	१३	११	९	११	६	११	२	१०	५८	१०	५५	१०	५१	१०	४८
धनु	१	२६	१	२३	१	१९	१	१५	१	१२	१	८	१	४	१	१	१२	५७	१२	५४
मकर	३	१३	३	१०	३	६	३	२	२	५९	२	५५	२	५१	२	४८	२	४४	२	४१
कुम्भ	४	४४	४	४१	४	३७	४	३३	४	३०	४	२६	४	२२	४	१९	४	१५	४	१२

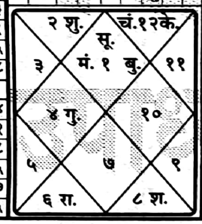
तिथि ल.अ.	११ बु घं.	मि.	१२ गु घं.	मि.	१४ शु घं.	मि.	३० श घं.	मि.
मेष	७	१५	७	११	७	७	७	३
वृष	९	११	९	७	९	३	८	५९
मिथुन	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३
कर्क	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१
सिंह	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५
कन्या	६	१०	६	६	६	२	५	५८
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
तुला	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४
वृश्चिक	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२
धनु	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८
मकर	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५
कुम्भ	४	९	४	५	४	१	३	५७
मीन	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५

४ पं०वैशाखकृष्ण ३० शनि

अहर्गण ९५

अयनांश २४।३।१७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	११	०	०	३	१	७	५	११
३	२३	१९	१२	२१	१३	९	१५	१५
३०	१५	१	४	४१	१५	८	५	५
५०	२०	२२	३७	४७	२२	९	५७	५७
५८	८५२	४३	२०५	१	६८	२	३	३
३४	११	५१	५८	२२	११	२१ व.	११	११



❖पुण्यकाल। उत्तरगोल। खरमास समाप्ति। दिन ११।२५ से सूर्यास्त तक मेषसंक्रान्ति का पुण्यकाल। हरिद्वार तथा काशी में अस्सी संगम स्नान। सत्तू-पंखा-जलकलश आदि का दान। वैशाखी। डॉ० भीमराव अम्बेडकर जयन्ती। पञ्चक प्रारम्भ दि. १२।१४।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. ४ बुध को रा. ४।१५ से। ति.६ शुक्र को रा. ४।६ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. १४ शुक्र को सा.६।३२ से।
पञ्चक विचार- ति.१० मंगल को दि. १२।१४ से। ति. ३० शनि को दि. ५।३ तक।

वैशाख मास में देवों की जलाधिवास विधि- वैशाख या ज्येष्ठ मास में जब गर्मी अत्यधिक पड़ने लगे तो प्रातः काल नित्यपूजन पूर्वक गंधोदक से परिपूर्ण पात्र में विष्णु भगवान को स्थापित कर पंचोपचार पूजन करके सूर्यास्त तक जलाधिवास कराना चाहिए। पुनः सायं काल गन्धपूर्ण जल से बाहर निकालकर पंचोपचार पूजन करना चाहिए तथा उस जल से गृहजनों सहित समस्त गृह को पवित्र करना चाहिए। द्वादशी तिथि के दिन विष्णु का जलाधिवास नहीं करें, अपितु सायं काल कुछ समय तक जल में स्थापित कर पूजन करके पुनः स्व स्थान पर स्थापित कर देना चाहिए। प्रतिदिन के लिए स्मरणीय पाठ- अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।१।। सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं मर्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः।।२।। **वैशाखस्नान का मन्त्र-** वैशाखं सकलं मासं मेषसंक्रमणं रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदनः। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।।१।। माधवे मेषगे भानौ मुरारेमधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे नाथ फलदोभवपापहन्।।

वैशाख में त्याज्य- कांसे का पात्र, मांस, मसूर दाल, चना, कोदो (अन्न विशेष) शाक, मधुपरान्न भोजन तथा मैथुन क्रिया का वैशाख में त्याग करना चाहिए। **मेष के सूर्य में दान विशेष-** जो मनुष्य मेष के सूर्य में देवों तथा पितरों को उद्देश्य कर सत्तू तथा जल पूर्ण घड़े का दान करता है उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। दान के मन्त्र- सक्तवो धर्मदा नित्यं ब्राह्मणप्रीतकारकाः। त्वद्दानान्ममपापानां क्षयोऽस्तु सुखमस्तु च।। जो लोग परिस्थित वश सम्पूर्ण वैशाख में तीर्थ स्थान नहीं कर सकते वे (त्रयोदशी, चतुर्दशी एवं पूर्णिमा) माह के अन्तिम तीन दिनों के नियम पूर्वक स्नान से भी समस्त पापों से मुक्त होकर सम्पूर्ण फल को प्राप्त करते हैं।

☛ गर्भाधान पशुओं की खरीद-बिक्री नवान्नभक्षण (द्वादशी में) शिल्पविद्या औषधसेवन चौलमुण्डन (ल. २) द्विरागमन (ल. २ वा ३) हलप्रवहण वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १२ गुरु को पू.भा. में शिल्पविद्या नावनिर्माण वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। उ.भा. में केतुयुति तथा भद्रादोष है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण उत्तरगोल वसन्तऋतु।।

वैशाखशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रिय तिथि २९ चैत्र से १४ वैशाख तक शक १९३७।। अंग्रेजी दिनांक १९ अप्रैल से ४ मई तक सन् २०१५ ई.।।

शुक्र पश्चिम में-अतः पश्चिम-दक्षिण दिशा तथा अग्नि नैर्ऋत्यकोण से द्विरागमन शुभ होगा।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ. प.		घं. मि.	नक्षत्र	घ. प.		घं. मि.	योग	घ. प.		घं. मि.	करण	घ. प.	करण	घ. प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य	क्रान्ति उ +	रे. अं. - मि.	चन्द्रास्त स्टै. टा.
३१	४७	१	र	४१ ४२	रा	१० २०	अश्विनी	२५ १८	दि	३ ४६	विष्कुम्भ	५/५३ ४४/३३	प्रा	७/५ ५७/२२	किं	१४ ९	वव	४१ ४२	आनन्द	१९	१५	५	६	२९			५ ३९	६ २१	० ४ २९ २४	१० ५३	- ३	- -
३१	५१	२	चं	३७ ३९	रा	८ ४२	भरणी	२२ ५५	दि	२ ४८	आयुष्मान	५३ ३०	रा	३ २	वा	९ ४१	कौ	३७ ३९	चर	२०	१६	६	७	३०	वृष	३७।३१	५ ३८	६ २२	० ५ २७ ५६	११ १४	- ३	८ ७
३१	५४	३	मं	३४ ३२	रा	७ २६	कृत्तिका	२१ १९	दि	२ ९	सौभाग्य	४८ ३०	रा	१ १	तै	६ ६	गर	३४ ३२	गद	२१	१७	७	८	१			५ ३७	६ २३	० ६ २६ २५	११ ३५	- ४	९ ७
३१	५७	४	बु	३२ २८	सा	६ ३६	रोहिणी	२० ४६	दि	१ ५५	शोभन	४४ २३	रा	११ २२	व	३ ३०	भ	३२ २८	शुभ	२२	१८	८	९	२	मिथुन	५१।६	५ ३७	६ २३	० ७ २४ ५२	११ ५५	- ४	१० ४
३२	०	५	गु	३१ ३७	सा	६ १५	मृगशिरा	२१ २६	दि	२ १०	अतिगण्ड	४१ १६	रा	१० ६	वव	२ ३	वा	३१ ३७	मृत्यु	२३	१९	९	१०	३			५ ३६	६ २४	० ८ २३ २८	१२ १५	- ४	१० ५६
३२	३	६	शु	३२ ३	सा	६ २४	आर्द्रा	२३ २०	दि	२ ५५	सुकर्मा	३९ ८	रा	९ १४	कौ	१ ५०	तै	३२ ३	पद्म	२४	२०	१०	११	४			५ ३५	६ २५	० ९ २१ ४०	१२ ३५	- ४	११ ४४
३२	६	७	श	३३ ५३	रा	७ ८	पुनर्वसु	२६ ३१	दि	४ ११	धृति	३८ ४	रा	८ ४९	गर	२ ५८	व	३३ ५३	छत्र	२५	२१	११	१२	५	कर्क	१०।४३	५ ३५	६ २५	० १० २० १	१२ ५५	- ४	१२ २८
३२	९	८	र	३६ ४५	रा	८ १६	पुष्य	३० ४९	सा	५ ५४	शूल	३७ ४८	रा	८ ४१	भ	५ १९	वव	३६ ४५	श्रीवत्स	२६	२२	१२	१३	६			५ ३४	६ २६	० ११ १८ २०	१३ १५	- ४	१ ९
३२	१२	९	चं	४० ४६	रा	९ ५२	श्लेषा	३६ ११	रा	८ २	गण्ड	३८ २७	रा	८ ५७	वा	८ ४६	कौ	४० ४६	सौम्य	२७	२३	१३	१४	७	सिंह	३६।११	५ ३४	६ २६	० १२ १६ ३७	१३ ३४	- ४	१ ४७
३२	१५	१०	मं	४५ २८	रा	११ ४४	मघा	४२ १७	रा	१० २८	वृद्धि	३९ ३७	रा	९ २४	तै	१३ ७	गर	४५ २८	कालदण्ड	२८	२४	१४	१५	८			५ ३३	६ २७	० १३ १४ ५१	१३ ५३	- ४	२ २३
३२	१८	११	बु	५० ३६	रा	१ ४६	पू.फा.	४८ ५०	रा	१ ४	ध्रुव	४१ ९	रा	१० ०	व	१८ २	भ	५० ३६	सुस्थिर	२९	२५	१५	१६	९			५ ३२	६ २८	० १४ १३ २	१४ १२	- ५	२ ५८
३२	२१	१२	गु	५५ ४३	रा	३ ४९	उ.फा.	५५ २२	रा	३ ४१	व्याघात	४२ ४५	रा	१० ३८	वव	२३ १०	वा	५५ ४३	मातङ्ग	३०	२६	१६	१७	१०	कन्या	५।२८	५ ३२	६ २८	० १५ ११ ११	१४ ३१	- ५	३ ३३
३२	२४	१३	शु	६० ०	स	म स्त	हस्त	६० ०	स	म स्त	हर्षण	४४ ३	रा	११ ८	कौ	२८ ४	तै	६० ०	अमृत	१	२७	१७	१८	११			५ ३१	६ २९	० १६ ९ २०	१४ ५०	- ५	४ ९
३२	२७	१३	श	० २५	प्रा	५ ४१	हस्त	१ २९	प्रा	६ ७	वज्र	४४ ५०	रा	११ २७	तै	० २५	गर	३२ २३	मृत्यु	२	२८	१८	१९	१२	तुला	३४।११	५ ३१	६ २९	० १७ ७ २६	१५ ८	- ५	४ ४६
३२	३०	१४	र	४ २०	दि	७ १४	चित्रा	६ ५३	दि	८ १५	सिद्धि	४४ ५२	रा	११ २७	व	४ २०	भ	३५ ४४	पद्म	३	२९	१९	२०	१३			५ ३०	६ ३०	० १८ ५ ३०	१५ २६	- ५	५ २६
३२	३३	१५	चं	७ ७	दि	८ २०	स्वाती	११ ११	दि	९ ५७	व्यतिपात	४४ ०	रा	११ ५	वव	७ ७	वा	३७ ५९	छत्र	४	३०	२०	२१	१४	वृश्चिक	५८।३५	५ २९	६ ३१	० १९ ३ ३२	१५ ४४	- ५	- -

देवदामोदरतिथि। यायीजययोग दि.३।४६ से रा.१०।२० तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।४६ तक। सूर्य सा. ५।२६।
वृषराशि रा. ८। ३८। चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। सायन वृषराशि का
मु. रज्जब ७ हिजरी सन् १४३६। श्रीपरशुरामजयन्ती ३। अक्षयतृतीया ३। समुद्रस्नान-सत्तू-चीनी-जल-
भ. दि. ७।१ से सा. ६।३६ तक। मिथुनराशि रा. २।३। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त।
आद्यजगद्गुरुशंकराचार्य जयन्ती ५। बाबूकुँवरसिंहजयन्ती (बिहार)। रोगबाण रा. ८।४१ तक। रवियोग दि. २।१० से।
श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती ६। चन्दन षष्ठी (बंगाल)। मृत्युबाणारम्भ रा. ९।२१। सर्वार्थसिद्धियोग दि. २।५५ से।
भ. रा. ७।८ से। कर्कराशि दि. ९।५२। श्रीगंगासप्तमी ७। श्रीगंगा उत्पत्ति ७। मृत्युबाण समाप्ति रा. १०।२।
भ. दि. ७।४२ तक। यायीजययोग रा. ८।१६ से। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ५।५४ तक। रवियोग सा. ५।५४ से।
सिंहराशि रा. ८।२। श्रीसीतानवमी ९। जानकी जन्मोत्सव। यायीजययोग रा. ८।२ तक। रवियोग समस्त।
भरणी नक्षत्र का सूर्य दि.७।४१। रवियोग दि. ७।४१ तक। पुनः रवियोग दि. ७।४१ से। रवियोग दि. १।५५ तक।
भ. दि. १२।४५ से रा. १।४६ तक। श्रीमोहिनी ११ एकादशी व्रत सबका। रवियोग रा. १।४ तक।
कन्याराशि दि. ७।४३। परशुरामद्वादशी १२। रुक्मिणी द्वादशी (बंगाल)। यायीजययोग रा. ३।४९ से।
प्रदोष १३ व्रत। मई ५। रवियोग दि. २।५५ तक।
तुलाराशि रा.७।११। श्रीनृसिंह १४ चतुर्दशी व्रत (सायंकाल व्यापिनी)। ओंकारेश्वयात्रा तथा दर्शन। नृसिंहअवतार।
भ.दि.७।१४ से रा.७।४८ तक। व्रत की १५ पूर्णिमा। कूर्मजयन्ती १५ (मध्याह्न में)। दृश्य अगस्त्यास्त दि. ९।७।
वृश्चिकराशि रा.४।५५। स्नान- दान की १५ पूर्णिमा। बुद्धपूर्णिमा १५। बुद्धजयन्ती। पुष्करादेवीजन्म। कृष्णा-

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ।।

ति.३ मंगल को दि.२।९ के बाद रोहिणी में रे.८ ल. गोधूलि वा ल.११ इष्ट ६ ग्र.व.वि १३।। वा ल.१ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १५

ति.४ बुध को भद्रा से पूर्व रोहिणी में रे.८ दिन में ल. १ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५। भद्रा के बाद मृगशिरा में रे.६ ल.गोधूलि वा ल.११ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३।। वा ल.१ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५

ति.५ गुरु को मृगशिरा में रे.६ दिन में ल. १ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १५ वा ल.३ इष्ट ५ ग्र.व.वि. ११।।

ति.९ सोम को रा.८।२ के बाद मघा में रे.७ ल.११ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।। (चं.दा.) वा ल.१ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०

ति.१० मंगल को मघा में रे.७ दिन में ल. १ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० वा ल.३ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १६।। वा ल.गोधूलि वा ल.८ इष्ट ५ ग्र.व.वि. ११।। (षष्ठस्थ लग्नेश शुभ नहीं है)

ति.११ बुध को भद्रा के बाद उ.फा में रे.८ ल. ११ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।। (चं.दा.) वा ल.१ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०

ति.१२ गुरु को उ.फा में रे. ८ दिन में ल. १ इष्ट ५ ग्र.व.वि १० वा ल.गोधूलि वा ल.११ इष्ट ६ ग्र.व. वि. १३।।(अष्टमस्थ चन्द्र शुभ नहीं है)। रा.३।४१ के बाद हस्त में राहुयुति है।

ति.१३ शुक्र को हस्त में राहुयुति है।

ति.१३ शनि हस्त में पूर्वदोष है।

ति.१४ रवि को भद्रा के बाद व्यतिपात से पूर्व रे.७ पञ्चेष्टलग्न नहीं है।

ति.१५ सोम को स्वाती में व्यतिपात तथा मृत्युबाण है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	र	०	१९	४५	१३	०	१३	५०	३५	३	२१	४३	९	१	१४	२३	३३	७	९	५	४०	५	१५	२	४६
२	चं	०	२०	२८	२७	०	१५	३६	३४	३	२१	४५	४७	१	१५	३१	४५	७	९	३	१४	५	१४	५९	३५
३	मं	०	२१	११	४१	०	१७	२२	३२	३	२१	४८	२५	१	१६	३९	५६	७	९	०	४८	५	१४	५६	२५
४	बु	०	२१	५४	५५	०	१९	७	२५	३	२१	५१	३	१	१७	४८	७	७	८	५८	२२	५	१४	५३	१४
५	गु	०	२२	३८	८	०	२०	४६	४७	३	२१	५३	४०	१	१८	५६	१९	७	८	५५	८	५	१४	५०	३
६	शु	०	२३	२१	२२	०	२२	२६	५९	३	२१	५६	१८	१	२०	४	३०	७	८	५१	३४	५	१४	४६	५२
७	श	०	२४	४	३६	०	२४	८	११	३	२१	५८	५६	१	२१	१२	४२	७	८	४७	५९	५	१४	४३	४१
८	र	०	२४	४७	४९	०	२५	४९	२३	३	२२	१	३४	१	२२	२०	५३	७	८	४४	२५	५	१४	४०	३१
९	चं	०	२५	३१	३	०	२७	२६	६	३	२२	४	१२	१	२३	२९	५	७	८	४०	५०	५	१४	३७	२०
१०	मं	०	२६	१४	१७	०	२८	५७	५५	३	२२	६	५०	१	२४	३७	१६	७	८	३७	१६	५	१४	३४	९
११	बु	०	२६	५७	३०	१	०	२९	४४	३	२२	९	२७	१	२५	४५	२७	७	८	३३	४२	५	१४	३०	५८
१२	गु	०	२७	४०	४४	१	२	१	३३	३	२२	१२	२	१	२६	५३	३९	७	८	३०	७	५	१४	२७	४७
१३	शु	०	२८	२३	५८	१	३	३३	२२	३	२२	१४	३६	१	२८	१	५०	७	८	२६	३२	५	१४	२४	३६
१३	श	०	२९	७	११	१	४	५६	४७	३	२२	१७	१०	१	२९	१०	२	७	८	२२	५८	५	१४	२१	२६
१४	र	०	२९	५०	२५	१	६	१७	५५	३	२२	१९	४३	२	०	१८	१३	७	८	१९	२३	५	१४	१८	१५
१५	चं	१	०	३३	३९	१	७	३९	३	३	२२	२२	१७	२	१	२६	२५	७	८	१५	४९	५	१४	१५	४

ग्रहचार- मंगल- ति. १० मंगल को कृत्तिका में रा. ७।५०। ति. १४ रवि को वृषराशि में दि. १०।४९ ।। बुध- ति. ८ रवि को कृत्तिका में सा. ६।८। ति. १० मंगल को वृषराशि में रा. ९।४७।। गुरु- श्लेषा २ चरण में।। शुक्र- ति. ८ रवि को मृगशिरा में रा. २।२२। ति. १३ शनि को मिथुनराशि में रा. ११।६।। वक्री शनि- अनुराधा २ चरण में।। राहु- हस्त २ चरण में तथा केतु उ.भा. ४ चरण में।।

५ पं० वैशाखशुक्ल ८ रवि

अहर्गण १०३

अयनांश २४।३।१८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	३	०	०	३	१	७	५	११
११	१०	२४	२५	२२	२२	८	१४	१४
१८	१६	४७	४९	१	२०	४४	४०	४०
२०	४०	४९	२३	३४	५३	२५	३१	३१
५८	७४६	४३	१६	२	६८	३	३	३
१७	३०	१४	४३	३८	१२	३५ व.	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ रवि को अश्विनी में सूर्ययुति है। ति. २ सोम को भरणी में भौमयुति है। ति. ३ मंगल को कृत्तिका में भौमभोग्य है। दि.२।९ के बाद रा. ७।२६ तक रोहिणी में सूतीस्नान सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रधारण हलप्रवहण ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. ४ बुध को रोहिणी में रिक्ता तथा भद्रादोष है। रिक्ता के बाद मृगशिरा में गर्भाधान वृष के चन्द्रमा में पूर्व-दक्षिण तथा मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम-दक्षिण दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ८) द्विरागमन (ल. १२) विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ५ गुरु को मृगशिरा में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वाटिकारोपण पश्चिम दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण चौलमुण्डन (ल. ३) कर्णवेध (ल. ३) विद्यारम्भ (ल.३) उपनयन में रोगबाण व्याप्ति जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३) वधूप्रवेश (ल. २) द्विरागमन (ल. ३) हलप्रवहण विपणि व्यापार वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ शुक्र को आर्द्रा में अक्षरारम्भ -विद्यारम्भ (ल.३) फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. २।५५ के बाद पुनर्वसु में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री दक्षिण दिशा की यात्रा (सप्तमी में) शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण द्विरागमन (ल. ६ वा १२) वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ७ शनि को पुनर्वसु में सौभाग्यवती को ☛

तिथि	१ र		२ चं		३ मं		४ बु		५ गु		६ शु		७ श		८ र		९ चं		१० मं		११ बु		१२ गु		१३ शु		१३ श		१४ र		१५ चं	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
मेष	६	५९	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	११	६	७	६	४
वृष	८	५५	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	७	८	३	८	०
मिथुन	११	९	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१	१०	१७	१०	१४
कर्क	१	२७	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३९	१२	३५	१२	३२
सिंह	३	४१	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५३	२	४९	२	४६
कन्या	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	६	५	२	४	५९
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
तुला	८	१०	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२२	७	१८	७	१५
वृश्चिक	१०	२८	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३९	९	३५	९	३२
धनु	१२	३४	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४५	११	४१	११	३८
मकर	२	२१	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३२	१	२८	१	२५
कुम्भ	३	५३	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	३	२	५९	२	५६
मीन	५	२१	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३१	४	२७	४	२४

६ पं०वैशाखशुक्ल १५सोम

अहर्गण १११

अयनांश २४।३।१९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	६	१	१	३	२	७	५	११
१९	१७	०	७	२२	१	८	१४	१४
३	४०	३३	३१	२२	२६	१५	२५	२५
३२	५३	३९	३	१७	२५	४९	४	४
५८	७४६	६३	८१	२	६८	३	३	३
०	३०	१४	८	३४	११	३२	११	११



कलश-कुष्माण्डमें रत्न भरकर दान। चन्दन से श्री विष्णु पूजा। श्रीबदरी केदार यात्रा। काशी में त्रिलोचन यात्रा। कल्पादि ३। त्रेतायुगादि ३। सौरीय वैशाखमास दि. ३१। सर्वार्थसिद्धियोग दि. २।९ तक। रवियोग दि. २।९ से। यायीजययोग दि. ४।११ तक। त्रिपुष्करयोग दि. ४।११ तक। यायीजययोग प्रा. ५।४१ तक। यमघंटयोग प्रा. ६।७ तक। रवियोग प्रा. ६।७ से। मृत्युबाणारम्भ रा. ४।२। यायीजययोग दि. ८।१५ से। रवियोग दि. ८।१५ तक। जिन-जलकुम्भ-तिल-सुवर्ण-घृत तथा मधु का दान। सर्वपापक्षय। मृत्युबाण समाप्ति रा. ४।५१। यायीजययोग दि.९।५७ तक। यमघंटयोग दि. ९।५७ से।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी- ति. १ रवि दि. ३।४६ तक।
श्लेषा/मघा- ति. ८ रवि को सा. ५।५४ से। ति.१० मंगल को रा.१०।२८ तक।

☛ छोड़कर कृष्णवस्त्रनीलादिरत्नधारण मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम-दक्षिण तथा कर्क के चन्द्रमा में पश्चिम-उत्तर दिशा की यात्रा जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. २) वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। दि. ४।११ से रा. ७।८ तक पुष्य में पूर्व छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा गृहारम्भ में चक्रशुद्धि विपणि व्यापार वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ८ रवि को पुष्य में भद्रा के बाद नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३) ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ सोम को श्लेषा में शनिवेध है। रिक्ता के बाद मघा में भौमवेध है। ति. १० मंगल को मघा में पूर्वदोष है। ति. ११ बुध को पू.फा. में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। भद्रा भी है। भद्रा के बाद उ.फा. में गर्भाधान सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण द्विरागमन (ल. १२) गृहारम्भ-गृहप्रवेश (ल. १२) ईंट का भट्ठा लगाने का मुहूर्त्त है। ति. १२ गुरु को उ.फा. में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गर्भाधान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या नावनिर्माण उपनयन (ल. ४ श.दा.) जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३) वधूप्रवेश (ल. २) द्विरागमन (ल. ३) गृहारम्भ (ल. ८) गृहप्रवेश (ल. २ वा ८) ईंट निर्माण- ईंट का भट्ठा लगाने विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १३ शुक्र को हस्त में राहुयुति है। ति. १३ शनि को हस्त में पूर्वदोष है। चतुर्दशी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १४ रवि को चित्रा में चतुर्दशी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १५ सोम को स्वाती में व्यतिपातदोष है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण उत्तरगोल वसन्तऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	सा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे.अं. –	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
३२	३६	१	मं	८	५१	दि	९	१	विशाखा	१४	२३	दि	११	१४	वरीयान	४२	८	रा	१०	२०	कौ	८	५१	तै	३९	२	श्रीवत्स	५	१	२१	२२	१५			५	२९	६	३१	०	२०	१	३२	१६	१	–	५	७	३९
३२	३९	२	बु	९	१२	दि	९	९	अनुराधा	१६	१८	दि	११	५९	परिघ	३९	१५	रा	९	१०	गर	९	१२	व	३८	४५	सौम्य	६	२	२२	२३	१६			५	२८	६	३२	०	२०	५९	३०	१६	१८	–	५	८	३४
३२	४२	३	गु	८	१७	दि	८	४७	ज्येष्ठा	१६	५८	दि	१२	१५	शिव	३५	२२	रा	७	३७	भ	८	१७	वव	३७	१३	कालदण्ड	७	३	२३	२४	१७	धनु	१६।५८	५	२८	६	३२	०	२१	५७	२६	१६	३५	–	५	९	२१
३२	४५	४	शु	६	९	दि	७	५५	मूल	१६	२६	दि	१२	१	सिद्ध	३०	३५	सा	५	४१	बा	६	९	कौ	३४	३३	सुस्थिर	८	४	२४	२५	१८			५	२७	६	३३	०	२२	५५	२१	१६	५२	–	६	१०	२१
३२	४८	५	श	२ ५५	५७ ५१	प्रा	६ ४	३७ ५८	पू.षा.	१४	५२	दि	११	२३	साध्य	२५	०	दि	३	२६	तै	२	५७	गर	३० ५८	५४ ५०	मातङ्ग	९	५	२५	२६	१९	मकर	२९।१६	५	२६	६	३४	०	२३	५३	१२	१७	८	–	६	११	१२
३२	५१	७	र	५३	५३	रा	२	५९	उ.षा.	१२	२८	दि	१०	२५	शुभ	१८	४२	दि	१२	५५	भ	२६	२२	वव	५३	५३	अमृत	१०	६	२६	२७	२०			५	२६	६	३४	०	२४	५१	३	१७	२४	–	६	१२	०
३२	५३	८	चं	४८	२४	रा	१२	४७	श्रवण	९	११	दि	९	९	शुक्ल	११	५३	दि	१०	१०	बा	२१	९	कौ	४८	२४	सिद्धि	११	७	२७	२८	२१	कुम्भ	३७।२९	५	२५	६	३५	०	२५	४८	५२	१७	४०	–	६	१२	४६
३२	५६	९	मं	४२	३०	रा	१०	२५	धनिष्ठा	५	३८	दि	७	४०	ब्रह्म	४ ५२	३८ २७	प्रा	७ ४	११ १५	तै	१५	२७	गर	४२	३०	उत्पात	१२	८	२८	२९	२२			५	२५	६	३५	०	२६	४६	३७	१७	५५	–	६	१	३१
३२	५९	१०	बु	३६	२२	रा	७	५७	शतभिष	१ ५५	३५ ५०	प्रा	१ ४	२ २२	वैधृति	४९	२६	रा	१	१०	व	९	२६	भ	३६	२२	मानस	१३	९	२९	३०	२३	मीन	४३।२८	५	२४	६	३६	०	२७	४४	२२	१८	११	–	६	२	१४
३३	१	११	गु	३०	१५	सा	५	३०	उ.भा.	५३	२१	रा	२	४४	विष्कुम्भ	४१	५२	रा	१०	९	वव	३	१९	बा	३० ५७	१५ १२	छत्र	१४	१०	३०	३१	२४			५	२४	६	३६	०	२८	४२	५	१८	२६	–	६	२	५८
३३	४	१२	शु	२४	१९	दि	३	७	रेवती	४९	३४	रा	१	१३	प्रीति	३४	२८	रा	७	१०	तै	२४	९	गर	५१	२९	श्रीवत्स	१५	११	३१	१	२५	मेष	४९।३४	५	२३	६	३७	०	२९	३९	४७	१८	४०	–	६	३	४३
३३	७	१३	श	१८	४८	दि	१२	५४	अश्विनी	४६	१६	रा	११	५३	आयुष्मान	२७	२५	दि	४	२१	व	१८	४८	भ	४६	१९	सौम्य	१६	१२	१	२	२६			५	२३	६	३७	१	०	३७	२६	१८	५४	–	६	४	३०
३३	९	१४	र	१३	४९	दि	१०	५४	भरणी	४३	३१	रा	१०	५०	सौभाग्य	२०	५४	दि	१	४४	श	१३	४९	च	४१	४५	कालदण्ड	१७	१३	२	३	२७	वृष	५८।१३	५	२२	६	३८	१	१	३५	४	१९	८	–	६	५	१९
३३	११	३०	चं	९	४१	दि	९	१४	कृत्तिका	४१	५३	रा	१०	७	शोभन	१५	२	दि	११	२३	नाग	९	४१	किं	३८	४	सुस्थिर	१८	१४	३	४	२८			५	२२	६	३८	१	२	३२	४०	१९	२२	–	६	–	–

ज्येष्ठकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि १५ वैशाख से २८ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक ५ मई से १८ तक सन् २०१५ ई.।।

आटा की ब्रह्मा की मूर्ति बनाकर ज्येष्ठमास में वस्त्रादि से पूजन करना चाहिये। त्रिपुष्करयोग दि. ९।१ से दि.११।१४ तक।
भ. रा. ८।५८ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ११।५९ तक। अमृतसिद्धियोग दि. ११।५९ तक।
भ.दि. ८।४७ तक। धनुराशि दि. १२।१५ । संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ९।२१। गुरुदेवरविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती।
माँ आनन्दमयी जयन्ती। (☞ एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।)
भ. रा.शे. ४।५८ से। मकरराशि सा. ५।८। त्रिपुष्करयोग रा.शे. ४।५८ से। रवियोग दि. ११।२३ से।
भ. दि. ३।५९ तक। भानुसप्तमी ७ पर्व। सूर्यग्रहण के समान फल मिलता है। यायीजययोग दि. १०।२५ तक।◆
कुम्भराशि रा.८।२५। श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत। आज वासी भोजन शास्त्र विहित है। त्रिलोचन अष्टमी (बंगाल)। ⇧
◆ सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।२५ तक। त्रिपुष्करयोग दि. १०।२५ तक। रवियोग दि. १०।२५ तक।
भ. दि. ९।१० से रा. ७।५७ तक। मीनराशि रा. १०।४७। मृत्युबाणारम्भ दि. ११।५४। यायी-स्थायी ☾
अचला ११ एकादशी व्रत सबका। जलक्रीड़ा एकादशी (उड़ीसा)। भद्रकाली एकादशी (पंजाब)। मृत्युबाण ♍
मेषराशि रा. १।१३ । प्रदोष १२ व्रत। वटसावित्री व्रतारम्भ। तीन दिनों तक। ⊙ सं.वृषराशि का सूर्य ○
भ.दि. १२।५४ से रा. ११।५५ तक। वटसावित्री व्रत का द्वितीय दिन। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां ☐
वृषराशि रा. ४।३९ । श्राद्ध की ३० अमावस्या। वटसावित्री व्रत। स्त्रियों के लिए आवश्यक व्रत। मृत्युबाण समाप्ति दि. ३।४५।
स्नान-दान की ३० अमावस्या। सोमवती अमावस्या। सोमवती अमावस्या के दिन पीपल वृक्ष के नीचे भग्वान ☞

● ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ।। ●

ति.१	मंगल को दि.११।१४ के बाद अनुराधा में सूर्यवेध है।
ति.२	बुध को अनुराधा में पूर्वदोष है।
ति.३	गुरु को दि.१२।१५ के बाद मूल में रे.८ दिन में ल. ६ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (के.दा.) वा ल. गोधूलि वा ल.११ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १७
ति.४	शुक्र को मूल में रे.८ दिन में पञ्चेष्टलग्न नहीं है।
ति.५	शनि को दि.११।२३ के बाद उ.षा. में भद्रा से पूर्व रे.७ दिन में ल. ६ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १२ (के.दा.) वा ल.गोधूलि वा ल.११ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १२ वा ल. १२ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। (रा.दा.)
ति.७	रवौ उ.षा. में भद्रादोष है।
ति.१०	बुध को रा.शे.४।२२ के बाद उ.भा. में केतुयुति तथा मृत्युबाण है।
ति.११	गुरु को उ.भा. में पूर्वदोष है। रा.२।४४ के बाद रेवती में रे.८ पञ्चेष्टलग्न नहीं है।
ति.१२	शुक्र को रेवती में रे.८ दिन में ल. २ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। (शनि दान) वा ल. गोधूलि वा ल.११ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १७ इसके बाद मासान्तदोष है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	मं	१	१	१६	५३	१	९	०	११	३	२२	२४	५२	२	२	३४	३६	७	८	१२	१७	५	१४	११	५३
२	बु	१	२	०	६	१	१०	११	४९	३	२२	३०	९	२	३	४२	४७	७	८	८	४८	५	१४	८	४२
३	गु	१	२	४३	२०	१	११	२३	३१	३	२२	३५	३७	२	४	५०	५९	७	८	५	१९	५	१४	५	३२
४	शु	१	३	२६	३४	१	१२	२७	३३	३	२२	४१	४	२	५	५९	१०	७	८	१	४९	५	१४	२	२१
५	श	१	४	९	४७	१	१३	३१	२५	३	२२	४६	३२	२	७	७	२२	७	७	५७	१९	५	१३	५९	१०
७	र	१	४	५३	१	१	१४	३५	१७	३	२२	५२	०	२	८	१५	३१	७	७	५२	४१	५	१३	५५	५९
८	चं	१	५	३६	१५	१	१५	३०	४५	३	२२	५७	२८	२	९	२२	४०	७	७	४८	४	५	१३	५२	४८
९	मं	१	६	१९	२८	१	१६	१२	१२	३	२३	२	५५	२	१०	२६	१७	७	७	४३	२६	५	१३	४९	३८
१०	बु	१	७	२	३३	१	१६	५३	३९	३	२३	८	२३	२	११	२९	५३	७	७	३८	४९	५	१३	४६	२७
११	गु	१	७	४४	०	१	१७	३५	७	३	२३	१३	५१	२	१२	३३	३०	७	७	३४	११	५	१३	४३	१६
१२	शु	१	८	२५	२६	१	१८	१६	३४	३	२३	१९	१८	२	१३	३७	६	७	७	२९	३३	५	१३	४०	५
१३	श	१	९	६	५३	१	१८	३८	४३	३	२३	२४	४६	२	१४	४०	४२	७	७	२४	५६	५	१३	३६	५४
१४	र	१	९	४८	२०	१	१८	५०	९	३	२३	३०	११	२	१५	४४	१९	७	७	२०	१८	५	१३	३३	४४
३०	चं	१	१०	२९	४६	१	१९	१	३६	३	२३	३५	३५	२	१६	४७	५५	७	७	१५	४१	५	१३	३०	३३

ग्रहचार- मंगल- ति. १४ रवि को रोहिणी में दि.१२।८।। बुध- ति. १ मंगल को रोहिणी में रा. ११।३१।। गुरु- ति. १२ शुक्र को श्लेषा ३ चरण में दि. ८।२७।। शुक्र- ति. ४ शुक्र को आर्द्रा में रा. ७।४९।। वक्रीशनि- अनुराधा २ चरण में।। राहु- हस्त २ चरण में तथा केतु उ.भा. ४ चरण में ।।

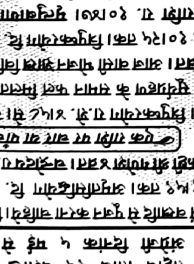
ज्येष्ठकृष्ण प्रतिपदा को मंगलवार हो तो लोग रोग से पीड़ित होते हैं।

७ पं० ज्येष्ठकृष्ण ८ सोम

अहर्गण ११८

अयनांश २४।३।२०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	९	१	१	३	२	७	५	११
२५	२१	५	१५	२२	९	७	१३	१३
४८	८	३६	३०	५७	२२	४८	५२	५२
५२	५३	१५	४५	२८	४०	४	४८	४८
५७	८४४	४३	४१	५	६३	४	३	३
५५	२०	१३	२७	२४	३७	३८	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ मंगल को विशाखा में लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। अनुराधा में शनियुति है। ति. २ बुध को अनुराधा में पूर्वदोष है। दि. ११।५९ के बाद ज्येष्ठा में शिशुताम्बुलभक्षण भूम्युपवेशन पशुओं की खरीद-बिक्री दँवरी चौलमुण्डन (ल. ४) फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ३ गुरु को भद्रा बाद ज्येष्ठा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ४ शुक्र को मूल में चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता के बाद पुंसवनसीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विद्यारम्भ (ल. ३) उपनयन (ल. ३) वधूप्रवेश-द्विरागमन (ल. ३) फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. १२।१ के बाद पू.षा. में शिल्पविद्या नावनिर्माण उपनयन (ल. ५के.दा.) वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति.५ शनि को पू.षा. में शस्त्रनिर्माण वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। दि. ११।२३ के बाद उ.षा. में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रनीलमादि रत्नधारण का मुहूर्त्त है। ति. ७ रवि को उ.षा. में भद्रादोष है। भद्रा बाद श्रवण में भौमवेध है। ति. ८ सोम को श्रवण में पूर्वदोष है। दि. ९।९ से रा. १२।४७ तक धनिष्ठा में शिशुताम्बूलभक्षण गर्भाधान पशुओं की खरीद-बिक्री नवान्नभक्षण औषधसेवन वधूप्रवेश (ल. ५) द्विरागमन (ल. ३ वा ६) हलप्रवहण बीजोप्ति वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ मंगल को धनिष्ठा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १० बुध को शतभिष में वैधृतिदोष है। ति. ११ गुरु को उ.भा. में राहुवेध है। रा. २।४४ के बाद रेवती में वधूप्रवेश- द्विरागमन (ल. १२) गृहप्रवेश में चक्रशुद्धि का मुहूर्त्त है। ति. १२ शुक्र को रेवती में जातकर्मनामकरण ☞

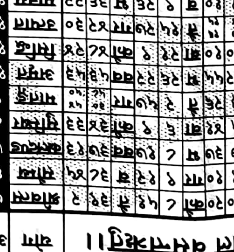
तिथि ल.अ.	१ मं घं.	मि.	२ बु घं.	मि.	३ गु घं.	मि.	४ शु घं.	मि.	५ श घं.	मि.	७ र घं.	मि.	८ च घं.	मि.	९ म घं.	मि.	१० बु घं.	मि.	११ गु घं.	मि.	१२ शु घं.	मि.	तिथि ल.अ.	१३ श घं.	मि.	१४ र घं.	मि.	३० च घं.	मि.
मेष	६	०	५	५९	५	५३	५	४९	५	४६	५	४२	५	३८	५	३५	५	३१	५	२८	५	२४	वृष	७	१६	७	१२	७	८
वृष	७	५६	७	५२	७	४९	७	४५	७	४२	७	३८	७	३४	७	३१	७	२७	७	२४	७	२०	मिथुन	९	३०	९	२६	९	२२
मिथुन	१०	१०	१०	६	१०	३	९	५९	९	५६	९	५२	९	४८	९	४५	९	४१	९	३८	९	३४	कर्क	११	४८	११	४४	११	४०
कर्क	१२	२८	१२	२४	१२	२१	१२	१७	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	३	११	५९	११	५६	११	५२	सिंह	२	२	१	५८	१	५४
सिंह	२	४२	२	३८	२	३५	२	३१	२	२८	२	२४	२	२०	२	१७	२	१३	२	१०	२	६	कन्या	४	१५	४	११	४	७
कन्या	४	५५	४	५१	४	४८	४	४४	४	४१	४	३७	४	३३	४	३०	४	२६	४	२३	४	१९	तुला	६	३१	६	२७	६	२३
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि	
तुला	७	११	७	७	७	४	७	०	६	५७	६	५३	६	४९	६	४६	६	४२	६	३९	६	३५	वृश्चिक	८	४९	८	४५	८	४१
वृश्चिक	९	२८	९	२४	९	२१	९	१७	९	१४	९	१०	९	६	९	३	८	५९	८	५६	८	५२	धनु	१०	५५	१०	५१	१०	४७
धनु	११	३४	११	३०	११	२७	११	२३	११	२०	११	१६	११	१३	११	१०	११	६	११	३	१०	५९	मकर	१२	४२	१२	३८	१२	३४
मकर	१	२१	१	१७	१	१४	१	१०	१	७	१	३	१	०	१२	५७	१२	५३	१२	५०	१२	४६	कुम्भ	२	१३	२	९	२	५
कुम्भ	२	५२	२	४८	२	४५	२	४१	२	३८	२	३४	२	३१	२	२८	२	२४	२	२१	२	१७	मीन	३	४१	३	३७	३	३३
मीन	४	२०	४	१६	४	१३	४	९	४	६	४	२	३	५९	३	५६	३	५२	३	४९	३	४५	मेष	५	१८	५	१४	५	१०

८ पं० ज्येष्ठकृष्ण ३० सोम

अहर्गण १२५

अयनांश २४।३।२१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१	१	१	३	२	७	५	११
२	०	१०	१९	२३	१६	७	१३	१३
३२	२४	२९	१	३५	४७	१५	३०	३०
४०	४०	४६	३६	३५	५५	४१	३३	३३
५७	८२४	४१	११	५	६३	४	३	३
३५	१७	२७	२६	२५	३७	३८ व.	११	११



⇧ ⊙ कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य रा. २।४०। पञ्चक प्रारम्भ रा. ८।२५। यायीजययोग रा. १२।४७ से । सर्वार्थसिद्धियोग दि. ९।९ तक । ☾ दुर्लभ सन्धिकरयोग प्रा.६।२ तक। ♍ समाप्ति दि. १२।५१। यायीजययोग सा. ५।३० तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.२।४४ से। ○ दि. १।४८। मु. ३० समा। फल समता। संक्रान्ति से पूर्व ६ घंटा २४ मिनट पुण्यकाल। गौ-अन्न-जल-तिल आदि का दान। गोदावरी में स्नान। ग्रीष्मऋतु प्रारम्भ। पञ्चक समाप्ति रा.१।१३। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। अमृतसिद्धियोग रा. १।१३ तक। ☐ भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" सौर ज्येष्ठमासारम्भ। मृत्युबाणारम्भ दि. २।४७। ☞ विष्णु की प्रतिमा स्थापित कर विधानपूर्वकसूर्यसोपचार पूजन कर स्त्रियों को सौभाग्यवृद्धि हेतु प्रदक्षिणा करनी चाहिए। शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए सुखकारक होती है। यायीजययोग रा. १०।७ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १०।७ से।

मूल विचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. २ बुध को दि .११।५९ से। ति. ४ शुक्र को दि.१२।१ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. ११ गुरु को रा. २।४४ से । ति. १३ शनि को रा. ११।५३ तक ।
पञ्चक विचार- ति. ८ सोम को रा. ८।२५ से । ति. १२ शुक्र को रा. १।१३ तक।

☞ शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण दँवरी नवान्नभक्षण औषधसेवन नावनिर्माण वधूप्रवेश (ल. २) द्विरागमन (ल. ३) गृहप्रवेश (ल. २ वा ६) हलप्रवहण बीजोप्ति ईंट का भट्ठा लगाने विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

ज्येष्ठशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि २९ वैशाख से १२ ज्येष्ठ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक १९ मई से २ जून तक सन् २०१५ ई.।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घं.	मि.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे.अं. –	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
३३	१४	१	मं	६	२७	दि	७	५६	रोहिणी	४१	७	रा	९	४८	अतिगण्ड	९	५६	दि	९	१९	वव	६	२७	वा	३५	२२	मातङ्ग	१९	१५	४	५	२९			५	२१	६	३९	१	३	३०	१५	१९	३५	–	६	७	४१
३३	१६	२	बु	४	१७	दि	७	४	मृगशिरा	४१	३०	रा	९	५७	सुकर्मा	५	३९	दि	७	३७	कौ	४	१७	तै	३३	४९	अमृत	२०	१६	५	६	३०	मिथुन	११।१९	५	२१	६	३९	१	४	२७	४७	१९	४८	–	६	८	४४
३३	१८	३	गु	३	२०	प्रा	६	४०	आर्द्रा	४३	९	रा	१०	३६	धृति	२	२३	प्रा	६	१७	गर	३	२०	व	३३	३०	काण	२१	१७	६	७	३१			५	२०	६	४०	१	५	२५	१८	२०	१	–	६	९	३६
३३	२१	४	शु	३	३९	प्रा	६	४८	पुनर्वसु	४६	२	रा	११	४५	शूल	० ५८	७ ४७	प्रा	५ ४	२३ ५४	भ	३	३९	वव	३४	३०	लुम्बक	२२	१८	७	८	१	कर्क	३०।१९	५	२०	६	४०	१	६	२२	४७	२०	१३	–	६	१०	२२
३३	२३	५	श	५	२१	दि	७	२७	पुष्य	५०	४	रा	१	२१	वृद्धि	५८	३२	रा	४	४४	वा	५	२१	कौ	३६	४४	मित्र	२३	१९	८	९	२			५	१९	६	४१	१	७	२०	१६	२०	२५	–	६	११	५
३३	२५	६	र	८	७	दि	८	३४	श्लेषा	५५	१७	रा	३	२६	ध्रुव	५९	३	रा	४	५६	तै	८	७	गर	४०	४	वज्र	२४	२०	९	१०	३	सिंह	५५।१७	५	१९	६	४१	१	८	१७	४३	२०	३७	–	५	११	४५
३३	२७	७	चं	१२	१	दि	१०	६	मघा	६०	०	स	म	स्त	व्याघात	६०	०	स	म	स्त	व	१२	१	भ	४४	२०	ध्वांक्ष	२५	२१	१०	११	४			५	१८	६	४२	१	९	१५	९	२०	४८	–	५	१२	२१
३३	२९	८	मं	१६	३९	दि	११	५८	मघा	१	१४	प्रा	५	४८	व्याघात	०	१२	प्रा	५	२३	वव	१६	३९	वा	४९	१२	कालदण्ड	२६	२२	११	१२	५			५	१८	६	४२	१	१०	१२	३४	२०	५९	–	५	१२	५७
३३	३१	९	बु	२१	४४	दि	१	५९	पू.फा.	७	४३	दि	८	२२	हर्षण	१	४५	प्रा	५	५९	कौ	२१	४४	तै	५४	१६	सुस्थिर	२७	२३	१२	१३	६	कन्या	२४।२२	५	१७	६	४३	१	११	९	५७	२१	९	–	५	१	३२
३३	३३	१०	गु	२६	४७	दि	४	०	उ.फा.	१४	१८	दि	११	०	वज्र	३	२५	प्रा	६	३९	गर	२६	४७	व	५९	६	मातङ्ग	२८	२४	१३	१४	७			५	१७	६	४३	१	१२	७	१९	२१	१९	–	५	२	७
३३	३५	११	शु	३१	२४	सा	५	५१	हस्त	२०	३१	दि	१	२९	सिद्धि	४	५१	दि	७	१३	भ	३१	२४	वव	६०	०	अमृत	२९	२५	१४	१५	८	तुला	५३।१८	५	१७	६	४३	१	१३	४	३१	२१	२९	–	५	२	४४
३३	३६	१२	श	३५	१७	रा	७	२३	चित्रा	२६	५	दि	३	४२	व्यतिपात	५	५०	दि	७	३६	वव	३	२१	वा	३५	१७	काण	३०	२६	१५	१६	९			५	१६	६	४४	१	१४	१	५७	२१	३९	–	५	३	२३
३३	३८	१३	र	३८	३	रा	८	२९	स्वाती	३०	४०	सा	५	३२	वरीयान	६	६	दि	७	४२	कौ	६	४०	तै	३८	३	लुम्बक	३१	२७	१६	१७	१०			५	१६	६	४४	१	१४	५९	१५	२१	४८	–	५	४	४
३३	४०	१४	चं	३९	४४	रा	९	१०	विशाखा	३४	८	सा	६	५५	परिघ	५	२८	दि	७	२७	गर	८	५४	व	३९	४४	मित्र	१	२८	१७	१८	११	वृश्चिक	१८।१६	५	१६	६	४४	१	१५	५६	३१	२१	५६	–	५	४	५०
३३	४१	१५	मं	४०	४	रा	९	१८	अनुराधा	३६	१८	रा	७	४७	शिव	३	५२	प्रा	६	४९	भ	९	५४	वव	४०	४	वज्र	२	२९	१८	१९	१२			५	१६	६	४४	१	१६	५३	४६	२२	५	–	४	–	–

‿चन्द्रदर्शन। मु. ४५ वृहत्ती। फल सस्ती। समशृंग सस्तीकारक। काशी में १० दिनों तक दशाश्वमेध स्नान प्रारम्भ।◐
मिथुनराशि दि. ९।५३। मु. सावान ८ हिजरी सन् १४३६। रम्भा ३ व्रत (पूर्वविद्धा)। सोपपदा २ वेदारम्भ ❖
भ. सा. ६।४४ से। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। महाराणाप्रतापजयन्ती ३ (राजस्थान)। ⊙सायन मिथुनराशि ♊
भ. प्रा. ६।४८ तक। कर्कराशि सा. ५।२८। उमावतार ४। उमाचतुर्थी (बंगाल)। गुरुअर्जुनदेव शहीद दिवस।
श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत (पूर्व विद्धा)। रवियोग रा. १।२१ तक।
सिंहराशि रा. ३।२६। जमाईषष्ठी (बंगाल)। अरण्यषष्ठी। अरण्यगौरी व्रतम्। शीतला षष्ठी (उड़ीसा)। यायीजययोग◆
भ. दि. १०।६ से रा. ११।२ तक। ⊙ रोहिणी नक्षत्र का सूर्य रा.१२।३। मृत्युबाणारम्भ रा. १२।३।
शुक्ला देवी का पूजन। मृत्युबाण समाप्ति रा. १।८। स्थायीजययोग प्रा. ५।४८ तक। तक। रवियोग सा. ५।३२ से।
कन्याराशि दि. ३।२। नवमी में उपवास पूर्वक शुक्लादेवी का पूजन। रवियोग दि. ८।२२ से। दि. ३।४२ तक।
भ. रा.शे. ४।५५ से। श्रीगंगादशहरा १०। श्री गंगा अवतरण। श्रीगंगाजन्म (ल. २)। सेतुबन्धरामेश्वर प्रतिष्ठादिन।○
भ. सा. ५।५१ तक। तुलाराशि रा.२।३६। निर्जला ११ एकादशी व्रत सबका। भीमसेनी एकादशी। चीनी-सुवर्ण●
कूर्म जयन्ती १२। चम्पक द्वादशी(उड़ीसा)। यायीजययोग रा. ७।२३ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।४२ से। द्विपुष्करयोग
प्रदोष १३ व्रत। दाक्षिणात्यवटसावित्री व्रतारम्भ। तीन दिनों तक। गोत्तमेश्वर दर्शन। यायीजययोग सा. ५।३२
भ. रा. ९।१० से। वृश्चिकराशि दि. १२।३४। दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रत का द्वितीय दिन। जून ६। यायीजययोग
भ. दि. ९।१४ तक। स्नान-दान-व्रत की १५ पूर्णिमा। दाक्षिणात्य वटसावित्रीव्रत। जलयात्रा १५। मन्वादि १५।

॥ विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ॥

ति.१ मंगल को रोहिणी में भौमयुति है। रा.९।४८ के बाद मृगशिरा में रे. ८ ल. १२ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१७ (रा.दा.) वा ल. १ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३ (तृतीयस्थ शुक्र शुभ नहीं है)

ति.२ बुध को मृगशिरा में रे. ८ दिन में ल. ४ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१६।। वा ल.गोधूलि।रात्रि में पञ्चेष्टलग्न नहीं है।

ति.६ रवि को रा.३।२६ के बाद मघा में रे.८ पञ्चेष्टलग्न नहीं है।

ति.७ सोम को मघा में भद्रा से पूर्व दिन में ल. ४ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१६।। भद्रा के बाद मृत्युबाण से पूर्व रात्रि में पञ्चेष्टलग्न नहीं है।

ति.८ मंगल को मघा में मृत्युबाणव्याप्ति है।

ति.९ बुध को दि. ८।२२ के बाद उ.फा. में रे.९ दिन में ल. ४ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१६।। वा ल.गोधूलि वा ल.१२ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १२ (रा.दा.)

ति.१० गुरु को उ.फा.में रे.९ दिन ल. ४ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१६।। दि.११।० के बाद हस्त में राहुयुति तथा भद्रादोष है।

ति.११ शुक्र को हस्त में राहुयुति,भद्रादोष तथा व्यतिपात है।

ति.१२ शनि को दि.३।४२ के बाद स्वाती में रे.९ दिन में ल.गोधूलि वा ल. १ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (चं.दा.)

ति.१३ रवि को स्वाती में रे.९ दिन में ल.४ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३।। वा ल. ६ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३।। (के.दा.)

ति.१४ सोम को सा.६।५५ के बाद अनुराधा में शनियुति तथा भद्रादोष है।

ति.१५ मंगल को अनुराधा में पूर्वदोष है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				मार्गीबुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	मं	१	११	११	१३	१	१९	१३	२	३	२३	४१	०	२	१७	५१	३२	७	७	११	३	५	१३	२७	२२
२	बु	१	११	५२	२८	व	१९	२४	२८	३	२३	४६	२५	२	१८	५५	८	७	७	६	२६	५	१३	२४	११
३	गु	१	१२	३३	४३	१	१९	६	१३	३	२३	५१	४९	२	१९	५८	४५	७	७	१	४८	५	१३	२१	०
४	शु	१	१३	१४	५८	१	१८	४४	९	३	२३	५८	८	२	२१	२	२१	७	६	५७	१०	५	१३	१७	५०
५	श	१	१३	५६	१३	१	१८	२२	५	३	२४	५	४३	२	२२	५	५८	७	६	५२	३३	५	१३	१४	३९
६	र	१	१४	३७	२८	१	१८	०	१	३	२४	१३	१८	२	२३	९	३४	७	६	४७	५५	५	१३	११	२८
७	चं	१	१५	१८	४३	१	१७	३४	५८	३	२४	२०	५४	२	२४	१२	३५	७	६	४३	१८	५	१३	८	१७
८	मं	१	१५	५९	५८	१	१६	४३	४४	३	२४	२८	२९	२	२५	१५	८	७	६	३८	४०	५	१३	५	६
९	बु	१	१६	४१	१२	१	१५	५२	२३	३	२४	३६	४	२	२६	१७	४०	७	६	३४	३	५	१३	१	५६
१०	गु	१	१७	२२	२७	१	१५	१	३	३	२४	४३	४०	२	२७	२०	१३	७	६	२९	२५	५	१२	५८	४५
११	शु	१	१८	३	४२	१	१४	९	४३	३	२४	५१	१५	२	२८	२२	४६	७	६	२४	४७	५	१२	५५	३४
१२	श	१	१८	४४	५७	१	१३	१८	२३	३	२४	५८	५१	२	२९	२५	१९	७	६	२०	१०	५	१२	५२	२३
१३	र	१	१९	२६	१२	१	१२	२७	२	३	२५	६	२६	३	०	२७	५१	७	६	१५	३२	५	१२	४९	१२
१४	चं	१	२०	७	२७	१	११	३५	४२	३	२५	१४	१	३	१	३०	२४	७	६	१०	५५	५	१२	४६	१
१५	मं	१	२०	४८	४२	१	१०	४४	२२	३	२५	२१	३६	३	२	३२	५७	७	६	६	१७	५	१२	४२	५१

ग्रहचार- मंगल- रोहिणी में।। मार्गीबुध- रोहिणी में। ति. २ बुध को वक्री दि. २।३५। ति. १५ मंगल को कृत्तिका में रा. २।०।। गुरु- श्लेषा ३ चरण में।। शुक्र- ति. ३ गुरु को पुनर्वसु में प्रा. ५।४८। ति. १२ शनि को कर्कराशि में सा. ६।३५। ति. १५ मंगल को पुष्य में रा. ११।२७।। वक्रीशनि- ति. ७ सोम को अनुराधा १ चरण में रा. १०।२४।। राहु- ति.३ गुरु को हस्त १ चरण में तथा केतु उ.भा. ३ चरण में दि. १२।५२।।

१ पं. ज्येष्ठशुक्ल ८ मंगल

अहर्गण १३३

अयनांश २४।३।२२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	४	१	१	३	२	७	५	११
१०	१३	१५	१६	२४	२५	६	१३	१३
१२	५	५९	४३	२८	१५	३८	५	५
३४	६	५८	४४	२९	८	४०	६	६
५७	७२७	४१	५१	७	६२	४	३	३
२३	४९	१४	२१ व.	३५	३२	३७ व.	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ मंगल को रोहिणी में भौमयुति है। रात्रिशेष में मृगशिरा में सूतीस्नान मुहूर्त्त है। ति. २ बुध को मृगशिरा में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन गर्भाधान वृष के चन्द्रमा में पूर्व-दक्षिण तथा मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम-दक्षिण दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन चौलमुण्डन (ल. ३ वा ४) कर्णवेध (ल. ३ वा ४) विद्यारम्भ (ल. ३ वा ४) उपनयन में सोपपदादोष जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल.३ वा ४) हलप्रवहण विपणि वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ३ गुरु को आर्द्रा में प्रा. ६।४० तक अक्षरारम्भ -विद्यारम्भ (ल. २) फसल काटने का मुहूर्त्त है। चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ४ शुक्र को रिक्ता के बाद पुनर्वसु में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री मिथुन के चन्द्रमा में दक्षिण तथा कर्क के चन्द्रमा में उत्तर दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण चौलमुण्डन(ल. ३ वा ४) कर्णवेध (ल.३ वा ४) अक्षरारम्भ (ल. ३ वा ४) विद्यारम्भ (ल. ३ वा ४) उपनयन (ल.३ वा ५ के.दा.) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३ वा ४) हलप्रवहण वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। रा. ११।४५ के बाद पुष्य में पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. ५ शनि को पुष्य में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (पंचमी में) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३)☛

तिथि ल.अ.	१ मं घं.	मि.	२ बु घं.	मि.	३ गु घं.	मि.	४ शु घं.	मि.	५ श घं.	मि.	६ र घं.	मि.	७ चं घं.	मि.	८ मं घं.	मि.	९ बु घं.	मि.	१० गु घं.	मि.	११ शु घं.	मि.	१२ श घं.	मि.	१३ र घं.	मि.	१४ चं घं.	मि.	१५ मं घं.	मि.
वृष	७	४	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५
मिथुन	९	१८	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९
कर्क	११	३६	११	३२	११	२७	११	२३	११	१९	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७
सिंह	१	५०	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१
कन्या	४	३	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४
तुला	६	१९	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृश्चिक	८	३७	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८
धनु	१०	४३	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४
मकर	१२	३०	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१
कुम्भ	२	१	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२
मीन	३	२९	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०
मेष	५	६	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७

१० पं० ज्येष्ठशुक्ल १५ मंगल

अहर्गण १४०

अयनांश २४।३।२३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	७	१	१	३	३	७	५	११
१६	८	२०	१०	२५	२	६	१२	१२
५३	५२	४८	४४	२१	३२	६	४२	४२
४६	५३	४२	२२	३६	५७	१७	५१	५१
५७	७७२	४१	५१	७	६२	४	३	३
१५	७	१४	२० व.	३३	४०	३८ व.	११	११



◐ वृश्चिकम से गंगास्तोत्र का नित्य पाठ। करवीर १व्रत। द्विपुष्करयोग रा. ९।४८ से। ❖वर्जित है। सर्वार्थसिद्धियोग रा.९।५७ तक। रवियोग रा.९।५७ से। ♊ का सूर्य सा. ६।२५। सर्वार्थसिद्धियोग रा.१०।३६ से। रवियोग रा. १०।३६ तक। पौराणिक अगस्त्यास्त रा.८।५२। राष्ट्रीय ज्येष्ठमास दि. ३१। सर्वार्थसिद्धियोग रा.११।४५ तक। रवियोग रा. ११।४५ से। ◆ दि. ८।३४ से रा. ३।२६ तक। यमघंटयोग रा. ३।२६ से। ○ गंगास्तोत्रपाठ-दशाश्वमेधस्नान समाप्ति। यायीजययोग दि.४।० से। रवियोग समस्त। ●तथा जलकुम्भ-दान। दानमन्त्र- "देव-देव हृषीकेश संसारार्णवतारक उदकुम्भप्रदानेन यास्यामिहरिर्मंदिरम्।" श्रीकाशी विश्वनाथपञ्चाङ्ग प्रवर्तक पं. हृषीकेश उपाध्याय जयन्ती ११। स्थायीजययोग सा. ५।५१ से। रवियोग दि. १।२९ तक। रा.९।१०से। यमघंटयोग सा.६।५५ तक। रवियोग सा.६।५५ तक। ♉ त्रिविक्रमपूजा १५। विल्वत्रिरात्रव्रत। संत कबीरजयन्ती १५।

मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति. ५ शनि को रा. १।२१ से। ति. ८ मंगल को प्रा.५।४८ तक। ज्येष्ठा/मूल- ति. १५ मंगल को रा.७।४७ से।

☛ बीजोप्ति (पंचमी में) विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ६ रवि को श्लेषा में शनिवेध है। ति. ७ सोम को मघा में भद्रा से पूर्व दँवरी फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ मंगल को पू.फा में दि.११।५८ तक शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ९ बुध को नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता के बाद उ.फा. में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गर्भाधान सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण दँवरी शिल्पविद्या जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ६) गृहप्रवेश (ल. ६ वा २) ईंट निर्माण- ईंट का भट्ठा लगाने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १० गुरु को उ.फा. में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या उपनयन (ल. ३) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३) गृहप्रवेश (ल. २) हलप्रवहण ईंट निर्माण- ईंट का भट्ठा लगाने विपणि का मुहूर्त्त है। हस्त में राहुयुति है। ति. ११ शुक्रे हस्त में राहुयुति, भद्रादोष तथा व्यतिपात है। ति. १२ शनि को व्यतिपात के बाद चित्रा में कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३) गृहप्रवेश (ल. ६)मुहूर्त्त है। ति. १३ रवि को स्वाती में सूतीस्नान नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण नवान्नभक्षण औषधसेवन नावनिर्माण जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३) वस्तुक्रय ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. १४ सोम को विशाखा में रिक्तादोष है। ति. १५ मंगल को अनुराधा में शनियुति है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

शुद्धआषाढ़कृष्णपक्ष।।

राष्ट्रीय तिथि १३ ज्येष्ठ से २६ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक ३ जून से १६ तक सन् २०१५ ई.।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घं.	मि.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे. अं. -	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
३३	४२	१	बु	३९	७	रा	८	५५	ज्येष्ठा	३७	१३	रा	८	९	सिद्ध	१/५५	११/२१	प्रा	५/४	३१/१०	वा	९	३६	कौ	३९	७	ध्वांक्ष	३	१	१९	२०	१३	धनु	३७।१३	५	१६	६	४४	१	१७	५१	१	२२	१२	-	४	७	२२
३३	४४	२	गु	३६	५६	रा	८	१	मूल	३६	५७	रा	८	२	शुभ	५३	६	रा	२	२९	तै	८	२	गर	३६	५६	धूम्र	४	२	२०	२१	१४			५	१५	६	४५	१	१८	४८	१३	२२	२०	-	४	८	१६
३३	४५	३	शु	३३	४५	सा	६	४४	पू.षा.	३५	३३	रा	७	२७	शुक्ल	४७	४३	रा	१२	११	व	५	२१	भ	३३	४५	प्रवर्धमान	५	३	२१	२२	१५	मकर	५०।१	५	१४	६	४६	१	१९	४५	२१	२२	२७	-	४	९	९
३३	४६	४	श	२९	३५	दि	५	४	उ.षा.	३३	२२	सा	६	३५	ब्रह्म	४१	४०	रा	९	५४	बव	१	४०	वा	११/५७	३५/५	राक्षस	६	४	२२	२३	१६			५	१४	६	४६	१	२०	४२	३४	२२	३४	-	४	९	५९
३३	४८	५	र	२४	३५	दि	३	४	श्रवण	३०	२१	सा	५	२२	ऐन्द्र	३४	५८	सा	७	१३	तै	२४	३५	गर	५१	४९	गद	७	५	२३	२४	१७	कुम्भ	५८।३४	५	१४	६	४६	१	२१	३९	४३	२२	४०	-	४	१०	४६
३३	४९	६	चं	१९	३	दि	१२	५१	धनिष्ठा	२६	४६	दि	३	५६	वैधृति	२७	४७	दि	४	२१	व	१९	३	भ	४६	५	शुभ	८	६	२४	२५	१८			५	१४	६	४६	१	२२	३६	५१	२२	४६	-	३	११	३१
३३	५०	७	मं	१३	६	दि	१०	२८	शतभिष	२२	४६	दि	२	२०	विष्कुम्भ	२०	२०	दि	१	२२	बव	१३	६	वा	४०	२	मृत्यु	९	७	२५	२६	१९			५	१४	६	४६	१	२३	३३	५८	२२	५२	-	३	१२	१४
३३	५१	८	बु	६	५७	दि	८	१	पू.भा.	१८	३५	दि	१२	४०	प्रीति	१२	४३	दि	१०	१९	कौ	६	५७	तै	३३	५२	पद्म	१०	८	२६	२७	२०	मीन	४।३८	५	१४	६	४६	१	२४	३१	४	२२	५७	-	३	१२	५६
३३	५२	९	गु	०/५४	५९/०	प्रा	५/१	३२/८	उ.भा.	१४	२७	दि	११	१	आयुष्मान	५/५२	१०/३३	प्रा	५/४	१७/१६	गर	०	४६	व	२७/५४	५९/४६	छत्र	११	९	२७	२८	२१			५	१४	६	४६	१	२५	२८	८	२३	१	-	३	१	४०
३३	५३	११	शु	४९	११	रा	१२	५३	रेवती	१०	३४	दि	९	२७	शोभन	५०	३४	रा	१	२७	बव	२१	५९	वा	४९	११	श्रीवत्स	१२	१०	२८	२९	२२	मेष	१०।३४	५	१३	६	४७	१	२६	२५	१२	२३	६	-	३	२	२४
३३	५३	१२	श	४४	६	रा	१०	५१	अश्विनी	७	७	दि	८	४	अतिगण्ड	४३	५६	रा	१०	४७	कौ	१६	३९	तै	४४	६	सौम्य	१३	११	२९	३०	२३			५	१३	६	४७	१	२७	२२	१५	२३	१०	-	२	३	११
३३	५४	१३	र	३९	५१	रा	९	९	भरणी	४	१८	प्रा	६	५६	सुकर्मा	३७	५८	रा	८	२४	गर	११	५९	व	३९	५१	कालदण्ड	१४	१२	३०	३१	२४	वृष	१८।४९	५	१३	६	४७	१	२८	१९	१८	२३	१३	-	२	४	१
३३	५४	१४	चं	३६	३१	रा	७	४९	कृत्तिका	२	२२	प्रा	६	१०	धृति	३२	४२	सा	६	१८	भ	८	११	श	३६	३१	सुस्थिर	१५	१३	३१	१	२५			५	१३	६	४७	१	२९	१६	१९	२३	१६	-	२	४	५२
३३	५५	३०	मं	३४	१३	सा	६	५४	रोहिणी	१	१८	प्रा	५	४४	शूल	२८	१७	दि	४	३२	च	५	२२	नाग	३४	१३	मातङ्ग	१६	१४	१	२	२६	मिथुन	३१।२१	५	१३	६	४७	२	०	१३	१९	२३	१९	-	२	-	-

धनुराशि रा. ८।९। आषाढ़मास के प्रथम पक्ष में सूर्यमण्डल में यदि मेघ न दिखे, न गरजे तो दो माह तक वर्षा का◆
मृत्युबाणारम्भ दि.१०।१२। ☾समाप्ति दि.११।२२। स्थायीजययोग सा. ६।४४ से रा. ७।२७ तक।
भ. दि. ७।२२ से सा. ६।४४ तक। मकरराशि रा. १।१४। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ९।९। मृत्युबाण☾
यायीजययोग दि. ५।४ से सा. ६।३५ तक। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ६।३५ से।
कुम्भराशि रा.शे. ४।४०। पञ्चक प्रारम्भ रा.शे. ४।४०। रवियोग सा. ५।२२ से।
भ. दि. १२।५१ से रा. ११।४० तक। ⊙मृगशिरा नक्षत्र का सूर्य रा. ११।२२। यायीजययोग दि. १२।५१ से दि. ३।५६ ♍
कालाष्टमी (सायंकाल व्यापिनी)। स्थायीजययोग दि. २।२० से। रवियोग दि. २।२० तक।
मीनराशि दि. ७।५। श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत। आज वासी भोजन शास्त्र विहित है। बुधाष्टमी ८।
भ. दि. ४।२० से रा. ३।८ तक। यायीजययोग रा. ३।८ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ११।१ से।
मेषराशि दि. ९।२७। योगिनी ११ एकादशी व्रत सबका। *आषाढ़कृष्ण एकादशी का व्रत करने से कुष्ठ रोग*☐
मृत्युबाणारम्भ रा.९।६। यायीजययोग रा. १०।५१ से।
भ. रा. ९।९ से। वृषराशि दि. १२।४५। प्रदोष १३ व्रत। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता○
भ. दि. ८।२९ तक। ⊙सं.मिथुनराशि का सूर्य रा. ११।३७। मु. ४५ वृहत्ती। फल सस्ती। बाद का ६ घंटा २४ ♊
मिथुनराशि सा. ५।४५। स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। भौमवती अमावस्या। यदि अमावस्या के दिन●

॥ विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः ॥

ति.१ बुध को रा.८।९ के बाद मूल में रे.८ ल.१२ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२(रा.दा.)वा ल.१ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०

ति.२ गुरु को मूल में मृत्युबाण से पूर्व रे.८ दिन में ल.४ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।। (षष्ठस्थ चन्द्र शुभ नहीं है)

ति.३ शुक्र को रा.७।२७ के बाद उ.षा. में भौमवेध है।

ति.४ शनि को उ.षा. में पूर्वदोष है।

ति.८ बुध को दि.१२।४० के बाद उ.भा. में केतुयुति है।

ति.९ गुरु को उ.भा. में पूर्वदोष है। दि.११।१ के बाद भद्रा से पूर्व रेवती में रे.८ दिन में पञ्चेष्टलग्न नहीं है। भद्रा के बाद ल.१ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०

ति.११ शुक्र को रेवती में रे. ८ दिन में ल.४ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				वक्रीबुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	बु	१	२१	२९	५६	१	९	५३	२	३	२५	२९	१	३	३	३५	३७	७	६	१	३९	५	१२	३९	४०
२	गु	१	२२	११	११	१	९	१५	४	३	२५	३६	४२	३	४	३१	१८	७	५	५७	२	५	१२	३६	२९
३	शु	१	२२	५२	२६	१	८	५३	०	३	२५	४४	१५	३	५	२३	५३	७	५	५२	२४	५	१२	३३	१८
४	श	१	२३	३३	४१	१	८	३०	५६	३	२५	५१	४८	३	६	१६	२७	७	५	४७	४१	५	१२	३०	७
५	र	१	२४	१४	५	१	८	८	५२	३	२५	५९	२१	३	७	९	१	७	५	४२	५८	५	१२	२६	५७
६	चं	१	२४	५३	५९	मा	७	४६	४८	३	२६	८	३०	३	८	१	३६	७	५	३८	१५	५	१२	२३	४६
७	मं	१	२५	३३	५३	१	७	४६	५३	३	२६	१७	५२	३	८	५३	५८	७	५	३३	५१	५	१२	२०	३५
८	बु	१	२६	१३	४६	१	७	५८	०	३	२६	२७	१४	३	९	४६	६	७	५	३०	२७	५	१२	१७	२४
९	गु	१	२६	५३	४०	१	७	८	५६	३	२६	३६	३६	३	१०	३८	१५	७	५	२६	४२	५	१२	१४	१३
११	शु	१	२७	३३	३४	१	८	१९	५२	३	२६	४५	५८	३	११	३०	२४	७	५	२३	८	५	१२	११	३
१२	श	१	२८	१३	२७	१	८	३०	४९	३	२६	५५	२०	३	१२	२२	३३	७	५	१९	३३	५	१२	७	५२
१३	र	१	२८	५३	२१	१	९	८	२	३	२७	४	४२	३	१३	१४	४२	७	५	१५	५९	५	१२	४	४१
१४	चं	१	२९	३३	१४	१	९	४८	३८	३	२७	१४	४	३	१४	६	५१	७	५	१२	२४	५	१२	१	३०
३०	मं	२	०	१३	८	१	१०	२९	१३	३	२७	२३	२६	३	१४	५८	५९	७	५	८	५०	५	११	५८	१९

ग्रहचार- मंगल- ति. ३ शुक्र को मृगशिरा में रा. ९।१६। ति. १४ सोम को मिथुनराशि में रा. ९।१९।। वक्रीबुध- ति. ६ सोम को मार्गी रा.शे. ५।८। ति.१४ सोम को रोहिणी में दि. ११।५६।। गुरु- ति. ९ गुरु को श्लेषा ४ चरण में दि. १।५७।। शुक्र- पुष्य में।। वक्रीशनि- अनुराधा १ चरण में।। राहु- हस्त १ चरण में तथा केतु उ.भा. ३ चरण में।।

११ पं०शुद्धआषाढ़कृष्णा ८ बुध

अहर्गण १४८

अयनांश २४।३।२४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१०	१	१	३	३	७	५	११
२४	२८	२६	७	२६	९	५	१२	१२
३१	५३	१३	५८	२७	४६	३०	१७	१७
४	३३	४६	०	१४	६	१७	२४	२४
५७	८५९	३१	१०	९	५२	३	३	३
४	५७	५४	५६	२२	९	३५	११	११
			मा.			व.		



विविधमुहूर्त्त- ति. १ बुध को ज्येष्ठा में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन पशुओं की खरीद-बिक्री दँवरी फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. २ गुरु को मूल में पुंसवनसीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण धान्यारोपण विद्यारम्भ (ल. ३ वा ४) उपनयन (ल. ३)फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ३ शुक्र को भद्रा से पूर्व पू.षा. में शिल्पविद्या नावनिर्माण विद्यारम्भ-उपनयन (ल. ३) वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति. ४ शनि को उ.षा. में रिक्तादोष तथा भौमवेध है। श्रवण में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से मुक्त न होने से अशुभ है। ति. ५ रवि को श्रवण में पूर्वदोष है। सा. ५।२२ के बाद वैधृति से पूर्व धनिष्ठा में नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण औषधसेवन का मुहूर्त्त है। ति. ६ सोम को धनिष्ठा में वैधृतिदोष है। ति. ७ मंगल को शतभिष में आभूषण निर्माण हलप्रवहण वस्तुक्रय ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. ८ बुध को पू.भा.में दि. ८।१ तक धान्यारोपण शिल्पविद्या वस्तुविक्रय का मुहूर्त्त है। नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ९ गुरु को उ.भा. में राहुवेध है। दि. ११।१ के बाद भद्रा से पूर्व रेवती में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण अन्नप्राशन सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण पश्चिम-उत्तर दिशा की यात्रा दँवरी नवान्नभक्षण औषधसेवन नावनिर्माण चौलमुण्डन (ल. ६) हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ११ शुक्र को रेवती में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण उत्तर दिशा की यात्रा दँवरी नावनिर्माण चौलमुण्डन (ल. ४) हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त्त है। दि. ९।२७☛

तिथि ल.अ.	१ बु घं.	मि.	२ गु घं.	मि.	३ शु घं.	मि.	४ श घं.	मि.	५ र घं.	मि.	६ चं घं.	मि.	७ मं घं.	मि.	८ बु घं.	मि.	९ गु घं.	मि.	११ शु घं.	मि.	१२ श घं.	मि.	१३ र घं.	मि.	१४ चं घं.	मि.	तिथि ल.अ.	३० मं घं.	मि.
वृष	६	१	५	५७	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	मिथुन	७	२५
मिथुन	८	१५	८	११	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	कर्क	९	४३
कर्क	१०	३३	१०	२९	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	सिंह	११	५७
सिंह	१२	४७	१२	४३	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	कन्या	२	१०
कन्या	३	०	२	५६	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	तुला	४	२६
तुला	५	१६	५	१२	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	वृश्चिक	६	४३
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि	
वृश्चिक	७	३४	७	३०	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५४	६	५०	६	४६	धनु	८	४९
धनु	९	४०	९	३६	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	०	८	५६	८	५२	मकर	१०	३६
मकर	११	२७	११	२३	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४७	१०	४३	१०	३९	कुम्भ	१२	७
कुम्भ	१२	५८	१२	५४	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१८	१२	१४	१२	१०	मीन	१	३५
मीन	२	२६	२	२२	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४६	१	४२	१	३८	मेष	३	१२
मेष	४	३	३	५९	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२३	३	१९	३	१५	वृष	५	८

१२ पं० शुद्धआषाढ़कृष्ण ३०मंगल

अहर्गण १५४

अयनांश २४।३।२५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	१	२	१	३	३	७	५	११
०	२३	०	१०	२७	१४	५	११	११
१३	२	१३	२९	२३	५८	८	५८	५८
२९	२६	८	१३	२६	५९	५०	१९	१९
५७	८१४	३९	४०	९	५२	३	३	३
०	२९	५४	३६	२२	९	३५	११	११
			मा.			व.		



◆ अभाव होता है। गुरुहरगोविन्दसिंह जयन्ती। यायी-स्थायी दुर्लभ सन्धिकर-योग रा. ८।५५ से। यमघंटयोग रा. ८।९ से। ♍ तक। रवियोग दि. ३।५६ तक। पुनः रवियोग रा. ११।२२ से। ☐ *नष्ट होता है।*

श्री देवराहाबाबा पुण्यतिथि। पञ्चक समाप्ति दि. ९।२७। स्थायीजययोग रा. १२।५३ से। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। अमृतसिद्धियोग दि. ९।२७ तक। ○महान्निशेत्युक्तेः।" मृत्युबाण समाप्ति रा. १०।२१। यायीजययोग प्रा. ६।५६ तक। ♊ मिनट पुण्यकाल। वस्त्र-अन्न-गोदान। मन्दाकिनी में स्नान। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा. ६।१० से। ●मंगलवार पड़े तो उस दिन गंगा स्नान करने से करोड़ो सूर्यग्रहण में स्नानकरने के समान फल मिलता है। सौरआषाढ़मासारम्भ। मृत्युबाणारम्भ रा. १२।५२। पापवार तथा अमावस्या की युति दुर्भिक्ष तथा प्रजा के लिए भयकारक होती है।

मूल विचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. २ गुरु को रा. ८।२ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. ९ गुरु को दि. ११।१ से। ति. १२ शनि को दि. ८।४ तक।
पञ्चक विचार- ति. ५ रवि को रा.शे. ४।४० से। ति. ११ शुक्र को दि. ९।२७ तक।

वृष्टि विचार- आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पू.भा., रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, पू.षा., उ.षा., श्रवण, एवं धनिष्ठा ये चौदह नक्षत्र चन्द्र तथा शेष नक्षत्र सूर्य के होते हैं। यदि सूर्य चन्द्रमा के नक्षत्र में तथा चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्र में स्थित होता है तो वृष्टि होती है। परन्तु यदि सूर्य एवं चन्द्र दोनों चन्द्र नक्षत्र में हों तो स्वल्प वृष्टि तथा सूर्य नक्षत्र में स्थित हों तो वृष्टि नहीं होती है। वृष्टि विचार- चैत्र मास के अश्विन्यादि दश नक्षत्रों में मेघ का गर्भधारण होता है तो आर्द्रा आदि दश नक्षत्रों (सूर्य नक्षत्रों) में क्रमशः वृष्टि होती है। व्यापार मुहूर्त्त- मृगशीर्ष, पुष्य, अश्विनी, अनुराधा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती नक्षत्रों तथा चन्द्र, गुरू एवं शुक्रवारों में व्यापार आरम्भ करना शुभ होता है।

☛ के बाद अश्विनी में भूम्युपवेशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (एकादशी में) शिल्पविद्या औषधसेवन हलप्रवहण विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. १२ शनि को अश्विनी में कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.				नक्षत्र	घ.	प.				योग	घ.	प.				करण			करण			योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे. अं. ±	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
३३	५५	१	बु	३३	८	सा	६	२८	मृगशिरा	१	२४	प्रा	५	४७	गण्ड	२४	५०	दि	३	९	किं	३	४१	वव	३३	८	अमृत	१७	१५	२	३	२७			५	१३	६	४७	२	१	१०	१९	२३	२१	-	२	-	-
३३	५६	२	गु	३३	२०	सा	६	३३	आर्द्रा	२	४३	प्रा	६	१८	वृद्धि	२२	२४	दि	२	११	वा	३	१४	कौ	३३	२०	काण	१८	१६	३	४	२८	कर्क	४९।३९	५	१३	६	४७	२	२	७	१८	२३	२३	-	१	८	१५
३३	५६	३	शु	३४	५३	रा	७	१०	पुनर्वसु	५	१८	दि	७	२०	ध्रुव	२०	५९	दि	१	३७	तै	४	७	गर	३४	५३	लुम्बक	१९	१७	४	५	२९			५	१३	६	४७	२	३	४	१६	२३	२४	-	१	९	०
३३	५६	४	श	३७	३०	रा	८	१३	पुष्य	९	७	दि	८	५२	व्याघात	२०	२८	दि	१	२४	व	६	१२	भ	३७	३०	मित्र	२०	१८	५	६	३०			५	१३	६	४७	२	४	१	१३	२३	२६	-	१	९	४१
३३	५६	५	र	४१	१७	रा	९	४४	श्लेषा	१४	५	दि	१०	५१	हर्षण	२०	५२	दि	१	३४	वव	९	२४	वा	४१	१७	वज्र	२१	१९	६	७	३१	सिंह	१४।५	५	१३	६	४७	२	४	५८	९	२३	२६	-	१	१०	१९
३३	५६	६	चं	४५	४९	रा	११	३३	मघा	१९	५०	दि	१	९	वज्र	२१	५६	दि	१	५९	कौ	१३	३३	तै	४५	४९	ध्वांक्ष	२२	२०	७	८	१			५	१३	६	४७	२	५	५५	५	२३	२६	-	१	१०	५६
३३	५६	७	मं	५०	४९	रा	१	३३	पू.फा.	२६	१३	दि	३	४२	सिद्धि	२३	२७	दि	२	३६	गर	१८	१९	व	५०	४९	धूम्र	२३	२१	८	९	२	कन्या	४२।५२	५	१३	६	४७	२	६	५२	१	२३	२६	-	०	११	३१
३३	५६	८	बु	५५	५२	रा	३	३४	उ.फा.	३२	४७	सा	६	२०	व्यतिपात	२५	८	दि	३	१६	भ	२३	२१	वव	५५	५२	प्रवर्धमान	२४	२२	९	१०	३			५	१३	६	४७	२	७	४८	५७	२३	२६	-	०	१२	६
३३	५६	९	गु	६०	०	स	म	स्त	हस्त	३९	७	रा	८	५२	वरीयान	२६	४०	दि	३	५३	वा	२८	११	कौ	६०	०	राक्षस	२५	२३	१०	११	४			५	१३	६	४७	२	८	४५	५२	२३	२४	+	०	१२	४१
३३	५६	९	शु	०	३०	प्रा	५	२५	चित्रा	४४	४९	रा	११	९	परिघ	२७	४६	दि	४	१९	कौ	०	३०	तै	३२	२७	मुसल	२६	२४	११	१२	५	तुला	११।५८	५	१३	६	४७	२	९	४२	४७	२३	२३	+	०	१	१९
३३	५५	१०	श	४	२४	प्रा	६	५९	स्वाती	४९	३६	रा	१	३	शिव	२८	१२	दि	४	३०	गर	४	२४	व	३५	४८	सिद्धि	२७	२५	१२	१३	६			५	१३	६	४७	२	१०	३९	४१	२३	२१	+	१	१	५८
३३	५५	११	र	७	११	दि	८	५	विशाखा	५३	११	रा	२	३३	सिद्ध	२७	४३	दि	४	१८	भ	७	११	वव	३८	४	उत्पात	२८	२६	१३	१४	७	वृश्चिक	३७।२३	५	१३	६	४७	२	११	३६	३५	२३	१९	+	१	२	४२
३३	५४	१२	चं	८	५७	दि	८	४८	अनुराधा	५५	४६	रा	३	३१	साध्य	२६	२२	दि	३	४६	वा	८	५७	कौ	३९	८	मानस	२९	२७	१४	१५	८			५	१३	६	४७	२	१२	३३	२८	२३	१६	+	१	३	३०
३३	५४	१३	मं	९	१९	दि	८	५७	ज्येष्ठा	५६	५४	रा	३	५९	शुभ	२३	५९	दि	२	४९	तै	९	१९	गर	३८	५१	मुद्गर	३०	२८	१५	१६	९	धनु	५६।५४	५	१३	६	४७	२	१३	३०	२०	२३	१३	+	१	४	२१
३३	५३	१४	बु	८	२३	दि	८	३४	मूल	५६	५३	रा	३	५८	शुक्ल	२०	३४	दि	१	२७	व	८	२३	भ	३७	२०	ध्वज	१	२९	१६	१७	१०			५	१३	६	४७	२	१४	२७	१२	२३	१०	+	१	-	-
३३	५२	१५	गु	६	१६	दि	७	४३	पू.षा.	५५	४२	रा	३	३०	ब्रह्म	१६	१०	दि	११	४१	वव	६	१६	वा	३४	४१	धाता	२	३०	१७	१८	११			५	१३	६	४७	२	१५	२४	४	२३	६	+	२	-	-

अधिकआषाढ़शुक्लपक्ष।।

राष्ट्रीय तिथि २७ ज्येष्ठ से ११ आषाढ़ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक १७ जून से २ जुलाई तक सन् २०१५ ई.।।

मलमास (अधिकमास) प्रारम्भ। नैमित्तिक पार्थिवार्चन। ज्योर्तिलिङ्गो का रुद्राष्टाध्यायी मंत्रो द्वारा अभिषेक करना चाहिए। पंचगंगा तीर्थ में स्नान। प्रतिदिन◆
कर्कराशि रा. १।५।◡ चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। यायीजययोग सा. ६।३३ से। □
मु. रमजान ९ हिजरी सन् १४३६। स्थायीजययोग रा. ७।१० से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ७।२० तक। रवियोग दि. ७।२० से।
भ. दि. ७।४२ से रा. ८।१३ तक। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। यायीजययोग रा. ८।१३ से। रवियोग दि.८।५२ तक।
सिंहराशि दि. १०।५१। यायीजययोग दि. १०।५१ तक। यमघंटयोग दि. १०।५१ से। रवियोग दि. १०।५१ से।
⊙आर्द्रा नक्षत्र का सूर्य रा. १२।९। स्त्री-स्त्री-सूर्य. चन्द्र योग मूषक वाहन जला नाड़ी अधिपति बुध खण्डवृष्टियोग।
भ. रा. १।३३ से। कन्याराशि रा. १०।२२। त्रिपुष्करयोग दि. ३।४२ से रा. १।३३ तक। रवियोग दि. ३।४२ तक।
भ. दि. २।३३ तक। बुधाष्टमी ८। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ६।२० से।
यायीजययोग रा. ८।५२ तक। रवियोग रा. ८।५२ से।

दो आषाढ़ का फल- यदि दो आषाढ़ हों तो भूसी वाले अन्नों का उत्पादन, राजाओं को सुख देने वाली होती है।।

तुलाराशि दि. १०।०। रवियोग समस्त। ◆*से श्रीविष्णुलोक की प्राप्ति प्राप्ति होती है।* त्रिपुष्करयोग दि. ८।५ से रा. २।३३ तक।
भ. रा. ७।३२ से । यायीजययोग प्रा. ६।५९ से रा. १।३ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।३ तक। रवियोग रा. १।३ तक।
भ. दि. ८।५ तक। वृश्चिकराशि रा. ८।१०। पुरुषोत्तमी ११ एकादशी व्रत सबका। *इस एकादशी का व्रत करने* ◆
दिन ८।४८ तक एकादशी व्रत की पारणा। सोमप्रदोष १२ व्रत। पुत्र प्राप्ति के लिए। यायीजययोग दि. ८।४८ से ♏
धनुराशि रा. ३।५९। स्थायीजययोग दि. ८।५७ से रा. ३।५९ तक। रवियोग रा. ३।५९ तक। □सर्वार्थसिद्धियोग प्रा. ६।१८ से।
भ. दि. ८।३४ से रा. ८।९ तक। व्रत की १५ पूर्णिमा । जुलाई ७। यमघंटयोग रा. ३।५८ तक।
स्नान-दान की १५ पूर्णिमा। यायीजययोग रा. ३।३० से। ♏ रा. ३।३१ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ३।३१ तक। रवियोग रा. ३।३१ से।

अधिमास के तैंतीस देवता- विष्णु, जिष्णु, महाविष्णु, हरि, कृष्ण, भधोक्षज, केशव, माधव, राम, अच्युत, पुरुषोत्तम, गोविन्द, वामन, श्रीश, श्रीकान्त, विश्वाक्षिपूणम्, नारायण, मधुरिपु, अनिरुद्ध, त्रिविक्रम, वासुदेव, यगत्योनि, अनन्त, शेषशायिन, संकर्षण, प्रद्युम्न, दैत्यारि, विश्वतोमुख, जनार्दन, धरावास, दामोदर, मघार्दन, श्रीपति, तैंतिस उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ३३ पूपान (पुआ) को काँसे के पात्र में रख कर घी और सोना ब्राह्मण को दान दें।

आषाढ़ के पर्व अधिमास में नहीं करना चाहिए। इसमें पराशर का मत है कि- जब सूर्य चान्द्रमास को लंघित करके आगे चला जाय उसको मलिम्लुच (अधिमास) मास कहते हैं, उस मास के कर्म शुद्ध अधिमास में करना चाहिए। प्रजापति का वचन- उपाकर्म और हवन, कामना वाला पर्व शुद्ध मास में करना चाहिए अधिमास में करने पर निष्फल हो जाता है। अन्य वचन- बावली, कुआं तालाब देव प्रतिष्ठा यज्ञ एवं महादान इत्यादि कर्म अधिमास में नहीं करना चाहिए। हेमाद्रि में शतातप का वचन- यदि उसी मास में संवत्सर बदल जाय तो पितृकार्य किया जा सकता है, परन्तु देवकर्म शुद्ध मास में करना चाहिए।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	बु	२	०	५३	२	१	११	९	४९	३	२७	३२	४८	३	१५	५१	८	७	५	५	१५	५	११	५५	९
२	गु	२	१	३२	५५	१	११	५३	२७	३	२७	४२	१०	३	१६	४३	१७	७	५	१	४१	५	११	५१	५८
३	शु	२	२	१२	४९	१	१२	५५	५४	३	२७	५१	३०	३	१७	३५	२६	७	४	५८	६	५	११	४८	४७
४	श	२	२	५२	४२	१	१३	५८	३५	३	२८	०	५०	३	१८	२७	३५	७	४	५४	३१	५	११	४५	३६
५	र	२	३	३२	३६	१	१५	१	१६	३	२८	१०	११	३	१९	१९	४३	७	४	५०	५५	५	११	४२	२५
६	चं	२	४	१२	३०	१	१६	३	५७	३	२८	१९	३१	३	२०	११	५२	७	४	४७	१५	५	११	३९	१५
७	मं	२	४	५२	२३	१	१७	१३	१५	३	२८	२८	५१	३	२१	४	१	७	४	४३	३६	५	११	३६	४
८	बु	२	५	३२	१७	१	१८	३२	४९	३	२८	३८	४३	३	२१	५६	१०	७	४	३९	५६	५	११	३२	५३
९	गु	२	६	१२	१०	१	१९	५२	३०	३	२८	४९	३१	३	२२	४८	१९	७	४	३६	५०	५	११	२९	४२
९	शु	२	६	५२	४	१	२१	१२	१०	३	२९	०	१८	३	२३	४०	२८	७	४	३४	१९	५	११	२६	३१
१०	श	२	७	३१	५७	१	२२	३१	३४	३	२९	११	६	३	२४	१४	२१	७	४	३१	४८	५	११	२३	२०
११	र	२	८	११	५०	१	२३	५७	३	३	२९	२१	५३	३	२४	४१	२७	७	४	२९	१६	५	११	२०	१०
१२	चं	२	८	५१	४४	१	२५	२६	७	३	२९	३२	४०	३	२५	८	३३	७	४	२६	४५	५	११	१६	५९
१३	मं	२	९	३१	३७	१	२६	५५	१२	३	२९	४३	२८	३	२५	३५	३९	७	४	२४	१४	५	११	१३	४८
१४	बु	२	१०	११	१६	१	२८	२४	१६	३	२९	५४	१५	३	२६	२	४५	७	४	२१	४२	५	११	१०	३७
१५	गु	२	१०	४९	४८	१	२९	५३	२१	४	०	५	२	३	२६	२९	५१	७	४	१९	११	५	११	७	२६

ग्रहचार- मंगल- ति. ९ गुरु को आर्द्रा में रा. ९।५७।। बुध- ति. १० शनि को मृगशिरा में सा. ६।४९। ति. १५ गुरु को मिथुनराशि में प्रा. ६।५१।। गुरु- ति. १४ बुध को मघा १ चरण तथा सिंहराशि में सा. ६।१।। शुक्र- ति. १ बुध को श्लेषा में रा. ३।४२।। वक्रीशनि- अनुराधा १ चरण में।। राहु- हस्त १ चरण में तथा केतु उ.भा. ३ चरण में।।

१३ पं० अधिकआषाढ़शुक्ल ८ बुध

अहर्गण १६२

अयनांश २४।३।२६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	५	२	१	३	३	७	५	११
७	३	५	१८	२८	२२	४	११	११
४८	२६	३२	३२	३८	५६	३९	३२	३२
५७	०	१७	४९	४३	१०	५६	५३	५३
५६	७२१	३९	७९	१०	५२	३	३	३
५५	५	५३	४१	४८	१	६ व.	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ बुध को मृगशिरा में सूर्ययुति है। ति. २ गुरु को आर्द्रा में सूर्यभोग्य है। प्रा. ६।१८ के बाद पुनर्वसु में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम तथा कर्क के चन्द्रमा में पश्चिम-उत्तर दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण हलप्रवहण वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ३ शुक्र को पुनर्वसु में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री उत्तर दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण हलप्रवहण वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। प्रा. ७।२० से रा.७।१० तक पुष्य में भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ४ शनि को पुष्य में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ रवि को श्लेषा में शनिवेध है। ति. ६ सोम को मघा में दँवरी फ़सल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ७ मंगल को व्यतिपात से पूर्व पू.फा. में शस्त्रनिर्माण वस्तुविक्रय मुहूर्त है। ति. ८ बुध को व्यतिपात के बाद उ.फा.में सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण दँवरी धान्यारोपण शिल्पविद्या हलप्रवहण विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ गुरु को हस्त में राहुयुति है। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ९ शुक्र को रिक्ता के बाद चित्रा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन ☛

तिथि / ल.अ.	१ बु घं.	मि.	२ गु घं.	मि.	३ शु घं.	मि.	४ श घं.	मि.	५ र घं.	मि.	६ चं घं.	मि.	७ मं घं.	मि.	८ बु घं.	मि.	९ गु घं.	मि.	९ शु घं.	मि.	१० श घं.	मि.	११ र घं.	मि.	१२ चं घं.	मि.	१३ मं घं.	मि.	१४ बु घं.	मि.	१५ गु घं.	मि.
मिथुन	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	४	७	०	६	५६	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८
कर्क	९	३९	९	३५	९	३१	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६
सिंह	११	५३	११	४९	११	४५	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०
कन्या	२	६	२	२	१	५८	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३
तुला	४	२२	४	१८	४	१४	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९
वृश्चिक	६	३९	६	३५	६	३१	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
धनु	८	४५	८	४१	८	३७	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२
मकर	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९
कुम्भ	१२	३	११	५९	११	५५	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०
मीन	१	३१	१	२७	१	२३	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८
मेष	३	८	३	४	३	०	२	५५	२	५२	२	४७	२	४३	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५
वृष	५	४	५	०	४	५६	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१७	४	१३	४	९	४	४	४	१

१४पं.अधिकआषाढ़शुक्ल१५गुरु

अहर्गण १७०

अयनांश २४।३।२७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	८	२	१	४	३	७	५	११
१५	१४	१०	२९	०	२६	४	११	११
२४	२	४९	५३	५	२९	११	७	७
४	२६	४८	२१	२	५१	११	२६	२६
५६	८१६	३८	१७	१०	२७	२	३	३
५१	५	३२	११	४८	५	३१ व.	११	११



◆विल्वपत्र से शिवपूजन तथा अधिकमास में वर्णित वस्तुओं का दान करना चाहिए। काशी नगर परिक्रमा (पंचक्रोशी यात्रा)। यायी-स्थायी दुर्लभ सन्धिकरयोग सा.६।२८ से। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.५।४७ तक। ⊙सायन कर्कराशि का सूर्य प्रा. ५।५१। राष्ट्रीयआषाढ़मास दि. ३१। रवियोग दि. १।९ तक। पुनःरवियोग रा. १२।९ से।

इस वर्ष आषाढ़मास में ही अधिमास लग रहा है- इस मास में शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से अमावस्या तक सूर्य की संक्रान्ति नहीं होगा। अतः कहा गया है कि "अ संक्रान्ति मासोऽधिमासः स्फुटः स्यात" अर्थात जिस चान्द्रमास में सूर्य की संक्रान्ति न हो उसे अधिमास कहते हैं। प्रायः अधिकमास ३२ मास १६ दिन ४ घटी पर होता है यह मध्यम मान से है। ब्रह्म सिद्धान्त के अनुसार इसको "मलमास" भी कहते हैं, यथा- "चान्द्रोमासोह्यसंक्रान्तो मलमासः प्रकीर्तितः।" गृहसूत्र परिशिष्ट में कहा गया है कि "मल वदन्ति कालस्य मासं कालविदोऽधिकम्" पुराणों में भगवान् ने इस मास को "पुरुषोत्तम" मास कहा है। कहते हैं कि हमको चाहने वाले भक्त पुरुषोत्तम मास में मेराव्रत रखे तो उनके उद्देश्य की पूर्ति होती है, परन्तु अन्य मासों में इसको अधिक मास की संज्ञा दी गयी है। अधिमास में कौन कार्य करना चाहिए तथा कौन कार्य नहीं करना चाहिए इसका निरुपण- अधिमास में करने योग्य कर्म- द्वादशाह, सपिण्डन, कर्मग्रहण, सीमन्त, पुंसवन, पितृश्राद्ध और जातकर्म। श्राद्ध को पूर्व विधि अर्थात अधिमास में युगादि तिथियों में, मन्वादि तिथियों में, तथा अधिमास में दैनिकदान करना निषेध नहीं है। तिल, गेहूँ, सोना का दान तथा सन्ध्योपासन कर्म एवं पर्व का होम ग्रहण का जप, अग्निहोत्र देवता पूजन, एवं अतिथि पूजन अधिमास में ग्राह्य है। अधिमास में नहीं करने योग्य कर्म- अग्न्याधान, प्रथमवार तीर्थयात्रा देवप्रतिष्ठा, तालाब, बगीचा, यज्ञोपवित, समावर्तन, वृषोत्सर्ग, आदि कर्म अधिमास में निष्क्रिय हो जातें हैं। राज्याभिषेक, चूणाकर्म, अन्नप्राशन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, प्रायश्चित गोदान, इत्यादि कर्म अधिमास में वर्जित है। श्रावण (उपाकर्म) राजादर्शन, दुर्ग ध्वज, का स्थापन हथियार आदि धारण कर्म मलमास (अधिमास) में नहीं करना चाहिए।

मूल विचार- श्लेषा/मघा- ति. ४ शनि को दि. ८।५२ से। ति. ६ सोम को दि. १।९ तक।
ज्येष्ठा/मूल- ति. १२ सोम को रा.३।३१ से। ति. १४ बुध को रा.३।५८ तक।

☛ नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण हलप्रवहण विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १० शनि को भद्रा पूर्व स्वाती में कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ११ रवि को विशाखा में भद्रा बाद नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। ति. १२ सोम को अनुराधा में शनियुति है। ति. १३ मंगल को ज्येष्ठा में ऑपरेशन शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। ति. १४ बुध को मूल में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १५ गुरु को पू.षा. में सूर्यवेध है।

अधिकआषाढ़कृष्णपक्ष।।

राष्ट्रीय तिथि १२ आषाढ़ से २५ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक ३ जुलाई से १६ तक सन् २०१५ ई.।।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे. अं. +	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.	
३३	५१	१	शु	३ ५५	५ ५२	प्रा	६ ४	२७ ४८	उ.षा.	५३	४२	रा	२	४२	ऐन्द्र	१०	५७	दि	९	३६	कौ	३	५	तै	३१ ५८	१ ५७	आनन्द	३	१	१८	१९	१२	मकर	१०।१२	५	१३	६	४७	२	१६	२०	५५	२३	१	+	२	७	५३	मकरराशि दि. ९।१८।
३३	५१	३	श	५३	५९	रा	२	५०	श्रवण	५०	४८	रा	१	३३	वैधृति	५ ५३	० २४	प्रा	७ ४	१४ ३६	व	२६	२८	भ	५३	५९	सुस्थिर	४	२	१९	२०	१३			५	१४	६	४६	२	१७	१७	४६	२२	५७	+	२	८	४२	भ. दि. ३।४९ से रा. २।५० तक। यायीजययोग रा. १।३३ से रा. २।५० तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।३३ तक।
३३	५०	४	र	४८	२६	रा	१२	३६	धनिष्ठा	४७	१७	रा	१२	९	प्रीति	५१	१७	रा	१	४५	वव	२१	१३	वा	४८	२६	मातङ्ग	५	३	२०	२१	१४	कुम्भ	१९।३	५	१४	६	४६	२	१८	१४	३७	२२	५२	+	२	९	३०	कुम्भराशि दि. १२।५१। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ९।३०। पञ्चक प्रारम्भ दि. १२।५१।
३३	४९	५	चं	४२	२८	रा	१०	१३	शतभिष	४३	२१	रा	१०	३४	आयुष्मान	४३	५१	रा	१०	४६	कौ	१५	२७	तै	४२	२८	अमृत	६	४	२१	२२	१५			५	१४	६	४६	२	१९	११	२७	२२	४६	+	२	१०	१४	⊙पुनर्वसु नक्षत्र का सूर्य रा. १।४४। स्त्री.पु.-चं.चं.योग अश्व वाहन नीरा नाड़ी अधिपति शुक्र सामान्यवृष्टियोग।
३३	४७	६	मं	३६	१७	रा	७	४६	पू.भा.	३९	१२	रा	८	५६	सौभाग्य	३६	१५	रा	७	४५	गर	९	२३	व	३६	१७	काण	७	५	२२	२३	१६	मीन	२५।१४	५	१५	६	४५	२	२०	८	१८	२२	४०	+	३	१०	५७	भ. रा. ७।४६ से। मीनराशि दि. ३।२१। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ८।५६ से। त्रिपुष्करयोग रा. ७।४६ से रा. ८।५६ तक। रवियोग रा. ८।५६ से।
३३	४६	७	बु	३०	५	सा	५	१७	उ.भा.	३५	१	रा	७	१५	शोभन	२८	३६	दि	४	४१	भ	३	११	वव	३० ५७	५ ४	लुम्बक	८	६	२३	२४	१७			५	१५	६	४५	२	२१	५	१०	२२	३४	+	३	११	४१	भ. प्रा. ६।३१ तक। रवियोग रा. ७।१५ तक।
३३	४५	८	गु	२४	२	दि	२	५२	रेवती	३१	२	सा	५	४०	अतिगण्ड	२१	८	दि	१	४२	कौ	२४	२	तै	५१	१३	मित्र	९	७	२४	२५	१८	मेष	३१।२	५	१५	६	४५	२	२२	२	२	२२	२७	+	३	१२	२४	मेषराशि सा. ५।४०। पञ्चक समाप्ति सा. ५।४०। यायीजययोग दि. २।५२ से सा. ५।४० तक। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त।
३३	४४	९	शु	१८	२३	दि	१२	३६	अश्विनी	२७	२८	दि	४	१४	सुकर्मा	१३	५६	दि	१०	४९	गर	१८	२३	व	४५	४९	वज्र	१०	८	२५	२६	१९			५	१५	६	४५	२	२२	५८	५४	२२	२०	+	३	१	९	भ. रा. ११।३५ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ४।१४ तक।
३३	४३	१०	श	१३	१५	दि	१०	३४	भरणी	२४	२८	दि	३	३	धृति	७	११	दि	८	८	भ	१३	१५	वव	४१	५	ध्वांक्ष	११	९	२६	२७	२०	वृष	३८।५६	५	१६	६	४४	२	२३	५५	४७	२२	१३	+	३	१	५७	भ. दि. १०।३४ तक। वृषराशि रा. ८।५०। यायीजययोग दि. १०।३४ से दि. ३।३ तक।
३३	४१	११	र	८	५५	दि	८	५०	कृत्तिका	२२	२१	दि	२	१२	शूल	१ ५४	४ ३४	प्रा	५ ३	४२ ३१	वा	८	५५	कौ	३७	१२	धूम्र	१२	१०	२७	२८	२१			५	१६	६	४४	२	२४	५२	४०	२२	५	+	३	२	४६	पुरुषोत्तमी ११ एकादशी व्रत सबका। त्रिपुष्करयोग दि. ८।५० से दि.२।१२ तक।
३३	३९	१२	चं	५	२८	दि	७	२७	रोहिणी	२१	३	दि	१	४१	वृद्धि	५१	३	रा	१	४१	तै	५	२८	गर	३४	१६	प्रवर्धमान	१३	११	२८	२९	२२	मिथुन	५०।५८	५	१६	६	४४	२	२५	४९	३४	२१	५७	+	३	३	३८	मिथुनराशि रा. १।३९। दिन ७।२७ तक एकादशी व्रत की पारणा। सोमप्रदोष १२ व्रत। पुत्र प्राप्ति के लिए। यायीजययोग दि. ७।२७ से दि. १।४१ तक।□
३३	३७	१३	मं	३	४	प्रा	६	३१	मृगशिरा	२०	५२	दि	१	३८	ध्रुव	४७	२३	रा	१२	१४	व	३	४	भ	३२	२८	राक्षस	१४	१२	२९	३०	२३			५	१७	६	४३	२	२६	४६	२८	२१	४८	+	३	४	३१	भ. प्रा. ६।३१ से सा. ६।१६ तक। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" स्थायीजययोग प्रा. ६।३१ से दि. १।३८ तक।❖
३३	३६	१४	बु	१	५२	प्रा	६	२	आर्द्रा	२१	५१	दि	२	१	व्याघात	४४	४४	रा	११	११	श	१	५२	च	३१	५५	मुसल	१५	१३	३०	३१	२४			५	१७	६	४३	२	२७	४३	२३	२१	३९	+	३	-	-	श्राद्ध की ३० अमावस्या । ◆ दि. २।५७ तक। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। अमृतसिद्धियोग दि. २।५७ से।
३३	३४	३०	गु	१	५८	प्रा	६	४	पुनर्वसु	२४	९	दि	२	५७	हर्षण	४३	७	रा	१०	३२	नाग	१	५८	किं	३२	४१	सिद्धि	१६	१४	३१	३२	२५	कर्क	८।३५	५	१७	६	४३	२	२८	४०	१९	२१	३०	+	४	-	-	कर्कराशि दि. ८।४३ । स्नान-दान की ३० अमावस्या । शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए सुखकारक होती है। यायीजययोग प्रा. ६।४ से◆

स्थूलरीति से अधिमास का ज्ञान- शक में १९६६ घटाकर १९ से भाग दें। यदि शेष ३ होतो चैत्र में, ११ बचे तो वैशाख में, और १० हो तो ज्येष्ठ में, १६ हो तो आषाढ़ में, ५ शेष रहने पर श्रावण में, १३ शेष में भाद्रपद, २ बचे तो आश्विन में अधिमास होता है यह मुनियों का वचन है, स्पष्टमान से अधिमासों में अन्तर हो सकता है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	शु	२	११	२८	२०	२	१	३०	४०	४	०	१५	५०	३	२६	५६	५६	७	४	१६	४०	५	११	४	१६
३	श	२	१२	६	५१	२	३	८	५०	४	०	२६	३७	३	२७	२४	२	७	४	१४	९	५	११	१	५
४	र	२	१२	४५	२३	२	४	४७	०	४	०	३७	२४	३	२७	५१	८	७	४	११	३७	५	१०	५७	५४
५	चं	२	१३	२३	५५	२	६	२५	११	४	०	४८	१०	३	२८	१८	१४	७	४	९	६	५	१०	५४	४३
६	मं	२	१४	२	२७	२	८	४	३५	४	०	५८	५३	३	२८	४५	२०	७	४	६	३१	५	१०	५१	३२
७	बु	२	१४	४०	५९	२	९	४९	६	४	१	९	३१	३	२९	१२	२६	७	४	३	५२	५	१०	४८	२२
८	गु	२	१५	१९	३१	२	११	३३	३६	४	१	२०	१२	३	२९	३९	३१	७	४	१	१४	५	१०	४५	११
९	शु	२	१५	५८	२	२	१३	१६	५९	४	१	३०	५२	४	०	६	३७	७	३	५८	३६	५	१०	४२	०
१०	श	२	१६	३६	३४	२	१५	०	२२	४	१	४२	४८	४	०	३३	४३	७	३	५७	६	५	१०	३८	४९
११	र	२	१७	१५	६	२	१६	४५	२५	४	१	५४	५४	४	१	०	४९	७	३	५५	५९	५	१०	३५	३८
१२	चं	२	१७	५३	३८	२	१८	३२	३७	४	२	७	१	४	१	२७	५५	७	३	५४	५३	५	१०	३२	२८
१३	मं	२	१८	३२	१०	२	२०	१९	५२	४	२	१९	८	४	१	५५	४	७	३	५३	४६	५	१०	२९	१७
१४	बु	२	१९	१०	४१	२	२२	७	६	४	२	३१	१५	४	२	२२	४१	७	३	५२	३९	५	१०	२६	६
३०	गु	२	१९	४९	१८	२	२३	५४	२१	४	२	४३	२२	४	२	५०	१९	७	३	५१	३२	५	१०	२२	५५

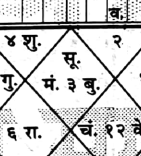
ग्रहचार- मंगल- ति. ३० गुरु को पुनर्वसु में दि. ११।५५।। बुध- ति. ५ सोम को आर्द्रा में दि. ८।४९। ति. १२ सोम को पुनर्वसु में रा. १२।४९।। गुरु- मघा १ चरण में।। शुक्र- ति. ८ गुरु को मघा तथा सिंहराशि में रा. ११।२३।। वक्रीशनि- अनुराधा १ चरण में।। राहु- हस्त १ चरण में तथा केतु उ.भा. ३ चरण में।।

१५ पं० अधिकआषाढ़कृष्ण ८ गुरु

अहर्गण १७७

अयनांश २४।३।२८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	११	२	२	४	३	७	५	११
२२	२२	१५	११	१	२९	४	१०	१०
२	३६	१९	३३	२०	३९	१	४५	४५
२	५३	३१	३६	१२	३१	१४	११	११
५६	८५६	३८	२०३	१०	२७	२	३	३
५२	५३	३१	२३	४०	६	३८ व.	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ शुक्र को उ.षा. में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से युक्त न होने से अशुभ है। वैधृति भी है। ति. ३ शनि को वैधृति के बाद भद्रा से पूर्व श्रवण में दक्षिण दिशा की यात्रा वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ४ रवि को धनिष्ठा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ सोम को शतभिष में जातकर्मनामकरण अन्नप्राशन गर्भाधान पशुओं की खरीद-बिक्री धान्यारोपण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ मंगल को भद्रा पूर्व पू.भा. में आभूषण निर्माण शस्त्र निर्माण वस्तुविक्रय का मुहूर्त्त है। ति. ७ बुध को उ.भा. में केतुयुति है। ति. ८ गुरु को दि. २।५२ तक रेवती में शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण दँवरी नवान्नभक्षण औषधसेवन नाव निर्माण हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ९ शुक्र को रिक्ता के बाद अश्विनी में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन हलप्रवहण विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. १० शनि को भद्रा बाद भरणी में वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। ति. ११ रवि को कृत्तिका में आभूषण निर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १२ सोम को रोहिणी में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन (त्रयोदशी में) दँवरी धान्यारोपण शिल्पविद्या ☛

तिथि / ल.अ.	१ शु		३ श		४ र		५ चं		६ मं		७ बु		८ गु		९ शु		१० श		११ र		१२ चं		१३ मं		१४ बु		३० गु	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
मिथुन	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२
कर्क	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०
सिंह	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४
कन्या	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७
तुला	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३
वृश्चिक	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
धनु	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६
मकर	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३५
कुम्भ	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४
मीन	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२
मेष	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९
वृष	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५

१६पं.अधिकआषाढ़कृष्ण३०गुरु

अहर्गण १८४

अयनांश २४।३।१९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	२	२	२	४	४	७	५	११
२८	२८	१९	२३	२	२	३	१०	१०
४०	९	४९	५४	४३	५०	५१	२२	२२
१९	४६	१८	२१	२२	१९	३२	५५	५५
५६	७७०	३८	११०	१२	२७	१	३	३
५६	२८	४५	४०	७	३८	६ व.	११	११



□सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। अमृतसिद्धियोग दि. १।४१ से। ❖यमघंटयोग दि. १।३८ से।

रेवती/अश्विनी- ति. ७ बुध को रा. ७।१५ से। ति. ९ शुक्र को दि. ४।१४ तक।
पञ्चक विचार- ति. ४ रवि को दि. १२।५१ से। ति. ८ गुरु को सा. ५।४० तक।

अधिमास में दान- हेमाद्रि का वचन है कि जिस मास में अधिमास मिलता है उस मास के तैंतीस देवता है। सभी प्रकार के उद्देश्य पूर्ति के लिए पुआ (पूपान) दान करने से पृथ्वी दान का फल मिलता है। अधिमास में गुड़, सरसों एवं तैंतीस पुआ को प्रतिदिन घी एवं स्वर्ण के साथ ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

☛ एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।

दाने संकल्पः- देशकालौ सङ्कीर्त्यास्मिन् पुरुषोत्तमनामधेयमासि विपुललक्ष्मीपुत्रपौत्रायुरारोग्यैश्वर्यभुक्ति मुक्तिप्राप्तिपूर्वकं पृथ्वीदानसमफलप्राप्तये सकलान्तर्वाह्यमलदेहशुद्धिद्वारा श्रीभगत्पुरुषोत्तमनारायणप्रीतये च एतांस्त्रयस्त्रिंशदपूपान् कांस्यपात्रे घृतानपरकांस्यापात्राच्छादितान् हिरण्यघृत संयुक्तान् पुरुषत्तमदेवतान्पुरुषोत्तमस्वरुपाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे इति द्विजकरे दद्यात्। ततः प्रार्थनाः- विष्णुरुपः सहस्रांशु सर्वपापप्रणाशनः। अपूपान्नप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु। नारायण जगद्बीज भास्करप्रतिरुपक। व्रतेनानेन पुत्रांश्च सम्पदामपि वर्द्धय।। यस्य हस्ते गदा चक्रो गरुणो यस्य वाहनम्। शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु। कलाकाष्ठदिरुपेण निमेषघटिकादिना। यो वञ्चयति भूतानि तस्मै कालात्मने नमः। कुरुक्षेत्रमयो देशः कालः सर्वद्विजो हरिः। पृथवीसममिदं दानं गृहाण पुरुषोत्तम। मलानाञ्च विशुदध्यर्थं पापप्रशमनाय च।पुत्रपौत्रसमृद्धयर्थं। तव दास्यामि भास्कर।। मन्त्रेणानेन दद्यात् त्रयस्त्रिंशदपूपकान्। प्राप्नोति विपुलां लक्ष्मीं पुत्रपौत्रादिसम्पद इति।। अधिमासे कृत्यानिः- सूतिकाक्रिया सामान्ययात्रादिक्रिया च कार्या। उकञ्च-गर्भाद्यन्नशनान्तेषु न गुरुसितयोर्बाल्यवार्द्धे च मौढ्यं जह्यात्कालस्य रोधाद्धरिगुरुमयनयाम्यमूनाधिमासाविति। तथा च गर्भे वार्धुषिके मृत्यौ श्राद्धकर्मणि मासिके। सपिण्डीकरणे नित्ये नाधिमासे विवर्जयेत्। अनिन्दुरिन्दुपूर्णं च हरिवारा बुधाष्टमी। नाधिमासे परित्याज्या सीमन्त प्राशनेशिशोः।।

☛ हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त्त है। दि.१।४१ के बाद मृगशिरा में गर्भाधान वृष के चन्द्रमा में दक्षिण तथा मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम- दक्षिण दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण औषधसेवन विपणि वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

शुद्धआषाढ़शुक्लपक्ष।।

राष्ट्रीय तिथि २६ आषाढ़ से ९ श्रावण तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक १७ जुलाई से ३१ तक सन् २०१५ ई.।।

इस पक्ष में कर्क संक्रान्ति दोष है।

दि.मा.	घ.प.	ति.	वा.	घ.	प.	समय	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	समय	घं.	मि.	योग	घ.	प.	समय	घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घं.	मि.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	चन्द्र प्रवेश	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	क्रान्ति +	रे. अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
३३	३२	१	शु	३	२३	प्रा	६	३९	पुष्य	२७	४२	दि	४	२३	वज्र	४२	२६	रा	१०	१६	वव	३	२३	वा	३४	३८	उत्पात	१७	१५	३२	१	२६			५	१८	६	४२	२	२९	३७	१५	२१	२०	+	४	७	३८
३३	३१	२	श	५	५३	दि	७	३९	श्लेषा	३२	२१	सा	६	१४	सिद्धि	४२	३९	रा	१०	२२	कौ	५	५३	तै	३७	४४	मानस	१८	१६	१	२	२७	सिंह	३२।२१	५	१८	६	४२	३	०	३४	११	२१	१०	+	४	८	१७
३३	२९	३	र	९	३४	दि	९	८	मघा	३७	५७	रा	८	२९	व्यतिपात	४३	३७	रा	१०	४५	गर	९	३४	व	४१	४८	मुद्गर	१९	१७	२	३	२८			५	१८	६	४२	३	१	३१	९	२१	०	+	४	८	५४
३३	२७	४	चं	१४	२	दि	१०	५६	पू.फा.	४४	१३	रा	११	०	वरीयान	४५	२	रा	११	२०	भ	१४	२	वव	४६	३१	ध्वज	२०	१८	३	४	२९			५	१९	६	४१	३	२	२८	७	२०	४९	+	४	९	३०
३३	२५	५	मं	१८	५९	दि	१२	५५	उ.फा.	५०	४६	रा	१	३७	परिघ	४६	४३	रा	१२	०	वा	१८	५९	कौ	५१	३०	धाता	२१	१९	४	५	३०	कन्या	०।५१	५	१९	६	४१	३	३	२५	६	२०	३८	+	४	१०	५
३३	२३	६	बु	२४	१	दि	२	५६	हस्त	५७	१०	रा	४	१२	शिव	४८	१७	रा	१२	३९	तै	२४	१	गर	५६	२१	आनन्द	२२	२०	५	६	३१			५	२०	६	४०	३	४	२२	५	२०	२६	+	४	१०	४०
३३	२०	७	गु	२८	४०	दि	४	४८	चित्रा	६०	०	स	म	स्त	सिद्ध	४९	२८	रा	१	७	व	२८	४०	भ	६०	०	चर	२३	२१	६	७	१	तुला	३०।६	५	२०	६	४०	३	५	१९	५	२०	१४	+	४	११	१६
३३	१८	८	शु	३२	३८	सा	६	२३	चित्रा	३	२	प्रा	६	३३	साध्य	५०	२	रा	१	२१	भ	०	३९	वव	३२	३८	मुसल	२४	२२	७	८	२			५	२०	६	४०	३	६	१६	८	२०	२	+	४	११	५४
३३	१६	९	श	३५	३२	रा	७	३४	स्वाती	८	४	दि	८	३५	शुभ	४९	४३	रा	१	१४	वा	४	५	कौ	३५	३२	सिद्धि	२५	२३	८	९	३	वृश्चिक	५६।०	५	२१	६	३९	३	७	१३	१०	१९	५०	+	४	१२	३५
३३	१४	१०	र	३७	२४	रा	८	१९	विशाखा	११	५८	दि	१०	८	शुक्ल	४८	३१	रा	१२	४५	तै	६	२८	गर	३७	२४	उत्पात	२६	२४	९	१०	४			५	२१	६	३९	३	८	१०	१४	१९	३७	+	४	१	२०
३३	१२	११	चं	३७	५२	रा	८	३१	अनुराधा	१४	४३	दि	११	१५	ब्रह्म	४६	१५	रा	११	५२	व	७	३८	भ	३७	५२	मानस	२७	२५	१०	११	५			५	२२	६	३८	३	९	७	१९	१९	२४	+	४	२	९
३३	९	१२	मं	३७	३	रा	८	११	ज्येष्ठा	१६	११	दि	११	५०	ऐन्द्र	४३	०	रा	१०	३४	वव	७	२८	वा	३७	३	मुद्गर	२८	२६	११	१२	६	धनु	१६।११	५	२२	६	३८	३	१०	४	२५	१९	१०	+	४	३	३
३३	६	१३	बु	३५	३	रा	७	२४	मूल	१६	२४	दि	११	५७	वैधृति	३८	४४	रा	८	५३	कौ	६	३	तै	३५	३	ध्वज	२९	२७	१२	१३	७			५	२३	६	३७	३	११	१	३१	१८	५७	+	४	४	२
३३	४	१४	गु	३१	५७	सा	६	१०	पू.षा.	१५	२९	दि	११	३५	विष्कुम्भ	३३	३९	सा	६	५१	गर	३	३०	व	३१ ५९	५७ ५६	धाता	३०	२८	१३	१४	८	मकर	३०।१	५	२३	६	३७	३	११	५८	३९	१८	४२	+	४	५	३
३३	१	१५	शु	२७	५४	दि	४	३४	उ.षा.	१३	३७	दि	१०	५१	प्रीति	२७	४७	दि	४	३१	वव	२७	५४	वा	५५	२८	आनन्द	३१	२९	१४	१५	९			५	२४	६	३६	३	१२	५५	४७	१८	२८	+	४	-	-

चन्द्रदर्शन। मु. १५ जघन्या। फल महँगी। उत्तरशृंग सस्तीकारक। ⊙सं. कर्कराशि का सूर्य दि. २।५४। मु. ३० समा। फल समता। पूर्व का ६ घन्टा २४ ❖

सिंहराशि सा. ६।१४। मु. सव्वाल १० हिजरी सन् १४३६। रथयात्रा २। श्री राम (बलराम) रथोत्सव। रथ पर सवार राम-बलराम को देखने वाले पर■

भ. रा. १०।१ से। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। यमघंटयोग रा. ८।२९ तक। रवियोग रा. ८।२९ तक।

भ. दि. १०।५६ तक। ⊙पुष्य नक्षत्र का सूर्य रा. ३।१०। स्त्री.स्त्री.-सू .चन्द्र योग चातक वाहन नीरा नाड़ी अधिपति शुक्र खण्डवृष्टियोग। यायीजययोग♏

कन्याराशि प्रा. ५।३९। रवियोग रा. १।३७ से। ♏ रा. ११।० से। रवियोग रा. ११।० से रा. ३।१० तक।

श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत। कुमारषष्ठी ६। कर्दमषष्ठी ६ (बंगाल)। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ४।१२ तक। रवियोग रा. ४।१२ तक।

भ. दि. ४।४८ से। तुलाराशि सा. ५।२२। विवस्वतसूर्यपूजा ७। ⊙सायन सिंहराशि का सूर्य रा. ९।५। राष्ट्रीयश्रावणमास दि. ३१।

भ. प्रा. ५।३६ तक। परशुरामाष्टमी (उड़ीसा)। खर्चीपूजा (त्रिपुरा)। स्थायीजययोग प्रा. ६।३३ तक।

वृश्चिकराशि रा. ३।४५। यायीजययोग दि. ८।३५ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।३५ तक। रवियोग दि. ८।३५ से।

सोपपदा १० वेदारम्भ वर्जित है। गिरिजा पूजा १०। मन्वादि १०। यायीजययोग रा. ८।१९ से। रवियोग समस्त।

भ. दि. ८।२५ से रा. ८।३१ तक। श्रीविष्णुशयनी ११एकादशी व्रत सबका। रात्रि में श्री विष्णुशयनोत्सव। रविनारायण एकादशी (उड़ीसा)। यायीजययोग ♋

धनुराशि दि. ११।५०। चातुर्मास्य व्रतारम्भ। शाकत्याग व्रतारम्भ। श्रीवामन पूजन। स्थायीजययोग दि.११।५० तक।

प्रदोष १३ व्रत। यमघंटयोग दि.११।५७ तक। रवियोग दि. ११।५७ से। ♋ दि. ११।१५ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ११।१५ तक। रवियोग दि. ११।१५ तक।

भ. सा. ६।१० से रा.शे. ५।२१ तक। मकरराशि सा. ५।२३। व्रत की १५ पूर्णिमा। प्रदोष में श्रीशिवशयनोत्सव। श्रीशिवपवित्रारोपण। कोकिला १५ पूर्णिमा। कोकिला रुपि शिव ●

स्नान-दान की १५ पूर्णिमा। गुरुपूर्णिमा १५। गुरु तथा व्यास की पूजा १५। कर्णघंटा तथा कनखल में स्नान। मन्वादि १५। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।५१ से।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				मार्गीशुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	शु	२	२०	२८	३	२	२५	४५	१	४	२	५५	२१	४	३	१७	५७	७	३	५०	२६	५	१०	१९	४४
२	श	२	२१	६	४८	२	२७	३७	२३	४	३	७	३५	४	३	४५	३४	७	३	४९	१९	५	१०	१६	३४
३	र	२	२१	४५	३३	२	२९	२९	४६	४	३	१९	४२	४	४	१३	१२	७	३	४८	१२	५	१०	१३	२३
४	चं	२	२२	२४	१९	३	१	२१	५८	४	३	३१	४९	व	४	२१	२३	७	३	४७	६	५	१०	१०	१२
५	मं	२	२३	३	४	३	३	१२	१४	४	३	४३	५६	४	४	८	५४	७	३	४५	५९	५	१०	७	१
६	बु	२	२३	४१	४९	३	५	३	३८	४	३	५६	२	४	३	५८	१०	७	३	४४	५२	५	१०	३	५०
७	गु	२	२४	२०	३४	३	६	५५	९	४	४	८	९	४	३	४७	२७	७	३	४३	४०	५	१०	०	४०
८	शु	२	२४	५९	२०	३	८	४६	४०	४	४	२०	१५	४	३	३६	४७	७	३	४२	२६	५	९	५७	२९
९	श	२	२६	३८	५	३	१०	३८	१२	४	४	३२	२१	४	३	२६	३	७	३	४१	१३	५	९	५४	१८
१०	र	२	२६	१६	२२	३	१२	२९	४३	४	४	४४	२८	४	३	१५	१९	मा	३	४०	१	५	९	५१	७
११	चं	२	२६	५४	३२	३	१४	२१	१५	४	४	५६	४३	४	३	४	३४	७	३	४०	१९	५	९	४७	५६
१२	मं	२	२७	३३	४२	३	१६	१२	४६	४	५	९	११	४	२	५३	५०	७	३	४०	३८	५	९	४४	४५
१३	बु	२	२८	१०	५२	३	१८	४	१७	४	५	२१	३९	४	२	४३	६	७	३	४०	५६	५	९	४१	३५
१४	गु	२	२८	४९	३	३	१९	५३	४६	४	५	३४	७	४	२	३२	२२	७	३	४१	१४	५	९	३८	२४
१५	शु	२	२९	२७	१४	३	२१	४६	३८	४	५	४६	३६	४	२	२१	३८	७	३	४१	३२	५	९	३५	१३

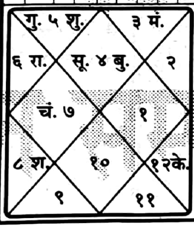
ग्रहचार- मंगल- पुनर्वसु में। ति. १५ शुक्र को कर्कराशि में रा. २।०।। बुध- ति. ३ रवि को कर्कराशि में दि. ११।४६। ति. ५ मंगल को पुष्य में प्रा. ६।५९। ति. १२ मंगल को श्लेषा में दि. ११।१४।। गुरु- ति. ३ रवि को मघा २ चरण में प्रा. ५।५४।। मार्गीशुक्र- ति. ४ सोम को वक्री दि. २।४९।। वक्रीशनि- अनुराधा १ चरण में। ति. १० रवि को मार्गी रा.१२।३३।। राहु- ति. ७ गुरु को उ.फा.४ चरण में तथा केतु उ.भा. २ चरण में दि. १०।२२।।

१७ पं० शुद्धआषाढ़शुक्ल ८ शुक्र

अहर्गण १९२

अयनांश २४।३।२९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	६	२	३	४	४	७	५	११
६	६	२४	८	४	३	३	९	९
१६	३	५९	४६	२०	३६	४२	५७	५७
८	६	२०	४०	१५	४७	२६	२९	२९
५७	७२८	३८	१११	१२	१०	१	३	३
२	४५	४५	३९	६	४४	१४	११	११
					व.	व.		



विविधमुहूर्त्त- ति. १ शुक्र को पुष्य में सूर्यभोग्य है। ति. २ शनि को श्लेषा में शनिवेध है। ति. ३ रवि को मघा में व्यतिपात है। ति. ४ सोम को भद्रा के बाद पू.फा. में दँवरी वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति. ५ मंगल को उ.फा. में पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण हलप्रवहण (पंचमी में) मुहूर्त्त है। ति. ६ बुध को हस्त में राहुयुति है। ति. ७ गुरु को चित्रा में भद्रा से पूर्व जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ शुक्र को प्रा. ६।३३ के बाद स्वाती में शिशुताम्बूलभक्षण नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण हलप्रवहण विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ शनि को स्वाती में रिक्तादोष है। विशाखा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १० रवि को विशाखा में नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। अनुराधा में शनियुति है। ति. ११ सोम को अनुराधा में पूर्वदोष तथा भद्रा है। ति. १२ मंगल को ज्येष्ठा में सूर्यवेध है। ति. १३ बुध को मूल में भौमवेध तथा वैधृतिदोष है। ति. १४ गुरु को पू.षा. में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १५ शुक्र को उ.षा. में शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण शिल्पविद्या नावनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है।

तिथि ल.अ.	१ शु घं.	मि.	तिथि ल.अ.	२ श घं.	मि.	३ र घं.	मि.	४ चं घं.	मि.	५ मं घं.	मि.	६ बु घं.	मि.	७ गु घं.	मि.	८ शु घं.	मि.	९ श घं.	मि.	१० र घं.	मि.	११ चं घं.	मि.	१२ मं घं.	मि.	१३ बु घं.	मि.	१४ गु घं.	मि.	१५ शु घं.	मि.
मिथुन	५	१८	कर्क	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०
कर्क	७	३६	सिंह	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४
सिंह	९	५०	कन्या	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७
कन्या	१२	३	तुला	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३
तुला	२	१९	वृश्चिक	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०
वृश्चिक	४	३६	धनु	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६
ल.अ.	रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
धनु	६	४२	मकर	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३
मकर	८	२९	कुम्भ	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४
कुम्भ	१०	०	मीन	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२
मीन	११	२८	मेष	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९
मेष	१	५	वृष	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५
वृष	३	१	मिथुन	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९

१८ पं० शुद्धआषाढ़शुक्ल १५ शुक्र

अहर्गण १९९

अयनांश २४।३।३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	९	२	३	४	४	७	५	११
१२	६	२९	२१	५	२	३	९	९
५५	५२	२७	४६	४६	२१	४१	३५	३५
४७	४०	१४	३८	३६	३८	३२	१३	१३
५७	८२५	३८	२०९	१२	१०	०	३	३
१०	४१	१०	३३	२८	४३	१९	११	११
					व.	मा.		



❖मिनट पुण्यकाल। घी-धेनुदान-मन्दाकिनी स्नान। दैत्यों का दिन तथा देवताओं की रात्रि। दक्षिणायन प्रारम्भ। अयन संक्रान्ति के बाद तीन दिनों तक शुभ कार्य वर्जित है। वर्षविश्वा १८। वर्षाऋतुप्रारम्भ। मनोरथ द्वितीया २ (बंगाल)(चन्द्रोदय व्यापिनी)। ■विपत्ति नहीं आती। जगन्नाथपुरी में विशेष। मनसापूजा प्रारम्भ (बंगाल)। सौरश्रावणमासारम्भ। यायीजययोग दि.७।३९ से सा.६।१४ तक। रवियोग सा.६।१४ से। ●का प्रतिदिन पूजन। नक्त (रात्रि) भोजन का आरम्भ। सर्वधान्य अधिवासन। सायं वायुपरीक्षण। चौमासी चौदस (जैन)। यायीजययोग सा. ६।१० से। रवियोग दि.११।३५ तक।

आषाढ़ मास द्वारा शुभाशुभ निर्णय- आषाढ़ शुक्लपक्ष की द्वितीया तथा नवमी को यदि चन्द्र, गुरु या शुक्रवार हो तो सुवृष्टि तथा वस्तुएं सस्ती होती हैं। इसी प्रकार आषाढ़ पूर्णिमा को यदि पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, मूल हो तो दुर्भिक्ष, तथा उत्तराषाढ़ा हो तो पीड़ा एवं कष्ट होता है। **आषाढ़ शुक्ल द्वितीया (रथयात्रा)-** आषाढ़ शुक्ल द्वितीया युक्त पुष्यनक्षत्र में सुभद्रा सहित बलराम को सुसज्जित रथ पर स्थापित कर यात्रा उत्सव करना चाहिए। अगर आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को पुष्य नक्षत्र की प्राप्ति न हो तो भी द्वितीया को यात्रा उत्सव करना चाहिए। **आषाढ़ पूर्णिमा में धान्यों का तोलन-** आषाढ़ पूर्णिमा को सन्ध्याकाल में सभी धान्यों को स्व-स्व वर्ण मान से तौलकर रात्रि पर्यन्त अभिमन्त्रित कर रखना चाहिए तथा प्रातःकाल दैवज्ञों द्वारा पुनः उसको तोलना चाहिए। अगर उक्त धान्यों में वृद्धि हुई हो तो वृद्धि, जितना रखा गया उतना ही हो तो समता तथा कम होने से हानि होती है। **आषाढ़ पूर्णिमा को वायु परीक्षण-** आषाढ़ पूर्णिमा को दिन-रात या प्रदोष काल में कभी भी वायु परीक्षण करना चाहिए, परीक्षण के समय यदि पूर्व से वायु चले तो सुवृष्टि तथा धान्य की उत्पत्ति अच्छी, आग्नेयकोण से चले तो अल्पवृष्टि, अग्निभय तथा महंगाई, दक्षिण वायु चले तो स्वल्प वृष्टि, प्रजापीड़ा, तथा महंगाई, नैऋत्य की वायु से दुर्भिक्ष एवं अनावृष्टि, पश्चिम से अतिवृष्टि एवं मध्यम धान्योत्पत्ति, वायव्य से वायु चले तो प्रचण्ड वायु चलन तथा धान्य एवं वृष्टि मध्यम, उत्तर से चले तो बहु धान्योत्पत्ति एवं सुखीजन तथा ईशानकोण से चले तो धन-धान्य प्राप्ति तथा प्रजा सुखी रहती है। **पुनर्वसु एवं पुष्य के सूर्य में सस्यरोपण मुहूर्त्त विचार-** हस्त, उ.फा., उ.षा., उ.भा., मूल, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, विशाखा, अनुराधा, रेवती एवं मघा नक्षत्रों, रिक्ता रहित तिथियों तथा शनि एवं मंगल को छोड़कर अन्य दिनों में सस्य रोपण शुभ होता है। **कर लेने का मुहूर्त्त-** मूल, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, पू.फा., पू.षा., पू.भा., भरणी, मघा तथा कृत्तिका को छोड़कर अन्य नक्षत्रों, शीर्षोदय लग्नों तथा सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में राजा को प्रजा से कर ग्रहण करना चाहिए। **शिकार करने का मुहूर्त्त-** आश्लेषा, भरणी, ज्येष्ठा, पू.फा., आर्द्रा, स्वाती, मूल तथा विशाखा नक्षत्रों तथा शनि, रवि एवं मंगलवारों में राजा को शिकार करने जाना चाहिए।

मूलविचार- श्लेषा/मघा-ति. १ शुक्र को दि. ४।२३ से। ति. ३ रवि को रा.८।२९ तक।
ज्येष्ठा/ मूल- ति. ११ सोम को दि. ११।१५ से। ति. १३ बुध को दि.११।५७ तक।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.
३२	५९	१	श	२३	१	दि	२	३६	श्रवण	१०	५४	दि	९	४६	आयुष्मान	२१	१५	दि	१	५४	कौ	२३	१	तै	५०	१६
३२	५६	२	र	१७	३०	दि	१२	२५	धनिष्ठा	७	३०	दि	८	२५	सौभाग्य	१४	११	दि	११	५	गर	१७	३०	व	४४	३३
३२	५३	३	चं	११	३६	दि	१०	३	शतभिष	३/५५	३७/५४	प्रा	६/५	५२/१३	शोभन	६/५२	४६/२५	प्रा	८/५	७/५	भ	११	३६	वव	३८	३१
३२	५०	४	मं	५/५३	२६/४७	प्रा	७/५	३६/७	उ.भा.	५५	१७	रा	३	३३	सुकर्मा	५१	२८	रा	२	१	वा	५	२६	कौ	३२/५१	२०/१३
३२	४८	६	बु	५३	९	रा	२	४२	रेवती	५१	१४	रा	१	५६	धृति	४३	५४	सा	११	०	गर	२६	११	व	५३	९
३२	४५	७	गु	४७	२९	रा	१२	२७	अश्विनी	४७	३२	रा	१२	२८	शूल	३६	३७	रा	८	६	भ	२०	१९	वव	४७	२९
३२	४२	८	शु	४२	१९	रा	१०	२४	भरणी	४४	२२	रा	११	१३	गण्ड	२९	४४	सा	५	२२	बा	१४	५४	कौ	४२	१९
३२	३९	९	श	३७	५७	रा	८	३९	कृत्तिका	४२	१	रा	१०	१६	वृद्धि	२३	२५	दि	२	५०	तै	१०	८	गर	३७	५७
३२	३६	१०	र	३४	२७	रा	७	१६	रोहिणी	४०	२८	रा	९	४०	ध्रुव	१७	४९	दि	१२	३७	व	६	१२	भ	३४	२७
३२	३३	११	चं	३२	०	सा	६	१७	मृगशिरा	३९	५९	रा	९	२९	व्याघात	१३	२	दि	१०	४२	वव	३	१४	बा	३२	०
३२	३०	१२	मं	३०	४५	सा	५	४८	आर्द्रा	४०	४२	रा	९	४७	हर्षण	९	८	दि	९	९	कौ	१	२३	तै	३०	४५
३२	२७	१३	बु	३०	४६	सा	५	४९	पुनर्वसु	४२	४०	रा	१०	३५	वज्र	६	१३	दि	८	०	गर	०	४६	व	३०	४६
३२	२४	१४	गु	३२	७	सा	६	२२	पुष्य	४५	५५	रा	११	५३	सिद्धि	४	१८	दि	७	१४	भ	१	२७	श	३२	७
३२	२१	३०	शु	३४	३५	रा	७	२२	श्लेषा	५०	१८	रा	१	३९	व्यतिपात	३	२७	प्रा	६	५५	च	३	२१	नाग	३४	३५

योग		अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे. अं. +	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
सुस्थिर	१	१	१५	१६	१०	कुम्भ	३९।१२	५	२४	६	३६	३	१३	५२	५७	१८	१३	+	४	७	२२
मातङ्ग	२	२	१६	१७	११			५	२५	६	३५	३	१४	५०	७	१७	५९	+	४	८	९
अमृत	३	३	१७	१८	१२	मीन	४५।३३	५	२५	६	३५	३	१५	४७	२०	१७	४३	+	४	८	५४
सिद्धि	४	४	१८	१९	१३			५	२६	६	३४	३	१६	४४	३२	१७	२८	+	४	९	३९
उत्पात	५	५	१९	२०	१४	मेष	५१।१४	५	२६	६	३४	३	१७	४१	४५	१७	१२	+	४	१०	२३
मानस	६	६	२०	२१	१५			५	२७	६	३३	३	१८	३९	१	१६	५६	+	४	११	९
मुद्गर	७	७	२१	२२	१६	वृष	५८।४७	५	२८	६	३२	३	१९	३६	१७	१६	३९	+	४	११	५६
ध्वज	८	८	२२	२३	१७			५	२८	६	३२	३	२०	३३	३६	१६	२२	+	४	१२	४४
धाता	९	९	२३	२४	१८			५	२९	६	३१	३	२१	३०	५५	१६	५	+	३	१	३५
आनन्द	१०	१०	२४	२५	१९	मिथुन	१०।१४	५	२९	६	३१	३	२२	२८	१५	१५	४८	+	३	२	२७
चर	११	११	२५	२६	२०			५	३०	६	३०	३	२३	२५	३७	१५	३१	+	३	३	२०
गद	१२	१२	२६	२७	२१	कर्क	२७।११	५	३१	६	२९	३	२४	२३	०	१५	१३	+	३	४	१३
शुभ	१३	१३	२७	२८	२२			५	३१	६	२९	३	२५	२०	२४	१४	५५	+	३	५	६
मृत्यु	१४	१४	२८	२९	२३	सिंह	५०।१८	५	३२	६	२८	३	२६	१७	५०	१४	३७	+	३	-	-

श्रावणकृष्णपक्ष।।

राष्ट्रीय तिथि १० श्रावण से २३ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक १ अगस्त से १४ तक सन् २०१५ ई.।।

☞ति.७ गुरु को शुक्र का अस्त पश्चिम में।
☞ति.१३ बुध को गुरु का अस्त पश्चिम में।

कुम्भराशि रा. ९।५। श्रावण मास में चातुर्मास्य व्रती को साग खाना वर्जित है। मासपर्यन्त श्री काशीविश्वनाथ को नित्य विल्वपत्रार्पण। नैमित्तिक पार्थिवार्चनआरम्भ। ♏
भ. रा. ११।१४ से। द्विपुष्करयोग दि. ८।२५ तक।
भ. दि. १०।३ तक। मीनराशि रा. ११।३८। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।५४। शुक्रवार्द्धक्य आरम्भ □
भौमव्रत। दुर्गायात्रा–गौरीपूजा तथा हनुमान जी का दर्शन। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ३।३३ तक।
भ. रा. २।४२ से। मेषराशि रा. १।५६। पञ्चक समाप्ति रा. १।५६। रवियोग रा. १।५६ से।
भ. दि. १।३५ तक। श्री शीतलासप्तमी (उड़ीसा)। शुक्र का अस्त पश्चिम में सा.६।०। सर्वार्थसिद्धियोग ◆
वृषराशि रा. ४।५९। कालाष्टमी ८ व्रत। मन्वादि ८। ◆ रा.१२।२८ तक। रवियोग रा. १२।२८ तक।
सर्वार्थसिद्धियोग रा. १०।१६ से। अमृतसिद्धियोग रा.१०।१६ से।
भ. दि. ७।५८ से रा. ७।१६ तक। गुरुवार्द्धक्य आरम्भ प्रा.६।१४। यायीजययोग रा. ७।१६ से रा.९।४० तक।
मिथुनराशि दि. ९।३५। कामदा ११ एकादशी व्रत सबका। श्रावण सोमवार व्रत। प्रदोष व्रत की भाँति। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ९।२९ तक। अमृतसिद्धियोग ◆
भौमप्रदोष १२ व्रत। ऋण मुक्ति के लिए। भौमव्रतम्। दुर्गायात्रा–गौरीपूजा तथा हनुमान जी का दर्शन। यमघंटयोग रा. ९।४७ तक। ◆रा. ९।२९ तक।
भ. सा. ५।४९ से। कर्कराशि दि. ४।२३। गुरु का अस्त पश्चिम में प्रा.६।१४। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।"
भ. प्रा. ६।६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ११।५३ तक। अमृतसिद्धियोग रा. ११।५३ तक। ☞एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।
सिंहराशि रा. १।३९। स्नान–दान–श्राद्ध की ३० अमावस्या। हरियाली ३० (पश्चिम में प्रसिद्ध)। शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए ●

श्रावणमास के कृत्य –
जो मनुष्य श्रावण मास में मासपर्यन्त एक समय भोजन करने और भगवान का अभिषेक करने से वंश तथा जाति की वृद्धि होती है।
(महाभारत)
श्रावण मास में दूध, घी, धेनू का दान करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं ऐसा विद्वानों ने कहा है। श्रावण मास में एक बार भोजन करना तथा विष्णु और शिव का अभिषेक कराना चाहिये।
(वामन पुराण)

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				वक्रीशुक्र				मार्गीशनि				राहु			
१	श	३	०	५	२४	३	२३	३६	११	४	५	५९	४	४	२	१०	५५	७	३	४१	५१	५	९	३२	२
२	र	३	०	४३	३५	३	२५	२५	४४	४	६	११	३२	४	१	२१	२७	७	३	४२	९	५	९	२८	५१
३	चं	३	१	२१	४६	३	२७	१५	१७	४	६	२४	०	४	०	४५	३९	७	३	४२	२७	५	९	२५	४१
४	मं	३	१	५९	५७	३	२९	४	५०	४	६	३६	२८	४	०	९	५०	७	३	४२	४५	५	९	२२	३०
६	बु	३	२	३८	७	४	०	५१	५४	४	६	४८	५६	३	२९	३४	१	७	३	४३	४	५	९	१९	१९
७	गु	३	३	१६	१८	४	२	३६	२८	४	७	१	२४	३	२८	५८	१३	७	३	४३	२२	५	९	१६	८
८	शु	३	३	५४	२९	४	४	२१	०	४	७	१३	५३	३	२८	२२	२४	७	३	४३	४०	५	९	१२	५७
९	श	३	४	३२	३९	४	६	५	३३	४	७	२६	१९	३	२७	४६	३६	७	३	४३	५८	५	९	९	४७
१०	र	३	५	१०	५०	४	७	५०	६	४	७	३८	४६	३	२७	१०	४७	७	३	४४	३	५	९	६	३६
११	चं	३	५	४९	१	४	९	३२	५	४	७	५१	१२	३	२६	३४	५८	७	३	४४	१५	५	९	३	२५
१२	मं	३	६	२७	११	४	११	१२	७	४	८	३	३९	३	२५	५९	१०	७	३	४४	५५	५	९	०	१४
१३	बु	३	७	४	५५	४	१२	५१	३७	४	८	१६	५	३	२५	२३	२१	७	३	४६	३९	५	८	५७	३
१४	गु	३	७	४२	३८	४	१४	३१	६	४	८	२९	३५	३	२४	४७	३३	७	३	४८	२३	५	८	५३	५३
३०	शु	३	८	२०	२१	४	१६	१०	३६	४	८	४३	७	३	२४	११	३०	७	३	५०	६	५	८	५०	४२

ग्रहचार– मंगल– ति. ७ गुरु को पुष्य में दि. ७।४७।। बुध– ति. ४ मंगल को मघा तथा सिंहराशि में सा. ५।४८। ति.१३ बुध को पूर्वाफाल्गुनी में दि. १२।२२।। गुरु– ति. ४ मंगल को मघा ३ चरण में दि. १२।१४।। वक्रीशुक्र– ति. ४ मंगल को श्लेषा तथा कर्कराशि में दि. १२।१।। मार्गीशनि– अनुराधा १ चरण में।। राहु– उ.फा. ४ चरण में तथा केतु उ.भा. २ चरण में।।

श्रावणमास में शनिवार को नवमी हो तो संतापकारक होता है।

१९ पं० श्रावणकृष्ण ८ शुक्र

अहर्गण २०६

अयनांश २४।३।३१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	०	३	४	४	३	७	५	११
११	१६	३	४	७	२८	३	९	९
३६	१५	५४	२१	१३	२२	४३	१२	१२
१७	३३	२९	०	५३	२४	४०	५७	५७
५७	८४४	३८	१०४	१२	३५	०	३	३
११	३४	१०	३३	२६	४८	११	११	११
					व.	मा.		



विविधमुहूर्त्त– ति. १ शनि को श्रवण में दक्षिण दिशा की यात्रा वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त है। दि. ९।४६ के बाद धनिष्ठा में कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण मकर के चन्द्रमा में दक्षिण तथा कुम्भ के चन्द्रमा में पश्चिम दिशा की यात्रा द्वितीया में गृहारम्भ (ल. ८) मुहूर्त्त है। ति. २ रवि को धनिष्ठा में नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण पशुओं की खरीद–बिक्री वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. ८।२५ के बाद शतभिष में नवान्नभक्षण औषधसेवन नावनिर्माण वस्तुक्रय ऑपरेशन मुहूर्त्त है। ति. ३ सोम को शतभिष में भद्रादोष है। पू. भा. में भद्रा के बाद रिक्तादोष है। ति. ४ मंगल को उ.भा. में केतुयुति है। ति. ६ बुध को रेवती में राहुवेध है। ति. ७ गुरु को भद्रा के बाद अश्विनी में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सूतीस्नान नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद–बिक्री दक्षिण को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. ८ शुक्र को रा. १०।२४ तक भरणी में नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ शनि को कृत्तिका में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रा. १०।१६ के बाद रोहिणी में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण जीर्णादिगृहप्रवेश में चक्रशुद्धि का मुहूर्त्त है। ति. १० रवि को रोहिणी में भद्रा से पूर्व पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण विपणि ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। रा. ९।४० के बाद मृगशिरा में ☞

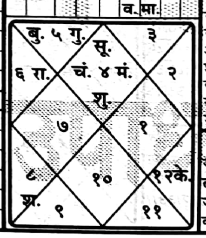
तिथि / ल.अ.	१ श घं.	मि.	२ र घं.	मि.	३ चं घं.	मि.	४ मं घं.	मि.	६ बु घं.	मि.	७ गु घं.	मि.	८ शु घं.	मि.	९ श घं.	मि.	१० र घं.	मि.	११ चं घं.	मि.	१२ मं घं.	मि.	१३ बु घं.	मि.	१४ गु घं.	मि.	३० शु घं.	मि.
कर्क	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४८
सिंह	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१३	८	९	८	५	८	२
कन्या	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१५
तुला	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३१
वृश्चिक	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४८
धनु	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५४
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मकर	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४१
कुम्भ	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	१२
मीन	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	४०
मेष	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१७
वृष	२	१	१	५८	१	५४	१	५०	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१३
मिथुन	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२७

२० पं० श्रावणकृष्ण ३० शुक्र

अहर्गण २१३

अयनांश २४।३।३२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	३	३	४	४	३	७	५	११
२६	१९	८	१६	८	२४	३	८	८
१७	३४	२०	१०	४३	११	५०	५०	५०
५०	५३	२१	३६	७	३०	६	४२	४२
५७	७४५	३७	१४	१३	३५	१	३	३
२८	३२	४३	१४	३२	३१	६४	११	११
					व.	मा.		



♏ अशून्यशयन २ व्रत। चन्द्रोदय रा.७।२२। श्री लक्ष्मी सहित विष्णु का पलंग पर रखकर पूजन करने से अक्षय–धन तथा सुख प्राप्ति। प्रार्थनामन्त्रः– पत्नी भर्तृवियोगं च भर्ता–भार्या समुद्भवम्। नाप्नुवंति यथा दुःखं दाम्पत्यानि तथा कुरु। मैथिलनववर्षारम्भ। पञ्चक प्रारम्भ रा. ९।५। अगस्त ८। यायीजययोग दि. ९।४६ से दि.२।३६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि.९।४६ तक। द्विपुष्करयोग दि. २।३६ से। □सा.६।०। श्रावण सोमवार व्रत। प्रदोष व्रत की भाँति। नैमित्तिक पार्थिवार्चन। श्रावणमास में सोमवार का व्रत विधिपूर्वक करके सायंकाल भोजन करना चाहिए। ⊙श्लेषा नक्षत्र का सूर्य रा. ३।३१। स्त्री.पु.– चं.चं. योग खर वाहन नीरा नाड़ी अधिपति शुक्र सामान्यवृष्टियोग। ●सुखकारक होती है। मन्वादि ३०।

मूलविचार– रेवती/अश्विनी– ति. ४ मंगल को रा. ३।३३ से। ति. ७ गुरु को रा. १२।२८ तक।
श्लेषा/मघा–ति. १४ गुरु को रा. ११।५३ से।
पञ्चक विचार– ति. १ शनि को रा. ९।५ से। ति. ६ बुध को रा. १।५६ तक।

समस्त प्रदोषों का निर्णय– माधव के अनुसार शुक्ल पक्ष की पूर्व तथा कृष्णपक्ष की पर त्रयोदशी प्रदोष में ग्राह्य होती है। (शुक्ला त्रयोदशी पूर्वा, परा कृष्णा त्रयोदशी)। गौड़ग्रन्थ, हेमाद्रि, तथा वत्स के अनुसार प्रदोष समय–सूर्यास्त के बाद में दो घटी प्रदोष काल होता है। अथवा मतानतर से सूर्यास्त के बाद तीन मुहूर्त्त प्रदोष काल होता है, अतः प्रदोषकाल व्यापिनी त्रयोदशी तिथि का ही प्रदोष व्रत में ग्रहण होता है। परन्तु दो दिन यदि त्रयोदशी का प्रदोष काल से सम्बन्ध हो रहा हो तो स्पर्श मात्र से भी द्वितीय दिन का ही व्रत ग्राह्य होता है। यदि कृष्ण पक्ष में पर विद्ध त्रयोदशी न प्राप्त हो रही हो तो, यहाँ भी पूर्व विद्ध ही ग्राह्य हो जाती है। वशिष्ठ के अनुसार– एकादशी, षष्ठी, तृतीया, एवं त्रयोदशी दूसरे दिन नहीं होने पर पूर्वविद्ध भी हो तो करनी चाहिए। शनिवार के दिन प्रदोषव्रत सभी देह धारियों के लिये अत्यंत दुलर्भ है–इसमें भी शुक्ल पक्ष की अपेक्षा कृष्ण पक्षीय शनि प्रदोष विशेष पुण्यदायक कहा गया है। अतः इसे अवश्य करना चाहिए। श्रावण मास में सोमवार व्रत तथा कृत्य– श्रावण मास में विधि पूर्वक सोमवार व्रत करना चाहिए, सक्षम रहने पर सम्पूर्ण उपवास पूर्वक तथा अक्षम रहने पर रात्रि में भोजन कर सकते हैं।

☞पूर्व–दक्षिण दिशा की यात्रा औषधसेवन का मुहूर्त्त है। ति. ११ सोम को मृगशिरा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण गर्भाधान वृष के चन्द्रमा में दक्षिण तथा मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम–दक्षिण दिशा की यात्रा (एकादशी में) औषधसेवन जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ६) विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १२ मंगल को आर्द्रा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रावणशुक्लपक्ष।।

राष्ट्रीय तिथि २४ श्रावण से ७ भाद्रपद तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक १५ अगस्त से २९ तक सन् २०१५ ई.।।

☞ति. ६ गुरु को शुक्र का उदय पूर्व में।।

दि.घ.	मा.प.	श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।																									योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे. अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.	श्रावणशुक्लपक्ष।।
३२	१८	१	श	३८	१४	रा	८	५०	मघा	५५	४२	रा	३	४९	वरीयान	३	२७	प्रा	६	५५	किं	६	२५	वव	३८	१४	पद्म	१५	१५	२९	३०	२४			५	३२	६	२८	३	२७	१५	१८	१४	१९	+	२	-	-	श्रीविष्णुशिवात्मकअभिषेकआरम्भ। भारतीय ६९वाँ स्वतन्त्रता दिवस। ध्वजोत्तोलन-राष्ट्रगान-राजधानी में विविध उत्सव तथा आयोजन।
३२	१५	२	र	४२	४१	रा	१०	३७	पू.फा.	६०	०	स	म	स्त	परिघ	४	१४	प्रा	७	१५	वा	१०	२८	कौ	४२	४१	छत्र	१६	१६	३०	३१	२५			५	३३	६	२७	३	२८	१२	४७	१४	०	+	२	७	३०	◡चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। धर्मसम्राट् स्वामिकरपात्री जयन्ती २। (शुक्रोदय नक्षत्रफल-चित्रा में रोगवृद्धि होती है।)
३२	१२	३	चं	४७	४०	रा	१२	३८	पू.फा.	१	४७	प्रा	६	१७	शिव	५	३२	प्रा	७	४७	तै	१५	११	गर	४७	४०	ध्वज	१७	१७	३१	३२	२६	कन्या	१८।२५	५	३४	६	२६	३	२९	१०	१६	१३	४१	+	२	८	५	कन्याराशि दि. १२।५६। मु. जिल्काद ११ हिजरी सन् १४३६। श्रावण सोमवार व्रत। प्रदोष व्रत की भाँति। मधुश्रवा ३ (मिथिला तथा गुजरात में प्रसिद्ध)।○
३२	८	४	मं	५२	४४	रा	२	४०	उ.फा.	८	१७	दि	८	५३	सिद्ध	७	९	दि	८	२६	व	२०	१२	भ	५२	४४	धाता	१८	१८	१	१	२७			५	३४	६	२६	४	०	७	४८	१३	२२	+	२	८	४०	भ. दि. १।३९ से रा. २।४० तक। वैनायकी श्रीगणेश ४व्रत। भौमव्रत। दुर्गायात्रा-गौरीपूजा तथा हनुमान जी का दर्शन। सौरभाद्रपदमासारम्भ। रवियोग दि. ८।५३ से।
३२	५	५	बु	५७	२८	रा	४	३४	हस्त	१४	४५	दि	११	२९	साध्य	८	४४	दि	९	५	वव	२५	६	वा	५७	२८	आनन्द	१९	१९	२	२	२८	तुला	४७।४५	५	३५	६	२५	४	१	५	२१	१३	३	+	२	९	१६	तुलाराशि रा. १२।४१। श्रीनागपञ्चमी ५। दीवार पर बनाये हुए नागों का यथा शक्ति पूजन। तक्षकपूजा ५। काशी में नागकूप यात्रा। गाँव-गाँव में विविध व्यायाम ■
३२	२	६	गु	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	२०	४४	दि	१	५४	शुभ	९	५८	दि	९	३५	कौ	२९	३०	तै	६०	०	चर	२०	२०	३	३	२९			५	३६	६	२४	४	२	२	५६	१२	४३	+	२	९	५२	कल्कि अवतार ६। लुण्ठनषष्ठी (बंगाल)। शुक्र का उदय पूर्व में दि.८।४७। रवियोग दि. १।५४ से।
३१	५९	६	शु	१	३१	प्रा	६	१२	स्वाती	२५	५९	दि	४	०	शुक्ल	१०	३५	दि	९	५०	तै	१	३१	गर	३३	२	गद	२१	२१	४	४	३०			५	३६	६	२४	४	३	०	३३	१२	२३	+	१	१०	३१	रवियोग दि. ४।० तक। (शुक्रोदय राशिफल-कर्क में अतिवृष्टि से धान्यनाश तथा चोरों का भय होता है। शुक्रोदय मासफल-श्रावण में हो तो चौपायों को दुःख होता है।)
३१	५५	७	श	४	३२	दि	७	२६	विशाखा	३०	८	सा	५	४०	ब्रह्म	१०	२२	दि	९	४६	व	४	३२	भ	३५	३१	शुभ	२२	२२	५	५	३१	वृश्चिक	१४।६	५	३७	६	२३	४	३	५८	११	१२	३	+	१	११	१३	भ. दि. ७।२६ से रा. ७।४९ तक। वृश्चिकराशि दि. ११।१५। श्रीगोस्वामितुलसीदास जयन्ती ७। त्रिपुष्करयोग दि. ७।२६ तक।
३१	५२	८	र	६	३०	दि	८	१४	अनुराधा	३३	११	सा	६	५४	ऐन्द्र	९	१९	दि	९	२२	वव	६	३०	वा	३६	४८	मृत्यु	२३	२३	६	६	१			५	३८	६	२२	४	४	५५	५१	११	४३	+	१	११	५९	दृश्य अगस्त्योदय रा. २।७। शुक्रबालत्व की समाप्ति दि.८।४७। राष्ट्रीयभाद्रपदमास दि. ३१। यायीजययोग दि. ८।१४ से सा. ६।५४ तक। रवियोग सा. ६।५४ से।
३१	४९	९	चं	७	६	दि	८	२८	ज्येष्ठा	३४	५५	रा	७	३६	वैधृति	७	१२	दि	८	३१	कौ	७	६	तै	३६	४५	पद्म	२४	२४	७	७	२	धनु	३४।५५	५	३८	६	२२	४	५	५३	३३	११	२३	+	१	१२	५०	धनुराशि रा. ७।३६। श्रावण सोमवार व्रत। प्रदोष व्रत की भाँति। ⊙सायन कन्याराशि का सूर्य प्रा. ६।५०। रवियोग समस्त।
३१	४५	१०	मं	६	२४	दि	८	१३	मूल	३५	२६	रा	७	४९	विष्कुम्भ	४ ५५	५ ५४	प्रा	७ ५	१७ ३१	गर	६	२४	व	३५	२८	छत्र	२५	२५	८	८	३			५	३९	६	२१	४	६	५१	१७	११	३	+	०	१	४५	भ. रा. ७।५० से। भौमव्रत। दुर्गायात्रा-गौरीपूजा तथा हनुमान जी का दर्शन। झूलनयात्रा आरम्भ (प्रदोष में)। रवियोग रा. ७।४९ तक।
३१	४२	११	बु	४	३२	दि	७	२९	पू.षा.	३४	४५	रा	७	३४	आयुष्मान	५५	१	रा	३	४०	भ	४	३२	वव	३३	३	श्रीवत्स	२६	२६	९	९	४	मकर	४९।२०	५	४०	६	२०	४	७	४९	३	१०	४२	+	०	२	४४	भ. दि. ७।२९ तक। मकरराशि रा. १।२४। पुत्रदा ११ एकादशी व्रत सबका। दामोदर द्वादशी (पूर्व विद्धा)।
३१	३९	१२	गु	१ ५६	३३ ३	प्रा	६ ४	१७ ४२	उ.षा.	३३	३	सा	६	५३	सौभाग्य	४९	१५	रा	१	२२	वा	१	३३	कौ	२९ ५७	३५ ३६	सौम्य	२७	२७	१०	१०	५			५	४०	६	२०	४	८	४६	५०	१०	२१	-	०	३	४७	प्रातः ६।१७ तक एकादशी व्रत की पारणा। प्रदोष १२ व्रत। श्रीविष्णुपवित्रारोपण (उड़ीसा)। आखेटक त्रयोदशी (उड़ीसा)। शाक दान-दहित्याग◆
३१	३५	१४	शु	५२	४८	रा	२	४८	श्रवण	३०	३०	सा	५	५३	शोभन	४२	४८	रा	१०	४८	गर	२५	१२	व	५२	४८	धूम्र	२८	२८	११	११	६	कुम्भ	५८।५३	५	४१	६	१९	४	९	४४	३८	१०	०	-	०	४	५१	भ. रा. २।४८ से। कुम्भराशि रा.शे. ५।१४। श्रीशिवाधिवासन तथा पवित्रारोपण (उड़ीसा)। ऋग्वेदियों का उपाकर्म (श्रावणी)। पञ्चक प्रारम्भ रा.शे. ५।१४।□
३१	३२	१५	श	४७	२३	रा	१२	३९	धनिष्ठा	२७	१५	दि	४	३६	अतिगण्ड	३५	४७	रा	८	१	भ	२०	६	वव	४७	२३	प्रवर्धमान	२९	२९	१२	१२	७			५	४२	६	१८	४	१०	४२	२९	९	३९	-	१	-	-	भ. दि. १।४४ तक। स्नान-दान-व्रत की १५ पूर्णिमा। संस्कृत दिवस। भद्रा (दि. १।४४) के बाद रक्षाबन्धन (राखी)। शुक्लयजुर्वेदी-आपस्तम्ब-♏

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				वक्रीशुक्र				शनि				राहु			
१	श	३	८	५८	४	४	१७	४४	५०	४	८	५६	३९	३	२३	३५	५९	७	३	५१	५०	५	८	४७	३१
२	र	३	९	३५	४७	४	१९	१८	९	४	९	१०	११	३	२३	०	७	७	३	५३	३३	५	८	४४	२०
३	चं	३	१०	१३	३०	४	२०	५१	२९	४	९	२३	४४	३	२२	२४	१८	७	३	५५	१७	५	८	४१	९
४	मं	३	१०	५१	१३	४	२२	२४	४८	४	९	३७	१६	३	२१	४८	३०	७	३	५७	०	५	८	३७	५९
५	बु	३	११	२८	५६	४	२३	५८	३	४	९	५०	४८	३	२१	१२	४१	७	३	५८	४४	५	८	३४	४८
६	गु	३	१२	६	३९	४	२५	२२	४२	४	१०	४	२०	३	२०	३६	५२	७	४	०	२७	५	८	३१	३७
६	शु	३	१२	४४	२२	४	२६	४७	२३	४	१०	१७	५२	३	२०	१	४	७	४	२	११	५	८	२८	२६
७	श	३	१३	२२	५	४	२८	१२	४	४	१०	३१	२४	३	१९	२६	२३	७	४	३	५४	५	८	२५	१५
८	र	३	१३	५९	४८	४	२९	३६	१५	४	१०	४४	५६	३	१८	५१	५४	७	४	५	३६	५	८	२२	५
९	चं	३	१४	३७	३१	५	०	५८	४६	४	१०	५८	२९	३	१८	७	१७	७	४	७	२५	५	८	१८	५४
१०	मं	३	१५	१५	१५	५	२	१३	१	४	११	१२	१	३	१७	५७	३७	७	४	८	५४	५	८	१५	४३
११	बु	३	१५	५२	५८	५	३	२७	२०	४	११	२५	३३	३	१७	४७	५८	७	४	१०	३३	५	८	१२	३२
१२	गु	३	१६	३०	४१	५	४	४१	३९	४	११	३९	५	३	१७	३८	१९	७	४	१२	५६	५	८	९	२१
१४	शु	३	१७	८	२४	५	५	५५	५८	४	११	५२	३७	३	१७	२८	४०	७	४	१५	४४	५	८	६	१०
१५	श	३	१७	४६	७	५	७	५	१७	४	१२	६	९	३	१७	१९	१	७	४	१८	३१	५	८	३	०

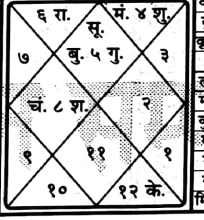
ग्रहचार- मंगल- ति. १२ गुरु को श्लेषा में दि. ११।३६।। बुध- ति. ६ गुरु को उत्तराफाल्गुनी में रा. ३।३०। ति. ८ रवि को कन्याराशि में दि. १२।३२।। गुरु- ति. ५ बुध को मघा ४ चरण में रा. ९।५४ ।। वक्रीशुक्र- श्लेषा में।। शनि- अनुराधा १ चरण में।। राहु- उ.फा. ४ चरण में तथा केतु उ.भा. २ चरण में।।

२१ पं०श्रावणशुक्ल ८रवि

अहर्गण २२२

अयनांश २४।३।३३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	७	३	४	४	३	७	५	११
४	९	१३	२९	१०	१८	४	८	८
५५	३८	५९	३६	४४	५१	५	२२	२२
५१	५३	४८	१५	५६	५४	३६	५	५
५७	७६१	३७	८२	१३	४४	१	३	३
४२	१८	४३	३१	३३	३७	३९	११	११
					व.			



विविधमुहूर्त्त- ति. १ शनि को मघा में सूर्यभोग्य है। ति. २ रवि को पू.फा. में नावनिर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ३ सोम को प्रा. ६।१७ के बाद उ.फा. में राहुयुति है। ति. ४ मंगल को उ.फा. में पूर्वदोष है। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ बुध को हस्त में केतुवेध है। दि. ११।२९ के बाद चित्रा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण अन्नप्राशन नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ६ गुरौ चित्रा भे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि.१।५४ के बाद स्वाती में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ८) मुहूर्त्त है। ति. ६ शुक्र को प्रा. ६।१२ के बाद स्वाती में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.६ वा ८) वाहन खरीदने विपणि व्यापार फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि.४।०के बाद विशाखा में वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री धान्यारोपण वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति. ७ शनि को विशाखा में भद्रा से पूर्व कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। अनुराधा में शनियुति तथा भद्रादोष है। ति. ८ रवि को अनुराधा में पूर्वदोष तथा वैधृति है। नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ९ सोम को ज्येष्ठा में भौमवेध तथा वैधृतिदोष है। ति. १० मंगल को मूल में पुंसवनसीमन्त शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ११ बुध को भद्रा के बाद पू.षा. में शिल्पविद्या वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है।☞

तिथि	१ श		२ र		३ चं		तिथि	४ मं		५ बु		६ गु		६ शु		७ श		८ र		९ चं		१० मं		११ बु		१२ गु		१४ शु		१५ श	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
कर्क	५	४४	५	४०	५	३६	सिंह	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३१	७	२८	७	२४	७	२१	७	१८	७	१४	७	११	७	७
सिंह	७	५८	७	५४	७	५०	कन्या	९	५९	९	५५	९	५१	९	४८	९	४४	९	४१	९	३७	९	३४	९	३१	९	२७	९	२४	९	२०
कन्या	१०	११	१०	७	१०	३	तुला	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	४	१२	०	११	५७	११	५३	११	५०	११	४७	११	४३	११	४०	११	३६
तुला	१२	२७	१२	२३	१२	१९	वृश्चिक	२	३२	२	२८	२	२४	२	२१	२	१७	२	१४	२	१०	२	७	२	४	२	०	१	५७	१	५३
वृश्चिक	२	४४	२	४०	२	३६	धनु	४	३८	४	३४	४	३०	४	२७	४	२३	४	२०	४	१६	४	१३	४	१०	४	६	४	३	३	५९
धनु	४	५०	४	४६	४	४२	मकर	६	२५	६	२१	६	१७	६	१४	६	१०	६	७	६	३	६	०	५	५७	५	५३	५	५०	५	४६
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मकर	६	३७	६	३३	६	२९	कुम्भ	७	५६	७	५२	७	४८	७	४५	७	४१	७	३८	७	३४	७	३१	७	२८	७	२४	७	२१	७	१७
कुम्भ	८	८	८	४	८	०	मीन	९	२४	९	२०	९	१६	९	१३	९	९	९	६	९	२	८	५९	८	५६	८	५२	८	४९	८	४५
मीन	९	३६	९	३२	९	२८	मेष	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	५०	१०	४६	१०	४३	१०	३९	१०	३६	१०	३३	१०	२९	१०	२६	१०	२२
मेष	११	१३	११	९	११	५	वृष	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४२	१२	३९	१२	३५	१२	३२	१२	२९	१२	२५	१२	२२	१२	१८
वृष	१	९	१	५	१	१	मिथुन	३	११	३	७	३	३	३	०	२	५६	२	५२	२	४९	२	४६	२	४३	२	३९	२	३६	२	३२
मिथुन	३	२३	३	१९	३	१५	कर्क	५	२९	५	२५	५	२१	५	१८	५	१४	५	११	५	७	५	४	५	१	४	५७	४	५४	४	५०

२२पं० श्रावणशुक्ल १५शनि

अहर्गण २२८

अयनांश २४।३।३४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१०	३	५	४	३	७	५	११
१०	०	१७	७	१२	१७	४	८	८
४२	१५	४६	५	६	१९	१८	३	३
२९	४६	७	१७	९	१	३१	०	०
५७	८४५	३७	५८	१३	९	२	३	३
५३	४९	४४	१६	३३	३९	४८	११	११
					व.			



○स्वर्णगौरी ३ व्रत। सुकृतव्रत। ठकुराइन जयन्ती (पश्चिम में प्रसिद्ध)। मनसादेवी पूजा (बंगाल)। मनसापूजा समाप्त। ⊙ सं. मघा नक्षत्र तथा सिंहराशि का सूर्य रा. २।१९। मु. ४५ वृहत्ती। फल सस्ती। पूर्व का ६ घंटा २४ मिनट पुण्यकाल। स्त्री-स्त्री-सू. चं योग मण्डूक वाहन नीरा नाड़ी अधिपति शुक्र खण्डवृष्टियोग। यायीजययोग प्रा. ६।१७ से रा. १२।३८ तक। रवियोग प्रा. ६।१७ से रा. २।१९ तक। ■प्रदर्शन। जागृतगौरी पञ्चमी (उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ११।२९ तक। रवियोग दि. ११।२९ तक। ◆व्रतारम्भ। नात्रत्यागस्तकादिनाम। यायीजययोग प्रा. ६।१७ से सा. ६।५३ तक। रवियोग सा. ६।५३ से। □स्थायीजययोग सा. ५।५३ तक। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ५।५३ तक। रवियोग सा. ५।५३ तक। ♏ माध्यन्दिनी-तैत्तिरीय शाखा वालों के लिए उपाकर्म (श्रावणी)। झूलनयात्रा समापन। अमरनाथयात्रा। हयग्रीव उत्पत्ति (सायं)। काशी में भदैनी स्थित मन्दिर में दर्शन तथा पूजन। यायीजययोग दि. ४।३६ तक।

मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति. १ शनि को रा. ३।४९ तक।
ज्येष्ठा/मूल- ति. ८ रवि को सा. ६।५४ से। ति. १० मंगल को रा.७।४९ तक।
पञ्चक विचार- ति. १४ शुक्र को रा.शे. ५।१४ से।

सूर्य के उत्तरायण एवं दक्षिणायन में स्वरप्रवाह द्वारा प्रातः जागरण- प्रतिदिन प्रातःकाल स्वारम्भ स्वरों द्वारा जागरण करना चाहिए। अर्थात दक्षिणायन में चन्द्र स्वर तथा उत्तरायण में सूर्य स्वर द्वार दिन का आरम्भ करें। अगर उक्त स्थिति न हो तो प्राणायाम आदि यत्नों से अनुकूल स्वर प्रवाह कराना चाहिए। श्रावण शुक्ल की पंचमी अर्थात् नागपञ्चमी- श्रावण शुक्ल पञ्चमी को नाग पञ्चमी कहा जाता है। नाग पञ्चमी पर विद्ध ग्राह्य होती है, अतः नाग पूजा में षष्ठी युक्त पञ्चमी का ही ग्रहण करना चाहिए क्योंकि उसी में नागगण सन्तुष्ट होते हैं। चतुर्थी सहित पञ्चमी में अन्य गण। नाग पञ्चमी को छोड़कर अन्य प्रयोजनों में चतुर्थी युक्त पञ्चमी ही लाभप्रद होती है।

☞रा. ७।३४ के बाद उ.षा. में गर्भाधान नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. १२) मुहूर्त्त है। ति. १२ गुरु को उ.षा. में पुंसवनसीमन्त (त्रयोदशी में) जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन त्रयोदशी में अन्नप्राशन सूतीस्नान सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण शिल्पविद्या नावनिर्माण जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.६ वा ८) फसल काटने का मुहूर्त्त है। सा. ६।५३ के बाद श्रवण में गर्भाधान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग पूर्व दिशा की यात्रा औषधसेवन ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. १४ शुक्र को श्रवण में रिक्तादोष है। ति. १५ शनि को भद्रा बाद धनिष्ठा में कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।

भाद्रपदकृष्णपक्ष।।

राष्ट्रीय तिथि ८ भाद्रपद से २२ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक ३० अगस्त से १३ सितम्बर तक सन् २०१५ ई.।।

☛ ति. ९ सोम को गुरु का उदय पूर्व में।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.
३१	२८	१	र	४१	३२	रा	१०	१९	शतभिष	२३	२९	दि	३	६	सुकर्मा	२८	२३	सा	५	३	वा	१४	२८	कौ	४१	३२
३१	२४	२	चं	३५	२६	रा	७	५३	पू.भा.	१९	२२	दि	१	२८	धृति	२०	४६	दि	२	१	तै	८	२९	गर	३५	२६
३१	२१	३	मं	२९	१५	सा	५	२६	उ.भा.	१५	७	दि	११	४७	शूल	१३	०	दि	१०	५६	व	२	२१	भ	२१/५६	१५/२६
३१	१८	४	बु	२३	१५	दि	३	३	रेवती	११	०	दि	१०	९	गण्ड	५/५२	२२/३३	प्रा	०/४	५४/५५	वा	२३	१५	कौ	५०	२५
३१	१४	५	गु	१७	३५	दि	१२	४८	अश्विनी	७	११	दि	८	३८	ध्रुव	५०	५३	रा	२	७	तै	१७	३५	गर	४५	१
३१	११	६	शु	१२	२६	दि	१०	४५	भरणी	३	५३	दि	७	२०	व्याघात	४४	२३	रा	११	३२	व	१२	२६	भ	४०	१५
३१	७	७	श	८	३	दि	९	०	कृत्तिका	१/५८	१६/१४	प्रा	६/५	१७/३५	हर्षण	३८	३४	रा	९	१३	वव	८	३	वा	३६	१७
३१	४	८	र	४	३१	दि	७	३५	मृगशिरा	५८	४५	रा	५	१७	वज्र	३३	३१	सा	७	११	कौ	४	३१	तै	३३	१७
३१	३	९	चं	२	२	प्रा	६	३७	आर्द्रा	५९	११	रा	५	२८	सिद्धि	२९	२१	सा	५	३२	गर	२	२	व	३१	२५
३०	५६	१०	मं	०	४७	प्रा	६	८	पुनर्वसु	६०	०	स	म	स्त	व्यतिपात	२६	१०	दि	४	१७	भ	०	४७	वव	३०	४८
३०	५३	११	बु	०	४८	प्रा	६	८	पुनर्वसु	०	५०	प्रा	६	९	वरीयान	२३	५८	दि	३	२४	वा	०	४८	कौ	३१	२८
३०	४९	१२	गु	२	८	प्रा	६	४१	पुष्य	३	४६	प्रा	७	२०	परिघ	२२	५०	दि	२	५८	तै	२	८	गर	३३	२३
३०	४६	१३	शु	४	३८	दि	७	४२	श्लेषा	७	५०	दि	८	५९	शिव	२२	३१	दि	२	५१	व	४	३८	भ	३६	२८
३०	४२	१४	श	८	१८	दि	९	११	मघा	१३	०	दि	११	४	सिद्ध	२२	७	दि	२	४३	श	८	१८	च	४०	३३
३०	३८	३०	र	१२	४७	दि	१०	५९	पू.फा.	१८	५७	दि	१	२७	साध्य	२४	१४	दि	३	३४	नाग	१२	४७	किं	४५	१८

ति.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	चन्द्र प्रवेश	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	क्रान्ति +	रे. अं. –	रे. अं. मि.	चन्द्रोदय स्टै.	चन्द्रोदय टा.
१	राक्षस	३०	१	१३	१३	८			५	४२	६	१८	४	११	४०	२२	९	१८	–	१	६	४५
२	मुसल	३१	२	१४	१४	९	मीन	५।२४	५	४३	६	१७	४	१२	३८	१७	८	५६	–	१	७	३२
३	सिद्धि	१	३	१५	१५	१०			५	४४	६	१६	४	१३	३६	१३	८	३५	–	१	८	१७
४	उत्पात	२	४	१६	१६	११	मेष	११।०	५	४५	६	१५	४	१४	३४	१२	८	१३	–	२	९	४
५	मानस	३	५	१७	१७	१२			५	४६	६	१४	४	१५	३२	१३	७	५१	–	२	९	५२
६	मुद्गर	४	६	१८	१८	१३	वृष	१८।१४	५	४७	६	१३	४	१६	३०	१५	७	२९	–	२	१०	४१
७	ध्वज	५	७	१९	१९	१४			५	४७	६	१३	४	१७	२८	२०	७	७	–	३	११	३२
८	सौम्य	६	८	२०	२०	१५	मिथुन	२९।८	५	४७	६	१३	४	१८	२६	२६	६	४५	–	३	१२	२४
९	कालदण्ड	७	९	२१	२१	१६			५	४८	६	१२	४	१९	२४	३४	६	२३	–	४	१	१७
१०	सुस्थिर	८	१०	२२	२२	१७	कर्क	४५।२५	५	४९	६	११	४	२०	२२	४६	६	०	–	४	२	९
११	गद	९	११	२३	२३	१८			५	४९	६	११	४	२१	२०	५८	५	३८	–	४	३	२
१२	शुभ	१०	१२	२४	२४	१९			५	५०	६	१०	४	२२	१९	११	५	१५	–	५	३	५३
१३	मृत्यु	११	१३	२५	२५	२०	सिंह	७।५०	५	५१	६	९	४	२३	१७	२७	४	५२	–	५	४	४४
१४	पद्म	१२	१४	२६	२६	२१			५	५२	६	८	४	२४	१५	४६	४	३०	–	५	५	३४
३०	छत्र	१३	१५	२७	२७	२२	कन्या	३५।३३	५	५२	६	८	४	२५	१४	८	४	७	–	६	–	–

भाद्रपद मास में चातुर्मास्य व्रती को दही खाना वर्जित है। नात्रत्यागस्तक्रादीनाम्। श्री नारायण गुरुदेव जन्मदिवस (केरल)। त्रिपुष्करयोग रा. १०।१९ से।
मीनराशि दि. ७।५३। अशून्यशयन २ व्रत। चन्द्रोदय रा. ७।३२। श्री लक्ष्मीसहित विष्णु का पलंग पर रखकर पूजन करने से अक्षय-धन तथा दाम्पत्य सुख ○
भ. प्रा. ६।४० से सा. ५।२६ तक। संकष्टी (बहुला) श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।१७। विशालाक्षी यात्रा ३। कज्जली (कजरी) ३। गोपूजा ३। गायों को अलंकृत ♏
मेषराशि दि. १०।९। पञ्चक समाप्ति दि. १०।९। ♏ करके पूजन। बहुला चतुर्थी (सायंकाल व्यापिनी) मध्य प्रदेश। सितम्बर १। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ११।४७ तक।
श्रीचन्द्रषष्ठी ६। चन्द्रोदय रा. ९।५२। रक्षापञ्चमी (उड़ीसा)। श्री माधवदेवतिथि (असम)। यायीजययोग दि. ८।३८ से दि. १२।४८ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।३८ तक।
भ. दि. १०।४५ से रा. ९।५३ तक। वृषराशि दि. १।५। हलषष्ठी ६ व्रत (ललही छठ)। रवियोग दि. ७।२० से।
नीशीथकाल में अष्टमी तथा रोहिणी के योग में जयन्ती नामक श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रत सबका। कृष्णावतार ८ (नीशीथ में)। चन्द्रोदय रा. ११।३२।❖
मिथुनराशि सा. ५।२६। गोकुलाष्टमी।
भ. सा. ६।२२ से। गुरु का उदय पूर्व में दि. १०।४०।
भ. प्रा. ६।८ तक। कर्कराशि रा. ११।५९। पौराणिक अगस्त्योदय रा. ९।१०।
जया ११ एकादशी व्रत सबका।

○प्राप्ति। प्रार्थनामन्त्र:- पत्नी भर्तृवियोगं च भर्ता-भार्या समुद्भवम्। नाप्नुवंति यथा दुःखं दाम्पत्यानि तथा कुरु। विन्ध्याचली-भीमचण्डी देवी जयन्ती २। कज्जली निमित्तक रात्रि जागरण (रतजगा)। ⊙पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का सूर्य रा. ११।०। स्त्री. पु.-सूर्य.सूर्य योग महिष वाहन सौम्या नाड़ी अधिपति गुरु सामान्य वृष्टियोग। यायीजययोग रा. ७।५३ से।

प्रातः ६।४१ तक एकादशी व्रत की पारणा। प्रदोष १२ व्रत। गुरुबालत्व की समाप्ति दि. १०।४०। यायीजययोग प्रा. ७।२० से। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा. ७।२० तक। ♒
भ. दि. ७।४२ से रा. ८।२६ तक। सिंहराशि दि. ८।५९। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" अघोर चतुर्दशी (प्रदोष में)।●
श्राद्ध की ३० अमावस्या। कुशोत्पाटनी ३० अमावस्या। "ऊँ हूँ फट्" मन्त्र से कुशग्रहण। ● कलियुगादि १३। स्थायीजययोग दि. ८।५९ से।
कन्याराशि रा. ८।५। स्नान-दान की ३० अमावस्या। पापवार तथा अमावस्या की युति दुर्भिक्ष तथा प्रजा के लिए भयकारक होती है। यायीजययोग दि. १।२७ से।♀

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				मार्गीबुध				गुरु				वक्रीशुक्र				शनि				राहु			
१	र	३	१८	२३	५१	५	८	३	३३	४	१२	१९	४२	३	१७	९	२२	७	४	२१	१९	५	७	५९	४९
२	चं	३	१९	१	३६	५	९	१	५३	४	१२	३३	१४	३	१६	५९	४३	७	४	२४	७	५	७	५६	३८
३	मं	३	१९	३९	२१	५	१०	०	१४	४	१२	४६	४६	३	१६	५०	४	७	४	२६	५४	५	७	५३	२७
४	बु	३	२०	१७	६	५	१०	५८	३५	४	१३	०	१८	३	१६	४०	२५	७	४	२९	४२	५	७	५०	१६
५	गु	३	२०	५४	५१	५	११	४७	१३	४	१३	१३	५०	३	१६	३०	४६	७	४	३२	३०	५	७	४७	६
६	शु	३	२१	३२	३६	५	१२	२४	३३	४	१३	२७	२२	३	१६	२१	२७	७	४	३५	१८	५	७	४३	५५
७	श	३	२२	१०	२१	५	१३	२	१	४	१३	४०	५४	मा	१६	११	२८	७	४	३८	५	५	७	४०	४४
८	र	३	२२	४८	६	५	१३	३८	५१	४	१३	५४	२७	३	१६	२१	५७	७	४	४०	५३	५	७	३७	३३
९	चं	३	२३	२५	१३	५	१४	१५	२६	४	१४	७	५९	३	१६	५१	४७	७	४	४३	४१	५	७	३४	२२
१०	मं	३	२४	२	१६	५	१४	३४	५२	४	१४	२१	३१	३	१७	२१	१४	७	४	४६	२६	५	७	३१	१२
११	बु	३	२४	३९	२०	५	१४	४३	१८	४	१४	३५	३	३	१७	५०	२७	७	४	४९	९	५	७	२८	१
१२	गु	३	२५	१६	२३	५	१४	५१	५३	४	१४	४८	३६	३	१८	१९	४०	७	४	५१	५२	५	७	२४	५०
१३	शु	३	२५	५३	२७	५	१५	०	२९	४	१५	२	१०	३	१८	४८	५३	७	४	५४	३५	५	७	२१	३९
१४	श	३	२६	३०	३१	व	१५	९	४	४	१५	१५	४४	३	१९	१८	६	७	४	५८	२७	५	७	१८	२८
३०	र	३	२७	७	२८	५	१४	५३	४६	४	१५	२९	१८	३	१९	४७	२०	७	५	२	१९	५	७	१५	१८

ग्रहचार- मंगल- श्लेषा में।। मार्गीबुध- ति. २ सोम को हस्त में रा.शे. ५।३७। ति. १४ शनि को वक्री दि. २।३०।। गुरु- ति. ५ गुरु को पूर्वाफाल्गुनी १ चरण में दि. ४।४२।। वक्रीशुक्र- ति. ४ बुध को पुष्य में प्रा. ६।४७। ति. ७ शनि को मार्गी सा. ५।२९। ति. ८ रवि को श्लेषा में रा. ८।१८।। शनि- अनुराधा १ चरण में।। राहु- उ.फा. ४ चरण में तथा केतु उ.भा. २ चरण में।।

२३ पं० भाद्रपदकृष्ण ८ रवि

अहर्गण २३६

अयनांश २४।३।३५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१	३	५	४	३	७	५	११
१८	२३	२२	१३	१३	१६	४	७	७
२६	२६	४८	३८	५४	२१	४०	३७	३७
२६	४०	६	५१	२७	५७	५३	३३	३३
५८	८१०	३७	३६	१३	२९	२	३	३
८	८	७	३५	३२	५०	४८	११	११
			मा.		मा.			



विविधमुहूर्त्त- ति. १ रवि को शतभिष में आभूषण निर्माण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री शिल्पविद्या औषध सेवन नावनिर्माण वस्तुक्रय वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. २ सोम को पू. भा. में धान्यारोपण शिल्पविद्या वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। उ.भा. में केतुयुति है। ति. ३ मंगल को उ.भा. में पूर्वदोष है। ति. ४ बुध को रेवती में राहुवेध तथा रिक्तादोष है। ति. ५ गुरु को अश्विनी में सूर्यवेध है। भरणी में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। ति. ६ शुक्र को भरणी में पूर्वदोष है। प्रा. ७।२० के बाद भद्रा से पूर्व कृत्तिका में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ७ शनि को प्रा. ६।१७ के बाद रोहिणी में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण विपणि मुहूर्त्त है। ति. ८ रवि को मृगशिरा में दि. ७।३५ तक नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वाटिकारोपण औषधसेवन नावनिर्माण विपणि वाहन खरीदने ऑपरेशन शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ९ सोम को प्रा. ६।३७ के बाद व्यतिपात से पूर्व आर्द्रा में फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १० मंगल को पुनर्वसु में व्यतिपात के बाद सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम-दक्षिण तथा कर्क के चन्द्रमा में पश्चिम दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. ११ बुध को पुनर्वसु में पश्चिम दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। प्रा. ६।९ के बाद पुष्य में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषध सेवन विपणि वाहन खरीदने फसल काटने ☛

तिथि ल.अ.	१ र घं.	मि.	२ चं घं.	मि.	३ मं घं.	मि.	४ बु घं.	मि.	५ गु घं.	मि.	६ शु घं.	मि.	७ श घं.	मि.	८ र घं.	मि.	९ चं घं.	मि.	१० मं घं.	मि.	११ बु घं.	मि.	१२ गु घं.	मि.	१३ शु घं.	मि.	१४ श घं.	मि.	३० र घं.	मि.
सिंह	७	३	७	०	६	५६	६	५३	६	४९	६	४५	६	४२	६	३८	६	३४	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१६	६	१२
कन्या	९	१६	९	१३	९	९	९	६	९	२	८	५८	८	५५	८	५१	८	४७	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२९	८	२५
तुला	११	३२	११	२९	११	२५	११	२२	११	१८	११	१४	११	११	११	७	११	३	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४५	१०	४१
वृश्चिक	१	४९	१	४६	१	४२	१	३९	१	३५	१	३१	१	२८	१	२४	१	२०	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	२	१२	५८
धनु	३	५५	३	५२	३	४८	३	४५	३	४१	३	३७	३	३४	३	३०	३	२६	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	८	३	४
मकर	५	४२	५	३९	५	३५	५	३२	५	२८	५	२४	५	२१	५	१७	५	१३	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५५	४	५१
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कुम्भ	७	१३	७	१०	७	६	७	३	६	५९	६	५५	६	५२	६	४८	६	४४	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२६	६	२२
मीन	८	४१	८	३८	८	३४	८	३१	८	२७	८	२३	८	२०	८	१६	८	१२	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५४	७	५०
मेष	१०	१८	१०	१५	१०	११	१०	८	१०	४	१०	०	९	५७	९	५३	९	४९	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३१	९	२७
वृष	१२	१४	१२	११	१२	७	१२	४	१२	०	११	५६	११	५३	११	४९	११	४५	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	११	२७	११	२३
मिथुन	२	२८	२	२५	२	२१	२	१८	२	१४	२	१०	२	७	२	३	१	५९	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४१	१	३७
कर्क	४	४६	४	४३	४	३९	४	३६	४	३२	४	२८	४	२५	४	२१	४	१७	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५९	३	५५

२४ पं० भाद्रपदकृष्ण ३० रवि

अहर्गण २४३

अयनांश २४।३।३६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	४	३	५	४	३	७	५	११
२५	२२	२७	१४	१५	१९	५	७	७
१४	५०	७	५३	२९	४७	२	१५	१५
८	१३	२८	४६	१८	२०	१९	१८	१८
५८	७२७	३६	४४	१३	२९	३	३	३
२३	४९	५४	४२	२१	१३	५२	११	११
			व.		मा.			



❖दूर्वाष्टमी ८ (मध्याह्न व्यापिनी)। स्त्रीयों के लिए आवश्यक व्रत। यायीजययोग प्रा. ६।१७ से दि. ९।० तक। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग प्रा. ६।१७ से रा.शे. ५।३५ तक। त्रिपुष्करयोग प्रा. ६।१७ तक। रवियोग प्रा. ६।१७ तक। ♒ अमृतसिद्धियोग प्रा. ७।२० तक। ♀सर्वार्थसिद्धियोग दि. १।२७ से।

मूलविचार- रेवती/अश्विनी- ति. ३ मंगल को दि. ११।४७ से। ति. ५ गुरु को दि. ८।३८ तक।
श्लेषा/मघा- ति. १२ गुरु को प्रा. ७।२० से। ति. १४ शनि को दि. ११।४ तक।
पञ्चक विचार- ति. ४ बुध को दि. १०।९ तक।

चन्द्रमा को अर्घ्य देने का मन्त्र- क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव। गृहाणार्घ्यं शशाङ्केनदंरोहिणी सहितो मम।।१।। ज्योत्स्नानां पतये तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः। नमस्ते रोहिणीकान्त सुधावास नमोस्तुते।।२।। नभो मण्डलदीपाय शिरोरत्नाय धूर्जटे। कलाभिर्वर्द्धमानाय नमश्चन्द्राय चारवे।।३।। अगस्त्य को अर्घ्य देने का मन्त्र-(ऋग्वेदसंहितायां)- अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः। उभौ वर्णावृषिपुत्रः पुपोषसत्यादेवेष्वशिषोजगाम।। जन्माष्टमी में विशेष- भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि जब रोहिणी नक्षत्र से संयुक्त होती है तो उसे कृष्ण जयन्ती के नाम से जाना जाता है। विष्णु धर्मोत्तरपुराण के अनुसार- अर्धरात्रि में रोहिणी नक्षत्र प्राप्त होने पर सदा कृष्णाष्टमी होती है। इसमें भगवान कृष्ण की अर्चना तीन जन्मों के पापों को नष्ट कर देती है। मध्यरात्रि में अष्टमी तिथि के रोहिणी नक्षत्र से युक्त होने पर बालरूपी चतुर्भुज भगवान कृष्ण उत्पन्न हुए थे। अतः भाद्रपद कृष्ण पक्ष में जब रोहिणी नक्षत्र से युक्त अष्टमी तिथि अर्द्ध रात्रि में दृश्य होती है तो जन्माष्टमी का मुख्य काल होता है। तथा कृष्ण पक्ष की अष्टमी जब भी रोहिणी से युक्त होती है तो उसे जयंती कहते है, यह तिथि समस्त पापों का हरण करने वाली होती है। तिथ्यन्त या तिथि एवं नक्षत्र के अन्त में जन्माष्टमी व्रत का पारण करना चाहिए परन्तु "यामद्वयोर्ध्वगामिन्यां प्रातरेव हि पारणम्" के अनुसार द्वितीय दिन दो याम (प्रहर) से अधिक अष्टमी रहने पर भी प्रातः काल की स्मार्त्त जनों को जन्माष्टमी व्रत का पारणा कर लेना चाहिए। सभी व्रतों का पारणा समय- व्रत, तिथि अथवा व्रत उत्सव के अन्त में व्रत रखने वालों को पारणा कर लेना चाहिए।

☛ का मुहूर्त्त है। ति. १२ गुरु को पुष्य में पुंसवनसीमन्त (त्रयोदशी में) जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन (त्रयोदशी में) नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री दक्षिण को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (त्रयोदशी में) नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि व्यापार वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। श्लेषा में भौमयुति है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।

भाद्रपदशुक्लपक्ष।।

राष्ट्रीय तिथि २३ भाद्रपद से ६ आश्विन तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक १४ सितम्बर से २८ तक सन् २०१५ ई.।।

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.		घं. मि.	नक्षत्र	घ. प.		घं. मि.	योग	घ. प.		घं. मि.	करण	घ. प.	करण	घ. प.	योग	अं.	फ. सौ. ने. रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य	क्रान्ति उ. द. + -	रे. अं. - मि.	चन्द्रास्त स्टै. टा.
३० ३५	१	चं	१७ ४९	दि	१ १	उ.फा.	२५ २२	दि	४ २	शुभ	२५ ४४	दि	४ ११	वव	१७ ४९	वा	५० २४	श्रीवत्स	१४	१६ २८ २८ २३			५ ५३	६ ७	४ २६ १२ ३१	३ ४४	- ६	६ ४१
३० ३१	२	मं	२२ ५८	दि	३ ५	हस्त	३१ ५३	सा	६ ३९	शुक्ल	२७ १३	दि	४ ४७	कौ	२२ ५८	तै	५५ २३	सौम्य	१५	१७ २९ २९ २४			५ ५४	६ ६	४ २७ १० ५७	३ २१	- ६	७ १६
३० २७	३	बु	२७ ४८	सा	५ २	चित्रा	३७ ५९	रा	९ ७	ब्रह्म	२८ २६	सा	५ १७	गर	२७ ४८	व	५९ ५३	कालदण्ड	१६	१८ ३० ३० २५	तुला	७।५३	५ ५५	६ ५	४ २८ ९ २४	२ ५८	- ७	७ ५२
३० २४	४	गु	३१ ५८	सा	६ ४२	स्वाती	४३ २६	रा	११ १७	ऐन्द्र	२९ ९	सा	५ ३५	भ	३१ ५८	वव	६० ०	सुस्थिर	१७	१९ ३१ ३१ २६			५ ५५	६ ५	४ २९ ७ ५४	२ ३५	- ७	८ ३०
३० २०	५	शु	३५ ७	रा	७ ५९	विशाखा	४७ ५१	रा	१ ४	वैधृति	२९ ६	सा	५ ३४	वव	३ ३३	वा	३५ ७	मातङ्ग	१८	२० १ १ २७	वृश्चिक	३१।४५	५ ५६	६ ४	५ ० ६ २६	२ ११	- ८	९ ११
३० १७	६	श	३७ ११	रा	८ ४९	अनुराधा	५१ १०	रा	२ २५	विष्कुम्भ	२८ ११	सा	५ १३	कौ	६ ९	तै	३७ ११	अमृत	१९	२१ २ २ २८			५ ५७	६ ३	५ १ ५ ०	१ ४८	- ८	९ ५४
३० १३	७	र	३७ ५५	रा	९ ७	ज्येष्ठा	५३ ११	रा	३ १३	प्रीति	२६ १५	दि	४ २७	गर	७ ३३	व	३७ ५५	काण	२०	२२ ३ ३ २९	धनु	५३।११	५ ५७	६ ३	५ २ ३ ३७	१ २५	- ८	१० ४२
३० ९	८	चं	३७ १९	रा	८ ५४	मूल	५३ ५७	रा	३ ३३	आयुष्मान	२३ २०	दि	३ १८	भ	७ ३७	वव	३७ १९	लुम्बक	२१	२३ ४ ४ ३०			५ ५८	६ २	५ ३ २ १६	१ २	- ९	११ ३३
३० ५	९	मं	३५ ३२	रा	८ १२	पू.षा.	५३ ३२	रा	३ २४	सौभाग्य	१९ २४	दि	१ ४५	वा	६ २६	कौ	३५ ३२	मित्र	२२	२४ ५ ५ ३१			५ ५९	६ १	५ ४ ० ५७	० ३८	- ९	१२ २८
३० २	१०	बु	३२ ३९	रा	७ ४	उ.षा.	५२ १	रा	२ ४८	शोभन	१४ ३४	दि	११ ५०	तै	४ ६	गर	३२ ३९	वज्र	२३	२५ ६ ६ १	मकर	८।९	६ ०	६ ०	५ ४ ५९ ३९	० ३५	- ९	१ २८
२९ ५८	११	गु	२८ ४८	सा	५ ३१	श्रवण	४९ ४४	रा	१ ५४	अतिगण्ड	८ ५५	दि	९ ३४	व	० ४४	भ	२८/५६ ४८/२८	ध्वज	२४	२६ ७ ७ २			६ ०	६ ०	५ ५ ५८ २५	उ. ८	- १०	२ २९
२९ ५५	१२	शु	२४ ७	दि	३ ४०	धनिष्ठा	४६ ३४	रा	१२ ३९	सुकर्मा	२/५७ ३५/३	प्रा	७/४ ३/१६	वा	२४ ७	कौ	५१ २८	धाता	२५	२७ ८ ८ ३	कुम्भ	१८।९	६ १	५ ५९	५ ६ ५७ १३	द. १२	- १०	३ ३४
२९ ५१	१३	श	१८ ४९	दि	१ ३४	शतभिष	४२ ५५	रा	११ १२	शूल	४८ १५	रा	१ २०	तै	१८ ४९	गर	४५ ५६	आनन्द	२६	२८ ९ ९ ४			६ २	५ ५८	५ ७ ५६ ३	० ५५	- १०	४ ३९
२९ ४७	१४	र	१३ २	दि	११ १६	पू.भा.	३८ ५२	रा	९ ३६	गण्ड	४० ३६	रा	१० १७	व	१३ २	भ	४० १	चर	२७	२९ १० १० ५	मीन	२४।५३	६ ३	५ ५७	५ ८ ५४ ५६	१ १९	- ११	५ ४५
२९ ४४	१५	चं	७ ०	दि	८ ५१	उ.भा.	३४ ३८	रा	७ ५४	वृद्धि	३२ ४७	रा	७ १०	वव	७ ०	वा	३३ ५७	गद	२८	३० ११ ११ ६			६ ३	५ ५७	५ ९ ५३ ५१	१ ४२	- ११	- -

1. चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। ⊙उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का सूर्य सा. ५।१०। स्त्री.स्त्री.-सू. सू. योग जम्बुक वाहन
2. मु. जिलहिज १२ हिजरी सन् १४३६। श्री शंकरदेव तिथि (असम)। हस्तनक्षत्र में सामवेदियों का उपाकर्म (सिंह के सूर्य में)। ■रवियोग रा. ९।७ से।
3. भ.रा.शे.५।५२ से। तुलाराशि दि. ७।५३। हरितालिका ३ व्रत (तीज)। स्त्रियों के लिए आवश्यक व्रत। आज चन्द्रदर्शन वर्जित है। चन्द्रास्त रा.७।५२। वाराहावतार ३। मन्वादि ३।■
4. भ. सा. ६।४२ तक। वैनायकी वरद् श्रीगणेश ४ व्रत। श्री गणेश उत्सव प्रारम्भ (महाराष्ट्र)। श्री विश्वकर्मा पूजा। विनायक चतुर्थी (तमिलनाडु)। ♏
5. वृश्चिकराशि सा. ६।३८। ऋषिपञ्चमी ५ व्रत। मध्याह्नकाल में सप्तऋषि पूजा। सात वर्षों तक ऋषि प्रतिमाओं का पूजन कर ब्राह्मण को दान देना चाहिये।❖
6. लोलार्कषष्ठी ६ व्रत। काशी में भदैनी स्थित लोलार्ककुण्ड में पुत्रार्थियों को स्नान करना चाहिये। लोलार्केश्वर दर्शन। श्री सूर्यषष्ठी ६ व्रत। देव ६।□
7. भ. रा. ९।७ से। धनुराशि रा. ३।१३। सन्तानसप्तमी ७। अपराजिता पूजा ७। मुक्ताभरण ७। मध्याह्न में ज्येष्ठा देवी का पूजन। महारविवार व्रत। आज नमक
8. भ. दि. ९।१ तक। राधाष्टमी ८। महालक्ष्मी व्रतारम्भ १६ दिनों तक। प्रतिदिन काशी में लक्ष्मी कुण्ड में स्नान तथा दर्शन करना चाहिए। मूल में ज्येष्ठा देवी
9. श्रीचन्द्रजयन्ती ९ (श्रौतशाखा उदासीन)। महानन्दानवमी ९। रवियोग समस्त। सौम्यानाड़ी अधिपति गुरु अल्पवृष्टियोग। यायीजययोग दि. १।१ तक।
10. मकरराशि दि. ९।१६। दशावतार १० व्रत। राष्ट्रीयआश्विनमास दि. ३०। ⊙सायन तुलाराशि का सूर्य रा.शे. ५।१०। रवियोग रा. २।४८ तक।
11. भ.प्रा. ६।१८ से सा.५।३१ तक। पद्मा ११ एकादशी व्रत सबका। कर्मा एकादशी (झारखण्ड)। दोलग्यारस (मध्यप्रदेश)। वामनद्वादशी १२। श्रवण द्वादशी १२ व्रत।★
12. कुम्भराशि दि. १।१७। प्रदोष १२ व्रत। श्रीविष्णुपरिवर्तनोत्सव। दहिदान। दुग्धत्याग व्रतारम्भ। शाक्रध्वजोत्थान। पञ्चक प्रारम्भ दि. १।१७। रवियोग रा. १२।३९ से।
13. रवियोग रा. ११।१२ तक। का विसर्जन। रवियोग रा. ३।३३ से। ★श्री विष्णुशृंखलयोग।
14. भ. दि. ११।१६ से रा. १०।३ तक। मीनराशि दि. ४।०। व्रत की १५ पूर्णिमा। अनन्त १४ चतुर्दशी व्रतम्। आज नमक रहित भोजन खाना चाहिए।◆
15. स्नान-दान की १५ पूर्णिमा। उमामाहेश्वर व्रत। अनन्त व्रत की भाँति। लोकपालपूजा। महालयारम्भ। पितृपक्षविहित प्रतिपद् श्राद्ध। तर्पणआदि प्रारंभ।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				वक्रीबुध				गुरु				मार्गीशुक्र				शनि				राहु			
१	चं	३	२७	४४	२२	५	१४	३०	२८	४	१५	४२	४७	३	२०	१६	३३	७	५	६	११	५	७	१२	७
२	मं	३	२८	२१	१७	५	१४	७	१५	४	१५	५५	१५	३	२०	४५	४६	७	५	१०	३	५	७	८	५६
३	बु	३	२८	५८	११	५	१३	४४	१	४	१६	७	४३	३	२१	१४	५९	७	५	१३	५५	५	७	५	४५
४	गु	३	२९	३५	५	५	१३	२०	४८	४	१६	२०	१२	३	२१	४४	१२	७	५	१७	४७	५	७	२	३४
५	शु	४	०	१२	०	५	१२	३२	१	४	१६	३२	४०	३	२२	१३	२५	७	५	२१	३९	५	६	५९	२४
६	श	४	०	४८	५४	५	११	४०	२९	४	१६	४५	८	३	२२	४२	३९	७	५	२५	३२	५	६	५६	१३
७	र	४	१	२५	४८	५	१०	४८	५८	४	१६	५७	३६	३	२३	११	५२	७	५	२९	२४	५	६	५३	२
८	चं	४	२	२	४२	५	९	५७	२७	४	१७	१०	४	३	२३	४१	३०	७	५	३३	१६	५	६	४९	५१
९	मं	४	२	३९	३७	५	९	५	५७	४	१७	२२	३२	३	२४	११	१५	७	५	३७	८	५	६	४६	४०
१०	बु	४	३	१६	३१	५	८	१४	२६	४	१७	३५	०	३	२४	४१	०	७	५	४१	०	५	६	४३	२९
११	गु	४	३	५३	२५	५	७	२२	५५	४	१७	४७	२९	३	२५	१०	४५	७	५	४४	४८	५	६	४०	१९
१२	शु	४	४	३०	२०	५	६	३१	२४	४	१७	५९	५७	३	२५	४०	३०	७	५	४८	३६	५	६	३७	८
१३	श	४	५	७	१४	५	५	३९	५३	४	१८	१२	२५	३	२६	१०	१५	७	५	५२	२३	५	६	३३	५७
१४	र	४	५	४४	८	५	४	५४	५९	४	१८	२४	५४	३	२६	४०	०	७	५	५६	३६	५	६	३०	४६
१५	चं	४	६	२१	२	५	४	३१	५८	४	१८	३७	२२	३	२७	९	४५	७	६	१	३३	५	६	२७	३५

ग्रहचार- मंगल- ति. ४ गुरु को मघा तथा सिंहराशि में रा. १०।७।। वक्रीबुध- ति. ७ रवि को उत्तराफाल्गुनी में रा. ४।४६।। गुरु- ति. ५ शुक्र को पूर्वाफाल्गुनी २ चरण में रा. ८।३।। मार्गीशुक्र- श्लेषा में।। शनि- अनुराधा १ चरण में।। राहु- ति. ११ गुरु को उ.फा. ३ चरण में तथा केतु उ.भा. १ चरण में दि. ८।२३।।

२५पं० भाद्रपदशुक्ल ८ सोम

अहर्गण २५१

अयनांश २४।३।३७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	८	४	५	४	३	७	५	११
३	१	२	९	१७	२३	५	६	६
२	२९	२	५७	१०	४१	३३	४९	४९
१६	४७	४२	२७	४	३०	१६	५१	५१
५८	७८९	३६	५१	१२	२९	३	३	३
४१	५४	५५	३०	२८	४५	५२	११	११
			व.		मा.			



विविधमुहूर्त्त- ति. १ सोम को उ.फा. में सूर्ययुति है। ति. २ मंगल को हस्त में सूर्यभोग्य है। सा. ६।३९ के बाद चित्रा में लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण वस्तुक्रय ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. ३ बुध को चित्रा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण अन्नप्राशन नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि व्यापार फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ४ गुरु को स्वाती में रिक्तादोष तथा वैधृति है। ति. ५ शुक्र को वैधृति के बाद विशाखा में नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति. ६ शनि को अनुराधा में शनियुति है। ति. ७ रवि को ज्येष्ठा में भद्रा पूर्व पशुओं की खरीद-बिक्री ऑपरेशन शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ सोम को भद्रा बाद मूल में शिशुताम्बूलभक्षण दँवरी धान्यारोपण शिल्पविद्या औषधसेवन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ मंगल को पू.षा. में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १० बुध को उ.षा. में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन गर्भाधान सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण शिल्पविद्या फसल काटने का मुहूर्त्त है। रा. २।४८ के बाद श्रवण में पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. ११ गुरु को श्रवण में भद्रा पूर्व पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग पूर्व दिशा की यात्रा दँवरी औषधसेवन नावनिर्माण वस्तुक्रय वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १२ शुक्र को धनिष्ठा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण गर्भाधान नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री☛

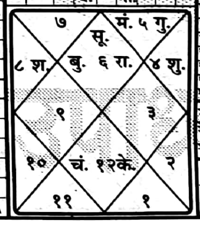
तिथि ल.अ.	१ चं घं. मि.	२ मं घं. मि.	३ बु घं. मि.	४ गु घं. मि.	तिथि ल.अ.	५ शु घं. मि.	६ श घं. मि.	७ र घं. मि.	८ चं घं. मि.	९ मं घं. मि.	१० बु घं. मि.	११ गु घं. मि.	१२ शु घं. मि.	१३ श घं. मि.	१४ र घं. मि.	१५ चं घं. मि.
सिंह	६ ८	६ ५	६ १	५ ५८	कन्या	८ ८	८ ४	८ ०	७ ५७	७ ५३	७ ५०	७ ४६	७ ४२	७ ३८	७ ३५	७ ३१
कन्या	८ २१	८ १८	८ १४	८ ११	तुला	१० २४	१० २०	१० १६	१० १३	१० ९	१० ६	१० २	९ ५८	९ ५४	९ ५१	९ ४७
तुला	१० ३७	१० ३४	१० ३०	१० २७	वृश्चिक	१२ ४१	१२ ३७	१२ ३३	१२ ३०	१२ २६	१२ २३	१२ १९	१२ १५	१२ ११	१२ ८	१२ ४
वृश्चिक	१२ ५४	१२ ५१	१२ ४७	१२ ४४	धनु	२ ४७	२ ४३	२ ३९	२ ३६	२ ३२	२ २९	२ २५	२ २१	२ १७	२ १४	२ १०
धनु	३ ०	२ ५७	२ ५३	२ ५०	मकर	४ ३४	४ ३०	४ २६	४ २३	४ १९	४ १६	४ १२	४ ८	४ ४	४ १	३ ५७
मकर	४ ४७	४ ४४	४ ४०	४ ३७	कुम्भ	६ ५	६ १	५ ५७	५ ५४	५ ५०	५ ४७	५ ४३	५ ३९	५ ३५	५ ३२	५ २८
ल.अ.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	ल.अ.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
कुम्भ	६ १८	६ १५	६ ११	६ ८	मीन	७ ३३	७ २९	७ २५	७ २२	७ १८	७ १५	७ ११	७ ७	७ ३	७ ०	६ ५६
मीन	७ ४६	७ ४३	७ ३९	७ ३६	मेष	९ १०	९ ६	९ २	८ ५९	८ ५५	८ ५२	८ ४८	८ ४४	८ ४०	८ ३७	८ ३३
मेष	९ २३	९ २०	९ १६	९ १३	वृष	११ ६	११ २	१० ५८	१० ५५	१० ५१	१० ४८	१० ४४	१० ४०	१० ३६	१० ३३	१० २९
वृष	११ १९	११ १६	११ १२	११ ९	मिथुन	१ २०	१ १६	१ १२	१ ९	१ ५	१ २	१२ ५८	१२ ५४	१२ ५०	१२ ४७	१२ ४३
मिथुन	१ ३३	१ ३०	१ २६	१ २३	कर्क	३ ३८	३ ३४	३ ३०	३ २७	३ २३	३ २०	३ १६	३ १२	३ ८	३ ५	३ १
कर्क	३ ५१	३ ४८	३ ४४	३ ४१	सिंह	५ ५२	५ ४८	५ ४४	५ ४१	५ ३७	५ ३४	५ ३०	५ २६	५ २२	५ १९	५ १५

२६पं० भाद्रपदशुक्ल १५ सोम

अहर्गण २५८

अयनांश २४।३।३८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	११	४	५	४	३	७	५	११
९	८	६	४	१८	२७	६	६	६
५३	२३	२१	३१	३७	९	१	२७	२७
५१	७	२	५८	२२	४५	३३	३५	३५
५८	८६०	३६	२३	१२	२९	४	३	३
५७	४४	५५	१३	२१	४५	५७	११	११
			व.		मा.			



♏ ⊙सं.कन्याराशि का सूर्य रा. ३।१७। मु.४५ वृहत्ती। फल सस्ती। बाद का ६ घन्टा २४ मिनट पुण्यकाल। गृहवस्त्रदान। गोदावरी में स्नान। शरद् ऋतु प्रारम्भ। यायीजययोग सा.६।४२ से रा.११।१७ तक। रवियोग रा.११।१७ तक। ❖आज बीना जोते भूमि का साग खाना चाहिये। रक्षापञ्चमी (बंगाल)। सौरआश्विनमासारम्भ। रवियोग रा. १।४ से। □स्वामिकार्तिकेय दर्शन। ब्रह्म हत्या आदि के पाप का नाश होता है। अनुराधा नक्षत्र में ज्येष्ठा देवी का आवाहन। यायीजययोग रा. ८।४९ से रा. २।२५ तक। रवियोग रा. २।२५ तक। रहित भोजन खाना चाहिए। भानुसप्तमी ७। सूर्यग्रहण के समान फल मिलता है। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ३।१३ से। ◆श्रीशिवपरिवर्तनोत्सव। नान्दीमातामह श्राद्धम् -पार्वण विधि की भाँति। यायीजययोग रा. ९।३६ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ९।३६ से। ⊙हस्त नक्षत्र का सूर्य दि. ८।३३। स्त्री.पु-सू.सू. योग चातक वाहन सौम्या नाड़ी अधिपति गुरु खण्डवृष्टियोग। यायीजययोग समस्त।

हरित तालिका निर्णय- भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से युक्त तृतीया तिथि (हरित तालिका) वैधव्यदोष नाशक तथा पुत्र-पौत्रादि को बढ़ाने वाली होती है। भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को चन्द्रदर्शन दोष की शान्ति के लिए मन्त्र- सिंह:प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हत:। सुकुमारकुमारोदीस्तवह्येष स्यमन्तक:।। पञ्चमी को अपामार्ग से दन्तधावन करने का मन्त्र- आयुर्बलं यशो वर्च: प्रजापशुवसूनि च। ब्रह्मप्रज्ञां च मेधाञ्चत्वं नो देहि वनस्पते।।१।। मुखदौर्गन्ध्यनाशाय दन्तानाञ्च विशुद्धये। ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम्।।२।। षष्ठी में सूर्य पूजन- (निर्णय सिन्धु) भाद्रपद शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि में तीर्थ स्नान कर सूर्यपूजन एवं पञ्चगव्य पान से अश्वमेधयज्ञ से भी अधिक फल प्राप्त होता है। पञ्चगव्य पान करने का मन्त्र- यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।। श्रवण नक्षत्र युक्त द्वादशी में विष्णु का परिवर्तन उत्सव- रात्रि काल में भगवान विष्णु का षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करना चाहिए। प्रार्थना मन्त्र- वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वेन परिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव।। श्रवण द्वादशी यदि उत्तराषाढ़ा से युक्त हो तो उसका व्रत नहीं करना चाहिए। उत्तराषाढ़ा से युक्त श्रवण नक्षत्र यदि मध्याह्न में प्राप्त हो तो भी व्रत न करें। क्योंकि यह आसुरी तारा हो जाती है तथा पूर्व कृत पुण्यों को भी नष्ट कर देती है। यदि यह श्रवण युक्त द्वादशी बुधवार को प्राप्त होती है तो उसकी विशेष महत्ता होती है, तथा इसमें दिया गया दान अक्षय होता है। अनन्त चतुर्दशी निर्णय- त्रिमुहूर्तोदय काल तथा मध्याह्न व्यापिनी चतुर्दशी ही इस पक्ष में ग्राह्य है। इस सन्दर्भ में केवल 'माधव' ही उदयकाल व्यापिनी तथा शेष दिवादास, प्रतापमार्त्तण्डकार, विश्वरूप एवं कालादर्श आदि विद्वान मध्याह्न व्यापिनी स्वीकार करते हैं। उपर्युक्त वचनद्वय निर्णय सिन्धु से गृहीत है।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. ६ शनि को रा. २।२५ से। ति. ८ सोम को रा. ३।३३ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. १५ सोम को रा. ७।५४ से।
पञ्चक विचार- ति. १२ शुक्र को दि. १।१७ से।

☛नवान्नभक्षण वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १३ शनि को दि.१।३४ तक शतभिष में वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. १४ रवि को पू.भा. में चतुर्दशी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १५ सोम को उ.भा. में केतुयुति है। रेवती में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है।

आश्विनकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ७ आश्विन से २० तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक २९ सितम्बर से १२ अक्टूबर तक सन् २०१५ ई.।।

दि.मा. घ.	प.	श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल शरद् ऋतु।।																									योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे. -	अं. मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
२९	४०	१	मं	० ५४	५४ ४	प्रा	६ ४	२६ ३	रेवती	३०	३०	सा	६	१६	ध्रुव	२५	४	दि	४	६	कौ	०	५४	तै	३० ५४	५६ ५६	शुभ	२१	१	१२	१२	७	मेष	३०।३०	६	४	५	५६	५	१०	५२	४८	२	५	-	११	६	५३
२९	३६	३	बु	४९	२१	रा	१	४९	अश्विनी	२६	३६	दि	४	४३	व्याघात	१७	३१	दि	१	५	व	२२	१०	भ	४९	२१	मृत्यु	३०	२	१३	१३	८			६	५	५	५५	५	११	५१	४८	२	२९	-	१२	७	४२
२९	३२	४	गु	४४	१६	रा	११	४८	भरणी	२३	८	दि	३	२१	हर्षण	१०	१७	दि	१०	१३	बव	१६	४९	वा	४४	१६	पद्म	१	३	१४	१४	९	वृष	३७।२६	६	६	५	५४	५	१२	५०	४९	२	५२	-	१२	८	३२
२९	२९	५	शु	३९	५६	रा	१०	४	कृत्तिका	२०	२१	दि	२	१४	वज्र	३ ५३	३३ ५७	प्रा	७ ५	३१ १	कौ	१२	६	तै	३९	५६	छत्र	२	४	१५	१५	१०			६	६	५	५४	५	१३	४९	५३	३	१५	-	१२	९	२४
२९	२५	६	श	३६	२७	रा	८	४२	रोहिणी	१८	२६	दि	१	२९	व्यतिपात	५२	११	सा	२	५९	गर	८	१२	व	३६	२७	श्रीवत्स	३	५	१६	१६	११	मिथुन	४७।५५	६	७	५	५३	५	१४	४९	०	३	३९	-	१३	१०	१७
२९	२१	७	र	३४	१	रा	७	४४	मृगशिरा	१७	२४	दि	१	६	वरीयान	४७	४१	रा	१	१२	भ	५	१४	बव	३४	१	सौम्य	४	६	१७	१७	१२			६	८	५	५२	५	१५	४८	८	४	२	-	१३	११	११
२९	१८	८	चं	३२	४८	रा	७	१५	आर्द्रा	१७	३२	दि	१	९	परिघ	४४	१०	रा	११	४८	वा	३	२५	कौ	३२	४८	कालदण्ड	५	७	१८	१८	१३			६	८	५	५२	५	१६	४७	२०	४	२५	-	१३	१२	५
२९	१५	९	मं	३२	४९	रा	७	१७	पुनर्वसु	१८	५३	दि	१	४२	शिव	४१	३९	सा	१०	४९	तै	२	४९	गर	३२	४९	सुस्थिर	६	८	१९	१९	१४	कर्क	३।३३	६	९	५	५१	५	१७	४६	३३	४	४८	-	१४	१२	५७
२९	११	१०	बु	३४	१३	रा	७	५१	पुष्य	२१	३१	दि	२	४६	सिद्ध	४०	३१	रा	१०	१४	व	३	३१	भ	३४	१३	मातङ्ग	७	९	२०	२०	१५			६	१०	५	५०	५	१८	४५	४९	५	११	-	१४	१	५०
२९	७	११	गु	३६	४७	रा	८	५४	श्लेषा	२५	२०	दि	४	१९	साध्य	३९	३३	रा	१०	०	बव	५	३०	वा	३६	४७	अमृत	८	१०	२१	२१	१६	सिंह	२५।२०	६	११	५	४९	५	१९	४५	८	५	३४	-	१४	२	४०
२९	३	१२	शु	४०	३१	रा	१०	२३	मघा	३०	१६	सा	६	१७	शुभ	३९	५०	रा	१०	७	कौ	८	३९	तै	४०	३१	काण	९	११	२२	२२	१७			६	११	५	४९	५	२०	४४	२८	५	५७	-	१४	३	३१
२९	०	१३	श	४५	६	रा	१२	१४	पू.फा.	३६	३	रा	८	३७	शुक्ल	४०	४२	रा	१०	२९	गर	१२	४९	व	४५	६	लुम्बक	१०	१२	२३	२३	१८	कन्या	५२।३८	६	१२	५	४८	५	२१	४३	५१	६	२०	-	१५	४	२०
२८	५६	१४	र	५०	१२	रा	२	१८	उ.फा.	४२	२४	रा	११	११	ब्रह्म	४१	५९	रा	११	१	भ	१७	३९	श	५०	१२	मित्र	११	१३	२४	२४	१९			६	१३	५	४७	५	२२	४३	१६	६	४२	-	१५	५	१०
२८	५२	३०	चं	५५	२८	रा	४	२५	हस्त	४८	५६	सा	१	४८	ऐन्द्र	४३	२४	रा	११	३६	च	२२	५०	नाग	५५	२८	वज्र	१२	१४	२५	२५	२०			६	१४	५	४६	५	२३	४२	४३	७	५	-	१५	६	०

मेषराशि सा. ६।१६। आश्विनमास में चातुर्मास्य व्रती को दूध पीना वर्जित है। नात्रत्यागस्तक्रादीनाम्। द्वितीयाश्राद्ध। अशून्यशयन २ व्रत। चन्द्रोदय रा. ६।५३।♏
भ. दि. २।५७ से रा. १।४९ तक। तृतीया श्राद्ध। सायं ललितादेवी यात्रा।

☛एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।

वृषराशि रा. ९।४। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।३२। चतुर्थी श्राद्ध। भरणी श्राद्ध। पार्वण विधि की भाँति। पितृपक्ष में भरणी श्राद्ध करने से □
श्रीचन्द्रषष्ठी ६ व्रत (चन्द्रोदय व्यापिनी)। चन्द्रोदय रा. ९।२४। पञ्चमी श्राद्ध। महात्मागाँधी-लालबहादुरशास्त्री जयन्ती। यमघंटयोग दि. २।१४ से।
भ. रा. ८।४२ से। मिथुनराशि रा. १।१७। षष्ठी श्राद्ध। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १।२९ तक। अमृतसिद्धियोग दि. १।२९ तक। द्विपुष्करयोग रा. ८।४२ से। रवियोग दि. १।२९ से।
भ. दि. ८।१४ तक। सप्तमी श्राद्ध। महालक्ष्मी ८ व्रत। चन्द्रोदय रा. ११।११। लक्ष्मीकुण्ड स्नान समाप्ति। भानुसप्तमी ७। सूर्यग्रहण के समान फल मिलता है।◆
जीवत्पुत्रिका ८ व्रत। जीमूतवाहनपूजा। अष्टमी श्राद्धम्। गया मध्याष्टमी ८। यायीजययोग रा. ७।१५ से। ◆द्विपुष्करयोग दि. १।६ तक। रवियोग दि. १।६ तक।
कर्कराशि दि. ७।३४। जीवत्पुत्रिका व्रत की पारणा। मातृनवमी ९। सौभाग्यवती स्त्रीयों का श्राद्ध। अन्वष्टका श्राद्ध।
भ. दि. ७।३४ से रा. ७।५१ तक। दशमी श्राद्ध। ■खर वाहन नीरा नाड़ी अधिपति शुक्र अल्पवृष्टियोग। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। अमृतसिद्धियोग रा. ११।११ से।
सिंहराशि दि. ४।१९। इन्दिरा ११ एकादशी व्रत सबका। एकादशी श्राद्ध। यायीजययोग दि. ४।१९ तक। □पुण्य मिलता है। इस श्राद्ध को करने से गया श्राद्ध के समान
द्वादशी श्राद्ध। सन्यासि-यति वैष्णवों का श्राद्ध। मघा श्राद्ध। स्थायीजययोग रा. १०।२३ तक। फल मिलता है। अक्टूबर १०। यमघंटयोग दि. ३।२१ से।
भ. रा. १२।१४ से। कन्याराशि रा. ३।१५। त्रयोदशी श्राद्ध। शनिप्रदोष १३ व्रत। पुत्र प्राप्ति के लिए। यायीजययोग रा. ८।३७ से रा. १२।१४ तक।
भ. दि. १।१७ तक। शस्त्रादि से मृत व्यक्तियों का १४ चतुर्दशी श्राद्ध। मासशिवरात्रि १४ व्रत। ☉चित्रा नक्षत्र का सूर्य रा. ९।३। स्त्री. स्त्री.-सू.सू. योग ■
स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। सोमवती अमावस्या। सोमवती अमावस्या के दिन पीपल वृक्ष के नीचे भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित कर विधानपूर्वक❖

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				वक्रीबुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	मं	४	६	५७	५७	५	४	८	४५	४	१८	४९	५२	३	२७	३९	३०	७	६	६	३०	५	६	२४	२५
३	बु	४	७	३४	५१	५	३	४६	३२	४	१९	२	२०	३	२८	२०	५९	७	६	११	२६	५	६	२१	१४
४	गु	४	८	११	४६	५	३	२२	१९	४	१९	१४	३५	३	२९	१५	२०	७	६	१६	२३	५	६	१८	३
५	शु	४	८	४८	४२	मा	३	११	४०	४	१९	२६	४२	४	०	९	४१	७	६	२१	२०	५	६	१४	५२
६	श	४	९	२४	५८	५	३	२०	२९	४	१९	३८	४९	४	१	२	५०	७	६	२६	१६	५	६	११	४१
७	र	४	१०	१	१२	५	३	२९	४	४	१९	५०	५६	४	१	५८	१३	७	६	३१	१३	५	६	८	३२
८	चं	४	१०	३७	२७	५	३	३७	४०	४	२०	३	३	४	२	५२	३०	७	६	३६	२०	५	६	५	२०
९	मं	४	११	१३	४२	५	३	४६	१५	४	२०	१५	९	४	३	४६	४६	७	६	४१	६	५	६	२	९
१०	बु	४	११	४९	५६	५	४	१०	३	४	२०	२७	१६	४	४	४१	२	७	६	४६	३	५	५	५८	५८
११	गु	४	१२	२६	११	५	४	४६	४७	४	२०	३९	२३	४	५	३५	१९	७	६	५१	०	५	५	५५	४७
१२	शु	४	१३	२	२६	५	५	२३	२२	४	२०	५१	३०	४	६	२९	३५	७	६	५५	५६	५	५	५२	३७
१३	श	४	१३	३८	४१	५	५	५९	५६	४	२१	३	३७	४	७	२३	५१	७	७	०	५०	५	५	४९	२६
१४	र	४	१४	१४	५५	५	६	३६	३१	४	२१	१५	४४	४	८	१८	७	७	७	५	४४	५	५	४६	१५
३०	चं	४	१४	५१	१०	५	७	२६	४९	४	२१	२७	५०	४	९	१२	२४	७	७	१०	३७	५	५	४३	४

ग्रहचार- मंगल- ति. १२ शुक्र को पूर्वाफाल्गुनी में सा. ५।४९।। वक्रीबुध- ति. ५ शुक्र को मार्गी में रा. ७।१४।। गुरु- ति. ७ रवि को पूर्वाफाल्गुनी ३ चरण में रा. १२।६।। शुक्र- ति. ४ गुरु को मघा तथा सिंहराशि में रा. १।५०।। शनि- ति. ८ सोम को अनुराधा २ चरण में रा. १२।४७।। राहु- उ.फा. ३ चरण में तथा केतु उ.भा. १ चरण में।।

२७ पं० आश्विनकृष्ण ८ सोम

अहर्गण २६५

अयनांश २४।३।३९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	२	४	५	४	४	७	५	११
१६	१६	१०	३	२०	२	६	६	६
४७	६	३७	३७	३	५२	३६	५	५
२०	४०	२७	४०	३	३०	१०	२०	२०
५९	७९८	३६	८	१२	५४	४	३	३
१३	१४	१५	३५ मा.	६	१६	५६	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ मंगल को रेवती में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से मुक्त न होने से अशुभ है। सा. ६।१६ के बाद अश्विनी में लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा वस्तुक्रय ऑपरेशन शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त है। ति. ३ बुध को भद्रा से पूर्व अश्विनी में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त है। ति. ४ गुरु को भरणी में भौमवेध है। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। ति. ५ शुक्र को कृत्तिका में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त है। दि. २।१४ के बाद रोहिणी में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण दँवरी धान्यारोपण शिल्पविद्या विपणि मुहूर्त है। ति. ६ शनि को रोहिणी में व्यतिपातदोष है। ति. ७ रवि को मृगशिरा में भद्रा बाद पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वाटिकारोपण दक्षिण दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण औषधसेवन नावनिर्माण विपणि वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ८ सोम को आर्द्रा में फसल काटने का मुहूर्त है। दि. १।९ से रा. ७।१५ तक पुनर्वसु में शिशुताम्बूलभक्षण पशुओं की खरीद-बिक्री नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन वाहन खरीदने का मुहूर्त है। ति. ९ मंगल को पुनर्वसु में रिक्तादोष है। रिक्ता के बाद पुष्य में सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषणनिर्माण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा ऑपरेशन का मुहूर्त है।☛

तिथि / ल.अ.	१ मं घं.	मि.	३ बु घं.	मि.	४ गु घं.	मि.	५ शु घं.	मि.	६ श घं.	मि.	७ र घं.	मि.	८ चं घं.	मि.	९ मं घं.	मि.	१० बु घं.	मि.	११ गु घं.	मि.	१२ शु घं.	मि.	१३ श घं.	मि.	१४ र घं.	मि.	३० चं घं.	मि.
कन्या	७	२७	७	२४	७	२०	७	१६	७	१३	७	९	७	६	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४४	६	४०
तुला	९	४३	९	४०	९	३६	९	३२	९	२९	९	२५	९	२२	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३	९	०	८	५६
वृश्चिक	१२	०	११	५७	११	५३	११	४९	११	४६	११	४२	११	३९	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१७	११	१३
धनु	२	६	२	३	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	१	४५	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२३	१	१९
मकर	३	५३	३	५०	३	४६	३	४२	३	३९	३	३५	३	३२	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	१०	३	६
कुम्भ	५	२४	५	२१	५	१७	५	१३	५	१०	५	६	५	३	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४१	४	३७
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मीन	६	५२	६	४९	६	४५	६	४१	६	३८	६	३४	६	३१	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	९	६	५
मेष	८	२९	८	२६	८	२२	८	१८	८	१५	८	११	८	८	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४६	७	४२
वृष	१०	२५	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	११	१०	७	१०	४	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४२	९	३८
मिथुन	१२	३९	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२५	१२	२१	१२	१८	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५६	११	५२
कर्क	२	५७	२	५४	२	५०	२	४६	२	४३	२	३९	२	३६	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१४	२	१०
सिंह	५	११	५	८	५	४	५	०	४	५७	४	५३	४	५०	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२८	४	२४

२८ पं० आश्विनकृष्ण ३० सोम

अहर्गण २७२

अयनांश २४।३।४०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	५	४	५	४	४	७	५	११
२३	१३	१४	७	२१	९	७	५	५
४२	३१	५१	२६	२७	१२	१०	४३	४३
४३	३३	१०	४९	५०	२४	३७	४	४
५९	७२१	३६	५६	१२	५४	५	३	३
३०	२७	१५	३० मा.	८	१६	२१	११	११



♏ श्री लक्ष्मीसहित विष्णु का पलंग पर रखकर पूजन करने से अक्षय-धन तथा दाम्पत्य सुख प्राप्ति। फसली नववर्षारम्भ। फसली सन् १४२३ प्रारम्भ। पञ्चक समाप्ति सा. ६।१६। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ६।१६ से। अमृतसिद्धियोग सा. ६।१६ से। ❖सूर्यसोपचार पूजन कर स्त्रियों को सौभाग्यवृद्धि हेतु प्रदक्षिणा करनी चाहिए। सर्वपैत्री ३०। अज्ञात तिथि वालों का श्राद्ध। महाविष्णु प्रीत्यर्थ ब्राह्मण भोजन। पितृविसर्जन। महालय समाप्ति। शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए सुखकारक होती है।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी- ति. ३ बुध को दि. ४।४३ तक।
श्लेषा/मघा- ति. १० बुध को दि. २।४६ से। ति. १२ शुक्र को सा. ६।१७ तक।
पञ्चक विचार- ति. १ मंगल को सा. ६।१६ तक।

जीवत्पुत्रिका तथा महालक्ष्मी व्रत का निर्णय- महालक्ष्मी व्रत के लिए पूर्व या पर विद्ध अष्टमी चन्द्रोदय व्यापिनी ही ग्राह्य है। आश्विनकृष्ण पक्ष में जिस दिन चन्द्रोदय काल में अष्टमी प्राप्त हो उस दिन लक्ष्मी व्रत तथा जिस दिन सूर्योदय में प्राप्त हो उस दिन जीवत्पुत्रिका व्रत करना चाहिए। विशेष- पूर्व या पर दिन जब प्रदोष काल में अष्टमी हो तो स्त्रियों द्वारा राजा जीमूतवाहन की पूजा होती है। अन्य आचार्य- प्रदोषसमये स्त्रिभिः पूज्यो जीमूतवाहनः"। उपर कहे हुए जीवत्पुत्रिका व्रत-कथा के उद्धरण से उदय व्यापिनी, तथा अन्य मतों से सायं व्यापिनी अष्टमी सिद्ध है, अतः दोनों दिन ही व्रत किया जा सकता है। परन्तु पर दिन अन्नकाल के ११।८ घटी उत्तरार्ध में अष्टमी व्याप्त हो तो ही यह व्रत होगा। इस प्रसङ्ग में गौड़ एवं मैथिल दोनों निर्णयों में एकवाक्यता तथा दोनों दिनों में व्रत का आदेश प्राप्त होता है। अन्नकाल- दिन के दो भाग के बाद मध्य रात्रि से पूर्व तक द्विजों का भोजन काल होता है इस प्रसङ्ग में बालक, वृद्ध एवं आतुरों को छूट प्राप्त है। सभी श्राद्धों का काल विभाग- पूर्वाह्न में दैविक, मध्याह्न में एकोदिष्ट, अपराह्न में पार्वण तथा प्रातःकाल वृद्धि निमित्त श्राद्ध करना चाहिए। शुक्ल पक्ष में पूर्वार्द्ध तथा कृष्ण पक्ष में दिन के नवम मुहूर्त्त तक विद्वानों को श्राद्ध करना चाहिए। क्षय दिन में विशेष- प्रवास गये होने के कारण यदि किसी के मृत्यु दिन का ज्ञान न हो, परन्तु मृत्युमास का ज्ञान हो तो उस मास की अमावस्या को ही उसका श्राद्ध कर देना चाहिए। श्राद्ध विघ्न निर्णय- श्राद्ध में विघ्न हो जाने पर या मृत दिवस का ज्ञान न होने पर विशेष कर कृष्ण पक्ष में एकादशी को ही श्राद्ध कर देना चाहिए। गया में श्राद्ध काल- मीन, मेष, कन्या, धनु तथा कुंभ के सूर्य में गया में पिण्डदान तीनों लोक वासियों के लिए दुर्लभ है, मतान्तर से (सभी कालों) कभी भी गया में पिण्डदान किया जाता है। अधिमास, जन्मदिन, गुरु-शुक्र के अस्त काल, सिंहराशि के बृहस्पति तथा संक्रान्ति के दिन भी गया श्राद्ध नहीं छोड़ना चाहिए। मतान्तर से चतुर्थी को भी महालय, तथा गया श्राद्ध माता-पिता के मृत्युदिन विधि पूर्वक करना चाहिए। विवाह के बाद भी, महालय, सपिण्डन, तथा गया श्राद्ध करना चाहिए।

☛ति. १० बुध को पुष्य में भद्रा से पूर्व पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ११ गुरु को श्लेषा में शनिवेध है। ति. १२ शुक्र को मघा में भौमयुति है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल शरद् ऋतु।।

आश्विनशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि २१ आश्विन से ५ कार्त्तिक तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक १३ अक्टूबर से २७ तक सन् २०१५ ई.।।

दि.मा. घ.	प.																										योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे. अं. -	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.	आश्विनशुक्लपक्ष ।।
२८	४१	१	मं	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	५५	१३	रा	४	१९	वैधृति	४४	४०	रा	१२	६	किं	२७	५६	वव	६०	०	ध्वांक्ष	१३	१५	२६	२६	२१	तुला	२२।५	६	१४	५	४६	५	२४	४२	१३	७	२८	-	१६	-	-	तुलाराशि दि. ३।४। दौहित्रकर्तृकमातामह (नाना) का श्राद्ध। पिता के जीवित होने पर भी नाना का श्राद्ध करना चाहिए। शारदनवरात्रारम्भ। कलशस्थापन तथा ध्वजारोपण।
२८	४५	१	बु	०	२४	प्रा	६	२५	स्वाती	६०	०	स	म	स्त	विष्कुम्भ	४५	२७	रा	१२	२६	वव	०	२४	वा	३२	३२	धूम्र	१४	१६	२७	२७	२२			६	१५	५	४५	५	२५	४१	४५	७	५०	-	१६	६	३०	चन्द्रदर्शन। मु. १५ जघन्या। फल महँगी। उत्तरशृंग सस्तीकारक। अभिजित् मुहूर्त्त दि. ११।३७ से दि. १२।२३ तक। केशसंस्कारद्रव्याणिप्रदद्यात्प्रतिपद्दिने।■
२८	४२	२	गु	४	४०	दि	८	८	स्वाती	०	५०	प्रा	६	३६	प्रीति	४५	३५	रा	१२	३०	कौ	४	४०	तै	३६	१३	सुस्थिर	१५	१७	२८	२८	२३	वृश्चिक	४९।२२	६	१६	५	४४	५	२६	४१	१९	८	१३	-	१६	७	१०	वृश्चिकराशि रा. २।१। मु. मुहर्रम १ हिजरी सन् १४३७। पट्टदोरं द्वितीयायां केशसंयम् हेतवे।
२८	३८	३	शु	७	५५	दि	९	२६	विशाखा	५	३२	दि	८	२९	आयुष्मान	४४	४८	रा	१२	११	गर	७	४५	व	३८	५५	मातङ्ग	१६	१८	२९	२९	२४			६	१६	५	४४	५	२७	४०	५६	८	३३	-	१६	७	५३	भ. रा. ९।५० से। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। दर्पणं च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा। रवियोग दि. ८।२९ से।
२८	३५	४	श	१०	५	दि	१०	१९	अनुराधा	९	९	दि	९	५७	सौभाग्य	४३	८	रा	११	३२	भ	१०	५	वव	४०	३०	अमृत	१७	१९	३०	३०	२५			६	१७	५	४३	५	२८	४०	३५	८	५७	-	१६	८	३८	भ. दि. १०।१९ तक। उपाङ्गललिता ५ व्रत (अपराह्न व्यापिनी)। मधुपर्के चतुर्थ्यां तु तिलकं नेत्रमण्डनम्। रवियोग दि. ९।५७ तक। ■महाराजा अग्रसेन जयन्ती।
२८	३३	५	र	१०	५४	दि	१०	४०	ज्येष्ठा	११	३१	दि	१०	५४	शोभन	४०	२६	रा	१०	२८	वा	१०	५४	कौ	४०	३९	काण	१८	२०	३१	१	२६	धनु	११।३१	६	१८	५	४२	५	२९	४०	१७	९	१९	-	१७	९	२८	धनुराशि दि. १०।५४। पञ्चम्यामङ्गरागं च शक्त्यालंकरणानि च। मूल के प्रथम चरण में सरस्वती आवाहन। ⊙सं. तुलाराशि का सूर्य दि. २।१४। मु. ३० समा।
२८	३१	६	चं	१०	२४	दि	१०	२९	मूल	१२	३४	दि	११	२१	अतिगण्ड	३६	४४	रा	९	१	तै	१०	२४	गर	३९	३३	लुम्बक	१९	२१	१	२	२७			६	१९	५	४१	६	०	४०	०	९	४१	-	१७	१०	२०	विल्वाभिमंत्रण। षष्ठयां विल्वतरौ बोधं सायं सन्ध्यासु कारयेत्। पू.षा. में सरस्वती पूजन। सौरकार्त्तिकमासारम्भ। रवियोग दि. ११।२१ तक।
२८	२७	७	मं	८	४२	दि	९	४८	पू.षा.	१२	२६	दि	११	१७	सुकर्मा	३२	५	रा	७	९	व	८	४२	भ	३७	१७	मित्र	२०	२२	२	३	२८	मकर	२७।७	६	१९	५	४१	६	१	३९	४६	१०	३	-	१७	११	१७	भ. दि. ९।४८ से रा. ९।१४ तक। मकरराशि सा. ५।१०। सप्तम्यां प्रातरानीय गृहमध्ये प्रपूजयेत्। पत्रिका प्रवेशन। निशीथकाल में महानिशापूजा तथा○
२८	२४	८	बु	५	५२	दि	८	४१	उ.षा.	११	११	दि	१०	४८	धृति	२६	३६	दि	४	५८	वव	५	५२	वा	३३	५८	वज्र	२१	२३	३	४	२९			६	२०	५	४०	६	२	३९	३४	१०	२४	-	१७	१२	१५	महाष्टमी ८ व्रत। उपोषणमथाष्टम्यां आत्मशक्त्यथ पूजन। श्रीमहानवमी ९ व्रत। श्रीदुर्गानवमी। नवम्यामुग्रचण्डायाः पूजां कुर्याद् बलिं तथा। उत्तरेण नवम्यां●
२८	२०	९	गु	२/५५	४/२४	प्रा	७/५	११/२०	श्रवण	९	७	दि	१०	०	शूल	२०	२५	दि	२	३१	कौ	२	४	तै	२९/५७	४६/२८	ध्वज	२२	२४	४	५	३०	कुम्भ	३७।३९	६	२१	५	३९	६	३	३९	२४	१०	४६	-	१७	१	१६	कुम्भराशि रा. ९।२५। नवमी में होम आदि। दि.७।११ के बाद नवरात्र व्रत की पारणा। दुर्गाविसर्जन। विजयादशमी १०। शमीपूजन। अपराजितापूजा।♏
२८	१७	११	शु	५२	१५	रा	३	१५	धनिष्ठा	६	१०	दि	८	४९	गण्ड	१३	३४	दि	११	४७	व	२४	५२	भ	५२	१५	धाता	२३	२५	५	६	१			६	२१	५	३९	६	४	३९	१६	११	७	-	१७	२	१८	भ. दि. ४।१८ से रा. ३।१५ तक। पापाङ्कुशा ११ एकादशी व्रत स्मार्त्तो का। काशी का प्रसिद्ध नाटी इमली भरतमिलाप। राष्ट्रीयकार्त्तिकमास दि. ३०।❖
२८	१३	१२	श	४६	३२	रा	१२	५९	शतभिष	२/५६	३५/१	प्रा	७/५	२४/४८	वृद्धि	६/५२	१३/२२	प्रा	८/५	५१/४८	वव	१९	२४	वा	४६	३२	आनन्द	२४	२६	६	७	२	मीन	४४।३६	६	२२	५	३८	६	५	३९	११	११	२८	-	१८	३	२२	मीनराशि रा. १२।१२। वैष्णवों का एकादशी व्रत। पद्मनाभ द्वादशी १२ व्रत। दुग्धदान। दाल त्याग व्रतारम्भ। ⊙सायन वृश्चिकराशि का सूर्य दि. १।१३।
२८	१०	१३	र	४०	३५	रा	१०	३७	उ.भा.	५४	२६	रा	४	९	व्याघात	५०	४५	रा	२	४१	कौ	१३	३४	तै	४०	३५	सुस्थिर	२५	२७	७	८	३			६	२३	५	३७	६	६	३९	८	११	४९	-	१८	४	२७	प्रदोष १३ व्रत। ⊙स्वाती नक्षत्र का सूर्य प्रा. ६।४४। स्त्री.-पु.-सू.सू. योग मण्डूक वाहन सौम्यानाड़ी अधिपति गुरु खण्डवृष्टियोग। यायीजययोग रा. १०।३७ तक।
२८	६	१४	चं	३४	३४	रा	८	१३	रेवती	५०	१४	रा	२	२९	हर्षण	४२	५४	रा	११	३३	गर	७	३५	व	३४	३४	मातङ्ग	२६	२८	८	९	४	मेष	५०।१४	६	२३	५	३७	६	७	३९	५	१२	१०	-	१८	५	३३	भ. रा. ८।१३ से। मेषराशि रा. २।२९। शरत्पूर्णिमा १५। कोजागरी १५। रात्रि में लक्ष्मी-इन्द्र-कुबेरआदि की पूजा। पञ्चक समाप्ति रा. २।२९। यायीजययोग ☐
२८	२	१५	मं	२८	४२	सा	५	५३	अश्विनी	४६	१३	रा	१२	५३	वज्र	३५	१३	रा	८	२९	भ	१	३८	वव	२८/५५	४२/५७	अमृत	२७	२९	९	१०	५			६	२४	५	३६	६	८	३९	६	१२	३०	-	१८	-	-	भ. दि. ७।३ तक। स्नान-दान-व्रत की १५ पूर्णिमा। महर्षिवाल्मीकिजयन्ती। कार्त्तिक व्रत-स्नान-यम-नियम का आरम्भ। कार्त्तिकमासदीप दानारम्भ।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	मं	४	१५	२७	२५	५	८	२३	१९	४	२१	३९	५८	४	१०	६	४०	७	७	१६	६	५	५	३९	५३
१	बु	४	१६	३	३९	५	९	१९	४१	४	२१	५२	७	४	११	०	५६	७	७	२१	४६	५	५	३६	४३
२	गु	४	१६	३९	५४	५	१०	१६	४	४	२२	४	८	४	११	५५	१३	७	७	२७	२६	५	५	३३	३२
३	शु	४	१७	१६	९	५	११	१२	२६	४	२२	१६	८	४	१२	४९	२९	७	७	३३	६	५	५	३०	२१
४	श	४	१७	५२	२४	५	१२	२१	४	४	२२	२७	५६	४	१३	४३	४५	७	७	३८	४५	५	५	२७	१०
५	र	४	१८	२८	३८	५	१३	३२	५८	४	२२	३८	२९	४	१४	३८	२	७	७	४४	२५	५	५	२३	५९
६	चं	४	१९	४	५३	५	१४	४४	५१	४	२२	४९	२	४	१५	३२	१८	७	७	५०	५	५	५	२०	४९
७	मं	४	१९	४१	८	५	१५	५६	४४	४	२२	५९	३५	४	१६	२६	३४	७	७	५५	४५	५	५	१७	३८
८	बु	४	२०	१७	२२	५	१७	८	३७	४	२३	१०	८	४	१७	२०	५१	७	८	१	२५	५	५	१४	२७
९	गु	४	२०	५३	३७	५	१८	२८	५३	४	२३	२०	४१	४	१८	१५	७	७	८	७	५	५	५	११	१६
११	शु	४	२१	२९	५२	५	१९	५०	१६	४	२३	३१	१४	४	१९	९	२३	७	८	१२	४४	५	५	८	५
१२	श	४	२२	६	७	५	२१	११	४०	४	२३	४१	४७	४	२०	७	२७	७	८	१८	२४	५	५	४	५४
१३	र	४	२२	४२	२१	५	२२	३३	४	४	२३	५२	२०	४	२१	११	४०	७	८	२४	३	५	५	१	४४
१४	चं	४	२३	१८	३६	५	२३	५३	५४	४	२४	२	५४	४	२२	१५	५९	७	८	२९	४०	५	४	५८	३३
१५	मं	४	२३	५४	५१	५	२५	२२	६	४	२४	१३	२७	४	२३	२०	१८	७	८	३५	१७	५	४	५५	२२

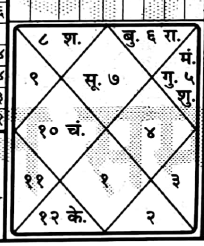
ग्रहचार- मंगल- पूर्वाफाल्गुनी में।। मार्गीबुध- ति. १ बुध को हस्त में रा. ११।२५। ति. १३ रवि को चित्रा में रा. ८।१९।। गुरु- ति. ८ बुध को पूर्वाफाल्गुनी ४ चरण में रा. ४।४७।। शुक्र- ति. ३ शुक्र को पूर्वाफाल्गुनी में रा. ७।४६।। शनि- अनुराधा २ चरण में।। राहु- उ.फा. ३ चरण में तथा केतु उ.भा. १ चरण में।।

२१ पं० आश्विनशुक्ल ८ बुध

अहर्गण २८१

अयनांश २४।३।४१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	९	४	५	४	४	७	५	११
२	७	२०	१७	२३	१७	८	५	५
३९	२७	१७	८	१०	२०	१	१४	१४
३४	४६	२२	३७	८	५१	२५	२७	२७
५९	८१७	३६	८०	१०	५४	५	३	३
५०	१	१५	१६	३३	१६	४०	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ मंगल को चित्रा में सूर्ययुति तथा वैधृतिदोष है। ति. १ बुध को स्वाती में सूर्यभोग्य है। ति. २ गुरु को प्रा. ६।३६ के बाद विशाखा में नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री धान्यारोपण वस्तु विक्रय मुहूर्त्त है। ति. ३ शुक्र को दि. ८।२९ तक विशाखा में नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री धान्यारोपण वस्तु विक्रय मुहूर्त्त है। ति. ४ शनि को अनुराधा में शनियुति है। चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। भद्रा बाद ज्येष्ठा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ५ रवि को ज्येष्ठा में पशुओं की खरीद-बिक्री ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. १०।५४ के बाद मूल में वाटिकारोपण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ६ सोम को मूल में शिशुताम्बूलभक्षण दँवरी धान्यारोपण शिल्पविद्या औषधसेवन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ७ मंगल को पू.षा में भद्रा से पूर्व शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ८ बुध को उ.षा. में दि. ८।४१ तक शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण शिल्पविद्या विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ गुरु को नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता के बाद श्रवण में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग पूर्व दिशा की यात्रा दँवरी औषधसेवन नावनिर्माण ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। दि. १०।० के बाद धनिष्ठा में अन्नप्राशन गर्भाधान नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण पशुओं की खरीद-बिक्री मकर के चन्द्रमा में पूर्व तथा कुम्भ के चन्द्रमा में पश्चिम दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है।

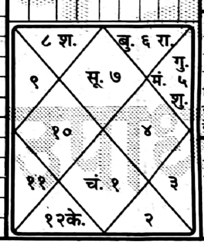
तिथि	१ मं		१ बु		२ गु		३ शु		४ श		५ र		तिथि	६ चं		७ मं		८ बु		९ गु		११ शु		१२ श		१३ र		१४ चं		१५ मं	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
कन्या	६	३६	६	३३	६	२९	६	२५	६	२२	६	१८	तुला	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९
तुला	८	५२	८	४९	८	४५	८	४१	८	३८	८	३४	वृश्चिक	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६
वृश्चिक	११	९	११	६	११	२	१०	५८	१०	५५	१०	५१	धनु	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२
धनु	१	१५	१	१२	१	८	१	४	१	१	१२	५७	मकर	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९
मकर	३	२	२	५९	२	५५	२	५१	२	४८	२	४४	कुम्भ	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०
कुम्भ	४	३३	४	३०	४	२६	४	२२	४	१९	४	१५	मीन	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मीन	६	१	५	५८	५	५४	५	५०	५	४७	५	४३	मेष	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५
मेष	७	३८	७	३५	७	३१	७	२७	७	२४	७	२०	वृष	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१
वृष	९	३४	९	३१	९	२७	९	२३	९	२०	९	१६	मिथुन	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५
मिथुन	११	४८	११	४५	११	४१	११	३७	११	३४	११	३०	कर्क	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३
कर्क	२	६	२	३	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	सिंह	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७
सिंह	४	२०	४	१७	४	१३	४	९	४	६	४	२	कन्या	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०

३० पं० आश्विनशुक्ल १५ मंगल

अहर्गण २८७

अयनांश २४।३।४२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	०	४	५	४	४	७	५	११
८	२	२३	२५	२४	२३	८	४	४
३९	११	५४	२२	१३	२०	३५	५५	५५
६	३३	५१	६	२७	१८	१७	२२	२२
६०	८५७	३६	८८	१०	६४	५	३	३
३	२४	१२	२९	३३	१९	४४	२१	११



☼फल समता। पूर्व का ६ घण्टा २४ मिनट पुण्यकाल। दीप-तिल-गोरसआदि का दान। गोदावरी स्नान। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।५४ से। रवियोग दि. १०।५४ से। ○बलिदान आदि। उ.षा. में सरस्वती पूजन। अन्नपूर्णापरिक्रमा दि. ९।४८ से। देवी आगमन-अश्व (घोड़ा)पर। फल- छत्र भंग। स्थायीजययोग दि. ९।४८ से दि. ११।१७ तक। ●बलिभिः पूजयेच्छिवाम्। अन्नपूर्णापरिक्रमा दि. ८।४१ तक। श्रवण नक्षत्र में सरस्वती का विसर्जन। ओली प्रारम्भ (जैन)। बुधाष्टमी ८। मन्वादि ९(पूर्वाह्न में)। रवियोग दि. १०।४८ से। ♏ सीमोल्लंघन। जयन्ती ग्रहण। नीलकण्ठदर्शन। विजययात्रा। पट्टाभिषेक पूजन। पूजयेद् राजचिह्नानिदेविमप्यपराजिताम्। उल्लंघित्वा सीमानं प्रस्थानं स्थापयन्नृपः सम्पूज्यप्रेषणं कुर्याद्दशम्यां शावरोत्सवैः। देवी गमन-नर (मनुष्य)पर। फल-सौख्य। बौधावतार १० (सायं)। पञ्चक प्रारम्भ रा.९।२५। यायीजययोग रा.शे. ५।२० से। रवियोग समस्त। ❖रवियोग दि. ८।४९ तक। यायीजययोग रा.शे. ५।४८ से। त्रिपुष्करयोग प्रा. ७।२४ से रा. १२।५९ तक। रवियोग रा.शे. ५।४८ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ४।९ तक। रवियोग रा. ४।९ से। ☐रा. ८।१३ से रा. २।२९ तक। रवियोग रा. २।२९ तक। ♐ओलीसमाप्ति (जैन)। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १२।५३ तक। अमृतसिद्धियोग रा. १२।५३ तक।

मूल विचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. ४ शनि को दि. ९।५७ से। ति. ६ सोम को दि. ११।२१ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. १३ रवि को रा. ४।९ से। ति. १५ मंगल को रा. १२।५३ तक।
पञ्चक विचार- ति. ९ गुरु को रा. ९।२५ से। ति. १४ सोम को रा. २।२९ तक।

आश्विनशुक्ल प्रतिपदा में कलशस्थापन विधि- स्नान-ध्यान के बाद शुभ मिट्टी द्वारा वेदी निर्माण करके सप्तधान्य वपन पूर्वक जल से परिपूर्ण स्वर्ण, रजत, ताम्र अथवा मिट्टी का कलश विधि पूर्वक वैदिक मन्त्रों द्वारा स्थापित कर देवी का पूजन करना चाहिए। संकल्प- देश-काल एवं गोत्र-प्रवर आदि का उच्चारण कर "ममेहजन्मनि श्री दुर्गाप्रीतिद्वारा सकलापच्छान्तिपूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभ-शत्रुपराजयादि- सदभीष्ट सिध्यर्थं शारदनवरात्रप्रतिपदि विहितकलशस्थापनदुर्गापूजनं कुमारपुजनादिकं च करिष्ये" से संकल्प करें। संकल्प के बाद विधि पूर्वक वैदिक मन्त्रों द्वारा कलश स्थापित कर कलश पर वरुण का पूजन करके पुनः नूतन अथवा प्रतिवर्ष पूजित देवी की प्रतिमा पर भगवती का आवाहन एवं पूजन करें।

अभिजित मुहूर्त्त दि. ११।३८ से दि. १२।२४ तक। अपराह्नकाल दि. १।९ से दि. ३।२५ तक। विजयमुहूर्त्त दि. १।५४ से दि. २।४० तक अथवा तारकोदयकाल में। ति. ११ शुक्र को धनिष्ठा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण औषधसेवन नावनिर्माण का मुहूर्त्त है। दि. ८।४९ के बाद शतभिष में भद्रा से पूर्व वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री धान्यारोपण वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १२ शनि को शतभिष में वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। प्रा. ७।२४ के बाद पू.भा. में सूर्यवेध है। ति. १३ रवि को उ.भा. में केतुयुति है। ति. १४ सोम को रेवती में राहुवेध तथा रिक्तादोष है। ति. १५ मंगल को अश्विनी में भौमवेध है।

दि.मा. घ.	प.	श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल शरद् ऋतु।।																									योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे.अं. -	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
२७	५९	१	बु	२३	११	दि	३	४१	भरणी	४२	३९	रा	११	२९	सिद्धि	२७	४९	सा	५	३३	कौ	२३	११	तै	५०	४१	काण	२८	१	१०	११	६	वृष	५६।५४	६	२५	५	३५	६	१	३९	९	१२	५०	-	१८	६	१७
२७	५५	२	गु	१८	११	दि	१	४१	कृत्तिका	३९	३९	रा	१०	१७	व्यतिपात	२०	५२	दि	२	४६	गर	१८	११	व	४६	४	लुम्बक	२९	२	११	१२	७			६	२५	५	३५	६	१०	३९	१६	१३	११	-	१८	७	१०
२७	५३	३	शु	१३	५६	दि	१२	०	रोहिणी	३७	३३	रा	९	२७	वरीयान	१४	३२	दि	१२	१५	भ	१३	५६	वव	४२	१५	मित्र	३०	३	१२	१३	८			६	२६	५	३४	६	११	३९	२३	१३	३१	-	१८	८	४
२७	४९	४	श	१०	३४	दि	१०	४१	मृगशिरा	३६	१५	रा	८	५७	परिघ	८	५३	दि	१०	०	वा	१०	३४	कौ	३९	२४	वज्र	३१	४	१३	१४	९	मिथुन	६।५४	६	२७	५	३३	६	१२	३९	३२	१३	५०	-	१८	९	०
२७	४६	५	र	८	१४	दि	९	४५	आर्द्रा	३६	४	रा	८	५३	शिव	४	५	दि	८	५	तै	८	१४	गर	३७	४१	ध्वांक्ष	१	५	१४	१५	१०			६	२७	५	३३	६	१३	३९	४३	१४	१०	-	१८	९	५५
२७	४३	६	चं	७	७	दि	९	१९	पुनर्वसु	३७	४	रा	९	१८	सिद्ध	[illegible]	[illegible]	प्रा	[illegible]	[illegible]	व	७	७	भ	३७	११	धूम्र	२	६	१५	१६	११	कर्क	२१।४९	६	२८	५	३२	६	१४	३९	५६	१४	२९	-	१८	१०	५०
२७	३९	७	मं	७	१५	दि	९	२३	पुष्य	३९	२३	रा	१०	१४	शुभ	५५	२६	रा	४	३९	वव	७	१५	वा	३७	५९	प्रवर्धमान	३	७	१६	१७	१२			६	२९	५	३१	६	१५	४०	११	१४	४८	-	१८	११	४३
२७	३६	८	बु	८	४३	दि	९	५८	श्लेषा	४२	५६	रा	११	३९	शुक्ल	५४	२७	रा	४	१६	कौ	८	४३	तै	४०	३	राक्षस	४	८	१७	१८	१३	सिंह	४२।५६	६	२९	५	३१	६	१६	४०	२८	१५	७	-	१८	१२	३५
२७	३३	९	गु	११	२२	दि	११	३	मघा	४७	३६	रा	१	३२	ब्रह्म	५४	२१	रा	४	१४	गर	११	२२	व	४३	१७	मुसल	५	९	१८	१९	१४			६	३०	५	३०	६	१७	४०	४७	१५	२६	-	१८	१	२६
२७	३०	१०	शु	१५	१२	दि	१२	३६	पू.फा.	५३	११	रा	३	४७	ऐन्द्र	५५	०	रा	४	३१	भ	१५	१२	वव	४७	३३	सिद्धि	६	१०	१९	२०	१५			६	३१	५	२९	६	१८	४१	८	१५	४४	-	१८	२	१५
२७	२७	११	श	१९	५३	दि	२	२८	उ.फा.	५९	२५	रा	६	१७	वैधृति	५६	६	रा	४	५७	वा	१९	५३	कौ	५२	२९	उत्पात	७	११	२०	२१	१६	कन्या	९।४५	६	३१	५	२९	६	१९	४१	३१	१६	२	-	१८	३	५
२७	२४	१२	र	२५	५	दि	४	३४	हस्त	६०	०	स	म	स्त	विष्कुम्भ	५७	२९	रा	५	३२	तै	२५	५	गर	५७	४६	मानस	८	१२	२१	२२	१७			६	३२	५	२८	६	२०	४१	५६	१६	२०	-	१८	३	५५
२७	२१	१३	चं	३०	२६	सा	६	४२	हस्त	५	५७	दि	८	५५	प्रीति	५८	४६	रा	६	२	व	३०	२६	भ	६०	०	वज्र	९	१३	२२	२३	१८	तुला	३९।८	६	३२	५	२८	६	२१	४२	२२	१६	३६	-	१८	४	४५
२७	१८	१४	मं	३५	२६	रा	८	४३	चित्रा	१२	१९	दि	११	२९	आयुष्मान	५९	४०	रा	६	२५	भ	२	५६	श	३५	२६	ध्वांक्ष	१०	१४	२३	२४	१९			६	३३	५	२७	६	२२	४२	५१	१६	५५	-	१८	५	३७
२७	१५	३०	बु	३९	४६	रा	१०	२८	स्वाती	१८	८	दि	१	४९	सौभाग्य	५९	५९	रा	६	३४	च	७	३६	नाग	३९	४६	धूम्र	११	१५	२४	२५	२०			६	३४	५	२६	६	२३	४३	२३	१७	११	-	१८	६	२८

कार्तिककृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ६ कार्तिक से २० तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक २८ अक्टूबर से ११ नवम्बर तक सन् २०१५ ई.।।

वृषराशि रा.शे. ५।११। कार्तिक मास में चातुर्मास्यव्रती को दाल खाना वर्जित है। अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदय रा. ६।१७। श्री लक्ष्मीसहित विष्णु का पलंग □पर रखकर पूजन करने से अक्षय-धन तथा दाम्पत्य सुख प्राप्ति। प्रार्थनामन्त्रः- पत्नी भर्तृवियोगं च भर्ता-भार्या समुद्भवम्। नाप्नुवंति यथा दुखं दाम्पत्यानि तथा कुरु। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ११।२९ से।

भ. रा. १२।५१ से। यायीजययोग रा. १०।१७ से। यमघंटयोग रा. १०।१७ तक।

भ. दि. १२।० तक। संकष्टी करक (करवा) श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।४। चन्द्रमा को अर्घ्यदान। दशरथचतुर्थी (प्रदोषव्यापिनी-बंगाल)। स्थायीजययोग ♏

मिथुनराशि दि. ९।१३।

रवियोग रा. ८।५३ से। नवम्बर ११।

भ. दि. ९।१९ से रा. ९।२० तक। कर्कराशि दि. ३।१२। यायीजययोग दि. ९।१९ से रा. ९।१८ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ९।१८ से। रवियोग रा. ९।१८ तक।

अहोई ८ व्रत। चन्द्रोदय रा. ११।४३। स्थायीजययोग दि. ९।२३ से रा. १०।१४ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १०।१४ से।

सिंहराशि रा. ११।३९। श्रीराधाजयन्ती ८। अरुणोदयकाल में मथुरा में श्री राधाकुण्ड में स्नान। बुधाष्टमी ८ पर्व। ♏ रा. ९।२७ से। यमघंटयोग रा. ९।२७ तक।

भ. रा. ११।४९ से।

भ. दि. १२।३६ तक। ❖तक। यमघंटयोग रा.शे. ६।१७ से। त्रिपुष्करयोग दि. २।२८ से रा.शे. ६।१७ तक।

कन्याराशि दि. १०।२५। रम्भा ११ एकादशी व्रत सबका। गोवत्सद्वादशी १२ व्रत (प्रदोषव्यापिनी)। ⊙विशाखा नक्षत्र का सूर्य दि. १।५१। यायीजययोग दि. २।२८❖

प्रदोष १२ व्रत। यायीजययोग दि. ४।३४ से। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग समस्त।

भ. सा. ६।४२ से। तुलाराशि रा. १०।११। धनत्रयोदशी १३ (धनतेरस)। सायंकाल घर से बाहर मृत्युनिवारक चार बत्तियों वाला दीपक यमराज को दान करना चाहिए। ○

भ. दि. ७।४३ तक। सायं मेषलग्न में श्रीहनुमानजन्म। सायंकाल घर से बाहर चार बत्तियों वाला दीपक यमराज को दान करना चाहिए। निशीथकाल में महाकालीपूजा। ■

स्नान-दान- श्राद्ध की ३० अमावस्या। दीपावली ३०। साभ्यंग स्नान। प्रातःयम को तर्पण। प्रातः हनुमान जी का दर्शन तथा पूजन। लक्ष्मी-इन्द्र-कुबेर आदि ♐

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	बु	४	२४	३१	३	५	२६	५०	३५	४	२४	२४	०	४	२४	२४	३७	७	८	४१	१	५	४	५२	११
२	गु	४	२५	६	९	५	२८	१९	४	४	२४	३४	३३	४	२५	२८	५६	७	८	४७	२५	५	४	४९	०
३	शु	४	२५	४१	१४	५	२९	४७	३३	४	२४	४५	८	४	२६	३३	१५	७	८	५३	४८	५	४	४५	५०
४	श	४	२६	१६	१९	६	१	१६	२	४	२४	५५	४५	४	२७	३७	३४	७	९	०	११	५	४	४२	३९
५	र	४	२६	५१	२५	६	२	५०	२६	४	२५	६	२१	४	२८	४१	५३	७	९	६	३४	५	४	३९	२८
६	चं	४	२७	२६	४०	६	४	२४	४५	४	२५	१६	५७	४	२९	४६	१२	७	९	१२	५७	५	४	३६	१७
७	मं	४	२८	१	५८	६	५	५९	३	४	२५	२६	३०	५	०	५०	३१	७	९	१९	२०	५	४	३३	६
८	बु	४	२८	३७	१७	६	७	३३	२२	४	२५	३५	३८	५	१	५४	५०	७	९	२५	४३	५	४	२९	५६
९	गु	४	२९	१२	३६	६	९	७	४९	४	२५	४५	४७	५	२	५९	९	७	९	३२	६	५	४	२६	४५
१०	शु	४	२९	४७	५५	६	१०	४५	४१	४	२५	५३	५५	५	४	३	२८	७	९	३८	२९	५	४	२३	३४
११	श	५	०	२३	१४	६	१२	२१	३९	४	२६	३	४	५	५	७	४६	७	९	४४	५२	५	४	२०	२३
१२	र	५	०	५८	३३	६	१३	५७	२६	४	२६	१२	१३	५	६	१२	५	७	९	५१	१५	५	४	१७	१२
१३	चं	५	१	३३	५२	६	१५	३३	१३	४	२६	२१	२१	५	७	१६	२४	७	९	५७	३८	५	४	१४	२
१४	मं	५	२	९	११	६	१७	९	१३	४	२६	३०	३०	५	८	२०	४३	७	१०	४	०	५	४	१०	५१
३०	बु	५	२	४४	३०	६	१८	४९	३६	४	२६	३९	३८	५	९	२५	२	७	१०	१०	२०	५	४	७	४०

ग्रहचार- मंगल- ति. ४ शनि को उत्तराफाल्गुनी में रा. १०।३९। ति. १० शुक्र को कन्याराशि में दि. २।४४।। बुध- ति. ३ शुक्र को तुलाराशि में दि. ९।४९। ति. ७ मंगल को स्वाती में दि. ४।५४। ति. ३० बुध को विशाखा में रा. ११।२४।। गुरु- ति. ३० बुध को उत्तराफाल्गुनी १ चरण में दि. ७।३२।। शुक्र- ति. ३ शुक्र को उत्तराफाल्गुनी में दि. ८।५७। ति. ६ सोम को कन्याराशि में दि. ११।३७। ति. ३० बुध को हस्त में रा. ७।३७।। शनि- ति. १३ सोम को अनुराधा ३ चरण में दि. ३।२७।। राहु- उ.फा. ३ चरण में तथा केतु उ.भा. १ चरण में।।

३१ पं० कार्त्तिककृष्ण ८ बुध

अहर्गण २९५

अयनांश २४।३।४३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	३	४	६	४	५	७	५	११
१६	२०	२८	७	२५	१	९	४	४
४०	५९	३७	३३	३५	५४	२५	२९	२९
२८	४६	१७	२२	३८	५०	४३	५६	५६
६०	७५५	३५	१४	९	६४	६	३	३
११	११	११	२७	९	११	२३	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ बुध को भरणी में व्यतिपात से पूर्व वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. २ गुरु को कृतिका में व्यतिपात के बाद पशुओं की खरीद-बिक्री वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ३ शुक्र को रोहिणी में भद्रा के बाद रिक्तादोष है। ति. ४ शनि को मृगशिरा में चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता के बाद पश्चिम-दक्षिण दिशा की यात्रा विपणि शस्त्रनिर्माण वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ५ रवि को आर्द्रा में शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। रा. ८।५३ के बाद पुनर्वसु में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण औषधसेवन मुहूर्त्त है। ति. ६ सोम को भद्रा से पूर्व पुनर्वसु में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण पशुओं की खरीद-बिक्री शिल्पविद्या औषधसेवन वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। भद्रा के बाद पुष्य में पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. ७ मंगल को पुष्य में पुंसवनसीमन्त लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (सप्तमी में) ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. ८ बुध को श्लेषा में शनिवेध तथा रिक्तादोष है। ति. ९ गुरु को मघा में रिक्ता के बाद दँवरी फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १० शुक्र को पू.फा. में मंगल से भुक्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त होने से अशुभ है। भद्रा भी है। ति. ११ शनि को उ.फा. में राहुयुति तथा वैधृतिदोष है। ति. १२ रवि को हस्त में केतुवेध है। इसके बाद मासान्तदोष है।

तिथि ल.अ.	१ बु घं.	मि.	२ गु घं.	मि.	३ शु घं.	मि.	४ श घं.	मि.	५ र घं.	मि.	६ चं घं.	मि.	७ मं घं.	मि.	८ बु घं.	मि.	९ गु घं.	मि.	१० शु घं.	मि.	११ श घं.	मि.	१२ र घं.	मि.	१३ चं घं.	मि.	१४ मं घं.	मि.	३० बु घं.	मि.
तुला	७	५५	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१
वृश्चिक	१०	१२	१०	८	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८
धनु	१२	१८	१२	१४	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४
मकर	२	५	२	१	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११
कुम्भ	३	३६	३	३२	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२
मीन	५	४	५	०	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मेष	६	४१	६	३७	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७
वृष	८	३७	८	३३	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३
मिथुन	१०	५१	१०	४७	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७
कर्क	१	९	१	५	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५
सिंह	३	२३	३	१९	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४९	२	४५	२	४२	२	३७	२	३३	२	२९
कन्या	५	३६	५	३२	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२

३२ पं० कार्त्तिककृष्ण ३० बुध

अहर्गण ३०२

अयनांश २४।२।४४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	६	५	६	४	५	७	५	११
२३	१६	२	१८	२६	९	१०	४	४
४३	१९	४४	४९	३९	२५	१०	७	७
२३	३३	३०	३६	३८	२	२०	४०	४०
६०	७२९	३५	१००	९	६४	६	३	३
३२	१८	११	२०	९	११	२०	११	११



○धनवन्तरिजयन्ती १३। कामेश्वरीजयन्ती १३। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" नरकचतुर्दशी १४। (चन्द्रोदय व्यापिनी)। चन्द्रोदय रा. ४।४५। गोत्रिरात्र-यमपञ्चक आरम्भ। यायीजययोग दि. ८।५५ तक। ■ स्थायीजययोग दि. ११।२९ तक। ♐ की पूजा। सायं देवमन्दिरों में दीपदान। रात्रि के अन्त में दरिद्रा का निःसारण। गोत्रिरात्र निवृत्ति। महावीर निर्वाण दिवस (जैन)। शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए सुखकारक होती है।

मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति. ७ मंगल को रा. १०।१४ से। ति. ९ गुरु को रा. १।३२ तक।

वायु पुराण के अनुसार हनुमज्जन्मोत्सव- आश्विन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि तथा स्वाती नक्षत्र के मेष लग्न में माता अञ्जनी के गर्भ से शिव रूपी हनुमान का जन्म हुआ। शुक्लादि मास गणना से कार्तिक कृष्ण पक्ष ही आश्विन कृष्ण पक्ष होगा अतः तुला के सूर्य में कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को सायं काल मेष लग्न में जन्मोत्सव तथा अगले दिन दर्शन पूजन आदि करना चाहिए। अमावस्या में लक्ष्मी पूजन- देशकाल-नाम-गोत्र-उच्चारण-पूर्वक "मम गृहेऽचललक्ष्मीनिवासाय लक्ष्मीपूजनं करिष्ये" से संकल्प कर विधि पूर्वक लक्ष्मी पूजन करके प्रार्थना करें। प्रार्थना मन्त्र- नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।। कार्तिक कृष्ण १४ को साभ्यङ्ग स्नान- कार्तिक कृष्ण १४ को थोड़ी रात्रि शेष रहने पर चन्द्रोदय के समय शरीर में तेल का लेपन कर हल से निकाले हुए अपामार्ग को शाखाओं सहित तीन बार जल में घुमाकर उस जल से स्नान करें। जल में अपामार्ग घुमाने का मन्त्र- सितालोष्टसमायुक्तः संकटक दलान्वितः।। हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणं पुनःपुनः।। तुला की संक्रान्ति में दीपदान- तुला के सूर्य में जो मनुष्य सायंकाल एक मास तक आकाश में तिल के तेल का दीपक जलाता है उसे लक्ष्मी, सौन्दर्य, सौभाग्य, तथा सम्पत्ति आदि की प्राप्ती होती है। आकाश में दीप जलाने का मन्त्र- दामोदराय नभसि तुलायां लीलया सह। प्रदीपन्ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे। गोवत्स द्वादशी- कार्तिक कृष्ण द्वादशी 'गोवत्स' द्वादशी होती है। उस दिन दूध वाली सवत्सा गाय का अलंकरण कर विधिवत् पूजन करके ताम्रपात्र से जल देना चाहिए। मन्त्र- क्षीरोदार्णवसंभूते सुरासुरनमस्कृते। सर्वदेवमयी मातर्गृहणार्घ्यं नमोनमः।। कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी सायंकाल असमय मृत्यु निवारण हेतु घर से बाहर यम के लिए दीप दान करना चाहिए (कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे, यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति)। मन्त्र- मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन यमया सह त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतां मम।। यहीं पर (घर के बाहर) नरक निवारण हेतु चतुर्मुख दीप का दान भी करना चाहिए। मन्त्र- ततो दीपश्चतुर्दश्यां नरकप्रीतये मया। चतुर्वर्तिसमायुक्तः सर्वपापप्रणुत्तये।।

कार्तिकशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि २१ कार्तिक से ४ अग्रहायण तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक १२ नवम्बर से २५ तक सन् २०१५ ई.।।

दि.मा. घ.	प.	श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल शरद् ऋतु।।																									योग
२७	१२	१	गु	४३	४	रा	११	४८	विशाखा	२३	५	दि	३	४८	शोभन	५९	२५	रा	६	२०	किं	११	२५	बव	४३	४	प्रवर्धमान
२७	९	२	शु	४५	१८	रा	१२	४२	अनुराधा	२६	५६	सा	५	२१	अतिगण्ड	५८	२	रा	५	४८	बा	१४	११	कौ	४५	१८	राक्षस
२७	६	३	श	४६	९	रा	१	३	ज्येष्ठा	२९	३७	सा	६	२६	सुकर्मा	५५	३५	रा	४	४९	तै	१५	४४	गर	४६	९	मुसल
२७	३	४	र	४५	४१	रा	१२	५२	मूल	३१	१	रा	७	०	धृति	५२	१०	रा	३	२८	व	१५	५५	भ	४५	४१	सिद्धि
२७	०	५	चं	४४	२	रा	१२	१४	पू.षा.	३१	१०	रा	७	५	शूल	४७	४४	रा	१	४३	बव	१४	५२	बा	४४	२	उत्पात
२६	५५	६	मं	४१	१४	रा	११	७	उ.षा.	३०	११	सा	६	४१	गण्ड	४२	२८	रा	११	३६	कौ	१२	३८	तै	४१	१४	मानस
२६	५२	७	बु	३७	२९	रा	९	३८	श्रवण	२८	१७	सा	५	५७	वृद्धि	३६	२६	रा	९	१२	गर	९	२२	व	३७	२९	छत्र
२६	५०	८	गु	३२	५३	रा	७	४७	धनिष्ठा	२५	३२	दि	४	५१	ध्रुव	२९	४४	सा	६	३२	भ	५	११	बव	३२	५३	श्रीवत्स
२६	४७	९	शु	२७	३९	सा	५	४३	शतभिष	२२	५	दि	३	२९	व्याघात	२२	२९	दि	३	३९	बा	०	१६	कौ	२७/५४	३१/५०	सौम्य
२६	४५	१०	श	२२	१	दि	३	२७	पू.भा.	१८	१०	दि	१	५५	हर्षण	१४	५३	दि	१२	३६	गर	२२	१	व	४९	५	कालदण्ड
२६	४२	११	र	१६	९	दि	१	८	उ.भा.	१४	३	दि	१२	१७	वज्र	७/२२	४/४	प्रा	९/६	३०/११	भ	१६	९	बव	४३	१०	सुस्थिर
२६	४०	१२	चं	१०	११	दिं	१०	४४	रेवती	९	४९	दि	१०	३६	व्यतिपात	५१	२१	रा	३	१२	बा	१०	११	कौ	३७	१८	मातङ्ग
२६	३९	१३	मं	४/५४	२४/३५	प्रा	६/१	२६/१६	अश्विनी	५	४५	दि	८	५८	वरीयान	४३	४८	रा	१२	११	तै	४	२४	गर	३१/५८	४२/५१	अमृत
२६	३६	१५	बु	५४	४	रा	४	२१	भरणी	२/५१	६/५०	प्रा	७/४	११/१५	परिघ	३६	३८	रा	९	२०	भ	२६	३२	बव	५४	४	काण

ति.	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे. अं. -	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
१	१२	१६	२५	२६	२१	वृश्चिक	६।५१	६	३४	५	२६	६	२४	४३	५५	१७	२८	-	१८	-	-
२	१३	१७	२६	२७	२२			६	३५	५	२५	६	२५	४४	२१	१७	४४	-	१८	६	३६
३	१४	१८	२७	२८	२३	धनु	२९।३७	६	३५	५	२५	६	२६	४५	५	१८	१	-	१८	७	२५
४	१५	१९	२८	२९	२४			६	३६	५	२४	६	२७	४५	४२	१८	१६	-	१८	८	१७
५	१६	२०	२९	३०	२५	मकर	४५।५५	६	३७	५	२३	६	२८	४६	२२	१८	३२	-	१८	९	१२
६	१७	२१	३०	१	२६			६	३७	५	२३	६	२९	४७	२	१८	४५	-	१८	१०	८
७	१८	२२	१	२	२७	कुम्भ	५६।५५	६	३८	५	२२	७	०	४७	४५	१९	२	-	१७	११	७
८	१९	२३	२	३	२८			६	३८	५	२२	७	१	४८	२९	१९	१६	-	१७	१२	७
९	२०	२४	३	४	२९			६	३९	५	२१	७	२	४९	१५	१९	३०	-	१७	१	८
१०	२१	२५	४	५	३०	मीन	४।९	६	३९	५	२१	७	३	५०	३	१९	४४	-	१६	२	९
११	२२	२६	५	६	१			६	४०	५	२०	७	४	५०	५३	१९	५७	-	१६	३	१३
१२	२३	२७	६	७	२	मेष	९।४९	६	४०	५	२०	७	५	५१	४३	२०	१०	-	१६	४	१७
१३	२४	२८	७	८	३			६	४०	५	२०	७	६	५२	३५	२०	२३	-	१६	५	२२
१५	२५	२९	८	९	४	वृष	१६।१७	६	४१	५	१९	७	७	५३	२७	२०	३५	-	१५	६	२५

वृश्चिकराशि दि. ९।१८। अन्नकूट १। काशी से अन्यत्र गोवर्धनपूजा। बलिप्रतिपदा १। सायं गोक्रीडन।❖

चन्द्रदर्शन। मु. १५ जघन्या। फल महँगी। उत्तर शृंग सस्तीकारक। काशी में गोवर्धनपूजा। यमद्वितीया २।♐

धनुराशि सा. ६।२६। मु. सफर २ हिजरी सन् १४३७। नेहरु जयन्ती (बाल दिवस)। रवियोग सा. ६।२६ से।

भ. दि. १२।५८ से रा. १२।५२ तक। रविवती वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ (तीन दिनों तक)।●

मकरराशि रा. १२।५९। सूर्यषष्ठी व्रत का द्वितीय दिन। यायीजययोग रा. ७।५ से रा. १२।१४ तक। रवियोग रा. ७।५ से।

श्रीसूर्यषष्ठी ६ व्रत। सायं काल सूर्य को अर्घ्यदान। रात्रि शेष में द्वितीय अर्घ्यदान। डालाछठ (विहार)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रतम्। ⊙सं. वृश्चिकराशि का सूर्य ♏

भ. रा. ९।३८ से। कुम्भराशि रा. ५।२४। श्रीसूर्यषष्ठी व्रत की पारणा। कल्पादि ७। सौरमार्गशीर्षमासारम्भ। पञ्चक प्रारम्भ रा.५।२४।

भ. दि. ८।४२ तक। गोपाष्टमी ८। सायं गायों को अलंकृत करके पूजन। रवियोग दि. ४।५१ से। ●सर्वार्थसिद्धियोग रा. ७।० तक। रवियोग रा. ७।० तक।

अक्षयनवमी ९। कुष्माण्ड में रत्नभरकर दान करना चाहिए। नवमी में उपवास पूर्वक अयोध्या-मथुरा परिक्रमा। श्रीविष्णुत्रिरात्रारम्भ। सोने की श्रीविष्णु प्रतिमा❢

भ. रा. २।१७ से। मीनराशि दि. ८।१९। यायीजययोग दि. ३।२७ से। रवियोग समस्त।

भ. दि. १।८ तक। प्रबोधिनी ११ एकादशी व्रत सबका। भद्रा के बाद ईख (गन्ना) का रसपान। श्रीविष्णुप्रबोधनोत्सव। श्रीविष्णुत्रिरात्रनिवृत्ति। भीष्मपञ्चक☙

मेषराशि दि. १०।३६। *दिन १०।३६ से १०।४४ तक एकादशी व्रत की पारणा*। सोमप्रदोष १२ व्रत। पुत्र प्राप्ति के लिए। चातुर्मास्य व्रत की समाप्ति। दालदान।○

भ. रा.शे. ६।१६ से। श्रीवैकुण्ठ १४ चतुर्दशी व्रत। श्री महाविष्णुपूजा। अरुणोदयकाल में मणिकर्णिका स्नान। श्रीकाशीविश्वनाथ प्रतिष्ठादिन। श्रीनर्मदेश्वर◆

भ. सा. ५।१८ तक। वृषराशि दि. १।१२। स्नान-दान-व्रत की १५ कार्त्तिकी पूर्णिमा। गुरुनानक जयन्ती। कार्तिकेय दर्शन। भीष्मपञ्चकनिवृत्ति।✪

● ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ।। ●

ति.१२ सोम को रेवती में राहुवेध तथा व्यतिपात है।

ति.१५ बुध को रा.शे.६।१५ के बाद रोहिणी में रे. ७ ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	गु	५	३	१९	४९	६	२०	२९	५६	४	२६	४८	४७	५	१०	२९	२१	७	१०	१६	४०	५	४	४	२९
२	शु	५	३	५५	८	६	२२	१०	१६	४	२६	५७	५६	५	११	३३	४०	७	१०	२३	२७	५	४	१	१८
३	श	५	४	३०	२७	६	२३	५०	३६	४	२७	७	४	५	१२	३७	५९	७	१०	३०	३४	५	३	५८	८
४	र	५	५	५	४६	६	२५	३०	५९	४	२७	१६	१३	५	१३	४२	१८	७	१०	३७	४०	५	३	५४	५७
५	चं	५	५	४१	४	६	२७	१२	२७	४	२७	२५	२६	५	१४	४६	३७	७	१०	४४	४७	५	३	५१	४६
६	मं	५	६	१६	२३	६	२८	५३	५५	४	२७	३४	३९	५	१५	५१	५३	७	१०	५१	५३	५	३	४८	३५
७	बु	५	६	५१	४२	७	०	३५	२३	४	२७	४३	५१	५	१६	५९	४४	७	१०	५८	५९	५	३	४५	२४
८	गु	५	७	२७	१	७	२	१६	५१	४	२७	५२	३३	५	१८	८	१४	७	११	६	६	५	३	४२	१३
९	शु	५	८	२	२०	७	३	५८	१९	४	२७	५९	५७	५	१९	१६	४५	७	११	१३	१२	५	३	३९	३
१०	श	५	८	३७	३९	७	५	३९	४७	४	२८	७	२०	५	२०	२५	१५	७	११	२०	१९	५	३	३५	५२
११	र	५	९	१२	५८	७	७	२१	१५	४	२८	१४	४३	५	२१	३३	४६	७	११	२७	२५	५	३	३२	४१
१२	चं	५	९	४८	१७	७	९	२	४३	४	२८	२२	६	५	२२	४२	२६	७	११	३४	३१	५	३	२९	३०
१३	मं	५	१०	२२	२४	७	१०	४४	११	४	२८	२९	२९	५	२३	५१	१५	७	११	४१	३८	५	३	२६	१९
१५	बु	५	१०	५६	२०	७	१२	२५	३९	४	२८	३६	५३	५	२५	०	५	७	११	४८	४४	५	३	२३	९

ग्रहचार- मंगल- ति. १२ सोम को हस्त में दि. २।५४।। बुध- ति. ६ मंगल को वृश्चिकराशि में रा. १०।१५। ति. ८ गुरु को अनुराधा में रा. ९।३४।। गुरु- उत्तराफाल्गुनी १ चरण में।। शुक्र- ति. १२ सोम को चित्रा में रा. ७।४६।। शनि- अनुराधा ३ चरण में।। राहु- ति. १५ बुध को उ.फा. २ चरण में तथा केतु पू.भा. ४ चरण में रा.शे. ६।२६।।

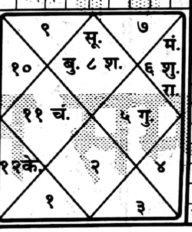
कार्त्तिकमास के शुक्लपक्ष पञ्चमी को सोमवार हो तो नर-नारी तथा शासकों को सर्वत्र सुखदायक होता है।

३३पं० कार्त्तिकशुक्ल ८गुरु

अहर्गण ३१०

अयनांश २४।३।४५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	१०	५	७	४	५	७	५	११
१	०	७	२	२७	१८	११	३	३
४८	४३	२७	१६	५२	८	६	४२	४२
२९	६	१	५१	३३	१४	६	१३	१३
६०	८३८	३५	१०१	७	६८	७	३	३
५६	२६	११	२८	२४	३१	६	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ गुरु को विशाखा में सूर्ययुति है। ति. २ शुक्र को अनुराधा में सूर्यभोग्य है। ति. ३ शनि को ज्येष्ठा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ४ रवि को मूल में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ सोम को पू.षा. में दोलारोहण शिल्पविद्या वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। रा.७।५ के बाद उ.षा. में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.६) मुहूर्त्त है। ति. ६ मंगल को उ.षा. में सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण मुहूर्त्त है। श्रवण में पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा (सप्तमी में) मुहूर्त्त है। ति. ७ बुध को श्रवण में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा दँवरी नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ गुरु को धनिष्ठा में सूर्यवेध तथा भद्रादोष है। ति. ९ शुक्र को शतभिष में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त होने से अशुभ है। रिक्ता भी है। ति. १० शनि को पू.भा. में वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। दि. १।५५ के बाद उ.भा. में केतुयुति तथा भद्रादोष है। ति. ११ रवि को उ. भा. में पूर्वदोष है। ति. १२ सोम को रेवती में राहुवेध तथा व्यतिपातदोष है। रा. ३।१२ के बाद अश्विनी में वधूप्रवेश (ल. ८) द्विरागमन (ल. ६ वा ७) पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. १३ मंगल को अश्विनी में दि. ८।२६ तक सूतीस्नान लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा वस्तुक्रय शस्त्रनिर्माण वाहन खरीदने ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। चतुर्दशी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १५ बुध को भद्रा के बाद कृत्तिका में वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। रा.शे.६।१५ के बाद रोहिणी में द्विरागमन (ल. ८) मुहूर्त्त है।

तिथि ल.अ.	१ गु घं.	मि.	२ शु घं.	मि.	३ श घं.	मि.	४ र घं.	मि.	५ चं घं.	मि.	६ मं घं.	मि.	तिथि ल.अ.	७ बु घं.	मि.	८ गु घं.	मि.	९ शु घं.	मि.	१० श घं.	मि.	११ र घं.	मि.	१२ चं घं.	मि.	१३ मं घं.	मि.	१५ बु घं.	मि.
तुला	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	वृश्चिक	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२१
वृश्चिक	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	धनु	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२७
धनु	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	मकर	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१४
मकर	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	कुम्भ	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४५
कुम्भ	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	मीन	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१३
मीन	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	मेष	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५०
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मेष	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	वृष	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४६
वृष	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	मिथुन	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	०
मिथुन	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	कर्क	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१८
कर्क	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	सिंह	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३२
सिंह	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	कन्या	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४५
कन्या	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	तुला	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	१

३४ पं० कार्त्तिकशुक्ल १५बुध

अहर्गण ३१६

अयनांश २४।३।४६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	०	५	७	४	५	७	५	११
७	२६	१०	१२	२८	२५	११	३	३
५३	१०	५६	२५	३६	०	४८	२३	२३
२७	४०	२०	३९	५३	५	४४	९	९
६०	८५२	३३	१००	७	६८	७	३	३
५३	१९	५५	२०	२३	५०	७	११	११



❖ मार्गपालीबन्धन। यष्ट्याकर्षण। साभ्यङ्ग स्नान। द्यूतक्रीड़ा। प्रातः नारीकर्तृक निराजन। सायं मंगलमालिका। यायिजययोग दि.३।४८ से रा. ११।४८ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।४८ से। ♐ भ्रातृद्वितीया (भइया दूज)। बहन के घर भोजन। वस्त्रादि से भगिनी पूजा। दूत चित्रगुप्त सहित यमपूजन। अपराह्न में यमुना स्नान। दवातपूजा (विहार)। यमपंचकनिवृत्ति। ♏ दि. ११।४५। मु. ४५ वृहत्ती। फल सस्ती। पूर्व का ६ घण्टा २४ मिनट पुण्यकाल। दीपवस्त्रदान। नर्मदा में स्नान। हेमन्तऋतु प्रारम्भ। रवियोग सा. ६।४१ तक। ❢का तुलसी के साथ पूजन कर द्वादशी में ब्राह्मण को दान करना चाहिए। आँवला वृक्ष के नीचे भोजन। आँवला वृक्ष की पूजा। कृत्तयुगादि ९। ⊙अनुराधा नक्षत्र का सूर्य सा. ६।४७। रवियोग दि. ३।२९ तक। पुनः रवियोग सा. ६।४७ से। ☙ आरम्भ। तुलसी विवाह। राष्ट्रीय अग्रहायणमास दि. ३०। यायीजययोग दि. १।८ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १२।१७ तक। रवियोग दि. १२।१७ तक। ○मन्वादि १२। ⊙सायन धनुराशि का सूर्य दि. ८।२७। नारायण द्वादशी। गरुण द्वादशी (उड़ीसा)। पञ्चक समाप्ति दि. १०।३६। ◆को तुलसी समर्पण। स्थायीजययोग प्रा. ८।२६ से दि. ८।५८ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।५८ तक। ✪ त्रिपुरोत्सव। पुष्कर क्षेत्र में त्रिपुरासुर को दीपदान। सायं क्षीरसागर आदि दान। काशी में देवदीपावलीमहोत्सव। मन्वादि १५। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा. ७।३१ से रा.शे. ६।१५ तक। रवियोग प्रा. ७।३१ तक।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. २ शुक्र को सा. ५।२१ से। ति. ४ रवि को रा. ७।० तक।
रेवती/अश्विनी- ति. ११ रवि को दि. १२।१७ से। ति. १३ मंगल को दि. ८।५८ तक।
पञ्चक विचार- ति. ७ बुध को रा. ५।२४ से। ति. १२ सोम को दि. १०।३६ तक।

प्रबोधनोत्सव- कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी अथवा द्वादशी तिथि को तुलसी एवं विष्णु का विधिवत् षोडशोपचार पूजन कर पुनः प्रबोधन करें। वाराहपुराणोक्त प्रबोधन मन्त्र- ब्रह्मेन्द्ररुद्राग्निकुबेरसूर्यसोमादिभिर्वन्दितवन्दनीय। बुध्यस्य देवेश जगन्निवास मन्त्र प्रभावेण सुखेन देव। इत्यनु द्वादशी देव प्रबोधार्थं विनिर्मिता। त्वयैव सर्वलोकानां हितार्थं शेषशायिना।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वयिसुप्ते जगन्नाथ जगत् सुप्तं भवेदिदम् ।। उत्थिते चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव। गता मेघा वियच्चैव निर्मलं निर्मला दिशः।। शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव। इदं विष्णुरितिप्रोक्तो मन्त्र उत्थापने हरेः।। इति।। इसके बाद चातुर्मास्य व्रत की समाप्ति करें। मन्त्र- इदं व्रतं मया देव कृतं प्राप्तं तव प्रभो। तेन मे पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन ।।इति।। कार्तिक शुक्ल पक्ष में सूर्यषष्ठी व्रत का निर्णय- कला, काष्ठा, निमेष मात्र भी षष्ठी अगर द्वितीय दिन प्राप्त हो रही हो तो उसी षष्ठी में उपवास कर सप्तमी में प्रातः विहित पूजन द्रव्यों द्वारा सूर्य पूजन करने से अभीष्ट फल प्राप्त होता है। उपर कहे हुए सूर्य पूजन क्रम में अर्घ्यादि पूजन की ही प्रधानता है। अर्घ्यादि पूजन में प्रथम दिन सायं काल ६ या ७ तिथि के ग्रहण का नियम नहीं है। यह निर्णय राजनाथ कृत तिथि निर्णय में उल्लिखित है। यम द्वितीया निर्णय- प्रतिपदा युक्त यम द्वितीया ही ग्राह्य है, हेमाद्रि के अनुसार यम द्वितीया मध्याह्न व्यापिनी तथा पूर्व विद्ध ही ग्राह्य है। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को अपराह्न में यमुना में स्नान कर यम पूजन से दीर्घायु की प्राप्ति होती है। प्रतिपदा की विधि- गोवर्धन का पूजन कर व्रत करें। गोवर्धन की पूजा ही गोवर्धन पूजा है। भ्रातृ भोजन के पूर्व की भगिनीयों को गोवर्धन पूजा करनी चाहिए।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल हेमन्तऋतु।।

दि.मा. घ.	ब.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे. अं. -	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
२६	३३	१	गु	४९	५७	रा	२	४०	रोहिणी	५६	३४	रा	५	१९	शिव	३०	१	सा	६	४१	वा	२२	१	कौ	४९	५७	उत्पात	२६	१	९	१०	५			६	४१	५	१९	७	८	५४	२७	२०	४७	-	१५	५	४७
२६	३१	२	शु	४६	४१	रा	१	२२	मृगशिरा	५५	२	रा	४	४३	सिद्ध	२४	६	दि	४	२०	तै	१८	१९	गर	४६	४१	मानस	२७	२	१०	११	६	मिथुन	२५।४८	६	४२	५	१८	७	९	५५	२६	२०	५८	-	१५	६	४३
२६	२९	३	श	४४	३०	रा	१२	३०	आर्द्रा	५४	३४	रा	४	३२	साध्य	१८	५८	दि	२	१७	व	१५	३६	भ	४४	३०	मुद्गर	२८	३	११	१२	७			६	४२	५	१८	७	१०	५६	१२	२१	९	-	१४	७	४०
२६	२७	४	र	४३	३१	रा	१२	७	पुनर्वसु	५५	१८	रा	४	५०	शुभ	१४	४३	दि	१२	३६	बव	१४	१	वा	४३	३१	ध्वज	२९	४	१२	१३	८	कर्क	४०।७	६	४२	५	१७	७	११	५७	११	२१	२०	-	१४	८	३६
२६	२५	५	चं	४३	४८	रा	१२	१४	पुष्य	५७	१७	रा	५	३८	शुक्ल	११	२४	दि	११	१७	कौ	१३	४०	तै	४३	४८	धाता	३०	५	१३	१४	९			६	४३	५	१७	७	१२	५८	१०	२१	३०	-	१४	९	३२
२६	२४	६	मं	४५	२७	रा	१२	५४	श्लेषा	६०	०	स	म	स्त	ब्रह्म	९	६	दि	१०	२१	गर	१४	३८	व	४५	२७	आनन्द	१	६	१४	१५	१०			६	४३	५	१७	७	१३	५९	११	२१	४०	-	१३	१०	२६
२६	२२	७	बु	४८	१२	रा	२	१	श्लेषा	०	३४	प्रा	६	५८	ऐन्द्र	७	५०	दि	९	५२	भ	१६	५०	बव	४८	१२	राक्षस	२	७	१५	१६	११	सिंह	०।३४	६	४४	५	१६	७	१५	०	१२	२१	५०	-	१३	११	१८
२६	२०	८	गु	५२	१०	रा	३	३६	मघा	४	५७	दि	८	४३	वैधृति	७	२४	दि	९	४२	वा	२०	११	कौ	५२	१०	मुसल	३	८	१६	१७	१२			६	४४	५	१६	७	१६	१	१४	२१	५९	-	१३	१२	९
२६	१८	९	शु	५६	५४	रा	५	३०	पू.फा.	१०	२२	दि	१०	५३	विष्कुम्भ	७	४८	दि	९	५१	तै	२४	३२	गर	५६	५४	सिद्धि	४	९	१७	१८	१३	कन्या	२६।५४	६	४४	५	१६	७	१७	२	२०	२२	७	-	१२	१२	५९
२६	१७	१०	श	६०	०	स	म	स्त	उ.फा.	१६	२८	दि	१	२०	प्रीति	८	४५	दि	१०	१५	व	२९	३५	भ	६०	०	उत्पात	५	१०	१८	१९	१४			६	४५	५	१५	७	१८	३	२६	२२	१६	-	१२	१	४८
२६	१६	१०	र	२	१५	प्रा	७	३९	हस्त	२२	५८	दि	३	५६	आयुष्मान	१०	२	दि	१०	४६	भ	२	१५	बव	३४	५८	मानस	६	११	१९	२०	१५	तुला	५६।११	६	४५	५	१५	७	१९	४	३२	२२	२३	-	११	२	३८
२६	१४	११	चं	७	४०	दि	९	४९	चित्रा	२९	२३	सा	६	३०	सौभाग्य	११	२२	दि	११	१८	वा	७	४०	कौ	४०	१२	मुद्गर	७	१२	२०	२१	१६			६	४५	५	१५	७	२०	५	४०	२२	३१	-	११	३	२९
२६	१३	१२	मं	१२	४४	दि	११	५१	स्वाती	३५	२१	रा	८	५३	शोभन	१२	२३	दि	११	४२	तै	१२	४४	गर	४४	५५	ध्वज	८	१३	२१	२२	१७			६	४५	५	१५	७	२१	६	४८	२२	३८	-	११	४	२१
२६	१३	१३	बु	१७	६	दि	१	३६	विशाखा	४०	३५	रा	१२	०	अतिगण्ड	१२	५४	दि	११	५६	व	१७	६	भ	४८	४५	धाता	९	१४	२२	२३	१८	वृश्चिक	२४।१७	६	४६	५	१४	७	२२	७	५८	२२	४४	-	१०	५	१४
२६	१२	१४	गु	२०	२४	दि	२	५६	अनुराधा	४४	४२	रा	१२	३९	सुकर्मा	१२	३९	दि	११	५०	श	२०	२४	च	५१	३२	आनन्द	१०	१५	२३	२४	१९			६	४६	५	१४	७	२३	९	९	२२	५०	-	१०	६	७
२६	१०	३०	शु	२२	३९	दि	३	५०	ज्येष्ठा	४७	४२	रा	१	५१	धृति	११	३१	दि	११	२२	नाग	२२	३९	किं	५३	४	चर	११	१६	२४	२५	२०	धनु	४७।४२	६	४६	५	१४	७	२४	१०	२१	२२	५६	-	९	-	-

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष।।

कार्तिक व्रत की पारणा। यायीजययोग रा. २।४० तक। ♦ अष्टकाश्राद्ध। रुक्मीणी अष्टमी ८ व्रत (चन्द्रोदय व्यापिनी)। चन्द्रोदय रा. १२।९। कालाष्टमी ८। प्रथमाष्टमी (उड़ीसा)। ⊙ ज्येष्ठा नक्षत्र का सूर्योदय रा. १।५८।
मिथुनराशि सा. ५।११। मृत्युबाणारम्भ दि. ८।३४।
भ. दि. १२।५६ से रा. १२।३० तक। सौभाग्यसुन्दरी ३ व्रत। मृत्युबाण समाप्ति दि. ८।१२।
कर्कराशि रा. १०।४६। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।३६। यायीजययोग रा. १२।७ से रा. ४।५० तक। ○
सर्वार्थसिद्धियोग रा.शे. ५।३८ तक। रवियोग रा.शे. ५।३८ से। ○सर्वार्थसिद्धियोग रा. ४।५० से।
भ. रा. १२।५४ से। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। रवियोग समस्त। दिसम्बर १।
भ. दि. १।२८ तक। सिंहराशि प्रा. ६।५८। रवियोग प्रा. ६।५८ तक।
श्रीभैरवाष्टमी ८ व्रत। सायं भैरव उत्पत्ति। भैरवयात्रा तथा दर्शन-पूजन। ♦
कन्याराशि सा. ५।३०।
भ. सा. ६।३५ से। मृत्युबाणारम्भ रा. ४।५८। यमघंटयोग दि. १।२० से।
भ. दि. ७।३९ तक। तुलाराशि रा. ५।१३। मृत्युबाण समाप्ति रा. ४।३१। यायीजययोग प्रा. ७।३९ से दि. ३।५६ तक। ❖
उत्पन्ना ११ एकादशी व्रत सबका। ❖सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।५६ तक। अमृतसिद्धियोग दि. ३।५६ तक।
भौम प्रदोष १२ व्रत। ऋण मुक्ति के लिए। ☾की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए सुखकारक होती है।
भ. दि. १।३६ से रा. २।१६ तक। वृश्चिकराशि दि. ४।२९। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता ♦
सर्वार्थसिद्धियोग रा. १२।३९ तक। ♦महानिशेत्युक्तेः।" सर्वार्थसिद्धियोग रा. ११।० से। अमृतसिद्धियोग रा. ११।० से।
धनुराशि रा. १।५१। स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। रुद्रव्रत (पीड़िया) (प्रदोष में)। शुभवार तथा अमावस्या ☾

मार्गशीर्षमास के कृत्य-महाभारत- मार्गशीर्षमास में जो व्यक्ति एक बार भोजन करता है और ब्राह्मणों को भक्ति पूर्वक भोजन कराता है वह सब पापों से मुक्त तथा धन-धान्य से सम्पन्न होता है।

॥ विवाहमुहूर्त्तपञ्चाङ्गलग्नविमर्श ॥

ति.१ गुरु को रोहिणी में रे.७ दिन में ल.८ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० वा ल.१० इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०।। (गु.दा.) वा ल.गोधूलि वा ल.३ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (षष्ठस्थ लग्नेश शुभ नहीं है) वा ल.४ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३ (तृतीयस्थ शुक्र शुभ नहीं है)। रा.५।१९ के बाद मृगशिरा में रे.८ ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०

ति.२ शुक्र को मृगशिरा में मृत्युबाण से पूर्व रेवती में रे.८ दिन में ल.८ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०

ति.७ बुध को प्रा.६।५८ के बाद मघा में वैधृतिदोष तथा भद्रा है।

ति.८ गुरु को मघा में वैधृतिदोष है।

ति.९ शुक्र को दि.१०।५३ के बाद उ.फा. में राहुयुति है।

ति.१० शनि को उ.फा. में पूर्वदोष है। दि.१।२० के बाद हस्त में भौमयुति, भद्रादोष तथा मृत्युबाण है।

ति.१० रवि को हस्त में पूर्वदोष है।

ति.११ सोम को सा.६।३० के बाद स्वाती में रे.८ ल. ४ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० वा ल. ६ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१७ (के.दा.)

ति.१२ मंगल को स्वाती में रे.८ दिन में ल. १० इष्ट ५ ग्र.व.वि.११।। वा ल.गोधूलि वा ल. ४ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० इसके बाद मासान्तदोष है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	गु	५	११	३०	१७	७	१४	५	५९	४	२८	४४	१६	५	२६	८	५५	७	११	५५	५१	५	३	१९	५८
२	शु	५	१२	४	१३	७	१५	४६	११	४	२८	५१	३९	५	२७	१७	४४	७	१२	२	५७	५	३	१६	४७
३	श	५	१२	३८	१०	७	१७	२७	३४	४	२८	५९	२	५	२८	२६	३४	७	१२	१०	३	५	३	१३	३६
४	र	५	१३	१२	६	७	१९	१०	२	४	२९	६	२६	५	२९	३५	२३	७	१२	१७	१०	५	३	१०	२५
५	चं	५	१३	४६	३	७	२०	५२	२६	४	२९	१३	४९	६	०	४४	१३	७	१२	२४	१६	५	३	७	१५
६	मं	५	१४	१९	५९	७	२२	३०	१५	४	२९	२१	१२	६	१	५३	२	७	१२	३१	२३	५	३	४	४
७	बु	५	१४	५३	५६	७	२४	८	३	४	२९	२८	३८	६	३	१	५२	७	१२	३८	२९	५	३	०	५३
८	गु	५	१५	२७	५२	७	२५	४५	५२	४	२९	३६	६	६	४	१०	४१	७	१२	४५	३५	५	२	५७	४२
९	शु	५	१६	१	४९	७	२७	२३	४०	४	२९	४३	२४	६	५	१९	३१	७	१२	५२	४२	५	२	५४	३१
१०	श	५	१६	३५	४७	७	२९	१	१९	४	२९	५१	२	६	६	२८	२०	७	१२	५९	४८	५	२	५१	२१
१०	र	५	१७	९	४८	८	०	३५	३८	४	२९	५६	४५	६	७	३७	१०	७	१३	६	५५	५	२	४८	१०
११	चं	५	१७	४३	४९	८	२	९	२८	५	०	२	२	६	८	४६	०	७	१३	१४	१	५	२	४४	५९
१२	मं	५	१८	१७	५०	८	३	४४	१५	५	०	७	१९	६	९	५४	४९	७	१३	२१	७	५	२	४१	४८
१३	बु	५	१८	५१	५१	८	५	१९	२	५	०	१२	३६	६	११	३	३९	७	१३	२८	१४	५	२	३८	३७
१४	गु	५	१९	२५	५२	८	६	५४	२	५	०	१७	५३	६	१२	१२	२८	७	१३	३५	२०	५	२	३५	२७
३०	शु	५	१९	५९	५३	८	८	२३	४३	५	०	२३	११	६	१३	२१	१८	७	१३	४२	२७	५	२	३२	१६

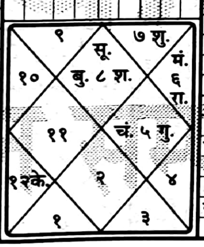
ग्रहचार- मंगल- हस्त में।। बुध- ति. ३ शुक्र को ज्येष्ठा में रा. ७।२६। ति. १० शनि को मूल तथा धनुराशि में रा. ९।४१।। गुरु- ति.१० रवि को उत्तराफाल्गुनी २ चरण तथा कन्याराशि में रा. ९।३१।। शुक्र- ति. ४ रवि को तुलाराशि में दि. ३।१८। ति. १० शनि को स्वाती में दि. १०।४९।। शनि- ति. ११ सोम को अनुराधा ४ चरण में रा. २।५९।। राहु- उ.फा. २ चरण में तथा केतु पू.भा. ४ चरण में।।

३५ पं० मार्गशीर्षकृष्ण ८ गुरु

अहर्गण ३२४

अयनांश २४।३।४६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	४	५	७	४	६	७	५	११
१६	१२	१५	२५	२९	४	१२	२	२
१	१८	२७	४५	३६	१०	४५	५७	५७
१४	२६	५२	५२	६	४१	३६	४२	४२
६१	७८५	३३	९७	७	६८	७	३	३
६	३२	५७	४८	२८	५०	७	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ गुरु को रोहिणी में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या वधूप्रवेश (ल.८ वा ११) द्विरागमन (ल. १२) द्वितीया में गृहारम्भ में चक्रशुद्धि ईंटनिर्माण विपणि ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। रात्रिशेष में मृगशिरा में पूर्व दिशा की यात्रा वधूप्रवेश(ल.८) द्विरागमन (ल.७) गृहारम्भ (ल.८) सूतीस्नान मुहूर्त्त है। ति. २ शुक्र को मृगशिरा में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन गर्भाधान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वाटिकारोपण वृष के चन्द्रमा में पूर्व-दक्षिण तथा मिथुन के चन्द्रमा में दक्षिण दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण वधूप्रवेश (ल. ८ वा ११) द्विरागमन (ल.१२ वा ७) गृहारम्भ (ल. ८ वा १२) विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ३ शनि को भद्रा से पूर्व आर्द्रा में शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। ति. ४ रवि को रिक्ता के बाद पुनर्वसु में उत्तर दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति.५ सोम को पुष्य में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन पशुओं की खरीद-बिक्री पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन वधूप्रवेश (ल. ८ वा ११) द्विरागमन (ल. १२ वा ७) विपणि वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ मंगल को श्लेषा में शनिवेध है। ति. ७ बुध को श्लेषा में पूर्वदोष तथा भद्रा है। ति. ८ गुरु को वैधृति के बाद पू.फा. में दँवरी नावनिर्माण वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति. ९ शुक्र को पू.फा. में रिक्तादोष है।

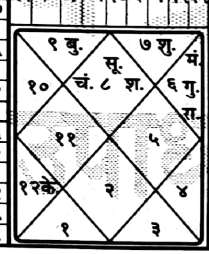
तिथि	१ गु		२ शु		३ श		४ र		५ चं		६ मं		७ बु		८ गु		९ शु		१० श		१० र		११ चं		१२ मं		१३ बु		१४ गु		३० शु	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
वृश्चिक	८	१७	८	१३	८	८	८	४	८	०	७	५५	७	५१	७	४७	७	४२	७	३८	७	३४	७	२९	७	२४	७	२०	७	१६	७	११
धनु	१०	२३	१०	१९	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	१	९	५७	९	५३	९	४८	९	४४	९	४०	९	३५	९	३०	९	२६	९	२२	९	१७
मकर	१२	१०	१२	६	१२	१	११	५७	११	५३	११	४८	११	४४	११	४०	११	३५	११	३१	११	२७	११	२२	११	१७	११	१३	११	९	११	४
कुम्भ	१	४१	१	३७	१	३२	१	२८	१	२४	१	१९	१	१५	१	११	१	६	१	२	१२	५८	१२	५३	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३५
मीन	३	९	३	५	३	०	२	५६	२	५२	२	४७	२	४३	२	३९	२	३४	२	३०	२	२६	२	२१	२	१६	२	१२	२	८	२	३
मेष	४	४६	४	४२	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२०	४	१६	४	११	४	७	४	३	३	५८	३	५३	३	४९	३	४५	३	४०
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृष	६	४२	६	३८	६	३३	६	२९	६	२५	६	२०	६	१६	६	१२	६	७	६	३	५	५९	५	५४	५	४९	५	४५	५	४१	५	३६
मिथुन	८	५६	८	५२	८	४७	८	४३	८	३९	८	३४	८	३०	८	२६	८	२१	८	१७	८	१३	८	८	८	३	७	५९	७	५५	७	५०
कर्क	११	१४	११	१०	११	५	११	१	१०	५७	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२६	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	८
सिंह	१	२८	१	२४	१	१९	१	१५	१	११	१	६	१	२	१२	५८	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४०	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२२
कन्या	३	४१	३	३७	३	३२	३	२८	३	२४	३	१९	३	१५	३	११	३	६	३	२	२	५८	२	५३	२	४८	२	४४	२	४०	२	३५
तुला	५	५७	५	५३	५	४८	५	४४	५	४०	५	३५	५	३१	५	२७	५	२२	५	१८	५	१४	५	९	५	४	५	०	४	५६	४	५१

३६ पं० मार्गशीर्षकृष्ण ३० शुक्र

अहर्गण ३३२

अयनांश २४।३।४७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	५	८	५	६	७	५	११
२४	१९	१९	८	०	१३	१३	२	२
१०	५४	५९	२३	२३	२१	४२	३२	३२
२१	१३	५३	४३	११	१८	२७	१६	१६
६१	७६	३४	८९	५	७०	७	३	३
१३	५४	१	४२	१७	६	९	११	११



गुरु-शुक्र के अस्त में अपवाद- नित्य की यात्रा, तीर्थगृहप्रवेश, नूतन वस्त्रधारण, वधूप्रवेश आदि मांगलिक कार्यों तथा गोदावरी एवं गंगा स्नान, श्रीशैलयात्रा, सूर्य-चन्द्रग्रहण, अन्न, चातुर्मास्य व्रत, सीमन्तोन्नयन, ऋतुक्रम एवं सभी प्रकार के उत्सवों में गुरु-शुक्र का अस्त दोष नहीं लगता है। वधूप्रवेश तथा द्विरागमन आदि का निर्णय- वधूप्रवेश (शब्दार्थ) नूतन विवाहिता के पितृ गृह से प्रथम बार पति गृह में प्रवेश को वधूप्रवेश कहा जाता है। द्विरागमन- (शब्दार्थ)- नववधूप्रवेश के बाद पिता के घर लौटकर कुछ दिन रही हुई वधू के पुनः द्वितीय बार पति गृह में प्रवेश को द्विरागमन कहते हैं। प्रथम प्रवेश अर्थात् वधूप्रवेश में शुक्रादि का दोष नहीं होता अपितु रात्रि काल में विवाह विहित नक्षत्र, शुभ मुहूर्त एवं स्थिर लग्नों में वधूप्रवेश शुभ होता है। इसमें सम्मुख शुक्र का विचार भी नहीं होता। ज्योतिर्निबन्ध के अनुसार प्रथमादि वर्षों में वधूप्रवेश का फल- विवाह के प्रथमादि वर्षों में वधूप्रवेश से क्रमशः धनवृद्धि, हानि, सुख, नाश, भोग, वैर एवं इसके बाद के वर्षों में शुभ फल की प्राप्ति होती है। "तदौ विवाहः कुलनिर्गमः कथ्यते" इत्यादि के अनुसार वशिष्ठ आदि ने जिस मत का प्रतिपादन किया है वह आर्ष वचन न होकर उनका अपना मत है। प्रतिपादित करते हैं कि वधूप्रवेश द्विरागमन से भिन्न है। प्रवेश एवं निर्गम (तदौ विवाहः कुलनिर्गमः) दोनों मुहूर्तों के निर्णय में भी पदार्थ की एक रूपता है। अतः १६ दिन के भीतर उपर लिखित मुहूर्त शुभ है परन्तु १६ दिन के बाद यात्रा समयों में वधू प्रवेश उचित है। "कृत ग्रन्थिबन्धन" इत्यादि वचनमूलक जो विलम्बित वधूप्रवेश है वह द्विरागमन न होकर १६ दिन के बाद का वधूप्रवेश ही है।

मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति.५ सोम को रा.५।३८ से। ति.८ गुरु को दि. ८।४३ तक। ज्येष्ठा/मूल- ति. १४ गुरु को रा. १२।३९ से।

☞ ति. १० शनि को उ.फा. में राहुयुति तथा भद्रादोष है। ति. १० रवि को हस्त में भौमयुति है। दि. ३।५६ के बाद चित्रा में केतुवेध है। ति. ११ सोम को चित्रा में पूर्वदोष है। सा. ६।३० के बाद स्वाती में गर्भाधान औषधसेवन वधूप्रवेश (ल. ८) द्विरागमन (ल. ६ वा ७) जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.८) मुहूर्त्त है। ति. १२ मंगल को स्वाती में सूतीस्नान (त्रयोदशी में) लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण वस्तुक्रय ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष ।।

दि.मा. घ.	प.	श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल हेमन्तऋतु।।																									योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे. अं. -	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
२६	९	१	श	२३	२९	दि	४	१०	मूल	४९	२४	रा	२	३२	शूल	९	२४	दि	१०	३२	वव	२३	२९	बा	५३	१५	गद	१२	१७	२५	२६	२१			६	४६	५	१४	७	२५	११	३४	२३	१	-	९	६	११
२६	८	२	र	२३	१	दि	३	५९	पू.षा.	४९	५३	रा	२	४४	गण्ड	६	१६	दि	९	१७	कौ	२३	१	तै	५२	११	शुभ	१३	१८	२६	२७	२२			६	४७	५	१३	७	२६	१२	४७	२३	५	-	८	७	६
२६	७	३	चं	२१	२०	दि	३	१९	उ.षा.	४९	९	रा	२	२७	वृद्धि	२ ५४	१ ५९	प्रा	७ ५	३१ ३८	गर	२१	२०	व	४९	५७	मृत्यु	१४	१९	२७	२८	२३	मकर	४।४२	६	४७	५	१३	७	२७	१४	२	२३	१०	-	८	८	३
२६	६	४	मं	१८	३४	दि	२	१३	श्रवण	४७	२६	रा	१	४५	व्याघात	५१	१८	रा	३	१८	भ	१८	३४	वव	४६	४२	लुम्बक	१५	२०	२८	२९	२४			६	४७	५	१३	७	२८	१५	१८	२३	१३	-	७	९	२
२६	६	५	बु	१४	५०	दि	१२	४३	धनिष्ठा	४४	५२	रा	१२	४४	हर्षण	४४	४८	सा	१२	४२	वा	१४	५०	कौ	४२	३३	मित्र	१६	२१	२९	१	२५	कुम्भ	१६।९	६	४७	५	१३	७	२९	१६	३४	२३	१७	-	७	१०	२
२६	५	६	गु	१०	१६	दि	१०	५३	शतभिष	४१	३६	रा	११	२५	वज्र	३७	४२	रा	९	५२	तै	१०	१६	गर	३७	४०	वज्र	१७	२२	१	२	२६			६	४७	५	१३	८	०	१७	५१	२३	१९	-	६	११	१
२६	५	७	शु	५ ५४	३ २३	प्रा	८ ६	४८ ३३	पू.भा.	३७	५१	रा	९	५५	सिद्धि	३०	११	सा	६	५१	व	५	३	भ	३२ ५१	२५ २६	ध्वांक्ष	१८	२३	२	३	२७	मीन	२३।४७	६	४७	५	१३	८	१	१९	९	२३	२२	-	६	१२	२
२६	४	९	श	५३	३५	रा	४	१३	उ.भा.	३३	४७	रा	८	१८	व्यतिपात	२२	२२	दि	३	४४	वा	२६	३१	कौ	५३	३५	धूम्र	१९	२४	३	४	२८			६	४७	५	१३	८	२	२०	२८	२३	२४	-	५	१	२
२६	४	१०	र	४७	४०	रा	१	५१	रेवती	२९	३४	सा	६	३७	वरीयान	२४	२५	दि	१२	३३	तै	२०	३८	गर	४७	४०	प्रवर्धमान	२०	२५	४	५	२९	मेष	२१।३४	६	४७	५	१३	८	३	२१	४७	२३	२५	-	५	२	४
२६	४	११	चं	४१	५६	रा	११	३३	अश्विनी	२५	२९	दि	४	५९	परिघ	१ ५२	३५ ११	प्रा	१ ६	२५ २१	व	१४	४८	भ	४१	५६	राक्षस	२१	२६	५	६	३०			६	४७	५	१३	८	४	२३	७	२३	२६	-	४	३	६
२६	४	१२	मं	३६	३५	रा	९	२५	भरणी	२१	४३	दि	३	२८	सिद्ध	५१	३३	रा	३	२४	वव	९	१६	बा	३६	३५	मुसल	२२	२७	६	७	१	वृष	३५।५४	६	४७	५	१३	८	५	२४	२८	२३	२६	-	४	४	८
२६	४	१३	बु	३१	४६	रा	७	२९	कृत्तिका	१८	२८	दि	२	१०	साध्य	४४	४३	रा	१२	४०	कौ	४	११	तै	३१ ५१	४५ ४६	सिद्धि	२३	२८	७	८	२			६	४७	५	१३	८	६	२५	४९	२३	२६	-	३	५	१०
२६	४	१४	गु	२७	४५	सा	५	५३	रोहिणी	१५	५४	दि	१	९	शुभ	३८	३२	रा	१०	१२	व	२७	४५	भ	५६	११	उत्पात	२४	२९	८	९	३	मिथुन	४५।३	६	४७	५	१३	८	७	२७	१०	२३	२६	-	३	६	९
२६	४	१५	शु	२४	३७	दि	४	३८	मृगशिरा	१४	१२	दि	१२	२८	शुक्ल	३३	६	रा	८	१	वव	२४	३७	बा	५३	३५	मानस	२५	३०	९	१०	४			६	४७	५	१३	८	८	२८	३१	२३	२५	-	२	-	-

☾चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तर शृंग सस्तीकारक। ◆दि. २।१३ तक। रवियोग रा. १।४५ से।
मु. रविउल्लवल ३ हिजरी सन् १४३७। यायीजययोग रा. २।४४ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. २।४४ से। रवियोग ▭
भ. रा. २।४६ से। मकरराशि दि. ८।४०। मृत्युबाणारम्भ रा. १२।४७। यायीजययोग दि. ३।१९ तक। सर्वार्थसिद्धियोग ◐
भ. दि. २।१३ तक। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। भौम चतुर्थी ४। मृत्युबाण समाप्ति रा. १२।१८। स्थायीजययोग ◆
कुम्भराशि दि. १।१५। श्रीरामविवाह उत्सव ५। द्वितीयानागपञ्चमी ५। श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत। ⊙सं.मूल नक्षत्र ♦
चम्पाषष्ठी ६ व्रत *(महाराष्ट्र में प्रसिद्ध)*। मित्रसप्तमी ७ (पूर्वाह्न व्यापिनी)। सौरपौषमासारम्भ। रवियोग रा. ११।२५ तक।
भ. दि. ८।४८ से रा. ७।४१ तक। मीनराशि दि. ४।१८। स्थायीजययोग दि. ८।४८ से रा. ९।५५ तक। ▭रा. २।४४ से।
श्रीमहानन्दानवमी ९। आजदेवी पूजन से श्री विष्णुलोक प्राप्ति। कल्पादि ९। यायीजययोग रा. ४।१३ तक। रवियोग रा. ८।१८ से।
मेषराशि सा. ६।३७। पञ्चक समाप्ति सा. ६।३७। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ६।३७ से। रवियोग समस्त।
भ. दि. १२।४२ से रा. ११।३३ तक। मोक्षदा ११ एकादशी व्रत सबका। गीताजयन्ती ११। यायीजययोग दि. ४।५९ ☾
वृषराशि रा. ९।९। मत्स्य द्वादशी व्रत। धरणी व्रत। ⊙सायन मकरराशि का सूर्य रा. ७।११। राष्ट्रीयपौषमास❖
प्रदोष १३ व्रत। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। रवियोग दि. २।१० से। ☾से रा. ११।३३ तक। रवियोग दि. ४।५९ तक।
भ. सा. ५।५३ से रा. ५।१५ तक। मिथुनराशि रा. १२।४८। व्रत की १५ पूर्णिमा। काशी में पिशाचमोचनयात्रा तथा दर्शन। पिशाच मुक्ति के लिए श्राद्ध तथा तर्पण।○
स्नान-दान की १५पूर्णिमा। नगरपरिक्रमा। ○पार्वणश्राद्ध। कपर्दीश्वर दर्शन। दत्तात्रेय अवतार १५। दत्तात्रेय जयन्ती (प्रदोष में)। रवियोग दि. १।९ तक।

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ।।

ति.१	शनि को मूल में सूर्यभोग्य है।
ति.२	रवि को रा. २।४४ के बाद उ.षा. में रे.९ ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३
ति.३	सोम को मृत्युबाण से पूर्व उ.षा. में रे.९ दिन में ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३ वा ल. १० इष्ट ५ ग्र.व.वि.११।। वा ल. गोधूलि वा ल. ४ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (चं.दा.) वा ल. ६ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (के.दा.)

इसके बाद धनुसंक्रान्ति दोष के कारण विवाहमुहूर्त्त नहीं है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	श	५	२०	३३	५४	८	९	५३	२५	५	०	२८	२८	६	१४	३१	२४	७	१३	४९	३६	५	२	२९	५
२	र	५	२१	७	५५	८	११	२३	६	५	०	३३	४५	६	१५	४२	४०	७	१३	५६	४५	५	२	२५	५४
३	चं	५	२१	४१	५६	८	१२	५२	४८	५	०	३९	२	६	१६	५३	५६	७	१४	३	३४	५	२	२२	४३
४	मं	५	२२	१५	५७	८	१४	२१	०	५	०	४४	१९	६	१८	५	१२	७	१४	९	५७	५	२	१९	३३
५	बु	५	२२	४९	५८	८	१५	४२	२४	५	०	४९	३६	६	१९	१६	२८	७	१४	१६	२०	५	२	१६	२२
६	गु	५	२३	२३	५९	८	१७	३	४७	५	०	५४	५३	६	२०	२७	४४	७	१४	२२	४३	५	२	१३	११
७	शु	५	२३	५८	०	८	१८	२५	११	५	१	०	११	६	२१	३९	०	७	१४	२९	६	५	२	१०	०
९	श	५	२४	३२	१	८	१९	४६	३७	५	१	५	३४	६	२२	५०	१६	७	१४	३५	२९	५	२	६	४९
१०	र	५	२५	४	१७	८	२१	५	२९	५	१	१०	५८	६	२४	१	३३	७	१४	४१	५२	५	२	३	३८
११	चं	५	२५	३५	३४	८	२२	१७	२७	५	१	१६	२२	६	२५	१२	५७	७	१४	४८	१५	५	२	०	२८
१२	मं	५	२६	७	५	८	२३	३०	१८	५	१	२०	५३	६	२६	२४	३०	७	१४	५४	३८	५	१	५७	१७
१३	बु	५	२६	३९	७	८	२४	४३	९	५	१	२३	२२	६	२७	३६	४	७	१५	१	२	५	१	५४	६
१४	गु	५	२७	११	९	८	२५	५६	७	५	१	२५	५२	६	२८	४७	३८	७	१५	७	२५	५	१	५०	५५
१५	शु	५	२७	४३	१२	८	२७	२	५७	५	१	२८	२२	६	२९	५९	१२	७	१५	१३	४८	५	१	४७	४४

ग्रहचार- मंगल- ति. ५ बुध को चित्रा में रा. ३।५८।। बुध- ति. ३ सोम को पूर्वाषाढ़ा में दि. २।११। ति. १४ गुरु को उत्तराषाढ़ा में रा. १०।३३।। गुरु- उत्तराफाल्गुनी २ चरण में।। शुक्र- ति. ५ बुध को विशाखा में रा. ९।२७। ति. १५ शुक्र को वृश्चिकराशि में दि. ७।३।। शनि- अनुराधा ४ चरण में।। राहु- उ.फा. २ चरण में तथा केतु पू.भा. ४ चरण में।।

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष में तिथि हानि हो तो छत्रभंग, प्रजा को पीड़ा तथा अकाल पड़ता है।

३७पं० मार्गशीर्षशुक्ल ७ शुक्र

अहर्गण ३३९

अयनांश २४।३।४८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	१०	५	८	५	६	७	५	११
१	२४	२३	१८	१	२१	१४	२	२
१९	८	५८	२५	०	३९	२९	१०	१०
९	२६	०	११	१२	०	६	०	०
६१	८५३	३४	८१	५	७१	६	३	३
११	३०	१	२६	२३	१६	२३	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ शनि को मूल में सूर्यभोग्य है। ति. २ रवि को पू.षा. में नावनिर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त है। ति. ३ सोम को उ.षा. में दि. ३।१९ तक जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन शिल्पविद्या वधूप्रवेश (ल. ८ वा ११) द्विरागमन (ल. १२) फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ४ मंगल को श्रवण में चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। दि. २।१३ के बाद पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा आभूषणनिर्माण ऑपरेशन वस्तुक्रय मुहूर्त है। ति. ५ बुध को धनिष्ठा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन गर्भाधान नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री मकर के चन्द्रमा में पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा (पंचमी में) औषधसेवन वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ६ गुरु को शतभिष में जातकर्मनामकरण अन्नप्राशन (सप्तमी में) वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण वस्तुक्रय वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ७ शुक्र को पू.भा. में केतुयुति है। ति. ९ शनि को उ.भा. में मंगल का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से मुक्त न होने से अशुभ है। व्यतिपात तथा रिक्तादोष है। ति. १० रवि को रेवती में राहुवेध है। सा. ६।३७ के बाद अश्विनी में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण वाटिकारोपण पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा औषधसेवन विपणि वस्तुक्रय ऑपरेशन का मुहूर्त है। ति. ११ सोम को अश्विनी में भद्रा से पूर्व जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन पशुओं की खरीद-बिक्री पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा शिल्पविद्या ☛

तिथि ल.अ.	१ श घं.	मि.	२ र घं.	मि.	३ चं घं.	मि.	४ मं घं.	मि.	५ बु घं.	मि.	तिथि ल.अ.	६ गु घं.	मि.	७ शु घं.	मि.	९ श घं.	मि.	१० र घं.	मि.	११ चं घं.	मि.	१२ मं घं.	मि.	१३ बु घं.	मि.	१४ गु घं.	मि.	१५ शु घं.	मि.
वृश्चिक	७	७	७	२	६	५८	६	५३	६	४९	धनु	८	५१	८	४७	८	४२	८	३८	८	३४	८	२९	८	२५	८	२१	८	१६
धनु	९	१३	९	८	९	४	८	५९	८	५५	मकर	१०	३८	१०	३४	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	३
मकर	११	०	१०	५५	१०	५१	१०	४६	१०	४२	कुम्भ	१२	९	१२	५	१२	०	११	५६	११	५२	११	४७	११	४३	११	३९	११	३४
कुम्भ	१२	३१	१२	२६	१२	२२	१२	१७	१२	१३	मीन	१	३७	१	३३	१	२८	१	२४	१	२०	१	१५	१	११	१	७	१	२
मीन	१	५९	१	५४	१	५०	१	४५	१	४१	मेष	३	१४	३	१०	३	५	३	१	२	५७	२	५२	२	४८	२	४४	२	३९
मेष	३	३६	३	३१	३	२७	३	२२	३	१८	वृष	५	१०	५	६	५	१	४	५७	४	५३	४	४८	४	४४	४	४०	४	३५
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृष	५	३२	५	२७	५	२३	५	१८	५	१४	मिथुन	७	२४	७	२०	७	१५	७	११	७	७	७	२	६	५८	६	५४	६	४९
मिथुन	७	४६	७	४१	७	३७	७	३२	७	२८	कर्क	९	४२	९	३८	९	३३	९	२९	९	२५	९	२०	९	१६	९	१२	९	७
कर्क	१०	४	९	५९	९	५५	९	५०	९	४६	सिंह	११	५६	११	५२	११	४७	११	४३	११	३९	११	३४	११	३०	११	२६	११	२१
सिंह	१२	१८	१२	१३	१२	९	१२	४	१२	०	कन्या	२	९	२	५	२	०	१	५६	१	५२	१	४७	१	४३	१	३९	१	३४
कन्या	२	३१	२	२६	२	२२	२	१७	२	१३	तुला	४	२४	४	२०	४	१५	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५०
तुला	४	४७	४	४२	४	३८	४	३३	४	२९	वृश्चिक	६	४१	६	३७	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	७

३८ पं० मार्गशीर्षशुक्ल १५ शुक्र

अहर्गण ३४६

अयनांश २४।३।४९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	२	५	८	५	६	७	५	११
८	३	२७	२७	१	२९	१५	१	१
२८	२५	४३	२	२८	५९	१३	४७	४७
३१	७	१२	५७	२२	१२	४८	४८	४८
६१	८२३	३२	५७	२	७१	६	३	३
२२	२०	२	१०	२९	३४	२३	११	११



◐ रा. २।२७ से। रवियोग रा. २।२७ तक। ♦ तथा धनुराशि का सूर्य रा. ११।४७। मु. ३० समा। फल समता। बाद का ६ घण्टा २४ मिनट पुण्यकाल। नववस्त्रसुवर्णदान। गोदावरी स्नान। खरमासारम्भ। यायी-स्थायी दुर्लभ सन्धिकरयोग रा. १२।४४ से। पञ्चक प्रारम्भ दि. १।१५। रवियोग रा. ११।४७ तक। पुनः रवियोग रा. १२।४४ से। ❖दि. ३०। स्थायीजययोग दि. ३।२८ से रा. ९।२५ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।२८ से। त्रिपुष्करयोग दि. ३।२८ से रा. ९।२५ तक।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. १ शनि को रा. २।३२ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. ९ शनि को रा. ८।१८ से। ति. ११ सोम को दि. ४।५९ तक।
पञ्चक विचार- ति. ५ बुध को दि. १।१५ से। ति. १० रवि को सा. ६।३७ तक।

प्रश्न लग्न से विवाह विचार- गुरु, सूर्य एवं बुध प्रश्न लग्न से ३,५,२,११,६ स्थानों में स्थित चन्द्रमा को देख रहे हों या एक भी शुभ ग्रह पूर्णबली होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो विवाह कारक होता है। अन्यमत- प्रश्न लग्न से १,४,७,१०,५,९ स्थानों में शुभ ग्रह तथा ३,५,६,११,७ स्थानों में चन्द्रमा, सूर्य, बुध तथा गुरु से दृष्ट हो तो विवाहकर्त्ता वर को मनोनुकूल कन्या की प्राप्ति होती है। पुनः- प्रश्न लग्न से ३,५,७,११ स्थानों में चन्द्र, सूर्य तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तथा केन्द्र, त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तो विवाह कारक होता है। पुत्र प्राप्ति प्रश्न विचार- पुरुष ग्रह स्व राशि में स्थित होकर बुध तथा शुक्र से दृष्ट हों तो पुत्र तथा स्त्री संज्ञक ग्रह स्वराशिस्थ होकर बुध-शुक्र से दृष्ट हो तो कन्या का प्राप्ति होती है। पुनः- पञ्चमभाव यदि पुरुष संज्ञक ग्रहों से युत-दृष्ट हों तो पुत्र तथा स्त्री ग्रहों से युत-दृष्ट हों तो कन्या की प्राप्ति होती है। पुत्र संख्या ज्ञान- जितने पुरुष संज्ञक ग्रह पञ्चम भाव को देखते हों उतने पुत्र तथा जितने स्त्री कारक ग्रह देखते हों उतनी कन्याएं प्राप्त होती हैं। गर्भ सम्भवासम्भव ज्ञान- पञ्चमेश लग्नस्थ अथवा चन्द्रमा से युत हो या शुक्र-मंगल, चन्द्रमा को देखते हों तो गर्भ सम्भव होता है। विवाह काल ज्ञान- (ज्योतिर्निबन्ध)- लग्नेश तथा सप्तमेश के योग से जो राशि प्राप्त हो उस राशि में बृहस्पति जाता है तो, अथवा चन्द्र नक्षत्र एवं सप्तमेश के योग तुल्य अंश में गुरु के होने पर विवाह होता है। यदि गुरु बलवान होकर मित्र ग्रह के नवमांश में हो तो एक स्त्री वाला, स्व नवमांश में हो तो दो-तीन स्त्रीयों वाला तथा उच्चांश में हो तो अनेक स्त्रियों वाला होता है। सप्तमेश जिस राशि और नवमांश में हो उनके अधिपतियों या शुक्र और चन्द्रमा में जो अधिक बली हो उसकी दशा में तथा सप्तमेश युत राश्यंश से त्रिकोण में गुरु के होने पर विवाह होता है।

☛ औषधसेवन विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त है। ति. १२ मंगल को भरणी में वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त है। ति. १३ बुध को कृत्तिका में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त है। दि. २।१० से रा. ७।२९ तक रोहिणी में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण देवरी शिल्पविद्या ईंट निर्माण विपणि मुहूर्त है। ति. १४ गुरु को रोहिणी में रिक्तादोष है। मृगशिरा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। भद्रा बाद रात्रिशेष में सूतीस्नान मुहूर्त है। ति. १५ शुक्र को मृगशिरा में अन्नप्राशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वाटिकारोपण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त है।

पौषकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ५ पौष से २० तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक २६ दिसम्बर से १० जनवरी तक सन् २०१५-१६ ई.।।

☛ इस पक्ष में खरमास है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल हेमन्तऋतु।।

दि.	मा.	तिथि	वार	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे. अं. ±	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
२६	५	१	श	२२	३२	दि	३	४८	आर्द्रा	१३	३०	दि	१२	११	ब्रह्म	२८	३०	सा	६	११	कौ	२२	३२	तै	५२	७	मुद्गर	२६	१	१०	११	५	कर्क	५८।५३	६	४७	५	१३	८	९	२९	५३	२३	२३	-	२	६	२०
२६	५	२	र	२१	४१	दि	३	२७	पुनर्वसु	१४	०	दि	१२	२३	ऐन्द्र	२४	५१	दि	४	४३	गर	२१	४१	व	५१	५५	ध्वज	२७	२	११	१२	६			६	४७	५	१३	८	१०	३१	१५	२३	२२	-	१	७	१८
२६	५	३	चं	२२	८	दि	३	३८	पुष्य	१५	४४	दि	१	५	वैधृति	२२	१४	दि	३	४१	भ	२२	८	वव	५३	२	धाता	२८	३	१२	१३	७			६	४७	५	१३	८	११	३२	३८	२३	१९	-	१	८	१३
२६	६	४	मं	२३	५५	दि	४	२१	श्लेषा	१८	४४	दि	२	१७	विष्कुम्भ	२०	३८	दि	३	२	वा	२३	५५	कौ	५५	२२	आनन्द	२९	४	१३	१४	८	सिंह	१८।४४	६	४७	५	१३	८	१२	३४	२	२३	१६	-	१	९	७
२६	६	५	बु	२६	४९	सा	५	३१	मघा	२२	५२	दि	३	५६	प्रीति	१९	५२	दि	२	४४	तै	२६	४९	गर	५८	५१	चर	३०	५	१४	१५	९			६	४७	५	१३	८	१३	३५	२६	२३	१३	-	०	९	५९
२६	७	६	गु	३०	५३	रा	७	८	पू.फा.	२८	६	सा	६	१	आयुष्मान	२०	१	दि	२	४७	व	३०	५३	भ	६०	०	गद	३१	६	१५	१६	१०	कन्या	४४।३६	६	४७	५	१३	८	१४	३६	५१	२३	९	+	०	१०	५०
२६	८	७	शु	३५	४४	रा	९	४	उ.फा.	३४	६	रा	८	२४	सौभाग्य	२०	४८	दि	३	५	भ	३	११	वव	३५	४४	शुभ	१	७	१६	१७	११			६	४६	५	१४	८	१५	३८	१५	२३	५	+	१	११	४०
२६	९	८	श	४१	५	रा	११	१२	हस्त	४०	३५	रा	११	०	शोभन	२२	१	दि	३	३४	वा	८	२५	कौ	४१	५	मृत्यु	२	८	१७	१८	१२			६	४६	५	१४	८	१६	३९	४०	२३	०	+	१	१२	३०
२६	१०	९	र	४६	२९	रा	१	२२	चित्रा	४७	७	रा	१	३७	अतिगण्ड	२३	२२	दि	४	७	तै	१३	४७	गर	४६	२९	पद्म	३	९	१८	१९	१३	तुला	१३।५१	६	४६	५	१४	८	१७	४१	६	२२	५५	+	२	१	२०
२६	११	१०	चं	५१	३१	रा	३	२२	स्वाती	५३	१५	रा	४	४	सुकर्मा	२४	३३	दि	४	३५	व	१९	०	भ	५१	३१	छत्र	४	१०	१९	२०	१४			६	४६	५	१४	८	१८	४२	३१	२२	५०	+	२	२	११
२६	१२	११	मं	५५	५०	रा	५	६	विशाखा	५८	४२	रा	६	१५	धृति	२५	३५	दि	४	५२	वव	२३	४१	वा	५५	५०	श्रीवत्स	५	११	२०	२१	१५	वृश्चिक	४२।२०	६	४६	५	१४	८	१९	४३	५७	२२	४३	+	३	३	३
२६	१३	१२	बु	५९	३	रा	६	२२	अनुराधा	६०	०	स	म	स्त	शूल	२५	१८	दि	४	५२	कौ	२७	२७	तै	५९	३	सौम्य	६	१२	२१	२२	१६			६	४५	५	१५	८	२०	४५	२२	२२	३७	+	३	३	५६
२६	१५	१३	गु	६०	०	स	म	स्त	अनुराधा	३	८	दि	८	०	गण्ड	२४	२६	दि	४	३१	गर	३०	८	व	६०	०	आनन्द	७	१३	२२	२३	१७			६	४५	५	१५	८	२१	४६	४६	२२	३०	+	४	४	५०
२६	१६	१३	शु	१	१३	प्रा	७	१४	ज्येष्ठा	६	२७	दि	९	२०	वृद्धि	२२	४२	दि	३	५०	व	१	१३	भ	३१	३६	चर	८	१४	२३	२४	१८	धनु	६।२७	६	४५	५	१५	८	२२	४८	११	२२	२३	+	४	५	४४
२६	१८	१४	श	१	५८	प्रा	७	३१	मूल	८	२८	दि	१०	७	ध्रुव	१९	५६	दि	२	४२	श	१	५८	च	३१	४२	गद	९	१५	२४	२५	१९			६	४४	५	१६	८	२३	४९	३५	२२	१५	+	५	६	३६
२६	१९	३०	र	१/५८	२५/२५	प्रा	[illegible]	१६/३६	पू.षा.	९	१५	दि	१०	२६	व्याघात	१६	१०	दि	१	१२	नाग	१	२५	किं	३०/५१	३३/४०	शुभ	१०	१६	२५	२६	२०	मकर	२४।९	६	४४	५	१६	८	२४	५०	५८	२२	६	+	५	-	-

कर्कराशि रा.शे. ६।२०। यायीजययोग दि. १२।११ से दि. ३।४८ तक। त्रिपुष्करयोग दि. ३।४८ से।
भ. रा. ३।३३ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १२।२३ से। त्रिपुष्करयोग दि. १२।२३ तक।
भ. दि. ३।३८ तक। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।१३। यायीजययोग दि. १।५ से दि. ३।३८ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १।५ तक।
सिंहराशि दि. २।१७। भौमचतुर्थी ४। ⊙पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का सूर्य रा. १२।४५। स्थायीजययोग दि. २।१७ से दि. ४।२१ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. २।१७ तक।
भ. रा. ७।८ से। कन्याराशि रा. १२।३७। यायीजययोग रा. ७।८ से। रवियोग सा. ६।१ से।
भ. दि. ८।६ तक। जनवरी १ सन् २०१६ ई० प्रारम्भ। ईसाई नववर्षारम्भ। रवियोग रा. ८।२४ तक।
अष्टकाश्राद्ध। पार्वण विधि के अनुसार। यमघंटयोग रा. ११।० तक।
तुलाराशि दि. १२।१८। अन्वष्टका श्राद्ध।
भ. दि. २।२२ से रा. ३।२२ तक। यायीजययोग रा. ३।२२ से रा. ४।४ तक। यमघंटयोग रा. ४।४ से।
वृश्चिकराशि रा. ११।४२। सफला ११ एकादशी व्रत सबका। श्रीगुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (नवीनतम)। ◆
सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग समस्त। ◆स्थायीजययोग रा. ५।६ से रा.शे. ६।१५ तक। त्रिपुष्करयोग रा. ५।६ से रा.शे. ६।१५ तक।
प्रदोष १३ व्रत। यायीजययोग दि. ८।० तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।० तक। ❖ दि. ९।२० तक।
भ. दि. ७।१४ से रा. ७।२३ तक। धनुराशि दि. ९।२०। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" स्थायीजययोग प्रा. ७।१४ से ❖
श्राद्ध की ३० अमावस्या। ● से रा.शे. ६।३६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।२६ से।
मकरराशि दि. ४।२४। स्नान-दान की ३० अमावस्या। पापवार तथा अमावस्या की युति दुर्भिक्ष तथा प्रजा के लिए भयकारक होती है। यायीजययोग दि. १०।२६●

पौषमास के कृत्य -

जो मनुष्य पौष के माह में एक बार ही भोजन करता है, वह सुन्दर, दर्शनीय तथा यश का भागी होता है। (महाभारत)

पौष के माह में गृह, नगर, वाहन आदि का जो ब्राह्मण को दान करता है उससे भगवान विष्णु संतुष्ट रहते हैं। (वामन पुराण)

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				मार्गीबुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	श	५	२८	१५	१४	८	२८	०	७	५	१	३०	५१	७	१	१०	४६	७	१५	२०	११	५	१	४४	३४
२	र	५	२८	४७	१७	८	२८	५७	१७	५	१	३३	२१	७	२	२२	२०	७	१५	२६	३५	५	१	४१	२३
३	चं	५	२९	१९	१९	८	२९	५४	२७	५	१	३५	५१	७	३	३३	५४	७	१५	३३	१	५	१	३८	१२
४	मं	५	२९	५१	२१	९	०	५१	४७	५	१	३८	२०	७	४	४५	२७	७	१५	३९	२७	५	१	३५	१
५	बु	६	०	२३	२४	९	१	३८	२९	५	१	४०	५०	७	५	५७	१	७	१५	४५	५३	५	१	३१	५०
६	गु	६	०	५५	२६	९	२	१५	४	५	१	४३	२०	७	७	८	३५	७	१५	५०	५३	५	१	२८	४०
७	शु	६	१	२७	२८	९	२	५१	३८	५	१	४५	५०	७	८	२०	९	७	१५	५६	३२	५	१	२५	२९
८	श	६	१	५९	३१	९	३	२८	१२	५	१	४८	१९	७	९	३१	४३	७	१६	२	१२	५	१	२२	१८
९	र	६	२	३१	३३	९	४	५	४	५	१	५०	४९	७	१०	४३	१७	७	१६	७	५२	५	१	१९	७
१०	चं	६	३	३	३५	९	४	२३	३८	५	१	५३	२१	७	११	५५	२३	७	१६	१३	३२	५	१	१५	५६
११	मं	६	३	३५	३८	९	४	३२	१४	५	१	५५	५७	७	१३	७	४१	७	१६	१९	१२	५	१	१२	४६
१२	बु	६	४	८	२९	९	४	४०	४९	५	१	५८	३३	७	१४	२०	५३	७	१६	२४	५२	५	१	९	३५
१३	गु	६	४	३९	४९	९	४	४९	२५	५	२	१	९	७	१५	३४	१५	७	१६	३०	३१	५	१	६	२४
१३	शु	६	५	१२	०	व	४	५८	२०	५	२	१	४७	७	१६	४७	३९	७	१६	३६	११	५	१	३	१३
१४	श	६	५	४४	११	९	४	४१	४८	५	२	१	५०	७	१८	१	२	७	१६	४१	५१	५	१	०	२
३०	र	६	६	१६	२२	९	४	१८	४७	५	२	१	५४	७	१९	१४	२५	७	१६	४७	३१	५	०	५६	५२

ग्रहचार- मंगल- ति. ४ मंगल को तुलाराशि में दि. १।१६। ति. ३० रवि को स्वाती में रा. १२।२२।। मार्गीबुध- ति. ३ सोम को मकरराशि में दि. ९।६। ति. १३ शुक्र को वक्री में दि. ३।१।। गुरु- उत्तराफल्गुनी २ चरण में।। शुक्र- ति. २ रवि को अनुराधा में रा. २।७। ति. १३ गुरु को ज्येष्ठा में रा. ४।१५।। शनि- ति. १३ शुक्र को ज्येष्ठा १ चरण में रा. १०।५५।। राहु- उ.फा. २ चरण में तथा केतु पू.भा. ४ चरण में।।

३९ पं० पौषकृष्ण ८ शनि

अहर्गण ३५४

अयनांश २४।३।५०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	५	६	९	५	७	७	५	११
१६	१५	१	३	१	९	१६	१	१
३९	११	५९	२८	४८	३१	२	२२	२२
४०	३३	३१	१२	१९	४३	१२	१८	१८
६१	७२१	३२	३६	२	७१	५	३	३
२६	५९	२	५२ मा.	३०	३४	४०	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ शनि को आर्द्रा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त है। ति. २ रवि को पुनर्वसु में सूर्यवेध है। दि. १२।२३ के बाद वैधृति से पूर्व पुष्य में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि व्यापार वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ३ सोम को पुष्य में वैधृतिदोष तथा भद्रा है। ति. ४ मंगल को श्लेषा में शनिवेध है। ति. ५ बुध को मघा में दँवरी फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ गुरु को पू.फा. भे दँवरी नावनिर्माण वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति. ७ शुक्र को उ.फा. में राहुयुति तथा भद्रादोष है। रा. ८।२४ के बाद हस्त में गर्भाधान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (सप्तमी में) ईंट का भट्ठा लगाने औषधसेवन मुहूर्त्त है। ति. ८ शनि को हस्त में कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त है। ति. ९ रवि को चित्रा में भौमयुति है। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १० सोम को स्वाती में भद्रा से पूर्व जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन गर्भाधान शिल्पविद्या औषधसेवन वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ११ मंगल को विशाखा में लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषणनिर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। ति. १२ बुध को अनुराधा में शनियुति है। इसके बाद मासान्तदोष है।

तिथि ल.अ.	१ श घं.	मि.	२ र घं.	मि.	३ चं घं.	मि.	४ मं घं.	मि.	५ बु घं.	मि.	६ गु घं.	मि.	७ शु घं.	मि.	८ श घं.	मि.	९ र घं.	मि.	१० चं घं.	मि.	११ मं घं.	मि.	१२ बु घं.	मि.	१३ गु घं.	मि.	१३ शु घं.	मि.	१४ श घं.	मि.	३० र घं.	मि.
धनु	८	१२	८	८	८	३	७	५९	७	५५	७	५०	७	४६	७	४२	७	३७	७	३३	७	२८	७	२३	७	१९	७	१४	७	१०	७	५
मकर	९	५९	९	५५	९	५०	९	४६	९	४२	९	३७	९	३३	९	२९	९	२४	९	२०	९	१५	९	१०	९	६	९	१	८	५७	८	५२
कुम्भ	११	३०	११	२६	११	२१	११	१७	११	१३	११	८	११	४	११	०	१०	५५	१०	५१	१०	४६	१०	४२	१०	३७	१०	३२	१०	२८	१०	२३
मीन	१२	५८	१२	५४	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२३	१२	१९	१२	१४	१२	९	१२	५	१२	०	११	५६	११	५२
मेष	२	३५	२	३१	२	२६	२	२२	२	१८	२	१३	२	९	२	५	२	०	१	५६	१	५१	१	४६	१	४२	१	३७	१	३३	१	२८
वृष	४	३१	४	२७	४	२२	४	१८	४	१४	४	९	४	५	४	१	३	५६	३	५२	३	४७	३	४२	३	३८	३	३३	३	२९	३	२४
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मिथुन	६	४५	६	४१	६	३६	६	३२	६	२८	६	२३	६	१९	६	१५	६	१०	६	६	६	२	५	५६	५	५२	५	४७	५	४३	५	३८
कर्क	९	३	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४१	८	३७	८	३३	८	२८	८	२४	८	१९	८	१४	८	१०	८	५	८	१	७	५६
सिंह	११	१७	११	१३	११	८	११	४	११	०	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४२	१०	३८	१०	३३	१०	२८	१०	२४	१०	१९	१०	१५	१०	१०
कन्या	१	३०	१	२६	१	२१	१	१७	१	१३	१	८	१	४	१	०	१२	५५	१२	५१	१२	४६	१२	४१	१२	३७	१२	३२	१२	२८	१२	२३
तुला	३	४६	३	४२	३	३७	३	३३	३	२९	३	२४	३	२०	३	१६	३	११	३	७	३	२	२	५७	२	५३	२	४८	२	४४	२	३९
वृश्चिक	६	१	५	५९	५	५४	५	५०	५	४६	५	४१	५	३७	५	३३	५	२८	५	२४	५	१९	५	१४	५	१०	५	५	५	१	४	५६

४० पं० पौषकृष्ण ३० रवि

अहर्गण ३६२

अयनांश २४।३।५१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	८	६	९	५	७	७	५	११
२४	२४	६	४	२	१९	१६	०	०
५०	३८	१६	१८	१	१४	४७	५६	५६
५८	१३	२२	४७	५४	२५	३१	५२	५२
६१	७८९	३२	२३	०	७३	५	३	३
२३	४१	११	१ व.	४	२४	४०	११	११



मूलविचार- श्लेषा/मघा-ति. ३ सोम को दि. १।५ से। ति. ५ बुध को दि. ३।५६ तक।
ज्येष्ठा/मूल- ति. १३ गुरु को दि. ८।० से। ति. १४ शनि को दि. १०।७ तक।

अनेक प्रकार के प्रश्नों का योग- प्रश्नाक्षर को द्विगुणित कर एक जोड़ दे तथा तीन का भाग दें, सम शेष से धातु, विषम शेष से जीव तथा शून्य शेष से मूल सम्बन्धी प्रश्न होता है। **दृष्टि द्वारा प्रश्न कथन-** प्रश्न कर्त्ता प्रश्नकाल में यदि ऊपर देखे तो जीव, नीचे देखे तो मूल एवं सम देखे तो धातु सम्बन्धि प्रश्न होता है। **राशि द्वारा प्रश्न ज्ञान-** बलवान मेषादि राशियों के प्रश्न लग्न से क्रमशः मनुष्य, चतुष्पाद, गर्भ, व्यवहार, भोग, स्त्री, व्यापार, दुष्टभय, धन, कलह, गर्भ एवं स्थान सम्बन्धी चिन्ता होती है। **कार्य सिद्धि सम्बन्धी प्रश्न ज्ञान-** गर्ग के अनुसार तत्कालिक लग्न में शीर्षोदय राशि पूर्ण चन्द्र से युक्त हो तो कार्य की सिद्धि होती है। पुनः शुभ ग्रह केन्द्र एवं त्रिकोण में स्थित हों तथा पाप ग्रह ३,६,११ में हों तो भी कार्य सिद्धि तथा प्रेषित व्यक्ति का आगमन होता है। **प्रश्नाक्षर द्वारा कार्य सिद्धि ज्ञान-** प्रश्नाक्षर को द्विगुणित कर एक जोड़ दे तथा पुनः तीन का भाग दे एकादि शेष से क्रमशः सफलता, यथा स्थिति एवं असफलता प्राप्त होती है। **कार्य सिद्धि का काल ज्ञान-** प्रश्न काल में चन्द्रमा यदि चरराशि का हो तो शीघ्र, स्थिर का हो तो यथा स्थिति एवं द्विस्वभाव राशि का हो तो देर से कार्य सफल होता है। **प्रश्न द्वारा दूर एवं समीप का ज्ञान-** नष्ट एवं हत वस्तु के लाभ सम्बधी प्रश्न के ज्ञान में चर लग्न से दूर, स्थिर से स्वगृह में एवं द्विस्वभाव में घर के बाहर वस्तु लाभ होता है। इसके विचार में ग्रहयोग का विचार भी करना चाहिए। **लाभ प्रश्न में दिशा ज्ञान-** प्रश्न काल के बलवान केन्द्रगत ग्रह की दिशा में नष्टधन को गया हुआ जानें। यदि बलवान ग्रह केन्द्रस्थ न हो तो लग्न राशि की दिशा में ही नष्टधन को समझना चाहिए। अथवा चर राशि का होकर बलवान चन्द्रमा लग्न में शुभग्रहों से दृष्ट हो तो उसकी दिशा में द्रव्यलाभ होता है। **धनुराशि के सूर्य में शुभकार्यों का निषेध-** धनु एवं मीन राशि के सूर्य, सिंह के गुरु, तथा सूर्य एवं गुरु के परस्पर एक दूसरे की राशि में स्थिति के समय कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ दक्षिणायन उत्तरगोल हेमन्तऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे.अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
२६	२१	२	चं	५६	४९	रा	५	२८	उ.षा.	८	४९	दि	१०	१६	हर्षण	११	२७	दि	११	१९	वा	२८	१५	कौ	५६	४९	मृत्यु	११	१७	२६	२७	२१			६	४४	५	१६	८	२५	५२	२१	२१	५८	+	५	६	५३
२६	२३	३	मं	५३	२	रा	३	५६	श्रवण	७	१९	दि	९	३१	वज्र	५ ५३	५३ ४६	प्रा	१ ६	४ ३५	तै	२४	५६	गर	५३	२	लुम्बक	१२	१८	२७	२८	२२	कुम्भ	३६।११	६	४३	५	१७	८	२६	५३	४३	२१	४९	+	६	७	५४
२६	२४	४	बु	४८	२३	रा	२	४	धनिष्ठा	५	२	दि	८	४४	व्यतिपात	५२	४४	रा	३	४९	व	२०	४३	भ	४८	२३	मित्र	१३	१९	२८	२९	२३			६	४३	५	१७	८	२७	५५	५	२१	३९	+	६	८	५५
२६	२६	५	गु	४३	१०	रा	११	५९	शतभिष	१ ५६	५४ २२	प्रा	७ ६	२१ १	वरीयान	४५	१९	रा	१२	५१	बव	१५	४७	बा	४३	१०	वज्र	१४	२०	२९	३०	२४	मीन	४४।११	६	४३	५	१७	८	२८	५६	२६	२१	२९	+	७	९	५६
२६	२८	६	शु	३७	३२	रा	९	४३	उ.भा.	५४	१५	रा	४	२४	परिघ	३७	३७	रा	१	४५	कौ	१०	२१	तै	३७	३२	ध्वज	१५	२१	३०	१	२५			६	४२	५	१८	८	२९	५७	४६	२१	१९	+	७	१०	५७
२६	३०	७	श	३१	४१	रा	७	२२	रेवती	५०	३	रा	२	४३	शिव	२९	४४	सा	६	३६	गर	४	३७	व	३१ ५८	४१ ३५	धाता	१६	२२	१	२	२६	मेष	५०।३	६	४२	५	१८	९	०	५९	७	२१	८	+	७	११	५८
२६	३२	८	र	२५	४९	सा	५	२	अश्विनी	४५	५८	रा	१	५	सिद्ध	२१	४९	दि	३	२६	बव	२५	४९	बा	५२	५८	आनन्द	१७	२३	२	३	२७			६	४२	५	१८	९	२	०	२६	२०	५९	+	८	१२	५८
२६	३४	९	चं	२०	७	दि	२	४४	भरणी	४२	६	रा	११	३१	साध्य	१४	४	दि	१२	१९	कौ	२०	७	तै	४७	२९	चर	१८	२४	३	४	२८	वृष	५६।१५	६	४१	५	१९	९	३	१	४४	२०	४६	+	८	१	५९
२६	३७	१०	मं	१४	५०	दि	१२	३७	कृत्तिका	३८	४२	रा	१०	१०	शुभ	६ ५१	३५ १	प्रा	१ ६	११ ३१	गर	१४	५०	व	४२	२७	गद	१९	२५	४	५	२९			६	४१	५	१९	९	४	३	२	२०	३३	+	८	२	५९
२६	३९	११	बु	१०	४	दि	१०	४२	रोहिणी	३५	५८	रा	९	३	ब्रह्म	५३	१३	रा	३	५७	भ	१०	४	बव	३८	७	शुभ	२०	२६	५	६	३०			६	४०	५	२०	९	५	४	२०	२०	२१	+	९	३	५८
२६	४१	१२	गु	६	९	दि	९	८	मृगशिरा	३४	७	रा	८	१९	ऐन्द्र	४७	३२	रा	१	४१	बा	६	९	कौ	३४	३८	मृत्यु	२१	२७	६	७	१	मिथुन	५।३	६	४०	५	२०	९	६	५	३६	२०	८	+	९	४	५४
२६	४४	१३	शु	३	८	दि	७	५४	आर्द्रा	३३	१०	रा	७	५५	वैधृति	४२	४०	रा	११	४३	तै	३	८	गर	३२	१०	पद्म	२२	२८	७	८	२			६	३९	५	२१	९	७	६	५१	१९	५५	+	९	५	४६
२६	४६	१४	श	१	११	दि	७	७	पुनर्वसु	३३	२३	रा	८	०	विष्कुम्भ	३८	४३	रा	१०	८	व	१	११	भ	३०	४९	छत्र	२३	२९	८	९	३	कर्क	१८।२०	६	३९	५	२१	९	८	८	४	१९	४१	+	१०	६	३४
२६	४८	१५	र	०	२७	प्रा	६	४९	पुष्य	३४	५०	रा	८	३४	प्रीति	३५	४६	रा	८	५६	बव	०	२७	बा	३०	४४	श्रीवत्स	२४	३०	९	१०	४			६	३८	५	२२	९	९	९	१७	१९	२७	+	१०	-	-

पौषशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि २१ पौष से ४ माघ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक ११ जनवरी से २४ तक सन् २०१६ ई.।।

- चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। ⊙उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का सूर्य रा. १।२२।
- कुम्भराशि रा. ९।२१। मु. रविउस्सानी ४ हिजरी सन् १४३७। पञ्चक प्रारम्भ रा. ९।११।
- भ. दि. ३।० से रा. २।४ तक। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। रवियोग दि. ८।४४ से।
- मीनराशि रा.१२।२३। रवियोग प्रा. ७।२९ तक। पुनःरवियोग रा.शे. ६।१ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।१६ से।
- ⊙सं. मकरराशि का सूर्य दि. ७।३४। मु. ४५ वृहत्ती। फल सस्ती। बाद का ८ या १६ घण्टा पुण्यकाल। निरयन
- भ.रा.७।२२ से रा.शे. ६।१२ तक। मेषराशि रा. २।४३। श्रीगुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (प्राचीनतम)। मृत्युबाण प्रा. ७।३ से
- महाभद्राष्टमी ८ व्रत। यायीजययोग रा. १।५ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।५ तक। रवियोग रा. १।५ से।
- वृषराशि रा. ५।११। यायीजययोग दि. २।४४ तक। रवियोग समस्त।
- भ. रा. ११।४० से। साम्बदशमी (उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १०।१० तक। रवियोग रा. १०।१० तक।
- भ. दि. १०।४२ तक। पुत्रदा ११ एकादशी व्रत सबका। ⊙सायन कुम्भराशि का सूर्य रा. २।५७। मन्वादि ११।
- मिथुनराशि दि. ८।४१। दिन ९।८ तक एकादशी व्रत की पारणा। प्रदोष १२ व्रत। राष्ट्रीयमाघमास दि. ३०।
- सर्वार्थसिद्धियोग रा. ७।५५ से। रवियोग रा. ७।५५ तक। ⊙अभिजित नक्षत्र का सूर्य रा. ८।९। कूर्म द्वादशी १२। रवियोग रा. ८।१९ से।
- भ. दि. ७।७ से सा. ६।५९ तक। कर्कराशि दि. १।५९। व्रत की १५ पूर्णिमा। श्री नेताजी जयन्ती। यायीजययोग प्रा. ७।७ से रा. ८।० तक।
- स्नान–दान की १५ पूर्णिमा। शाकम्भरी जयन्ती। माघस्नान–व्रत–यम–नियम का आरम्भ। प्रतिदिन अरुणोदयकाल में समुद्र में तथा काशी में दशाश्वमेध तथा

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ।।

ति.७	शनि को रेवती में राहुवेध, भद्रा तथा मृत्युबाण है।
ति.१०	मंगल को रा.१०।१० के बाद भद्रा से पूर्व रोहिणी में रे.७ पञ्चेष्टलग्न नहीं है।
ति.११	बुध को भद्रा के बाद रोहिणी में रे. ७ दिन में ल. १ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १५ (सप्तमस्थ मंगल शुभ नहीं है) वा ल.गोधूलि वा ल.५ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३।। (षष्ठस्थ लग्नेश शुभ नहीं है)। रा. ९।३ के बाद मृगशिरा में सूर्यवेध है।
ति.१२	गुरु को मृगशिरा में पूर्वदोष है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				वक्रीबुध				मार्गीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
२	चं	६	६	४८	३३	९	३	५५	४६	५	२	१	५८	७	२०	२७	४९	७	१६	५३	११	५	०	५३	४१
३	मं	६	७	२०	४४	९	३	३२	४५	५	२	२	२	७	२१	४१	१२	७	१६	५८	५२	५	०	५०	३०
४	बु	६	७	५२	५५	९	३	९	५०	५	२	२	६	७	२२	५४	३५	७	१७	४	३५	५	०	४७	१९
५	गु	६	८	२५	६	९	२	१९	३१	५	२	२	९	७	२४	७	५९	७	१७	१०	६	५	०	४४	८
६	शु	६	८	५७	१७	९	१	२८	२	५	२	२	१३	७	२५	२१	२२	७	१७	१५	२	५	०	४०	५७
७	श	६	९	२६	३०	९	०	३६	३३	५	२	२	१७	७	२६	३४	४५	७	१७	१९	५९	५	०	३७	४७
८	र	६	९	५४	४५	८	२९	४५	४	५	२	२	२१	७	२७	४८	८	७	१७	२४	५६	५	०	३४	३६
९	चं	६	१०	२४	१४	८	२८	५३	३५	५	२	२	२५	७	२९	१	४६	७	१७	२९	५२	५	०	३१	२५
१०	मं	६	१०	५३	४४	८	२८	२	६	५	२	२	२८	८	०	१५	२७	७	१७	३४	४९	५	०	२८	१४
११	बु	६	११	२३	१३	८	२७	१०	३७	५	२	२	३२	८	१	२९	७	७	१७	३९	४६	५	०	२५	३
१२	गु	६	११	५२	४३	८	२६	१९	८	५	२	२	४३	८	२	४२	४७	७	१७	४४	४२	५	०	२१	५३
१३	शु	६	१२	२२	१२	८	२५	२७	३७	५	२	२	५६	८	३	५६	२८	७	१७	४९	३९	५	०	१८	४२
१४	श	६	१२	५१	४२	८	२४	४४	३६	व	२	३	९	८	५	१०	८	७	१७	५४	३६	५	०	१५	३१
१५	र	६	१३	२१	११	८	२४	२१	३५	५	२	२	३६	८	६	२३	४९	७	१७	५९	३२	५	०	१२	२०

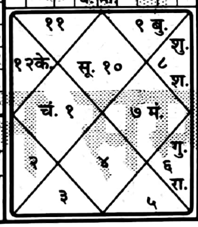
ग्रहचार– मंगल– स्वाती में।। वक्रीबुध– ति. ७ शनि को वक्री होकर धनुराशि में रा. ११।४४। ति. ११ बुध को पूर्वाषाढ़ा में रा. ८।५६।। मार्गीगुरु– उत्तराफाल्गुनी २ चरण में। ति. १४ शनि को वक्री दि. १।२६।। शुक्र– ति. ९ सोम को मूल तथा धनुराशि में रा. १।३९।। शनि– ज्येष्ठा १ चरण में।। राहु– उ.फा. २ चरण में तथा केतु पू.भा. ४ चरण में।।

४१पं० पौषशुक्ल ८ रवि

अहर्गण ३६९

अयनांश २४।३।५२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	०	६	८	५	७	७	५	११
२	२	९	२९	२	२७	१७	०	०
०	२२	५४	४५	२	४८	२४	३४	३४
२६	२७	४५	४	२२	८	५६	३६	३६
६१	८५८	२९	५१	०	७३	४	३	३
१८	२५	२९	२९	४	३८	५६	११	११
			व.	मा.				



विविधमुहूर्त्त– ति. २ सोम को उ.षा. में सूर्यभोग्य है। ति. ३ मंगल को श्रवण में सूर्यभोग्य है। दि. ९।३९ से रा.३।५६ तक धनिष्ठा में लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण मकर के चन्द्रमा में पूर्व–दक्षिण तथा कुम्भ के चन्द्रमा में पश्चिम दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. ४ बुध को धनिष्ठा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ गुरु को शतभिष में भौमवेध है। पू.भा. में केतुयुति है। ति. ६ शुक्र को उ.भा. में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण नावनिर्माण विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ७ शनि को रेवती में राहुवेध तथा भद्रादोष है। ति. ८ रवि को अश्विनी में नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद–बिक्री औषधसेवन विपणि वस्तुक्रय वाहन खरीदने शस्त्रनिर्माण ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. ९ सोम को रिक्ता के बाद भरणी में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १० मंगल को कृत्तिका में आभूषण निर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ११ बुध को भद्रा बाद रोहिणी में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण दँवरी शिल्पविद्या ईंट निर्माण विपणि मुहूर्त्त है। ति. १२ गुरु को मृगशिरा में सूर्यवेध है। ति. १३ शुक्र को आर्द्रा में वैधृति तथा रिक्तादोष है। ति. १४ शनि को भद्रा के बाद पुनर्वसु में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त है। ति. १५ रवि को पुष्य में शनिवेध है।

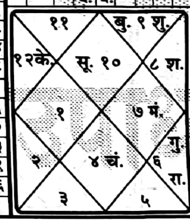
तिथि ल.अ.	२ चं घं.	मि.	३ मं घं.	मि.	४ बु घं.	मि.	५ गु घं.	मि.	६ शु घं.	मि.	तिथि ल.अ.	७ श घं.	मि.	८ र घं.	मि.	९ चं घं.	मि.	१० मं घं.	मि.	११ बु घं.	मि.	१२ गु घं.	मि.	१३ शु घं.	मि.	१४ श घं.	मि.	१५ र घं.	मि.
धनु	७	१	६	५६	६	५२	६	४७	६	४२	मकर	८	२५	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२
मकर	८	४८	८	४३	८	३९	८	३४	८	२९	कुम्भ	९	५६	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३
कुम्भ	१०	१९	१०	१४	१०	१०	१०	५	१०	०	मीन	११	२४	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१
मीन	११	४७	११	४२	११	३८	११	३३	११	२८	मेष	१	१	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८
मेष	१	२४	१	१९	१	१५	१	१०	१	५	वृष	२	५७	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४
वृष	३	२०	३	१५	३	११	३	६	३	१	मिथुन	५	११	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मिथुन	५	३४	५	२९	५	२५	५	२०	५	१५	कर्क	७	२९	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६
कर्क	७	५२	७	४७	७	४३	७	३८	७	३३	सिंह	९	४३	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०
सिंह	१०	६	१०	१	९	५७	९	५२	९	४७	कन्या	११	५६	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३
कन्या	१२	१९	१२	१४	१२	१०	१२	५	१२	०	तुला	२	१२	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९
तुला	२	३५	२	३०	२	२६	२	२१	२	१६	वृश्चिक	४	२९	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६
वृश्चिक	४	५२	४	४७	४	४३	४	३८	४	३३	धनु	६	३५	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२

४२ पं० पौषशुक्ल १५ रवि

अहर्गण ३७६

अयनांश २४।३।५३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	३	६	८	५	८	७	५	११
९	९	१३	२४	२	६	१७	०	०
९	६	२१	२१	२	२३	५९	१२	१२
१७	२७	१२	३५	३६	४९	३२	२०	२०
६१	७८	९२	२३	०	७३	४	३	३
१२	७	२९	१	३३	४०	५७	११	११
			व.	व.				



○उत्तरायन। देवताओं का दिन तथा दैत्यों की रात्रि। अयन संक्रान्ति के बाद तीन दिनों तक शुभ कार्य वर्जित है। खरमास समाप्ति। शिशिरऋतु प्रारम्भ। दिन ७।३४ से सूर्यास्त तक मकरसंक्रान्ति का पुण्यकाल। चावल–तिल लड्डू का दान। प्रयाग या गोदावरी में स्नान। अन्नरूपाषष्ठी व्रत (बंगाल)। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ४।२४ से। अमृतसिद्धियोग रा. ४।२४ से। रवियोग रा. ४।२४ तक। रा.शे. ६।३२ तक। पञ्चक समाप्ति रा. २।४३। यायीजययोग रा. ७।२२ तक। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। प्रयाग में स्नान करना चाहिए। प्रयाग माघमेला प्रारंभ। पुष्याभिषेक यात्रा। ⊙श्रवण नक्षत्र का सूर्य रा. २।३१। मृत्युबाणारम्भ रा. २।३१। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ८।३४ तक।

मूलविचार–रेवती/अश्विनी– ति. ६ शुक्र को रा. ४।२४ से। ति. ८ रवि को रा. १।५ तक।
श्लेषा/मघा– ति. १५ रवि को रा. ८।३४ से।
पञ्चक विचार–ति. ३ मंगल को रा. ९।११ से। ति. ७ शनि को रा. २।४३ तक।

अन्य भावों के कारक का विचार– जन्मलग्न को आत्म, धनभाव को स्त्री, एकादश को अग्रज, तृतीय को अनुज, पञ्चम को पुत्र एवं पञ्चम स्थान में जो ग्रह स्थित होता है वह भी उस भाव का कारक होता है। ११,३,८,६,२,१२ इन भावों से जिस भाव का सम्बन्ध होता है उसके फल का नाश हो जाता है। परन्तु ये चारों राशियाँ केन्द्र–त्रिकोण में हो तो शुभ कारक हो जाती है तथा इनके संयोग से अशुभ भी शुभ हो जाता है। भूमिशयन विचार– सूर्य नक्षत्र से ५,७,९,१२,१९ एवं २६ वें चन्द्र नक्षत्र में भूमि शयन करती है। परिहार– (वास्तुभूषण)– उपर कहे हुए भूशयन नक्षत्रों में क्रमशः १,४,१२,२७,१६ तथा ७ घटी तक भूशयन तथा शेष में आवश्यकता पड़ने पर जागृती समझनी चाहिए। अन्य– ४,८,५,३,६,७ घटियों तक क्रमशः सूर्य नक्षत्र से ५,७,९,१२,१९,२६ चन्द्र नक्षत्रों में भूमि शयन करती है। पौष पूर्णिमा से माघ स्नान का मन्त्र– दुःखदारिद्रयनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशने। मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युतमाधव स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। यह मन्त्र पढ़ते हुए स्नान करें तथा पुनः अर्घ्य दान दें– मन्त्र– सवित्रे प्रसचित्रे च परंधामजले मम। त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा।। इसके बाद तर्पण आदि करें।

संक्रान्तिफल– शुक्रवार को यदि सूर्य संक्रान्ति हो तो अन्न सस्ता होता है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

माघकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ५ माघ से ११ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक २५ जनवरी से ८ फरवरी तक सन् २०१६ ई.।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे.अं. +	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
२६	५१	१	चं	१	१	प्रा	७	२	श्लेषा	३७	३३	रा	९	३९	आयुष्मान	३३	५१	रा	८	१०	कौ	१	१	तै	३२	०	सौम्य	२५	१	१०	११	५	सिंह	३७।३१	६	३८	५	२२	९	१०	१०	२९	१९	१३	+	१०	६	५५
२६	५४	२	मं	२	५८	प्रा	७	४८	मघा	४१	२७	रा	११	१२	सौभाग्य	३२	५२	रा	७	४६	गर	२	५८	व	३४	२९	कालदण्ड	२६	२	११	१२	६			६	३७	५	२३	९	११	११	४०	१८	५८	+	१०	७	४९
२६	५६	३	बु	५	५९	दि	९	१	पू.फा.	४६	२९	रा	१	१३	शोभन	३२	४७	रा	७	४४	भ	५	५९	वव	३८	५	सुस्थिर	२७	३	१२	१३	७			६	३७	५	२३	९	१२	१२	५१	१८	४३	+	११	८	४०
२६	५९	४	गु	१०	१०	दि	१०	४०	उ.फा.	५२	२०	रा	३	३२	अतिगण्ड	३३	२५	रा	७	५८	वा	१०	१०	कौ	४२	३८	मातङ्ग	२८	४	१३	१४	८	कन्या	२।५७	६	३६	५	२४	९	१३	१४	०	१८	२८	+	११	९	३१
२७	२	५	शु	१५	५	दि	१२	३८	हस्त	५८	४६	रा	६	६	सुकर्मा	३४	३२	रा	८	२५	तै	१५	५	गर	४७	४७	अमृत	२९	५	१४	१५	९			६	३६	५	२४	९	१४	१५	९	१८	१२	+	११	१०	२१
२७	५	६	श	२०	२९	दि	२	४७	चित्रा	६०	०	स	म	स्त	धृति	३५	५६	रा	८	५७	व	२०	२९	भ	५३	११	काण	३०	६	१५	१६	१०	तुला	३२।३	६	३५	५	२५	९	१५	१६	१६	१७	५७	+	११	११	११
२७	८	७	र	२५	५३	दि	४	५५	चित्रा	५	२०	दि	८	४२	शूल	३७	१४	रा	९	२८	वव	२५	५३	वा	५८	२२	पद्म	३१	७	१६	१७	११			६	३४	५	२६	९	१६	१७	२२	१७	४०	+	११	१२	१
२७	१०	८	चं	३०	५१	सा	६	५४	स्वाती	११	३७	दि	११	१३	गण्ड	३८	९	रा	९	५०	कौ	३०	५१	तै	६०	०	छत्र	१	८	१७	१८	१२			६	३४	५	२६	९	१७	१८	२७	१७	२४	+	११	१२	५२
२७	१३	९	मं	३५	५	रा	८	३५	विशाखा	१७	१५	दि	१	२७	वृद्धि	३८	३०	रा	९	५७	तै	२	५८	गर	३५	५	श्रीवत्स	२	९	१८	१९	१३	वृश्चिक	०।५१	६	३३	५	२७	९	१८	१९	३१	१७	७	+	१२	१	४४
२७	१६	१०	बु	३८	१०	रा	९	४९	अनुराधा	२१	५७	दि	३	२०	ध्रुव	३७	५८	रा	९	४४	व	६	३८	भ	३८	१०	सौम्य	३	१०	१९	२०	१४			६	३३	५	२७	९	१९	२०	३५	१६	५०	+	१२	२	३७
२७	२०	११	गु	४०	९	रा	१०	३६	ज्येष्ठा	२५	३२	दि	४	४५	व्याघात	३६	३७	रा	९	११	वव	९	१०	वा	४०	९	कालदण्ड	४	११	२०	२१	१५	धनु	२५।३२	६	३२	५	२८	९	२०	२१	३७	१६	३२	+	१२	३	३०
२७	२३	१२	शु	४०	४६	रा	१०	४९	मूल	२७	५३	सा	५	४०	हर्षण	३४	१२	रा	८	१२	कौ	१०	२८	तै	४०	४६	सुस्थिर	५	१२	२१	२२	१६			६	३१	५	२९	९	२१	२२	३७	१६	१५	+	१२	४	२३
२७	२६	१३	श	४०	६	रा	१०	३३	पू.षा.	२८	५४	सा	६	५	वज्र	३०	४८	सा	६	५०	गर	१०	२६	व	४०	६	मातङ्ग	६	१३	२२	२३	१७	मकर	४३।५२	६	३१	५	२९	९	२२	२३	३६	१५	५६	+	१२	५	१५
२७	२९	१४	र	३८	१२	रा	९	४७	उ.षा.	२८	४५	सा	६	०	सिद्धि	२६	२४	सा	५	४	भ	९	९	श	३८	१२	अमृत	७	१४	२३	२४	१८			६	३०	५	३०	९	२३	२४	३३	१५	३८	+	१२	६	५
२७	३२	३०	चं	३५	१४	रा	८	३६	श्रवण	२७	३०	सा	५	३०	व्यतिपात	२१	१०	दि	२	५८	च	६	४३	नाग	३५	१४	सिद्धि	८	१५	२४	२५	१९	कुम्भ	५६।२८	६	३०	५	३०	९	२४	२५	३०	१५	१९	+	१२	-	-

सिंहराशि रा. ९।३९। माघमास में जो कहीं से भी प्रयाग का स्मरण करके स्नान करता है, उसे प्रयाग स्नान का फल ☾ मिलता है। माघमास में मूली नहीं खाना चाहिए। ⊙अभिजित नक्षत्र का सूर्य समाप्त रा. १०।८। मृत्युबाण समाप्ति रा. २।४। यायीजययोग प्रा. ७।२ तक। ☐"मघेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः"। ⊙धनिष्ठा नक्षत्र का सूर्य रा. ४।४३। यायीजययोग सा. ६।५ से रा. १०।३३ तक। ◆या समुद्र में मौन व्रत रखकर स्नान करना चाहिए।

भ. रा. ८।२५ से। भारतीय ६६ वाँ गणतन्त्र दिवस। ध्वजोत्तोलन–राष्ट्रगान–राजधानी में विविध उत्सव तथा आयोजन।

भ. दि. ९।१ तक। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।४०। आज गणेश जन्मदिन। चन्द्रमा को अर्घ्यदान।♠

कन्याराशि दि. ७।४७। यायीजययोग दि. १०।४० से। ♠गौरी चतुर्थी व्रत (प्रदोष व्यापिनी)।

रवियोग रा.शे. ६।६ से। ♏ से दि. ४।५५ तक। द्विपुष्करयोग दि. ८।४२ तक। रवियोग दि. ८।४२ तक।

भ. दि. २।४७ से रा. ३।५१ तक। तुलाराशि रा. ७।२४। महात्मागाँधी स्मृति दिवस। शहीद दिवस। द्विपुष्करयोग ♎

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती ७। भानुसप्तमी ७ पर्व। सूर्यग्रहण के समान फल मिलता है। यायीजययोग दि. ८।४२ ♏

अष्टकाश्राद्ध। फरवरी २। यमघंटयोग दि. ११।१३ से।

वृश्चिकराशि प्रा. ६।५३। अन्वष्टका श्राद्ध। मृत्युबाणारम्भ रा. १०।२८। ♎दि. २।४७ से। रवियोग समस्त।

भ. दि. ९।१२ से रा. ९।४९ तक। मृत्युबाण समाप्ति रा. १०।३। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।२० तक। अमृतसिद्धियोग ☮

धनुराशि दि. ४।४५। षट्तिला ११ एकादशी व्रत सबका। ☮दि. ३।२० तक।

तिलद्वादशी १२। तिल उत्पत्ति। स्थायीजययोग सा. ५।४० से रा. १०।४९ तक।

भ. रा. १०।३३ से। मकरराशि रा. १२।४। शनिप्रदोष १३ व्रत। पुत्र प्राप्ति के लिए मासशिवरात्रि १३ व्रत।☐

भ. दि. १०।१० तक। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ६।० तक।

कुम्भराशि रा. ५।५। स्नान–दान–श्राद्ध की ३०मौनी अमावस्या। काशी में दशाश्वमेध या प्रयाग में त्रिवेणी संगम◆

सोमवती अमावस्या। सोमवती अमावस्या के दिन पीपल वृक्ष के नीचे भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित कर विधानपूर्वकसूर्यसोपचार पूजन कर स्त्रियों को सौभाग्यवृद्धि हेतु प्रदक्षिणा करनी चाहिए। पञ्चक प्रारम्भ रा. ५।५। द्वापरयुगादि ३०। त्रिवेणी अमावस्या (उड़ीसा)। शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए सुखकारक होती है। महोदययोग दि. २।५८ तक। यायीजययोग रा. ८।३६ से। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ५।३० तक।

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ।।

ति.१ सोम को रा.९।३९ के बाद मघा में सूर्यवेध तथा मृत्युबाण है।
ति.२ मंगल को मघा में सूर्यवेध तथा भद्रादोष है।
ति.३ बुध को रा.१।१३ के बाद उ.फा. में राहुयुति है।
ति.४ गुरु को उ.फा. में पूर्वदोष है। रा.३।३२ के बाद हस्त में रे.९ ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१५।।
ति.५ शुक्र को हस्त में रे.९ ल.गोधूलि वा ल. ६ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० वा ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १५।।
ति.७ रवि को दि. ८।४२ के बाद स्वाती में भौमयुति है।
ति.८ सोम को स्वाती में पूर्वदोष है।
ति.९ मंगल को दि.१।२७ के बाद अनुराधा में मृत्युबाण से पूर्व रे.७ ल.गोधूलि वा ल. ६ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५
ति.१० बुध को अनुराधा में भद्रादोष तथा मृत्युबाण है।
ति.११ गुरु को दि.४।४५ के बाद मूल में रे.७ ल.गोधूलि वा ल. ६ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० वा ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१५।।
ति.१२ शुक्र को मूल में रे.७ दिन में ल. १ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (सप्तमस्थ मंगल शुभ नहीं है) वा ल.गोधूलि। इसके बाद मासान्तदोष है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				वक्रीबुध				वक्रीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	चं	६	१३	५०	४०	८	२३	५८	३४	५	१	५९	१३	८	७	३७	२९	७	१८	४	२९	५	०	९	९
२	मं	६	१४	२०	१०	८	२३	३५	३३	५	१	५५	४९	८	८	५१	१०	७	१८	९	२६	५	०	५	५९
३	बु	६	१४	४९	३९	८	२३	१२	२८	५	१	५२	२५	८	१०	४	५०	७	१८	१४	२२	५	०	२	४८
४	गु	६	१५	१९	९	मा	२३	४	१६	५	१	४९	२	८	११	१८	३०	७	१८	१९	२३	४	२९	५९	३७
५	शु	६	१५	४८	३८	८	२३	१३	२२	५	१	४५	३८	८	१२	३२	११	७	१८	२४	२४	४	२९	५६	२६
६	श	६	१६	२०	८	८	२३	२२	२७	५	१	४२	१४	८	१३	४५	५१	७	१८	२८	४०	४	२९	५३	१५
७	र	६	१६	४७	३७	८	२३	३१	३३	५	१	३८	५१	८	१४	५९	३२	७	१८	३३	३२	४	२९	५०	५
८	चं	६	१७	१७	६	८	२३	४०	३२	५	१	३५	२७	८	१६	१३	४७	७	१८	३६	२४	४	२९	४६	५४
९	मं	६	१७	४६	३६	८	२४	७	१३	५	१	३२	४	८	१७	२८	२३	७	१८	४०	१६	४	२९	४३	४३
१०	बु	६	१८	१६	५	८	२४	४४	३९	५	१	२८	४०	८	१८	४२	५९	७	१८	४४	८	४	२९	४०	३२
११	गु	६	१८	४५	३५	८	२५	२२	५	५	१	२५	१६	८	१९	५७	३५	७	१८	४८	०	४	२९	३७	२१
१२	शु	६	१९	१५	४	८	२५	५९	३१	५	१	२१	५३	८	२१	१२	१२	७	१८	५१	५३	४	२९	३४	११
१३	श	६	१९	४४	३४	८	२६	३६	५१	५	१	१८	३०	८	२२	२६	४८	७	१८	५५	४५	४	२९	३१	०
१४	र	६	२०	१४	३	८	२७	३०	२९	५	१	१५	१३	८	२३	४१	२४	७	१८	५९	३७	४	२९	२७	४९
३०	चं	६	२०	४३	३६	८	२८	२८	५०	५	१	११	५६	८	२४	५६	०	७	१९	३	२९	४	२९	२४	३८

ग्रहचार– मंगल– ति. १३ शनि को विशाखा में रा. ७।५।। वक्रीबुध– ति. ४ गुरु को मार्गी सा. ५।५८। ति. १३ शनि को उत्तराषाढ़ा में दि. ७।५५।। वक्रीगुरु– उत्तराफाल्गुनी २ चरण में।। शुक्र– ति. ५ शुक्र को पूर्वाषाढ़ा में रा. १०।११।। शनि– ज्येष्ठा १ चरण में।। राहु– ति. ३ बुध को उ.फा. १ चरण सिंहराशि में तथा केतु पू.भा. ३ चरण कुम्भराशि में रा. ३।४३।।

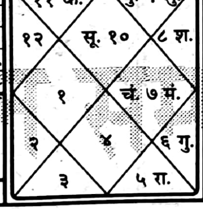
माघमास की त्रयोदशी को यदि मेघ हों तो अनाज सस्ते होते हैं।

४३ पं० माघकृष्ण ८ सोम

अहर्गण ३८४

अयनांश २४।३।५४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	६	६	८	५	८	७	४	१०
१७	१७	१७	२३	१	१६	१८	२९	२९
१८	३९	१७	४०	३५	१३	३६	४६	४६
२७	४७	६	३२	२७	४७	२४	५४	५४
६१	७२४	२९	२६	३	७४	३	३	३
४	१०	३०	४१	२३	३६	५२	११	११
		मा.	व.					



विविधमुहूर्त्त– ति. १ सोम को श्लेषा में वस्तुविक्रय फ़सल काटने का मुहूर्त्त है। ति. २ मंगल को मघा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ३ बुध को पू.फा. में भद्रा बाद रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ४ गुरु को उ.फा. में राहुयुति है। चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रात्रिशेष में हस्त में सूतीस्नान दक्षिण को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. ५ शुक्र को हस्त में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन गर्भाधान नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद–बिक्री पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (पंचमी में) नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण ईंट का भट्ठा लगाने विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ शनि को चित्रा में केतुवेध तथा भद्रादोष है। ति. ७ रवि को चित्रा में केतुवेध है। दि. ८।४२ के बाद स्वाती में भौमयुति है। ति. ८ सोम को स्वाती में पूर्वदोष है। दि. ११।१३ के बाद विशाखा में भौमभोग्य है। ति. ९ मंगल को विशाखा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता के बाद अनुराधा में लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। रात्रिशेष में सूतीस्नान मुहूर्त्त है। ति. १० बुध को अनुराधा में भद्रा से पूर्व जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा गृहप्रवेश में चक्रशुद्धि दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि व्यापार वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ११ गुरु को ज्येष्ठा में शनियुति है। ति. १२ शुक्र को मूल में शिशुताम्बूलभक्षण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

तिथि ल.अ.	१ चं घं.	मि.	२ मं घं.	मि.	३ बु घं.	मि.	४ गु घं.	मि.	५ शु घं.	मि.	६ श घं.	मि.	७ र घं.	मि.	८ चं घं.	मि.	९ मं घं.	मि.	१० बु घं.	मि.	११ गु घं.	मि.	१२ शु घं.	मि.	१३ श घं.	मि.	१४ र घं.	मि.	३० चं घं.	मि.
मकर	७	४८	७	४४	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५३	६	४९
कुम्भ	९	१९	९	१५	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२४	८	२०
मीन	१०	४७	१०	४३	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५२	९	४८
मेष	१२	२४	१२	२०	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	२९	११	२५
वृष	२	२०	२	१६	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२५	१	२१
मिथुन	४	३४	४	३०	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	३९	३	३५
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कर्क	६	५२	६	४८	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५७	५	५३
सिंह	९	६	९	२	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	११	८	७
कन्या	११	१९	११	१५	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२४	१०	२०
तुला	१	३५	१	३१	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४०	१२	३६
वृश्चिक	३	५२	३	४८	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५७	२	५३
धनु	५	५८	५	५४	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	३	४	५९

४४ पं० माघकृष्ण ३० सोम

अहर्गण ३९१

अयनांश २४।३।५५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	९	६	८	५	८	७	४	१०
२४	१७	२०	२८	१	२४	१९	२९	२९
२५	५	४३	२८	११	५६	३	२४	२४
३०	३३	३६	५०	५६	०	२९	३८	३८
६०	८१७	२१	५८	३	७४	३	३	३
५६	१	४०	२१	१६	३६	५२	११	११
		मा.	व.					



मूलविचार– श्लेषा/मघा– ति. २ मंगल को रा. ११।१२ तक।
ज्येष्ठा/मूल– ति. १० बुध को दि. ३।२० से। ति. १२ शुक्र को सा. ५।४० तक।
पञ्चक विचार– ति. ३० सोम को रा. ५।५ से।

सम्पूर्ण माघ में तीर्थ स्नान न कर पाने की स्थिति में माघी पूर्णिमा से पूर्व तीन दिनों में विधि पूर्वक स्नान करें। माघ में प्रयाग स्नान का महात्म्य– पृथ्वी पर माघ मास में मात्र तीन दिन प्रयाग स्नान करने मात्र से भी १ हजार अश्वमेध यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है। मकर संक्रान्ति को दान– (स्कन्द पुराण)– गाय एवं तिल का उत्तरायण सूर्य अर्थात् मकर संक्रान्ति में दान करने से समस्त कार्यों की सिद्धि तथा परम सुख की प्राप्ति होती है। माघ मास में तीर्थ क्षेत्र में तैल एवं आँवले का नित्य दान, तथा ब्राह्मणों की सेवा के लिए अग्नि प्रज्ज्वलित करना चाहिए तथा स्नान के बाद जल रहित भोज्य पदार्थ का दान करना चाहिए। ब्राह्मण दम्पति को भोजन कराकर वस्त्र तथा आभूषणों का दान करें, दान में कम्बल, वस्त्र, काजल, कर्णपूर, नीलवस्त्र, स्त्रियों का ललाटाभरण, उपानह एवं रत्नों का गुप्त रूप में दान करते हुए माघ स्नान से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। माघ मास के नियम– भूमि पर शयन करते हुए तीर्थ स्नान तथा आज्य सहित तिल का देवों के प्रीत्यर्थ हवन करने से समस्त कार्यों की सिद्धि तथा सुख की प्राप्ति होती है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार– मकर संक्रान्ति के दिन ब्राह्मणों को वस्त्र दान से महत्फल तथा तिल सहित वृष दान से रोगों से मुक्ति मिलती है। शिव रहस्य के अनुसार– मकर संक्रान्ति को कृष्ण तिल युक्त जल से स्नान कर उद्वर्तन तथा ब्राह्मणों के लिए तिल का दान करें। साथ ही तिल के तेल से शिव मन्दिर में दीप जलावें इससे शुभ फल की प्राप्ति होती है। (काशीखण्ड) माघ मास में काशी में दशाश्वमेध घाट पर गंगा स्नान करने से दश अश्वमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है। गणेशोत्पत्ति– माघ कृष्ण चतुर्थी तिथि को सभी देवों में अग्रगण्य भगवान गणेश का प्रादुर्भाव हुआ।

माघशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि २० माघ से ३ फाल्गुन तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक ९ फरवरी से २२ तक सन् २०१६ ई.।।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घं.	मि.	करण	घं.	मि.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे. अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
२७	३५	१	मं	३१	२०	रा	७	१	धनिष्ठा	२५	२५	दि	४	३९	वरीयान	१५	१०	दि	१२	३३	किं	३	१७	वव	११ ५८	२० ५८	उत्पात	१	१६	२५	२६	२०			६	२९	५	३१	१	२५	२६	२६	१५	७	+	१२	-	-
२७	३७	२	बु	२६	३६	सा	५	६	शतभिष	२२	२७	दि	३	२७	परिघ	८	२९	दि	९	५२	कौ	२६	३६	तै	५३	५८	मानस	१०	१७	२६	२७	२१			६	२८	५	३२	१	२६	२७	२०	१४	४१	+	१२	७	४४
२७	३९	३	गु	२१	१९	दि	३	०	पू.भा.	१८	५५	दि	२	२	शिव	१ ५२	१५ २५	प्रा	१ १	५८ ५१	गर	२१	११	व	४८	२९	मुद्गर	११	१८	२७	२८	२२	मीन	४।४८	६	२८	५	३२	१	२७	२८	१३	१४	२२	+	१२	८	४७
२७	४२	४	शु	१५	३८	दि	१२	४२	उ.भा.	१४	५९	दि	१२	२७	साध्य	४५	५३	रा	१२	४८	भ	१५	३८	वव	४२	४२	ध्वज	१२	१९	२८	२९	२३			६	२७	५	३३	१	२८	२९	४	१४	२	+	१२	९	५०
२७	४५	५	श	९	४५	दि	१०	२०	रेवती	१०	५०	दि	१०	४६	शुभ	३७	५७	स	९	३७	वा	९	४५	कौ	३६	४८	धाता	१३	२०	२९	१	२४	मेष	१०।५०	६	२६	५	३४	१	२९	२९	५४	१३	४२	+	१२	१०	५२
२७	४९	६	र	३ ५४	५१ २०	प्रा	७ ५	५८ ४२	अश्विनी	६	४२	दि	९	७	शुक्ल	३०	१४	सा	६	३२	तै	३	५१	गर	३१ ५८	१ ३१	आनन्द	१४	२१	१	२	२५			६	२६	५	३४	१०	०	३०	४२	१३	२२	+	१२	११	५४
२७	५२	८	चं	५२	५५	रा	३	३६	भरणी	२ ५६	४७ १०	प्रा	७ १	११ २	ब्रह्म	२२	४४	दि	३	३२	भ	२५	३३	वव	५२	५५	चर	१५	२२	२	३	२६	वृष	१६।५५	६	२६	५	३४	१०	१	३१	२९	१३	२	+	१२	१२	५४
२७	५५	९	मं	४८	१२	रा	१	४२	रोहिणी	५६	२३	रा	४	५८	ऐन्द्र	१५	३८	दि	१२	४०	वा	२०	३४	कौ	४८	१२	मातङ्ग	१६	२३	३	४	२७			६	२५	५	३५	१०	२	३२	१५	१२	४२	+	१२	१	५३
२७	५९	१०	बु	४४	१९	रा	१२	८	मृगशिरा	५४	२३	रा	४	९	वैधृति	९	५	दि	१०	२	तै	१६	१६	गर	४४	१९	अमृत	१७	२४	४	५	२८	मिथुन	२५।२३	६	२४	५	३६	१०	३	३२	५९	१२	२१	+	१२	२	४८
२८	३	११	गु	४१	२१	रा	१०	५६	आर्द्रा	५३	१३	रा	३	४१	विष्कुम्भ	१ ५४	११ ५५	प्रा	७ ५	४१ ४०	व	१२	५०	भ	४१	२१	काण	१८	२५	५	६	२९			६	२४	५	३६	१०	४	३३	४१	१२	०	+	१२	३	४१
२८	८	१२	शु	३९	२७	रा	१०	१०	पुनर्वसु	५३	११	रा	३	३९	आयुष्मान	५३	५७	रा	३	५८	वव	१०	२४	वा	३९	२७	लुम्बक	१९	२६	६	७	३०	कर्क	३८।१२	६	२३	५	३७	१०	५	३४	२३	११	३९	+	१२	४	२९
२८	१३	१३	श	३८	४७	रा	९	५३	पुष्य	५४	१९	रा	४	६	सौभाग्य	५०	४३	रा	२	३९	कौ	९	७	तै	३८	४७	मित्र	२०	२७	७	८	१			६	२२	५	३८	१०	६	३५	१	११	१८	+	१२	५	१५
२८	१६	१४	र	३९	२४	रा	१०	७	श्लेषा	५६	४६	रा	५	३	शोभन	४८	३०	रा	१	४५	गर	९	६	व	३९	२४	वज्र	२१	२८	८	९	२	सिंह	५६।४६	६	२१	५	३९	१०	७	३५	३८	१०	५६	+	१२	५	५६
२८	२०	१५	चं	४१	२५	रा	१०	५४	मघा	६०	०	स	म	स्त	अतिगण्ड	४७	२०	रा	१	१६	भ	१०	२५	वव	४१	२५	ध्वांक्ष	२२	२९	९	१०	३			६	२०	५	४०	१०	८	३६	१३	१०	३५	+	१२	-	-

वल्लभाचार्य जयन्ती १। ○सर्वार्थसिद्धियोग दि. १२।२७ से। अमृतसिद्धियोग दि. १२।२७ से। रवियोग दि. १२।२७ तक।
◡चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। समशृंग समताकारक। यायी-स्थायी दुर्लभ सन्धिकरयोग दि. ३।२७ तक।
भ. रा. १।५२ से। मीनराशि दि. ८।२३। मु. जमादिउलव्वल ५ हिजरी सन् १४३७। तिल ४। कुन्द ४ चतुर्थी◆
भ. दि. १२।४२ तक। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। सोपपदा ४ वेदारम्भ वर्जित है। मृत्युबाण समाप्ति सा. ६।३९।○
मेषराशि दि. १०।४६। श्रीवसन्तपञ्चमी ५। तक्षक पूजा ५। वागीश्वरी जयन्ती तथा यात्रा। रतिकाम महोत्सव।
भ. रा. शे. ५।४२ से। श्रीशीतलाषष्ठी (बंगाल)। रथसप्तमी ७। अचलासप्तमी ७ व्रत। षष्ठी को एक बार भोजन करके
भ. दि. ४।३९ तक। वृषराशि दि. १।१२। भीष्माष्टमी ८। भीष्म के निमित्त श्राद्ध तथा तर्पण। मृत्युबाण समाप्ति
महानन्दानवमी ९। श्रीहरसूब्रह्मजयन्ती ९ (चैनपुर-भभुआ)। रवियोग समस्त। रा. ३।४१ से।
मिथुनराशि दि. ४।३३। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ४।९ तक। रवियोग रा. ४।९ तक। सा. ५।४२। रवियोग रा. शे. ६।९ से।
भ. दि. ११।३२ से रा. १०।५६ तक। जया ११ एकादशी व्रत सबका। भैमी एकादशी (बंगाल)। सर्वार्थसिद्धियोग
कर्कराशि रा. ९।४०। भीष्मद्वादशी १२। भीष्म के निमित्त श्राद्ध तथा तर्पण। सोपपदा १२ वेदारम्भ वर्जित है।❖
शनिप्रदोष १३ व्रत। पुत्र प्राप्ति के लिए। सम्पूर्ण माघस्नान करनें में असमर्थ हों तो अंतिम तीन दिनों में स्नान करनें से पूरे माघ
भ. रा. १०।७ से। सिंहराशि रा. ५।३। यायीजययोग रा. १०।७ से रा. ५।३ तक। यमघंटयोग रा. ५।३ से। रवियोग रा. ५।३ तक।
भ. दि. १०।३० तक। स्नान-दान-व्रत की १५ माघी पूर्णिमा। तिल-पात्र-ऊनीवस्त्र-कम्बल आदि का दान।

◆(प्रदोष व्यापिनी)। "माघशुक्ल चतुर्थी को कुन्द पुष्पों से शिव का पूजन कर रात्रि में भोजन करना चाहिए। मृत्युबाणारम्भ रा. ७।०। यायीजययोग दि. २।२ से दि. ३।० तक। रवियोग दि. २।२ से। सरस्वती पूजन। ⦿सं. कुम्भराशि का सूर्य सा. ६।१९। मु. ३० समा। फल समता। बाद का ६ घण्टा २४ मिनट पुण्यकाल। गो-अन्न-तिल आदि का दान। गोदावरी स्नान। पञ्चक समाप्ति दि. १०।४६। यायीजययोग दि. १०।२० तक। रवियोग दि. १०।४६ से। सप्तमी में अरुणोदयकाल में स्नान करना चाहिए। सौरफाल्गुनमासारम्भ। मन्वादि ७। मृत्युबाणारम्भ सा. ६।०। यायीजययोग दि. ९।७ से रा. शे. ५।४२ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ९।७ तक। रवियोग दि. ९।७ तक। ❖तिलद्वादशी १२। श्री छत्रपतिशिवाजी जयन्ती (नवीनतम)। ⦿सायन मीनराशि का सूर्य दि. २।५७। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ३।३९ तक। रवियोग रा. ३।३९ से। मास का सम्पूर्ण फल मिलता है। कल्पादि १३। ⦿शतभिष नक्षत्र का सूर्य दि. ८।२०। राष्ट्रीयफाल्गुनमास दि. ३०। रवियोग रा. ४।६ से। माघस्नान-व्रत-यम-नियम आदि की समाप्ति। सन्तरविदास जयन्ती १५। काशी में सीरगोवर्धन ग्राम यात्रा तथा दर्शन।

।। विवाहमुहूर्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ।।

- ति.३ गुरु को दि.२।२ के बाद मृत्युबाण से पूर्व उ.भा. में रे.८ ल.गोधूलि।
- ति.४ शुक्र को उ.भा. में भद्रादोष तथा मृत्युबाण है। रेवती में राहुवेध तथा मृत्युबाण है।
- ति.५ शनि को रेवती में पूर्वदोष है।
- ति.८ सोम को रा.शे. ६।९ के बाद रोहिणी में रे.८ शुभ लग्न नहीं है।
- ति.९ मंगल को वैधृति से पूर्व रोहिणी में रे.७ दिन में ल. १ इष्ट ७ ग्र.व.वि.१८।। (सप्तमस्थ मंगल शुभ नहीं है)। रा.४।५८ के बाद मृगशिरा में वैधृतिदोष है।
- ति.१० बुध को वैधृति के बाद मृगशिरा में रे.७ दिन में ल. १ इष्ट ७ ग्र.व.वि.१८।। (सप्तमस्थ मंगल शुभ नहीं है) वा ल.गोधूलि वा ल. ६ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।।
- ति.१४ रवि को रा.शे.५।३ के बाद मघा में भद्रादोष है।
- ति.१५ सोम को मघा में भद्रा के बाद रे.८ ल. गोधूलि वा ल. ६ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०।। वा ल. ७ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				वक्रीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	मं	६	२१	१३	१६	८	२९	२७	११	५	१	८	४०	८	२६	१०	३६	७	११	७	२१	४	२९	२१	२७
२	बु	६	२१	४२	५७	९	०	२५	३१	५	१	३	५१	८	२७	२५	१२	७	११	११	१३	४	२९	१८	१७
३	गु	६	२२	१२	३७	९	१	२४	१	५	०	५८	३	८	२८	३९	४९	७	११	१५	५	४	२९	१५	६
४	शु	६	२२	४२	१८	९	२	३७	४०	५	०	५२	१५	८	२९	५४	२५	७	११	१८	५७	४	२९	११	५५
५	श	६	२३	१३	१०	९	३	५२	२८	५	०	४६	२७	९	१	९	१	७	११	२२	५४	४	२९	८	४४
६	र	६	२३	३९	२९	९	५	७	१६	५	०	४०	३८	९	२	२३	२९	७	११	२६	५०	४	२९	५	३३
८	चं	६	२४	३	२८	९	६	२२	४	५	०	३४	५०	९	३	३७	४९	७	११	१९	३८	४	२९	२	२२
९	मं	६	२४	२७	२६	९	७	३७	४३	५	०	२९	२	९	४	५२	८	७	११	३२	२५	४	२८	५९	१२
१०	बु	६	२४	५१	२५	९	९	२	२४	५	०	२३	१४	९	६	६	२८	७	११	३५	३५	४	२८	५६	१
११	गु	६	२५	१५	२३	९	१०	२७	५	५	०	१७	२६	९	७	२०	४८	७	११	३८	४	४	२८	५२	५०
१२	शु	६	२५	३९	२२	९	११	५१	४६	५	०	११	३८	९	८	३५	७	७	११	४०	५४	४	२८	४९	३९
१३	श	६	२६	३	२१	९	१३	१६	२६	५	०	५	४९	९	९	४९	२७	७	११	४३	४३	४	२८	४६	२८
१४	र	६	२६	२७	१९	९	१४	४३	१४	५	०	०	१	९	११	३	४६	७	११	४६	३२	४	२८	४३	१८
१५	चं	६	२६	५१	१८	९	१६	१६	३३	४	२९	५४	१३	९	१२	१८	६	७	११	४९	२२	४	२८	४०	७

ग्रहचार- मंगल- विशाखा में।। बुध- ति. १ मंगल को मकरराशि में रा. ७।५९। ति. १० बुध को श्रवण में रा. १०।४४।। वक्रीगुरु- ति. १४ रवि को वक्री होकर उत्तराफाल्गुनी १ चरण तथा सिंहराशि में प्रा. ६।२५।। शुक्र- ति. १ मंगल को उत्तराषाढ़ा में दि. ३।५७। ति. ४ शुक्र को मकरराशि में दि. ८।१५। ति.१३ शनि को श्रवण में दि. ९।४६।। शनि- ज्येष्ठा १ चरण में।। राहु- उ.फा. १ चरण में तथा केतु पू.षा. ३ चरण में।।

४५पं० माघशुक्ल ८ सोम

अहर्गण ३९८

अयनांश २४।३।५७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	०	६	९	५	९	७	४	१०
१	२६	२४	६	०	३	१९	२९	२९
३१	०	३	२२	३४	३७	२९	२	२
२९	१३	२८	४	५०	४९	३८	२२	२२
६०	८५५	२३	७५	५	७४	२	३	३
४६	५२	५८	३९	४८	१९	४७	११	११
				व.				



विविधमुहूर्त- ति. १ मंगल को धनिष्ठा में सूर्ययुति है। ति. २ बुध को शतभिष में सूर्यभोग्य है। ति. ३ गुरु को पू.भा. में केतुयुति है। दि.२।२ से दि.३।० तक उ.भा. में सूतीस्नान सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण मुहूर्त है। ति. ४ शुक्र को उ.भा. में रिक्तादोष है। रेवती में राहुवेध है। ति. ५ शनि को रेवती में पूर्वदोष है। अश्विनी में कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. २) वाहन खरीदने शस्त्रनिर्माण विपणि वस्तुक्रय मुहूर्त है। ति. ६ रवि को अश्विनी में सूतीस्नान (सप्तमी में) नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि वस्तुक्रय वाहन खरीदने शस्त्रनिर्माण ऑपरेशन का मुहूर्त है। ति. ८ सोम को भरणी में भद्रादोष है। कृत्तिका में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। ति. ९ मंगल को रोहिणी में रिक्तादोष तथा वैधृति है। ति. १० बुध को वैधृति के बाद मृगशिरा में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन गर्भाधान वृष के चन्द्रमा में पूर्व-दक्षिण तथा मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम-दक्षिण दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन चौलमुण्डन (ल. २) कर्णवेध (ल. २) उपनयन (ल. २) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. २) द्विरागमन (ल. २ वा ३) गृहारम्भ (ल. २ वा ५) गृहप्रवेश (ल. ६) विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ११ गुरु को भद्रा से पूर्व आर्द्रा में अक्षरारम्भ (ल. २) उपनयन (ल. २) फसल काटने का मुहूर्त है। रा. ३।४१ के बाद☛

तिथि ल.अ.	१ मं घं.	मि.	२ बु घं.	मि.	३ गु घं.	मि.	४ शु घं.	मि.	५ श घं.	मि.	तिथि ल.अ.	६ र घं.	मि.	८ चं घं.	मि.	९ मं घं.	मि.	१० बु घं.	मि.	११ गु घं.	मि.	१२ शु घं.	मि.	१३ श घं.	मि.	१४ र घं.	मि.	१५ चं घं.	मि.
मकर	६	४५	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	कुम्भ	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४
कुम्भ	८	१६	८	११	८	७	८	३	७	५९	मीन	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२
मीन	९	४४	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	मेष	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९
मेष	११	२१	११	१६	११	१२	११	८	११	४	वृष	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५
वृष	१	१७	१	१२	१	८	१	४	१	०	मिथुन	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९
मिथुन	३	३१	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	कर्क	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कर्क	५	४९	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	सिंह	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५	७	११
सिंह	८	३	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	कन्या	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४
कन्या	१०	१६	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	तुला	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०
तुला	१२	३२	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	वृश्चिक	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७
वृश्चिक	२	४९	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	धनु	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३
धनु	४	५५	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	मकर	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०

४६ पं० माघशुक्ल १५सोम

अहर्गण ४०५

अयनांश २४।३।५८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	४	६	९	४	९	७	४	१०
८	०	२६	१६	२९	१२	१९	२८	२८
३६	४०	५१	१६	५४	१८	४९	४०	४०
२३	४०	१८	३३	१३	६	२२	७	७
६०	७५	२३	९३	५	७४	२	३	३
२४	२०	५८	२१	४५	२०	४१	११	११
				व.				



मूलविचार- रेवती/अश्विनी- ति. ४ शुक्र को दि. १२।२७ से। ति. ६ रवि को दि. ९।७ तक।
श्लेषा/मघा- ति. १३ शनि को रा. ४।६ से।
पञ्चक विचार- ति. ५ शनि को दि. १०।४६ तक।

☛ पुनर्वसु में द्विरागमन (ल. ११) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ९) मुहूर्त है। ति. १२ शुक्र को पुनर्वसु में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री त्रयोदशी में कर्क के चन्द्रमा में उत्तर दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण कर्णवेध (ल. २) अक्षरारम्भ (ल. २) उपनयन (ल. २) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. २) द्विरागमन (ल. १२ वा २) वाहन खरीदने का मुहूर्त है। ति. १३ शनि को पुष्य में शनिवेध है। ति. १४ रवि को श्लेषा में रिक्ता के बाद भद्रादोष है। ति. १५ सोम को भद्रा के बाद मघा में दँवरी वधूप्रवेश (ल. २ वा ११) फसल काटने का मुहूर्त है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

फाल्गुनकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ४ फाल्गुन से १९ तक शक १९३७।।
अंग्रेजी दिनांक २३ फरवरी से ९ मार्च तक सन् २०१६ ई.।।

शुक्र पूर्व में- अत: पूर्व-उत्तर दिशा तथा वायव्य-ईशान दिशा से द्विरागमन शुभ होगा।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे. अं. +	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
२८	२३	१	मं	४४	२९	रा	१२	७	मघा	०	२९	प्रा	६	३१	सुकर्मा	४६	५९	रा	१	७	वा	१२	५७	कौ	४४	२९	कालदण्ड	२३	१	१०	११	४			६	१९	५	४१	१०	९	३६	४७	१०	१३	+	१२	६	३२
२८	२७	२	बु	४८	४१	रा	१	४७	पू.फा.	५	१६	दि	८	२५	धृति	४७	३०	रा	१	१९	तै	१६	३५	गर	४८	४१	सुस्थिर	२४	२	११	१२	५	कन्या	२१।४२	६	१९	५	४१	१०	१०	३७	१८	९	५१	+	११	७	२४
२८	३०	३	गु	५३	३७	रा	३	४५	उ.फा.	११	०	दि	१०	४२	शूल	४८	३३	रा	१	४३	व	२१	९	भ	५३	३७	मातङ्ग	२५	३	१२	१३	६			६	१८	५	४२	१०	११	३७	४८	९	२९	+	११	८	१४
२८	३४	४	शु	५८	५९	रा	५	५३	हस्त	१७	१९	दि	१	१३	गण्ड	४९	५६	रा	२	१५	बव	२६	१८	वा	५८	५९	अमृत	२६	४	१३	१४	७	तुला	५०।३७	६	१७	५	४३	१०	१२	३८	१६	९	७	+	११	९	४
२८	३८	५	श	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	२३	५५	दि	३	५१	वृद्धि	५१	२२	रा	२	५०	कौ	३१	३९	तै	६०	०	काण	२७	५	१४	१५	८			६	१७	५	४३	१०	१३	३८	४४	८	४४	+	१०	९	५४
२८	४१	५	र	४	१९	दि	८	०	स्वाती	३०	१९	सा	६	२४	ध्रुव	५२	२९	रा	३	१६	तै	४	१९	गर	३६	४५	लुम्बक	२८	६	१५	१६	९			६	१६	५	४४	१०	१४	३९	८	८	२२	+	१०	१०	४४
२८	४४	६	चं	९	१०	दि	९	५५	विशाखा	३६	८	रा	८	४२	व्याघात	५३	६	रा	३	२९	व	९	१०	भ	४१	१४	मित्र	२९	७	१६	१७	१०	वृश्चिक	१९।४१	६	१५	५	४५	१०	१५	३९	३०	७	५९	+	१०	११	३५
२८	४८	७	मं	१३	१७	दि	११	३३	अनुराधा	४१	५	रा	१०	४०	हर्षण	५२	५६	स	३	२४	बव	१३	१७	वा	४४	४६	वज्र	१	८	१७	१८	११			६	१४	५	४६	१०	१६	३९	५२	७	३६	+	१०	१२	२६
२८	५२	८	बु	१६	१४	दि	१२	४४	ज्येष्ठा	४४	५६	रा	१२	१२	वज्र	५१	५४	स	३	०	कौ	१६	१४	तै	४७	१०	ध्वांक्ष	२	९	१८	१९	१२	धनु	४४।५६	६	१४	५	४६	१०	१७	४०	१०	७	१४	+	१०	१	१८
२८	५६	९	गु	१८	६	दि	१	२७	मूल	४७	३४	रा	१	१५	सिद्धि	४९	५२	रा	२	१०	गर	१८	६	व	४८	२०	धूम्र	३	१०	१९	२०	१३			६	१३	५	४७	१०	१८	४०	२७	६	५१	+	१०	२	१०
२९	०	१०	शु	१८	३३	दि	१	३७	पू.षा.	४८	५४	रा	१	४६	व्यतिपात	४६	४९	रा	१२	५६	भ	१८	३३	बव	४८	९	प्रवर्धमान	४	११	२०	२१	१४			६	१२	५	४८	१०	१९	४०	४३	६	२८	+	१०	३	१
२९	३	११	श	१७	४४	दि	१	१७	उ.षा.	४९	३	रा	१	४८	वरीयान	४२	४६	रा	११	१७	वा	१७	४४	कौ	४६	४३	राक्षस	५	१२	२१	२२	१५	मकर	३।५६	६	११	५	४९	१०	२०	४०	५५	६	४	+	१०	३	५१
२९	७	१२	र	१५	४१	दि	१२	२७	श्रवण	४८	१	रा	१	२३	परिघ	३७	५१	रा	९	१९	तै	१५	४१	गर	४४	८	गद	६	१३	२२	२३	१६			६	११	५	४९	१०	२१	४१	६	५	४१	+	९	४	४०
२९	१०	१३	चं	१२	३४	दि	११	१२	धनिष्ठा	४६	६	रा	१२	३६	शिव	३२	६	रा	७	०	व	१२	३४	भ	४०	३४	शुभ	७	१४	२३	२४	१७	कुम्भ	१७।४	६	१०	५	५०	१०	२२	४१	१६	५	१८	+	९	५	२८
२९	१४	१४	मं	८	३४	दि	९	३५	शतभिष	४३	२०	रा	११	२९	सिद्ध	२५	४०	दि	४	२५	श	८	३४	च	३६	९	मृत्यु	८	१५	२४	२५	१८			६	९	५	५१	१०	२३	४१	२२	४	५५	+	९	-	-
२९	१८	३०	बु	३ ५४	४३ ३६	प्रा	[illegible]	[illegible]	पू.भा.	३९	५४	रा	१०	६	साध्य	१८	३९	दि	१	३६	नाग	३	४३	किं	३१ ५८	१ ११	पद्म	९	१६	२५	२६	१९	मीन	२५।४६	६	८	५	५२	१०	२४	४१	२७	४	३१	+	९	-	-

मृत्युबाणारम्भ दि. ३।३१।
कन्याराशि दि. ३।०। मृत्युबाण समाप्ति दि. ३।१९।
भ. दि. २।४६ से रा. ३।४५ तक। यायीजययोग रा. ३।४५ तक।
तुलाराशि रा. २।३२। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ९।४। स्थायीजययोग दि. १।१३ से रा.शे. ५।५३ तक।
यायीजययोग दि. ३।५१ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।५१ से।
यायीजययोग दि. ८।० तक। रवियोग सा. ६।२४ से। ♏ शुभवार तथा अमावस्या की युतिप्रजा के लिए सुखकारक होती है।
भ. दि. ९।५५ से रा. १०।४५ तक। वृश्चिकराशि दि. २।७। यायीजययोग रा. ८।४२ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ८।४२ से।
अष्टका श्राद्ध। अन्य अष्टका में श्राद्ध सम्भव न हो, किन्तु आज श्राद्ध करना आवश्यक होता है। स्थायीजययोग
धनुराशि रा. १२।१२। जानकी जयन्ती ८। अन्वष्टका श्राद्ध। यमघंटयोग रा. १२।१२ से। रा. १०।४० से। मार्च ३।
भ. रा. १।३३ से। मृत्युबाणारम्भ दि. २।०। यमघंटयोग रा. ८।४२ तक। रवियोग रा. ८।४२ तक।
भ. दि. १।३७ तक। ⊙पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य दि. १।५३। मृत्युबाण समाप्ति दि. १।५३।
मकरराशि दि. ७।४५। विजया ११ एकादशी व्रत सबका। यायीजययोग दि. १।१७ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।४८ से। ◆
प्रदोष १२ व्रत। यायीजययोग रा. १।२३ से। ◆त्रिपुष्करयोग दि. १।१७ से रा. १।४८ तक।
भ. दि. ११।१२ से रा. १०।२४ तक। कुम्भराशि दि. १।०। *निशीथ व्यापिनी चतुर्दशी में* श्रीमहाशिवरात्रि १३ व्रत।
दिन ९।३५ तक शिवरात्रि व्रत की पारणा। श्राद्ध की ३० अमावस्या।
मीनराशि दि. ४।२६। स्नान-दान की ३० अमावस्या। काशी में ग्रस्तोदितखण्डसूर्यग्रहण (विवरण पृष्ठ २पर)।♏

शिवयोग में अति प्रशस्त। चतुर्दशलिंग पूजा। श्रीवैद्यनाथ जयन्ती। कृत्तिवासेश्वर दर्शन। पञ्चक प्रारम्भ दि. १।०। यायीजययोग दि. ११।१२ तक।

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ।।

ति.१ मंगल को मघा में रे.८ दिन में पञ्चेष्टलग्न नहीं है।
ति.२ बुध को दि.८।२५ के बाद उ.फा. में राहुयुति तथा मृत्युबाण है।
ति.३ गुरु को उ.फा. में राहुयुति है। दि.१०।४२ के बाद भद्रा से पूर्व हस्त में रे.७ दिन में पञ्चेष्टलग्न नहीं है। भद्रा के बाद शुभलग्न नही है।
ति.४ शुक्र को हस्त में रे.७ दिन में शुभलग्न नही है।
ति.५ शनि को दि.३।५१ के बाद स्वाती में सूर्यवेध है।
ति.५ रवि को स्वाती में पूर्वदोष है।
ति.६ सोम को अनुराधा में भद्रा के बाद रे.७ ल. ७ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। वा ल.१० इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।। (गु.दा.)
ति.७ मंगल को अनुराधा में रे.७ ल.गोधूलि वा ल. ६ इष्ट ७ ग्र.व.वि.१७ (षष्ठस्थ लग्नेश शुभ नहीं है) वा ल. ७ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।।
ति.८ बुध को रा.१२।१२ के बाद मूल में रे.६ ल. १० इष्ट ५ ग्र.व.वि.८।।(गु.दा.)
ति.९ गुरु को मूल में रे.६ मृत्युबाण से पूर्व दिन में शुभलग्न नहीं है ।
ति.१० शुक्र को रा.१।४६ के बाद उ.षा. में रे.९ ल.१० इष्ट ५ ग्र.व.वि.८।। (गु.दा.)
ति.११ शनि को उ.षा. में रे.९ ल.गोधूलि वा ल. ६ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१२(षष्ठस्थ लग्नेश शुभ नहीं है)

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				वक्रीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	मं	६	२७	१५	१६	९	१७	४९	५४	४	२९	४८	२८	९	१३	३२	२६	७	१९	५२	११	४	२८	३६	५६
२	बु	६	२७	३९	१५	९	१९	२४	२६	४	२९	४२	४६	९	१४	४६	४५	७	१९	५५	१	४	२८	३३	४५
३	गु	६	२८	३	१४	९	२०	५८	५९	४	२९	३७	४	९	१६	१	५	७	१९	५७	५०	४	२८	३०	३४
४	शु	६	२८	२७	१२	९	२२	३६	१०	४	२९	३१	२२	९	१७	१५	२५	७	२०	०	३९	४	२८	२७	२४
५	श	६	२८	५१	११	९	२४	१६	५७	४	२९	२३	३४	९	१८	३०	१८	७	२०	३	२९	४	२८	२४	१३
५	र	६	२९	१५	९	९	२५	५७	४५	४	२९	१५	४३	९	१९	४४	५२	७	२०	६	२०	४	२८	२१	२
६	चं	६	२९	३९	८	९	२७	३८	३३	४	२९	७	५१	९	२०	५९	२०	७	२०	९	१४	४	२८	१७	५२
७	मं	७	०	३	६	९	२९	१९	२१	४	२८	५९	५९	९	२२	१३	४८	७	२०	११	५४	४	२८	१४	४०
८	बु	७	०	२७	५	१०	१	२	२५	४	२८	५२	८	९	२३	२८	१६	७	२०	१३	२९	४	२८	११	३०
९	गु	७	०	५१	४	१०	२	४६	५८	४	२८	४४	१६	९	२४	४२	४४	७	२०	१५	१४	४	२८	८	१९
१०	शु	७	१	१५	२	१०	४	३१	३१	४	२८	३६	२५	९	२५	५७	१२	७	२०	१६	५९	४	२८	५	८
११	श	७	१	३९	१	१०	६	१६	३	४	२८	२८	३३	९	२७	११	४०	७	२०	१८	४४	४	२८	१	५७
१२	र	७	२	२	५९	१०	८	१	१०	४	२८	२०	४१	९	२८	२६	८	७	२०	२०	३०	४	२७	५८	४६
१३	चं	७	२	२६	५८	१०	९	५०	२४	४	२८	१२	५०	९	२९	४०	३६	७	२०	२२	१५	४	२७	५५	३६
१४	मं	७	२	५०	५७	१०	११	४०	३९	४	२८	४	५८	१०	०	५५	४	७	२०	२४	०	४	२७	५२	२५
३०	बु	७	३	१४	५५	१०	१३	३०	५५	४	२७	५७	६	१०	२	९	३२	७	२०	२५	४५	४	२७	४९	१४

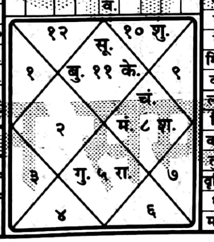
ग्रहचार- मंगल- ति. ६ सोम को वृश्चिकराशि में रा. ३।९। ति. ३० बुध को अनुराधा में दि. ११।१३।। बुध- ति. ४ शुक्र को धनिष्ठा में दि. ४।४३। ति. ७ मंगल को कुम्भराशि में दि. ३।४२। ति. ११ शनि को शतभिष में दि. ११।३९।। वक्रीगुरु- उत्तराफाल्गुनी १ चरण में।। शुक्र- ति. ७ मंगल को धनिष्ठा में रा. ३।३४। ति. १३ सोम को कुम्भराशि में दि. १२।२५।। शनि- ति. ३ गुरु को ज्येष्ठा २ चरण में रा.१२।४६।। राहु-उ.फा.१ चरण में तथा केतु पू.भा. ३ चरण में।।

४७ पं० फाल्गुनकृष्ण ८ बुध

अहर्गण ४१४

अयनांश २४।३।५९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	७	७	१०	४	९	७	४	१०
१७	२०	०	१	२८	२३	२०	२८	२८
४०	३७	२७	२	५२	२८	१३	११	११
१०	७	५	२५	८	१६	२९	३०	३०
६०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	७४	१	३	३
१७	४६	५९	३३	५२ व.	२८	४५	११	११



विविधमुहूर्त्त- ति. १ मंगल को प्रा. ६।३१ के बाद पू.फा. में वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. २ बुध को पू.फा. में दँवरी वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। दि. ८।२५ के बाद उ.फा. में राहुयुति है। ति. ३ गुरु को उ.फा. में पूर्वदोष है। दि. १०।४२ के बाद भद्रा से पूर्व हस्त में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री दक्षिण को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण चौलमुण्डन (ल. २) कर्णवेध (ल. २) अक्षरारम्भ (ल. २) उपनयन (ल. २) वधूप्रवेश (ल. २) द्विरागमन (ल. ३) गृहारम्भ (ल. २) ईंट का भट्ठा लगाना विपणि व्यापार वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ४ शुक्र को हस्त में रिक्तादोष है। ति. ५ शनि को चित्रा में केतुवेध है। ति. ५ रवि को स्वाती में सूर्यवेध है। ति. ६ सोम को विशाखा में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। भद्रा के बाद अनुराधा में गर्भाधान पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा औषधसेवन वधूप्रवेश-द्विरागमन (ल. ११) मुहूर्त्त है। ति. ७ मंगल को अनुराधा में सूतीस्नान लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा(सप्तमी में) ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. ८ बुध को ज्येष्ठा में शनियुति है। ति. ९ गुरु को रिक्ता के बाद मूल में शिशुताम्बूलभक्षण वाटिकारोपण दँवरी वधूप्रवेश-द्विरागमन (ल. ३) शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. १० शुक्र को पू.षा. में भद्रा तथा व्यतिपातदोष है। रा. १।४६ के ☛ बाद उ.षा. में गर्भाधान वधूप्रवेश-द्विरागमन (ल. ११) गृहप्रवेश (ल. ९ वा ११) मुहूर्त्त है। ति. ११ शनि को उ.षा. में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण गृहप्रवेश (ल. ११ वा १२) विपणि मुहूर्त्त है। ति. १२ रवि को श्रवण में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग आभूषण निर्माण पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा (त्रयोदशी में) औषधसेवन नावनिर्माण वस्तुक्रय वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

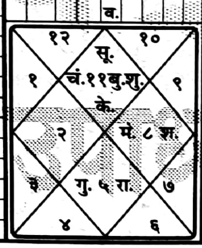
तिथि	१ मं		२ बु		३ गु		४ शु		५ श		५ र		६ चं		७ मं		८ बु		९ गु		१० शु		११ श		१२ र		१३ चं		१४ मं		३० बु	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
कुम्भ	७	२०	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३
मीन	८	४८	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१
मेष	१०	२५	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८
वृष	१२	२१	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४
मिथुन	२	३५	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८
कर्क	४	५३	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
सिंह	७	७	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०
कन्या	९	२०	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३
तुला	११	३६	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९
वृश्चिक	१	५३	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६
धनु	३	५९	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२
मकर	५	४६	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९

४८पं० फाल्गुनकृष्ण ३० बुध

अहर्गण ४२१

अयनांश २४।४।०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१०	७	१०	४	१०	७	४	१०
२४	२३	३	१३	२७	२	२०	२७	२७
४१	५५	१४	३०	५७	९	२५	४९	४९
२७	४७	५५	५५	६	३२	४५	१४	१४
६०	८४८	[illegible]	[illegible]	७	७४	१	३	३
४	३३	५९	१६	५१ व.	२८	४५	११	११



शिवरात्रि व्रत का माहात्म्य- शिवरात्रि से बड़ा कोई परमतत्व नहीं अत: इस दिन जो मनुष्य शिव पूजन नहीं करता वह सहस्र जन्मों तक अनेक योनियों में भ्रमण करता रहता है। शिवरात्रि व्रत एवं शिव पूजन के प्रभाव से असम्भव भी सम्भव हो जाते हैं, तथा मनुष्य पृथ्वी के समस्त सुखों को प्राप्त करता हुआ अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। षोडशोपचार शिव पूजन विधि- संकल्प- देशकालपूर्वक नाम गोत्र का उच्चारण कर "ममेहजन्मनि जन्मान्तरे वार्जित- सकलपापक्षयार्थमायुरारोग्यैश्वर्यपुत्रपौत्रादि सकलकामनासिद्धिपूर्वकान्तेशिवसायुज्यप्राप्तये शिवरात्रिव्रतोत्सवपूजनं करिष्ये।" से संकल्प करें पुन: स्थिर पार्थिव अथवा मिट्टी से निर्मित पार्थिव प्रतिमा पर प्राणप्रतिष्ठा पूर्वक पूजन करें। सर्व प्रथम आगच्छ देव देवेश मर्त्यलोक हितेच्छया। पूजयामिविधानेन प्रसन्न: सुमुखो भव।। नमस्तेरुद्रं०, सहस्रशीर्षा०, इत्यादि से आवाहन, सदासनं कुरुप्राज्ञनिर्मलं स्वर्णनिर्मितम्। भूषितंविविधैरत्नै: कुरु त्वं पादुकासनम्। एतावानस्येतिपाद्यं।गन्धोदकेन पुष्पेण चन्दनेन सुगन्धिना। गुहाण देवदेवेशभक्तिं मे ह्यचलां कुरु। शिवेनवर्च० त्रिपादुर्ध्वत्र अर्घ:।३। कर्पूरोशीरसुरभिशीतलं निर्मलं जलम्। गङ्गायासतु समानीतं गृहाणाचमनीयकम् अद्भ्यवोचदधि०। ततोव्वि० आचमनीयम्।।५।

☛ एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।

मूलविचार-श्लेषा/मघा - ति. १ मंगल को प्रा.६।३१ तक।
ज्येष्ठा/मूल- ति. ७ मंगल को रा. १०।४० से। ति. ९ गुरु को रा. १।१५ तक।
पञ्चक विचार- ति. १३ सोम को दि. १।० से।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग
२९	२१	२	गु	५२	३४	रा	३	१०	उ.भा.	३६	२	रा	८	३३	शुभ	११	१३	दि	१०	३७	वा	२५	२७	कौ	५२	३४	छत्र
२९	२५	३	शु	४६	३७	रा	१२	४६	रेवती	३१	५६	सा	६	५३	शुक्ल	३ ५२	३२ १३	प्रा	७ ४	३२ २५	तै	१९	३६	गर	४६	३७	श्रीवत्स
२९	२९	४	श	४०	४०	रा	१०	२२	अश्विनी	२७	४७	सा	५	१३	ऐन्द्र	४८	३	रा	१	१९	व	१३	३१	भ	४०	४०	सौम्य
२९	३३	५	र	३४	५८	रा	८	५	भरणी	२३	४८	दि	३	३७	वैधृति	४०	३१	रा	१०	१८	बव	७	४९	वा	३४	५८	कालदण्ड
२९	३७	६	चं	२९	४०	सा	५	५७	कृत्तिका	२०	१२	दि	२	१०	विष्कुम्भ	३३	२०	सा	७	२५	कौ	२	१९	तै	२१ ५७	४० १८	सुस्थिर
२९	४०	७	मं	२४	५६	दि	४	२	रोहिणी	१७	१०	दि	१२	५६	प्रीति	२६	४०	दि	४	४४	व	२४	५६	भ	५२	०	मातङ्ग
२९	४४	८	बु	२१	४	दि	२	२९	मृगशिरा	१४	५९	दि	१२	३	आयुष्मान्	२०	४०	दि	२	१९	बव	२१	४	वा	४९	३६	अमृत
२९	४८	९	गु	१८	८	दि	१	१७	आर्द्रा	१३	३५	दि	११	२८	सौभाग्य	१५	२५	दि	१२	१२	कौ	१८	८	तै	४७	११	काण
२९	५२	१०	शु	१६	१४	दि	१२	३२	पुनर्वसु	१३	१७	दि	११	२१	शोभन	१०	५९	दि	१०	२६	गर	१६	१४	व	४५	५४	लुम्बक
२९	५५	११	श	१५	३३	दि	१२	१४	पुष्य	१४	१२	दि	११	४२	अतिगण्ड	७	३४	दि	९	३	भ	१५	३३	बव	४५	५१	मित्र
२९	५९	१२	र	१६	८	दि	१२	२७	श्लेषा	१६	२१	दि	१२	३२	सुकर्मा	५	८	दि	८	३	वा	१६	८	कौ	४७	९	वज्र
३०	३	१३	चं	१८	१०	दि	१	१५	मघा	१९	४९	दि	१	५५	धृति	३	४५	दि	७	२९	तै	१८	१०	गर	४९	४२	ध्वांक्ष
३०	६	१४	मं	२१	१४	दि	२	२९	पू.फा.	२४	२३	दि	३	४४	शूल	३	१३	दि	७	१६	व	२१	१४	भ	५३	१९	धूम्र
३०	१०	१५	बु	२५	२४	दि	४	८	उ.फा.	२९	५७	सा	५	५७	गण्ड	३	३४	दि	७	२४	बव	२५	२४	वा	५७	५१	प्रवर्धमान

योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे. अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
छत्र	१०	१७	२६	२७	२०			६	८	५	५२	१०	२५	४१	३१	४	८	+	८	७	३४
श्रीवत्स	११	१८	२७	२८	२१	मेष	३१।५६	६	७	५	५३	१०	२६	४१	३३	३	४४	+	८	८	३८
सौम्य	१२	१९	२८	२९	२२			६	६	५	५४	१०	२७	४१	३२	३	२१	+	८	९	४३
कालदण्ड	१३	२०	२९	३०	२३	वृष	३७।५४	६	६	५	५४	१०	२८	४२	२८	२	५७	+	८	१०	४५
सुस्थिर	१४	२१	३०	१	२४			६	५	५	५५	१०	२९	४१	२२	२	३३	+	७	११	४६
मातङ्ग	१५	२२	१	२	२५	मिथुन	४६।५	६	४	५	५६	११	०	४१	१४	२	१०	+	७	१२	४४
अमृत	१६	२३	२	३	२६			६	३	५	५७	११	१	४१	५	१	४६	+	७	१	३८
काण	१७	२४	३	४	२७	कर्क	५८।२२	६	२	५	५८	११	२	४०	५२	१	२२	+	६	२	२७
लुम्बक	१८	२५	४	५	२८			६	२	५	५८	११	३	४०	३८	०	५८	+	६	३	१३
मित्र	१९	२६	५	६	२९			६	१	५	५९	११	४	४०	२२	०	३५	+	६	३	५६
वज्र	२०	२७	६	७	३०	सिंह	१६।२१	६	०	६	०	११	५	४०	३	०	११	+	६	४	३५
ध्वांक्ष	२१	२८	७	८	१			५	५९	६	१	११	६	३९	४१	०	१३	+	५	५	१२
धूम्र	२२	२९	८	९	२	कन्या	४०।४७	५	५९	६	१	११	७	३९	१८	०	३६	+	५	५	४८
प्रवर्धमान	२३	३०	९	१०	३			५	५८	६	२	११	८	३८	५३	१	०	+	५	-	-

चन्द्रदर्शन। मु. ४५वृहत्ती। फल सस्ती। दक्षिणशृंग महँगीकारक। श्रीरामकृष्णपरहंस जयन्ती। यायीजययोग
मेषराशि सा. ६।५३। मु. जमादिउस्सानी ६ हिजरी सन् १४३७। पञ्चक समाप्ति सा. ६।५३। स्थायीजययोग
भ. दि. ११।३४ से रा. १०।२२ तक। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। मृत्युबाणारम्भ दि. १।३०। यायीजययोग
वृषराशि रा. ९।१६। मृत्युबाण समाप्ति दि. १।३२। यायीजययोग दि. ३।३७ तक। रवियोग दि. ३।३७ से।
गोरुपिणीषष्ठी (बंगाल)। ⊙सं. मीनराशि का सूर्य दि. १।३३। मु. ३० समा। फल समता। बाद का ६ घण्टा २४ मिनट❖
भ. दि. ४।२ से रा. ३।१६ तक। मिथुनराशि रा. १२।३०। कामदा सप्तमी ७ व्रत। होलाष्टक आरम्भ। व्यास,
बुधाष्टमी ८ पर्व। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १२।३ तक। रवियोग दि. १२।३ से। रा. ३।१० से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ८।३३ से।
कर्कराशि रा.शे. ५।२३। ⊙उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य रा. ९।४५। यायीजययोग दि. ११।२८ से दि. १।१७ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ११।२८ से। रवियोग
भ. रा. १२।२४ से। फगुदशमी (उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ११।२१ तक। रवियोग समस्त। दि. ११।२८ तक। पुनः रवियोग रा. ९।४५ से।
भ. दि. १२।१४ तक। आमलकी ११ एकादशी व्रत सबका। रंगभरी एकादशी। श्रीकाशीविश्वनाथ शृंगार दिन। यायीजययोग दि. ११।४२ से दि. १२।१४ तक।
सिंहराशि दि. १२।३२। प्रदोष १२ व्रत। ⊙सायन मेषराशि का सूर्य दि. १२।२४। यायीजययोग दि. १२।२७ से दि. १२।३२ तक। यमघंटयोग दि. १२।३२ से।
राष्ट्रीयचैत्रमास दि. ३१। शक १९३८ प्रारम्भ। राष्ट्रीय नववर्ष दिन। रवियोग दि. १।५५ से। रवियोग दि. ११।४२ तक।
भ. दि. २।२९ से रा. ३।१९ तक। कन्याराशि रा. १०।१८। व्रत की १५ पूर्णिमा। भद्रा (रात्रि ३।१९) के बाद होलिकादाह। चौमासी चौदस (जैन)। स्थायीजययोग ◆
स्नान-दान की १५ पूर्णिमा। काशी में होली। श्रीचैतन्यमहाप्रभुजयन्ती। दोलयात्रा १५। मन्वादि १५। काशी में सायं चतुःषष्ठी यात्रा। सर्वार्थसिद्धियोग

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श ।।

ति.२ गुरु को उ.भा. में सूर्यभोग्य है। रा. ८।३३ के बाद रेवती में राहुवेध है।
ति.३ शुक्र को रेवती में पूर्वदोष है। इसके बाद मीनसंक्रान्ति दोष के कारण विवाहमुहूर्त्त नहीं है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				वक्रीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
२	गु	७	३	३८	५४	१०	१५	२२	११	४	२७	४९	१५	१०	३	२४	०	७	२०	२७	३०	४	२७	४६	३
३	शु	७	४	२	५२	१०	१७	११	२७	४	२७	४१	२३	१०	४	३८	२८	७	२०	२९	१५	४	२७	४२	५२
४	श	७	४	२८	३५	१०	१९	२	५८	४	२७	३३	३२	१०	५	५२	५०	७	२०	३१	०	४	२७	३९	४१
५	र	७	४	५५	३०	१०	२०	५४	३०	४	२७	२५	४०	१०	७	७	२	७	२०	३२	४६	४	२७	३६	३१
६	चं	७	५	२२	२५	१०	२२	४६	१	४	२७	१७	४८	१०	८	२१	१४	७	२०	३४	३१	४	२७	३३	२०
७	मं	७	५	४९	२०	१०	२४	३७	३२	४	२७	९	५७	१०	९	३५	२६	७	२०	३६	२१	४	२७	३०	९
८	बु	७	६	१२	७	१०	२६	२९	१७	४	२७	२	५	१०	१०	४९	३८	७	२०	३८	२०	४	२७	२६	५८
९	गु	७	६	२३	३८	१०	२८	२२	५८	४	२६	५४	१४	१०	१२	३	५०	७	२०	३९	०	४	२७	२३	४७
१०	शु	७	६	३५	९	११	०	१६	३९	४	२६	४६	२२	१०	१३	१८	२	७	२०	३९	१	४	२७	२०	३७
११	श	७	६	४६	४०	११	२	१०	१९	४	२६	३८	३०	१०	१४	३२	१४	७	२०	३९	२९	४	२७	१७	२६
१२	र	७	६	५८	१०	११	४	३	५९	४	२६	३०	३९	१०	१५	४६	२६	७	२०	३९	४९	४	२७	१४	१५
१३	चं	७	७	९	४१	११	५	५७	५	४	२६	२२	४७	१०	१७	०	३८	७	२०	४०	९	४	२७	११	४
१४	मं	७	७	२१	१२	११	७	४९	२९	४	२६	१४	५५	१०	१८	१४	५०	७	२०	४०	३०	४	२७	७	५३
१५	बु	७	७	३२	४३	११	९	४१	५२	४	२६	७	४	१०	१९	२९	२	७	२०	४०	५०	४	२७	४	४३

ग्रहचार- मंगल- अनुराधा में।। बुध- ति. ४ शनि को पूर्वाभाद्रपद में सा. ६।२२। ति. ९ गुरु को मीनराशि में रा. २।३१। ति. ११ शनि को उत्तराभाद्रपद में रा. ८।४४।। वक्रीगुरु- ति. १० शुक्र को पूर्वाफाल्गुनी ४ चरण में रा. १।२८।। शुक्र- ति. ४ शनि को शतभिष में रा. ९।२१। ति. १५ बुध को पूर्वाभाद्रपद में दि. ३।५९।। शनि- ज्येष्ठा २ चरण में।। राहु- उ.फा. १ चरण में तथा केतु पू.भा. ३ चरण में।।

४९पं० फाल्गुनशुक्ल ८ बुध

अहर्गण ४२८

अयनांश २४।४।१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	७	१०	४	१०	७	४	१०
१	३	६	२६	२७	१०	२०	२७	२७
४१	१२	१२	२९	२	४९	३८	२६	२६
५	४०	७	१७	५	३८	१०	५८	५८
५९	८३०	११	११३	७	७४	०	३	३
४७	१३	३१	४१	५१	१	२५	०	११
				व.				



विविधमुहूर्त्त- ति. २ गुरु को उ.भा. में सूर्यभोग्य है। रेवती में राहुवेध है। ति. ३ शुक्र को रेवती में पूर्वदोष है। सा. ६।५३ से रा. १२।४६ तक अश्विनी में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण वाटिकारोपण पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा औषधसेवन जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ७) वधूप्रवेश-द्विरागमन (ल. ७) ईंट का भट्ठा लगाना विपणि व्यापार वस्तुक्रय मुहूर्त्त है। ति. ४ शनि को अश्विनी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ रवि को भरणी में वैधृतिदोष है। ति. ६ सोम को कृत्तिका में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. २।१० के बाद रोहिणी में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गर्भाधान (सप्तमी में) दँवरी शिल्पविद्या विपणि व्यापार मुहूर्त्त है। ति. ७ मंगल को रोहिणी में पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषणनिर्माण ऑपरेशन मुहूर्त्त है। दि. १२।५६ के बाद भद्रा से पूर्व मृगशिरा में पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ८ बुध को मृगशिरा में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ गुरु को रिक्ता के बाद पुनर्वसु में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम तथा कर्क के चन्द्रमा में पश्चिम-उत्तर दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. १० शुक्र को पुनर्वसु में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन (दसमी में) नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को ☛

तिथि ल.अ.	२ गु घं.	मि.	३ शु घं.	मि.	४ श घं.	मि.	५ र घं.	मि.	६ चं घं.	मि.	तिथि ल.अ.	७ मं घं.	मि.	८ बु घं.	मि.	९ गु घं.	मि.	१० शु घं.	मि.	११ श घं.	मि.	१२ र घं.	मि.	१३ चं घं.	मि.	१४ मं घं.	मि.	१५ बु घं.	मि.
कुम्भ	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	५	मीन	७	२९	७	२५	७	२१	७	१८	७	१५	७	११	७	७	७	४	७	०
मीन	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३३	मेष	९	६	९	२	८	५८	८	५५	८	५२	८	४८	८	४४	८	४१	८	३७
मेष	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	१०	वृष	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५१	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३७	१०	३३
वृष	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	६	मिथुन	१	१६	१	१२	१	८	१	५	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५१	१२	४७
मिथुन	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	२०	कर्क	३	३४	३	३०	३	२६	३	२३	३	२०	३	१६	३	१२	३	९	३	५
कर्क	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३८	सिंह	५	४८	५	४४	५	४०	५	३७	५	३४	५	३०	५	२६	५	२३	५	१९
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
सिंह	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५२	कन्या	८	१	७	५७	७	५३	७	५०	७	४७	७	४३	७	३९	७	३६	७	३२
कन्या	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	५	तुला	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	६	१०	३	९	५९	९	५५	९	५२	९	४८
तुला	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१	वृश्चिक	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२३	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	९	१२	५
वृश्चिक	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३८	धनु	२	४०	२	३६	२	३२	२	२९	२	२६	२	२२	२	१८	२	१५	२	११
धनु	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४४	मकर	४	२७	४	२३	४	१९	४	१६	४	१३	४	९	४	५	४	२	३	५८
मकर	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३१	कुम्भ	५	५८	५	५४	५	५०	५	४७	५	४४	५	४०	५	३६	५	३३	५	२९

५० पं० फाल्गुनशुक्ल १५ बुध

अहर्गण ४३५

अयनांश २४।४।२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	७	११	४	१०	७	४	१०
८	३	७	९	२६	११	२०	२७	२७
३८	५४	३२	४१	७	२९	४०	४	४
५३	४०	४३	५२	४	२	५०	४३	४३
५९	७३	२१	११२	७	७४	०	३	३
३२	५	३१	२३	५२	१२	२०	११	११
				व.				



○रा. १२।४६ से। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। अमृतसिद्धियोग सा. ६।५३ तक। रवियोग सा. ६।५३ से। रा. १०।२२ से। रवियोग सा. ५।१३ तक। ❖पुण्यकाल। गो-अन्नदान। गोदावरी में स्नान। खरमासारम्भ। वसन्तऋतु प्रारम्भ। यायीजययोग सा. ५।५७ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. २।१० से। रवियोग दि. २।१० तक। □ रावी और त्रिपुष्कर क्षेत्र में होलाष्टक का दोष होता है, अन्य स्थानों में इसका दोष नहीं लगता है। सौरचैत्रमासारम्भ। स्थायीजययोग दि. ४।२ से। द्विपुष्करयोग दि. १२।५६ से दि. ४।२ तक। ◆दि. २।२९ तक। रवियोग दि. ३।४४ तक। सा. ५।५७ से।

मूलविचार- रेवती/अश्विनी- ति. २ गुरु को रा. ८।३३ से। ति. ४ शनि से सा. ५।१३ तक। श्लेषा/मघा- ति. ११ शनि को दि. ११।४२ से। ति. १३ सोम को दि. १।५५ तक।
पञ्चक विचार- ति. ३ शुक्र को सा. ६।५३ तक।

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा में होलिकादाह- पूजाविधि- देश काल एवं नाम-गोत्र उच्चारण पूर्वक "मम सकुटुम्बस्य ढुण्ढा राक्षसीपीडापरिहारार्थंहोलिकापूजनमहं करिष्ये"।। से संकल्प करें। ध्यान- असृक्पाभयसंत्रस्तैः कृत्वा त्वं होलिबालिशैः। तस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदाभव।। इससे ध्यान कर "होलिकायै नमः" से यथा विधि पूजन करें। दीपमन्त्र- दीपयाम्यद्यतेघोरे चिति राक्षसि सप्तमे। हिताय सर्वजगता प्रीतये पार्वतीपतेः।। इत्यादि से पूजन कर "अनेनार्चनेन होलिकाधिष्ठातृदेवता प्रीयतां न मम" से समर्पित करें। तथा प्रज्वलित होलिका का तीन बार परिक्रमा करें। द्वितीय दिन होलिकाभस्मधारण मन्त्र- वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शङ्करेण च। अतस्त्वं पाहि नो देवि विभूतिर्भूतिदा भव।। होलिका में वायु परीक्षण- होलिका दहन काल में पूर्वादि दिशाओं के वायुचलन से क्रमशः राजा एवं प्रजा को सुख, अग्निभय, दुर्भिक्ष, दुर्भिक्ष, महावृष्टि, वायुवृद्धि, सुभिक्ष तथा प्रजासुख होता है।

☛ छोड़कर नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री उत्तर दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। पुष्य में शनिवेध तथा भद्रादोष है। ति. ११ शनि को पुष्य में पूर्वदोष है। ति. १२ रवि को श्लेषा में भौमेवेध है। दि. १२।३२ के बाद मघा में शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १३ सोम को मघा में दि. १।१५ तक दँवरी फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १४ मंगल को पू.फा. में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १५ बुध को उ.फा. में राहुयुति है। हस्त में सूर्यवेध है।

श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ उत्तरायण दक्षिणगोल वसन्तऋतु।। चैत्रकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ४ चैत्र से १८ [illegible] १९३८।।
अंग्रेजी दिनांक २४ मार्च से ७ अप्रैल [illegible] २०१६ ई.।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे.अं. +	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.	
३०	१४	१	गु	३०	१७	सा	६	४	हस्त	३६	९	रा	८	२५	वृद्धि	४	३३	दि	७	४६	कौ	३०	१७	तै	६०	०	राक्षस	२४	१	१०	११	४			५	५७	६	३	११	९	३८	२५	१	२३	+	४	६	५८	काशी से अन्यत्र होली-वसन्तोत्सव। साभ्यंगस्नान। श्वपचस्पर्शहोलिकाविभूतिधारण। सायं चूतकुसुमप्राशन। रतिकाम महोत्सव। यायीजययोग सा. ६।४ तक।
३०	१७	२	शु	३५	३४	रा	८	११	चित्रा	४२	४४	रा	११	३	ध्रुव	५	५७	दि	८	२०	तै	२	५६	गर	३५	३४	मुसल	२५	२	११	१२	५	तुला	९।२७	५	५७	६	३	११	१०	३७	५५	१	४७	+	४	७	४९	तुलाराशि दि. ९।४४। ●वृद्धाङ्गारकपर्व (बुढ़वा मंगल)। दिन ७।३१ तक वारुणीपर्वयोग। स्थायीजययोग रा. ९।२४ से।
३०	२०	३	श	४०	४८	रा	१०	१५	स्वाती	४९	१४	रा	१	३८	व्याघात	७	२८	दि	८	५५	व	८	११	भ	४०	४८	सिद्धि	२६	३	१२	१३	६			५	५६	६	४	११	११	३७	२३	२	१०	+	४	८	३८	भ. दि. ९।१२ से रा. १०।१५ तक। छत्रपतिशिवाजी जयन्ती (प्राचीनतम)। कल्पादि ३। यायीजययोग रा. १०।१५ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।३८ तक।
३०	२४	४	र	४५	३३	रा	१२	८	विशाखा	५५	११	रा	३	५९	हर्षण	८	४६	दि	९	२५	बव	१३	११	वा	४५	३३	उत्पात	२७	४	१३	१४	७	वृश्चिक	३८।४२	५	५५	६	५	११	१२	३६	४८	२	३४	+	४	९	२९	वृश्चिकराशि रा. ९।२४। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ९।२९। यायीजययोग रा. ३।५९ से।
३०	२८	५	चं	४९	३२	रा	१	४३	अनुराधा	६०	०	स	म	स्त	वज्र	९	३७	दि	९	४५	कौ	१७	३३	तै	४९	३२	मानस	२८	५	१४	१५	८			५	५४	६	६	११	१३	३६	११	२	५७	+	४	१०	२०	रंगपञ्चमी ५। विजयगोविन्द हलंकर दिवस (मणिपुर)। यायीजययोग रा. १।४३ तक। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त।
३०	३१	६	मं	५२	२०	रा	२	५०	अनुराधा	०	२३	प्रा	६	३	सिद्धि	९	४६	दि	९	४८	गर	२०	५६	व	५२	२०	वज्र	२९	६	१५	१६	९			५	५४	६	६	११	१४	३५	३१	३	२२	+	३	११	११	भ. रा. २।५० से। रवियोग प्रा. ६।३ से।
३०	३५	७	बु	५४	३	रा	३	३०	ज्येष्ठा	४	२७	दि	७	४०	व्यतिपात	९	१	दि	९	२९	भ	२३	१२	बव	५४	३	ध्वांक्ष	३०	७	१६	१७	१०	धनु	४।२७	५	५३	६	७	११	१५	३४	४९	३	४५	+	३	१२	२	भ. दि. ३।१० तक। धनुराशि दि. ७।४०। यमघंटयोग दि. ७।४० से। रवियोग दि. ७।४० तक।
३०	३९	८	गु	५४	२६	रा	३	३८	मूल	७	२१	दि	८	४८	वरीयान	७	२०	दि	८	४८	वा	२४	१५	कौ	५४	२६	धूम्र	३१	८	१७	१८	११			५	५२	६	८	११	१६	३४	५	४	१०	+	२	१२	५२	श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत। आज वासी भोजन शास्त्र विहित है। ⊙ रेवती नक्षत्र का सूर्य दि. ८।१६।
३०	४३	९	शु	५३	३०	रा	३	१५	पू.षा.	९	१	दि	९	२७	परिघ	४	३८	दि	७	४२	तै	२३	५८	गर	५३	३०	प्रवर्धमान	१	९	१८	१९	१२	मकर	२४।७	५	५१	६	९	११	१७	३३	१९	४	३३	+	२	१	४१	मकरराशि दि. ३।३०। अप्रैल ४।
३०	४७	१०	श	५१	१९	रा	२	२३	उ.षा.	९	२५	दि	९	३७	शिव	०/५५	५६/२१	प्रा	६/४	१३/२२	व	२२	२५	भ	५१	१९	राक्षस	२	१०	१९	२०	१३			५	५१	६	९	११	१८	३२	३१	४	५४	+	२	२	२८	भ. दि. २।४९ से रा. २।२३ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ९।३७ से।
३०	५०	११	र	४८	५	रा	१	४	श्रवण	८	४०	दि	९	१८	साध्य	५०	४८	रा	२	९	बव	१९	४२	वा	४८	५	गद	३	११	२०	२१	१४	कुम्भ	३७।४७	५	५०	६	१०	११	१९	३१	३९	५	१७	+	१	३	१६	कुम्भराशि रा. ८।५७। पापमोचनी ११ एकादशी व्रत सबका। पञ्चक प्रारम्भ रा. ८।५७। यायीजययोग◐
३०	५४	१२	चं	४३	५७	रा	११	२४	धनिष्ठा	६	५४	दि	८	३५	शुभ	४४	३८	रा	११	४०	कौ	१६	१	तै	४३	५७	शुभ	४	१२	२१	२२	१५			५	४९	६	११	११	२०	३०	४६	५	४०	+	१	४	२	◐दि. ९।१८ से रा. १।४ तक। द्विपुष्करयोग रा. १।४ से।
३०	५८	१३	मं	३९	१	रा	९	२४	शतभिष	४	१८	दि	७	३१	शुक्ल	३७	५१	रा	८	५६	गर	११	२९	व	३९	१	मृत्यु	५	१३	२२	२३	१६	मीन	४६।५०	५	४८	६	१२	११	२१	२९	५०	६	२	+	१	४	४७	भ. रा. ९।२४ से। मीनराशि रा. १२।३२। भौमप्रदोष १३ व्रत। ऋण मुक्ति के लिए। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः"।●
३१	२	१४	बु	३३	३२	रा	७	१३	पू.भा.	२/५६	१/१३	प्रा	६/४	१२/४२	ब्रह्म	३०	३५	सा	६	२	भ	६	१७	श	३३	३२	पद्म	६	१४	२३	२४	१७			५	४८	६	१२	११	२२	२८	५३	६	२५	+	१	५	३४	भ. दि. ८।१९ तक। ○रा. ३।३। यायीजययोग दि. ४।५१ से रा. ३।३ तक। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त।
३१	६	३०	गु	२७	४१	दि	४	५१	रेवती	५३	१०	रा	३	३	ऐन्द्र	२२	५९	दि	२	५९	च	०	३७	नाग	२७/५४	४१/४०	मित्र	७	१५	२४	२५	१८	मेष	५३।१०	५	४७	६	१३	११	२३	२७	५२	६	४८	+	०	–	–	मेषराशि रा. ३।३। स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए सुखकारक होती है। पञ्चक समाप्ति○

वारुणी पर्व योग

चैत्रकृष्ण पक्ष की त्रयोदशी यदि शतभिषा नक्षत्र से युक्त प्राप्त हो तो उसमें गंगा स्नान करने से करोड़ों सूर्य ग्रहण स्नान का फल प्राप्त होता है। वही शतभिषा युक्त त्रयोदशी यदि शनिवार से भी युक्त हो तो उसे महावारुणी तथा पुनः शनिवार एवं शुभ योग से युक्त हो तो उसे महामहावारुणी के नाम से जाना जाता है। इस पर्व में गङ्गा स्नान तीन करोड़ कुलों का उद्धार करने वाला होता है। चैत्रकृष्ण चतुर्दशी को जो मनुष्य शिव सानिध्य में गङ्गा स्नान करता है उसे कभी भी प्रेतयोनि नहीं प्राप्त होती है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	भौम				बुध				वक्रीगुरु				शुक्र				मार्गीशनि				राहु			
१	गु	७	७	४४	१४	११	११	३४	२५	४	२५	५९	१२	१०	२०	४३	१४	७	२०	४१	१०	४	२७	१	३२
२	शु	७	७	५५	४५	११	१३	२६	३५	४	२५	५१	२१	१०	२१	५७	२६	७	२०	४१	३०	४	२६	५८	२१
३	श	७	८	७	१६	११	१५	१५	२६	४	२५	४३	२९	१०	२३	११	३८	७	२०	४१	५०	४	२६	५५	१०
४	र	७	८	१८	४७	११	१७	३	९	४	२५	३५	३६	१०	२४	२५	५०	७	२०	४२	११	४	२६	५१	५९
५	चं	७	८	३०	१८	११	१८	५१	४४	४	२५	२७	३८	१०	२५	४०	२	७	२०	४२	३१	४	२६	४८	४९
६	मं	७	८	४१	४८	११	२०	४०	१९	४	२५	१९	४०	१०	२६	५४	१४	७	२०	४२	५१	४	२६	४५	३८
७	बु	७	८	५३	१९	११	२२	२८	५०	४	२५	११	४२	१०	२८	८	२६	७	२०	४३	१०	४	२६	४२	२७
८	गु	७	९	४	५०	११	२४	१३	४४	४	२५	४	९	१०	२९	२२	३८	७	२०	४३	३४	४	२६	३९	१६
९	शु	७	९	१६	२१	११	२५	५८	२५	४	२४	५९	२१	११	०	३६	५०	व	२०	४३	५१	४	२६	३६	५
१०	श	७	९	२७	५२	११	२७	४३	५	४	२४	५३	३३	११	१	५१	२	७	२०	४२	५८	४	२६	३२	५५
११	र	७	९	३९	२३	११	२९	२७	४६	४	२४	४७	४५	११	३	५	१४	७	२०	४१	५१	४	२६	२९	४४
१२	चं	७	९	५०	५४	०	१	१०	५८	४	२४	४१	५६	११	४	१९	२६	७	२०	४०	४५	४	२६	२६	३३
१३	मं	७	१०	२	२५	०	२	४९	८	४	२४	३६	८	११	५	३३	३८	७	२०	३९	३९	४	२६	२३	२२
१४	बु	७	१०	१३	५५	०	४	२७	१८	४	२४	३०	२०	११	६	४७	५०	७	२०	३८	३२	४	२६	२०	११
३०	गु	७	१०	२५	२६	०	६	५	२९	४	२४	२४	३२	११	८	२	२	७	२०	३७	२६	४	२६	१७	१

ग्रहचार- मंगल- अनुराधा में।। बुध- ति. ३ शनि को रेवती में रा. १२।४६। ति. ११ रवि को अश्विनी तथा मेषराशि में दि. १।२०।। वक्रीगुरु- पूर्वाफाल्गुनी ४ चरण में।। शुक्र- ति. ८ गुरु को मीनराशि में सा. ५।५७। ति. ११ रवि को उत्तराभाद्रपद में दि. १०।३६।। मार्गीशनि- ज्येष्ठा २ चरण में। ति. ९ शुक्र को वक्री दि. १२।५०।। राहु- ति. ७ बुध को पू.फा. ४ चरण में तथा केतु पू.भा. २ चरण में रा. १२।२१।।

५१ पं० चैत्रकृष्ण ८ गुरु

अहर्गण ४४३

अयनांश २४।४।३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	८	७	११	४	१०	७	४	१०
१६	११	९	२४	२५	२९	२०	२६	२६
३४	४६	४	१३	५	२२	४३	३९	३९
५	२७	५०	४४	९	३८	३४	१६	१६
५९	७६३	११	१०४	५	७४	०	३	३
१४	७	३१	४१	४८	१२	२५	११	११
				व.		मा.		



विविधमुहूर्त्त- ति. १ गुरु को हस्त में सूर्यवेध है। ति. २ शुक्र को चित्रा में केतुवेध है। ति. ३ शनि को स्वाती में भद्रा पूर्व कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ४ रवि को विशाखा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ सोम को अनुराधा में भौमयुति है। ति. ६ मंगल को अनुराधा में पूर्वदोष है। ज्येष्ठा में शनियुति है। ति. ७ बुध को ज्येष्ठा में शनियुति, भद्रा तथा व्यतिपातदोष है। भद्रा बाद मूल में दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ गुरु को मूल में शिशुताम्बूलभक्षण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. ८।४८ के बाद पू.षा. में दोलारोहण वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है । ति. ९ शुक्र को पू.षा. में रिक्तादोष है। ति. १० शनि को उ.षा. में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रनीलमादिरत्नधारण मुहूर्त्त है। दि. ९।३७ के बाद भद्रा से पूर्व श्रवण में दक्षिण दिशा की यात्रा वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ११ रवि को श्रवण में पुंसवनसीमन्त नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग आभूषण निर्माण मकर के चन्द्रमा में पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा औषधसेवन नावनिर्माण वस्तुक्रय ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। दि. ९।१८ के बाद घनिष्ठा में नवीनवस्त्रसुवर्णरत्नधारण पशुओं की खरीद-बिक्री वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १२ सोम को घनिष्ठा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण पशुओं की खरीद-बिक्री औषधसेवन का मुहूर्त्त है। दि. ८।३५ के बाद शतभिष में गर्भाधान वाटिकारोपण शिल्पविद्या वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

तिथि ल.अ.	१ गु घं.	मि.	२ शु घं.	मि.	३ श घं.	मि.	४ र घं.	मि.	५ चं घं.	मि.	६ मं घं.	मि.	७ बु घं.	मि.	८ गु घं.	मि.	९ शु घं.	मि.	१० श घं.	मि.	११ र घं.	मि.	१२ चं घं.	मि.	१३ मं घं.	मि.	१४ बु घं.	मि.	३० गु घं.	मि.
मीन	६	५६	६	५३	६	४९	६	४५	६	४२	६	३८	६	३४	६	३१	६	२७	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	५
मेष	८	३३	८	३०	८	२६	८	२२	८	१९	८	१५	८	११	८	८	८	४	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४२
वृष	१०	२९	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	४	१०	०	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३८
मिथुन	१२	४३	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१८	१२	१४	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५२
कर्क	३	१	२	५८	२	५४	२	५०	२	४७	२	४३	२	३९	२	३६	२	३२	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	१०
सिंह	५	१५	५	१२	५	८	५	४	५	१	४	५७	४	५३	४	५०	४	४६	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२४
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	७	२८	७	२५	७	२१	७	१७	७	१४	७	१०	७	६	७	३	६	५९	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३७
तुला	९	४४	९	४१	९	३७	९	३३	९	३०	९	२६	९	२२	९	१९	९	१५	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५३
वृश्चिक	१२	१	११	५८	११	५४	११	५०	११	४७	११	४३	११	३९	११	३६	११	३२	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	१०
धनु	२	७	२	४	२	०	१	५६	१	५३	१	४९	१	४५	१	४२	१	३८	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१६
मकर	३	५४	३	५१	३	४७	३	४३	३	४०	३	३६	३	३२	३	२९	३	२५	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	३
कुम्भ	५	२५	५	२२	५	१८	५	१४	५	११	५	७	५	३	५	०	४	५६	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३४

५२ पं० चैत्रकृष्ण ३०गुरु

अहर्गण ४५०

अयनांश २४।४।४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	११	७	०	४	११	७	४	१०
२३	१७	१०	६	२४	८	२०	२६	२६
२७	१९	२५	५	२४	२	३७	१७	१७
५२	३३	२६	२९	३२	२	२६	१	१
५८	८५८	११	९९	५	७४	१	३	३
५७	१०	३१	१७	४८	८	६	११	११
				व.		व.		



मूलविचार-ज्येष्ठा/मूल-ति.६ मंगल को प्रा. ६।३ से। ति.८ गुरु को दि.८।४८ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. १४ बुध को रा. ४।४२ से।
पञ्चक विचार- ति. ११ रवि को रा. ८।५७ से। ति. ३० गुरु को रा. ३।३ तक।

मूलादि गण्डान्त नक्षत्रों के फल तथा शान्ति आदि का निर्णय- अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, अश्लेषा, मघा तथा रेवती ये गण्डान्त नक्षत्र हैं, अतः इनमें उत्पन्न जातकों का गोमुख प्रसव पूर्वक शान्ति करें। मूलोत्पन्न जातकों के विशेष फल- मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न जातक पिता, द्वितीय में माता, तृतीय में उत्पन्न जातक धन नाशक तथा चतुर्थ चरण में उत्पन्न जातक शुभ दायक होता है। मूल नक्षत्र के समान ही चरणों के विपरीत क्रम से अश्लेषा नक्षत्र जनित फल होता है। अभुक्तमूल प्रमाण- (वसिष्ठ)- ज्येष्ठा के अन्त की एक तथा मूल के आदि की दो घटी, अभुक्त मूल होता है, अतः इसमें उत्पन्न बालकों का त्याग कर देना चाहिए। (मनु) ज्येष्ठा के अन्त की आधी तथा मूल के आदि की आधी घटी अभुक्त मूल होता है। विशेष- मूल जनित शुभाशुभ फल के ज्ञान के लिए मूल रूपी वृक्ष की कल्पना की गयी है जिसे ७,८,१०,११,१२,५,४ एवं ३ घटीयों में ऊर्ध्वोर्ध्व क्रम से वृक्ष के मूल, स्तम्भ, त्वचा, शाखा, पत्र, पुष्प, फल एवं शिखा की कल्पना कर फल का निर्धारण किया गया है। फल- मूल रूपी वृक्ष के मूल घटी में जन्म से मूल विनाश, स्तम्भ घटी में जन्म से हानि एवं धनक्षय, त्वचा में भ्रातृ विनाश, शाखा में मातृ विनाश, पत्र में परिवार विनाश, पुष्प में राजप्रिय, फल में राज्य की सफलता तथा शिखा भाग में जन्म से अल्पायु की प्राप्ति होती है। मूल एवं अश्लेषा में उत्पन्न जातकों के शान्ति हेतु काल निर्णय- जन्म के बारहवें दिन, या पुनः जन्मनक्षत्र की प्राप्ति होने पर अथवा किसी के मत से अन्य किसी भी शुभ दिन गण्डान्त नक्षत्र जनन शान्ति करनी चाहिए। धर्मसिन्धुकार के अनुसार- बारहवें दिन या शान्ति युक्त नक्षत्रों में गण्डान्त शान्ति करने पर हवन के लिये वह्नि चक्र आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु उसके बाद होती है। अन्य शान्ति कर्मों में भी ऐसे ही जानना चाहिए। अन्य में विशेषकर संस्कारों तथा नित्य कर्मों के विहित नक्षत्रों में तथा रोगातुर होने पर शान्ति कर्म में वह्निचक्र आदि न देखें। अग्नि चक्र विलोकन काल- अग्नि स्थापन एवं पूर्णाहुति के समय "आहुतिर्वह्निवासश्च विलोक्याः शान्ति कर्मणि" के अनुसार शान्ति कार्य में अग्नि वास तथा अग्नि चक्र दोनों देखना चाहिए।।इति।।

जन्मांग चक्र द्वारा चरादि राशिवश दीर्घ, मध्य एवं अल्पायु बोधक चक्र

होरा लग्न साधन- इष्टकाल (घटी) को द्विगुणित कर पाँच से भाग दें, शेष को पल बनाकर पुनः दश से भाग देकर लब्धि को सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होता है।

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चरराशि १ में लग्नेश चरराशि १ में अष्टमेश	चरराशि में १ लग्नेश स्थिरराशि में २ अष्टमेश	चरराशि में १ लग्नेश द्विस्वभाव में ३ अष्टमेश
स्थिरराशि में २ लग्नेश द्विस्वभाव में ३ अष्टमेश	स्थिरराशि में २ लग्नेश चरराशि में २ अष्टमेश	स्थिरराशि में १ लग्नेश स्थिरराशि में १अष्टमेश
द्विस्वभाव में ३ लग्नेश स्थिरराशि में २ अष्टमेश	द्विस्वभाव में ३ लग्नेश द्विस्वभाव में ३ अष्टमेश	द्विस्वभाव में ३ लग्नेश चरराशि में १ अष्टमेश

रोग ज्ञानार्थ त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पुनवसु	पुष्य
पू.फा.	मघा	श्लेषा
उ.फा.	हस्त	चित्रा
अनुरा.	विशाखा	स्वाती
ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.
धनिष्ठा	श्रवण	उ.षा.
शतभिष	पू.भा.	उ.भा.
भरणी	अश्विनी	रेवती
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चक्र द्वारा आयु निर्णय- जन्म लग्नेश एवं अष्टमेश, शनि एवं चन्द्र तथा लग्न एवं होरा लग्न, इन तीन प्रकार से आयु का निर्णय करें। तीनों अथवा जिन दो प्रकारों में एक रूपता हो उसी आयु का ग्रहण करना चाहिए। साधित तीनों प्रकारों में भिन्नता होने पर होरा लग्न एवं जन्म लग्न द्वारा साधित आयुर्दाय का ही ग्रहण करना चाहिए। अथवा लग्न एवं सप्तम से अन्यत्र चन्द्रमा की स्थिति होने पर लग्न एवं चन्द्रमा द्वारा आयु साधन कर उसका ग्रहण करना चाहिए। शनि द्वारा साधित दीर्घायु में मध्यम आयु, मध्यमायु में अल्पायु एवं अल्पायु में किञ्चिदायु का ग्रहण करना चाहिए। शनि के स्वराशि एवं उच्च में स्थिति से आयु कक्षा का परिवर्तन नहीं होगा। लग्न-सप्तम एवं अष्टम के अधिपतियों में जो बली हो उसके केन्द्र स्थिति से दीर्घायु पणफर से मध्यायु तथा आपोक्लिम में स्थिति से अल्पायु होता है। इसके अतिरिक्त आयु के कारक ग्रहस्थान से सप्तमेश एवं अष्टमेश द्वारा भी आयु का निर्णय किया जाता है।

सारणी का उदाहरण- जन्मकालिक इष्टकाल-८।३।४ जन्मलग्न ९।५।४७।२५, होरालग्न ९।१९।४७।२२, लग्नेश शनि ११।२१।४८।३२, अष्टमेश सूर्य १०।४।८।१२, चन्द्र ७।६।३४।१६, यहाँ लग्नेश एवं अष्टमेश की स्थिति से दीर्घायु है परन्तु यहाँ शनि के दीर्घायु कारक होने से मध्यमायु का ग्रहण होगा। लग्न एवं चन्द्रमा द्वारा मध्यमायु तथा होरालग्न एवं लग्न द्वारा दीर्घायु प्राप्त हो रहा है।

मारक एवंआयु स्थानों का निर्धारण- लग्न से अष्टम एवं तृतीय भाव को आयु स्थान तथा द्वितीय एवं सप्तम को मारक स्थान कहा जाता है। कभी-कभी षष्ठेश, व्ययेश एवं अष्टमेश की दशान्तर्दशाऐं भी मारक हो जाती हैं। परस्पर षष्ठेश एवं अष्टमेश की दशान्तर्दशायें तथा मारक की महादशा में मारक की अन्तर्दशा शुभ नहीं होती है। व्ययेश एवं द्वितीयेश सम्बन्धवश फलदायक होते हैं। लग्नेश की दशा अनिष्ट सम्बन्ध से रहित रहने पर मारक नहीं होती, पाप ग्रहों की दशाएं भी अनिष्टकारक ही होती है।

चरकारक- समस्त स्पष्टग्रहों की राशियों को छोड़कर अंशादि मान से अधिक ग्रह क्रमशः आत्म, अमात्य, भ्रातृ, मातृ, पितृ, पुत्र एवं जाति एवं दारा कारक होते हैं।

तीन प्रकार की आयु- अल्प, मध्य एवं उत्तम भेद से तीन प्रकार की आयु होती है। अल्पायु ३२ से कम, तदनन्तर ६४ वर्ष तक मध्यायु तथा उसके बाद १०० वर्ष तक दीर्घायु एवं सौ वर्ष के बाद उत्तमायु होती है। अल्पादि तीन आयु प्रमाणों के भी क्रमशः अल्प, मध्य तथा दीर्घ मिलकर ९ प्रकार के आयु प्रमाण सिद्ध होते हैं। अल्पायु योग में उत्पन्न जातक का विपत्, मध्यायु में उत्पन्न जातक का प्रत्यरि तथा दीर्घायु योग उत्पन्न जातक का वधतारा के नक्षत्रों में मृत्यु होती है।

जातक पारिजात में वर्णित रीति द्वारा आयुविचार

अष्टमेश यदि पापग्रह से युक्त होकर षष्ठ या द्वादश में स्थित हो अथवा निर्बल लग्नेश से युक्त होकर उक्त स्थानों में स्थित हो तो जातक अल्पायु होता है। यदि शनि से योग रहित कर्मेश, अष्टमेश एवं लग्नेश बलवान हो तो जातक दीर्घायु होता है। इन तीनों में यदि दो अतिव बलवान हो तो मध्यामायु एवं एक बलवान हो तो अल्पायु होता है। पापयुक्त अष्टमेश पापग्रहों की राशि में स्थित होकर ६,१२ में स्थित हो तो अल्पायु तथा शुभग्रहों से दृष्ट होकर अष्टम स्थानगत हों तो दीर्घायु होता है। लग्नेश या अष्टमेश पापग्रहों से युक्त एवं दृष्ट होकर अष्टमस्थ हों या अस्त अथवा शत्रुगृह गत हों तो अल्पायु होता है। लग्नेश या अष्टमेश अपनी उच्चराशि में शुभग्रहों से युक्त होकर केन्द्र, त्रिकोण अथवा क्रमशः लग्न एवं अष्टम में स्थित हों तो दीर्घायु, बलवान द्वादशेश स्वगृही हो अथवा लग्नेश एवं अष्टमेश बलवान होकर केन्द्रवर्ती हों तो सुखी एवं दीर्घायु होता है। यदि आधान लग्न से अष्टम से दशम में जन्मराशि, शुक्र, बुध एवं गुरु से युक्त एवं दृष्ट हो तो जातक आयुष्मान एवं आरोग्यवान होता है। अष्टमेश यदि लग्नेश के साथ पापग्रहों से युक्त हो तो अल्पायु करता है। लग्नेश के साथ षष्ठेश ६,८ अथवा शत्रुगृही होकर द्वादश, लग्न या अष्टम में स्थित हों तो दीर्घायु होता है। अष्टमेश तथा लग्नेश यदि स्वगृही, स्वनवमांशगत या परगृही, परनवमांशगत हों तो दीर्घायु करते हैं। अष्टमेश नीचराशि में स्थित हो अष्टम में पापग्रह तथा लग्नेश बलहीन हो तो निश्चित ही अल्पायु होता है। लग्नेश, अष्टमेश, कर्मेश एवं शनि यदि केन्द्र, त्रिकोण अथवा लाभ स्थानगत हों अथवा लग्नेश स्वोच्चराशिगत एवं चन्द्रमा लाभस्थानगत या गुरु अष्टमस्थ हों तो जातक दीर्घायु होता है।

।। जैमिनी सूत्र द्वारा आयु साधन में अंशफल ज्ञानार्थ सारिणी ।।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	८	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

।। जैमिनी सूत्रोक्त आयु साधन में कला फल ज्ञानार्थ सारिणी ।।

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	२	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२०
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	४

।। जैमिनी सूत्रोक्त आयु साधन में विकला फल ज्ञानार्थ सारिणी ।।

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	६
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	४८	३६	१
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

।। प्रत्येक ग्रहों के रेखाष्टक ज्ञान के लिए सारणी ।।

सूर्य के अष्टक वर्गाङ्क ४८

सु.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चन्द्रमा के अष्टक वर्गाङ्क ४९

चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९		१०	
११	१०	८	११	१०		११	
	११	१०	१२	११			
		११					

मंगल के अष्टक वर्गाङ्क ३९

मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०		१०
८				९	११		११
१०				१०			
११				११			

बुध के अष्टक वर्गाङ्क ५४

बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९		५	८	१२	१०	८	८
१०		८	९		११	९	१०
११		९	१०			१०	११
१२		११	११			११	

गुरु के अष्टक वर्गाङ्क ५६

वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	५	२	५	२	२	२
३	६	६	३	७	४	४	४
४	९	१२	४	९	७	५	५
७	१०		७	११	८	६	६
८	११		८		१०	९	७
१०			९		११	१०	९
११			१०			११	१०
			११				११

शुक्र के अष्टक वर्गाङ्क ५२

शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	ल.
१	३	८	१	३	३	५	१
२	४	११	२	५	५	८	२
३	५	१२	३	६	६	९	३
४	८		४	९	९	१०	४
५	९		५	११	११	११	५
८	१०		८	१२			८
९	११		९				९
१०			११				११
११			१२				

शनि के अष्टक वर्गाङ्क ३९

श.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	ल.
३	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७		१०	१०	१२		६
	८		११	११			१०
	१०		१२	१२			११
	११						

लग्न के अष्टक वर्गाङ्क ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	११	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०			
				११			

अष्टक वर्ग राशि गुणक- मे.७, वृ.१०, मि.८, क.४, सिं.१०, कं.५, तु.७, वृ.८, धन.९, मं.५, कु.११, मी.१२। ग्रहगुणक- सू.५, चं.५, मं.८, बु.५, वृ.१०, शु.७, श.५,। रेखाफल- १ क्लेश, २ अर्थहानि, ३ प्रवास-कष्ट, ४ समलाभ, ५ सुख, ६ धनाप्ति, ७ परमानन्द, ८ कार्यसिद्धि।

योगिनीयों की दशा एवं अन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मङ्गला१ आर्द्रा चित्रा श्रवण			पिङ्गला२ पुन. स्वा. धनि.			धान्या ३ पुष्य विशा. शत.			भ्रामरी ४ अश्वि.श्ले.अ. पू.भा.		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	वृ.	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	उ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	उ.	३	१०	सि.	६	०	सि.	९	१०
उ.	१	२०	सि.	४	०	म.	७	०	सं.	१०	२०
सि.	२	०	म.	४	२०	स.	८	०	मं.	१	१०
म.	२	१०	स.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
स.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०

भद्रिका ५ भर.मघा.ज्ये. उ.भा.			उल्का ६ कृत्ति.पू.फा. मू. रेव.			सिद्धा ७ रोहि. उ.फा. पू.षा.			सङ्कटा ८ मृग. हस्त उ.षा.		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ्रा.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
भ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
उ.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
सि.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
सं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
मं.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
पि.	५	०	भ्रा.	८	०	म.	११	२०	उ.	१६	०
धा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

योगिनी दशा साधन- जन्मनक्षत्र की संख्या में तीन जोड़कर आठ से भाग दें। एकादि शेष से मङ्गलादि योगिनीयों की दशाए एक वर्ष के वृद्धि क्रम से होती है। दशा प्रमाण से भयात् को गुणाकर भभोग से भाग दें लब्धि तुल्य योगिनी की भुक्तदशा तथा भुक्त को पूर्ण वर्ष प्रमाण में घटाने से भोग्य दशा होती है।

केवल जन्मलग्न द्वारा आयु सहित अरिष्टवर्ष ज्ञानार्थ चक्र

जन्म लग्न	अरिष्टवर्ष					आयु
१ मेष	४	११	१६	४४	५८	१००
२ वृष	१	२८	३३	४४	६१	९०
३ मिथुन	४	१०	१४	३८	५८	८६
४ कर्क	५	२५	४०	४८	६२	१००
५ सिंह	५	१३	२८	३६	४८	६३
६ कन्या	४	१६	२३	३६	४५	१००
७ तुला	१५	३१	३५	६२	६४	७५
८ वृश्चिक	११	२८	३८	५२	६२	१००
९ धनु	२	१०	१८,३१,३८		४२,६७	८१
१० मकर	५	१३	२७	३६	५७,६२	९५
११ कुम्भ	२	२८	३३	४८	६४	९०
१२ मीन	१	८	१३	३६	४८	८३

कुण्डली के द्वादश भावों से विचारणीय विषय- लग्न (तनु) द्वारा, शरीर, वर्ण, आकृति, लक्षण, यश, स्थान, गुण, सुख-दुःख, प्रकाश, तेज, बल तथा दुर्बलता। धनभाव से- वित्त, नेत्र, सुख, विद्या, वचन, कुटुम्ब और भोजन। तृतीय भाव से- ज्येष्ठ तथा कनिष्ट भ्राता, पराक्रम, साहस, कण्ठस्वर, कान, आभरण, वस्त्र, धैर्य, वीर्यबल, मूल, फल तथा भोजन। चतुर्थ भाव से- विद्या, माता, सुख, सुगन्ध, गौ, बन्धु, मनोगुण, राज्य, यान (सवारी), भूमि तथा गृह का विचार। पंचम भाव से- देवता, राजा, पुत्र, पिता, बुद्धि तथा पुण्य का विचार। षष्ठ भाव से- रोग, शत्रु, व्यसन तथा चोट, घाव आदि का विचार। सप्तम भाव से- सम्पूर्णयात्रा, पुत्र, स्त्री, सुख का विचार तथा जो कुछ पहले पुत्रादि के सुख-असुख के आगमफल कथित हैं उन सबका भी विचार। अष्टम भाव से- आयुर्दाय तथा अनिष्ट के कारणों का विचार। नवम से- भाग्य, प्रभाव गुरु, धर्म, तप और सुख का विचार। दशम से- आज्ञा, मान, भूषण, वस्त्र, व्यापार, निद्रा, कृषि, प्रवज्या, आगम, कर्म, जीवन, यश, विज्ञान तथा विद्या। एकादश से- धन प्राप्ति का विचार। तथा द्वादश भाव द्वारा- दूर की यात्रा, दुर्गति, दान, शयनादि सुख, वैभव तथा धन क्षय का विचार करते हैं।।

।। बृहज्जातक के अनुसार जन्मकालिक लग्न एवं चन्द्रमा पर भौमादि ६, ग्रहों के दृष्टि का फल ।।

ल.द.चं.	द्रु.मं.	द्रु.बु.	द्रु.गु.	द्रु.शु.	द्रु.श.	द्रु.सू.
मेष १	भूप	पण्डित	राजातुल्य	गुणाग्रणि	चौर	दरिद्र
वृष २	निर्धन	चौर	सर्वजनमान्य	पृथ्वीपति	धनवान्	नौकर
मिथुन ३	शस्त्रव्यापार	पार्थिव	पण्डित	निर्भय	तंतुवाय	दरिद्र
कर्क ४	युद्धकुशल	काव्यकर्त्ता	पण्डित	भूमिपति	शास्त्रोपजीवी	नेत्ररोगी
सिंह ५	भूपति	ज्योतिर्ज्ञ	धनवान्	भूपति	नापित	भूमिपति
कन्या ६	स्त्रीवृत्तिक	भूपति	सेनापति	निपुण	स्त्रीवृत्तिक	स्त्रीवृतिक
तुला ७	निकृत	भूपति	सुवर्णकार	वणिक	पक्षिघातक	प्राणिघातक
वृश्चिक ८	भूपति	युग्मजनक	नतःसह	रजक	अंगहीन	दरिद्र
धनु ९	शठ	बन्धुश्रेष्ठ	पृथ्वीश	जनाश्रय	पाखण्डी	दम्भी
मकर १०	भूपति	राजाधिरा.	नरेन्द्र	पण्डित	वित्तवान्	दरिद्र
कुम्भ ११	परस्त्रीरत	भूपति	सम्बकुल्य	परस्त्रीरत	परस्त्रीरत	परस्त्रीरत
मीन १२	पापयुक्त	हास्यदक्ष	अवनीश	पण्डित	पापरत	पापकर्मी

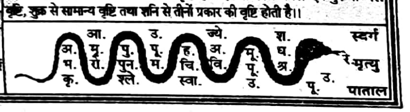
प्रश्न समय द्वारा नष्ट वस्तु के लाभालाभ विचार- प्रश्न लग्न से केन्द्र या उपचय में शुभग्रह स्थित हों तो वित्तलाभ एवं पापग्रह स्थित हों तो हानि होती है। यदि शुभग्रहों में से एक भी लग्नस्थ हो तो लाभ, चन्द्र जिस स्थान में स्थित हो वह यदि अपने स्वामी से दृष्ट हो तो लाभ, लग्नेश के सप्तम एवं सप्तमेश के लग्न में स्थित होने से लाभ, लग्नेश एवं सप्तमेश सप्तम में इत्थशाल कर रहे हों तो राज्यलाभ, दानों यदि लग्नस्थ होकर इत्थशाली हों तो चोर आकर अपहृत धन लौटाता है। सूर्य लग्न एवं चन्द्र सप्तम में हो तो लाभ नहीं, कर्मेश एवं लग्नेश का इत्थशाल होने पर चोर भाग जाते हैं। सपतमेश केन्द्रस्थ हो तो चोर अन्यत्र गया, परन्तु भाग्येश के साथ इत्थशाली हो तो नहीं गया जाने, लग्नेश एवं सप्तमेश के परस्पर तथा लग्न पर दृष्ट्याभाव एवं लग्न के निर्बल होने पर चोर राजा को धन समर्पित कर देता है। सप्तमेश एवं दशमेश के इत्थशाल होने पर राज्य में बन्धन का भय, तथा लग्नेश एवं दशमेश के इत्थशाल से स्वल्प लाभ, लग्न एवं चन्द्रमा के शुभ योग एवं दृष्टि से लाभ तथा धर्मेश एवं अष्टमेश के इत्थशाल में भी लाभ होता है।

दिशा ज्ञान- चन्द्रमा यदि लग्न में हो तो पूर्व, दशम में हों तो दक्षिण, सप्तम में हों तो पश्चिम एवं चतुर्थ में हों तो उत्तर दिशा में चोरी हुआ धन होता है।

सर्वघात चक्र। (रोग, कष्ट, गमन एवं युद्ध में शुभ नहीं होता)

राशि	में	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
सू.घा.	४	८	१२	७	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं.घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं.घा.	५	९	१	६	१०	२	७	१	८	१२	३	४
बु.घा.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
गु.घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु.घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श.घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा.घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के.घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा.घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
ति.घा.	१ ६ ११	५ १० १५	२ ७ १२	२ ७ १२	३ ८ १३	५ १० १५	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५
वा.घा.	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	वृ.	शु.	शु.	मं.	वृ.	शु.
न.घा.	मं.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.
यो.घा.	वि.	शू.	प.	धृ.	ध्रु.	शु.	शु.	ब्र.	वै.	गं.	व्या.	व.
ल.घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
प्र.या.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	वृ.	श.	श.	वृ.
बा.घा.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.
व.घा.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि
सं.घा.	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
सं.घा.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.
सं.घा.	च.	स्थि	द्वि.	च	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.
व.घा.	रक्त	श्वे	हरि	पा.	धूम्र	चि.	कृ.	लक	पी.	कृ.	धू.	श्वे.
स्त्री.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
चं.घा.	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

वर्षा ज्ञानार्थ सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र- अश्विन्यादि नक्षत्रों के द्वारा त्रिनाड़ी सर्प चक्र लिखना चाहिए। इस चक्र में स्वर्ग, पाताल एवं भूमि के नव-नव नक्षत्र होते हैं। फल- समस्त शुभ एवं क्रूर ग्रह यदि एक नाड़ी में स्थित हों तो शीघ्र ही अधिक जल देने वाली वृष्टि होती है। यदि क्रूर ग्रह स्वर्ग तथा शुभ ग्रह पाताल नाड़ी के नक्षत्रों में स्थित हों तो वृष्टिजल समुद्र में चला जाता है। नपुंसक एवं स्त्रीग्रहों के योग से वायु तथा पुरुष एवं स्त्री संयोग हो एवं ग्रह निर्बल हों तो वृष्टि होती है, नपुंसक एवं स्त्री योग से जल तथा क्लीब एवं पुरुष योग से वायु से भय होता है। वातनाड़ी के आदि गत ग्रह नाड़ी से उत्पन्न फल करते हैं। एक भी ग्रह शुभ नाड़ी में स्थित हों तो उस नाड़ी जन्य शुभ फल को देता है। मंगल सभी नाड़ियों में उनके फलों को देता है। बुध, शुक्र, मंगल एवं गुरु यदि एक नाड़ी में स्थित हों तो निश्चित ही उस काल में वृष्टि होती है। लग्नस्थ मंगल एवं गुरु से चल वृष्टि, शुक्र से सामान्य वृष्टि तथा शनि से तीनों प्रकार की वृष्टि होती है।।



।। पुरुष की जन्मकुण्डली में भावस्थ ग्रहों के फल ।।

भाव	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	शूर, निरोगी	वक्ता,रोगी,धनी	सुखी, विक्रमी	दुःखी, व्याकुल	निर्धन, असुत	बलवान,शत्रुजित	स्त्रीजित, खल	नेत्ररोगी,अल्पायु	सुतार्थ,सुखभाक्	सुखशौर्यभाक्	बहुधनवान्	विकलांग,पतित
चन्द्र	सुरूप, अन्ध	कुटुम्बी, धनी	हिंसक,सात्त्विक	समसुखी, सुशील	धनी, पुत्रवान्	अल्पायु,बहुशत्रु	ईर्ष्युस्तीव्रमद	व्याधिग्रस्त, क्षुधी	सौभाग्य,धनी	धर्मार्थे शौर्ययुक्त	प्रसिद्ध, सलाभ	अङ्गहीन, हिंस
भौम	क्रूर, व्रणी	कोपी, कुटिल	विक्रमी, सुधी	दुःखी, पीडित	असुत, दरिद्र	अरिजित, सुखी	दारजित,युद्धप्रिय	अल्पपुत्र, रोगी	पापरत, दुर्मनोरथ	सुखशौर्यवान्	बहुधनी, सुखी	जातिभ्रष्ट, दारहा
बुध	विद्वान् , सुखी	धनी, गुणी	दुर्जन,शत्रुनाशक	पंडित, सुखी	मंत्री, असुत	अशत्रु, विशील	धर्मज्ञ, सुकीर्ति	सद्गुणी, धनी	पुत्रार्थसुखभाक्	सुखी, पराक्रमी	यशस्वी, धनी	अज्ञ, पतित
गुरु	चिरायु, विद्वान्	सुवाक्, धनी	कृपण, पापी	सुखी, धनी	बुद्धिमान्, प्रतापी	अशत्रु, कामी	पिता से श्रेष्ठ	नीच, अनायु	तपस्वी, पुत्रवान्	सधन, सुकृत	सलाभ, पुत्राप्ति	खल, दरिद्र
शुक्र	सकामी, सुखी	धनी, सुवाक्य	पापी, कृपण	सुखी, सुधी	सुखी, बुद्धिमान्	रोगी, अशत्रु	कलहप्रिय	नीच, दीर्घायु	प्रतापी, तपस्वी	सुधनी, मानवान्	सुमति, सलाभ	खल, बंधुनाशक
शनि	निर्धन, रोगी	वक्ता,रोगी,धनी	मति, विक्रमवान्	विसुख, दुःखी	दरिद्र, विपुत्र	शत्रुजित, सुखी	स्त्रीजित, दुःखी	नेत्ररोगी,अल्पपुत्र	सुतार्थ, सुखभाक्	सुखी, पराक्रमी	प्रभूत, धनवान्	दुःखी, पतित
राहु	सुकामी, रोगी	अधर्मी, विरोधी	सुधी, विक्रमी	असुखी,मातृहन्ता	कुमति,दुर्माण	सबल, श्रीयुत	सप्रेमह, अपवित्र	रोगी, गतायु	विकल, दैन्ययुक्त	मानी, सुखी	धनी,अपुत्र,ख्यात	कष्ट, पतित
केतु	अल्पायु, सकाम	खल, धनहानि	शूर, पराक्रमी	मातृहन्ता,दुःखी	असुत, मूर्ख	धनी, सवीर्य	प्रमेहरोगी,स्त्रीहन्ता	क्लेशयुक्त, व्रणी	पापी, दुर्भग	श्रेष्ठ, पितृहानि	सधन	दुर्जन, पतित
गुलिक	रोगार्त, मन्दबुद्धि	क्रोधी, विषयी	विषोदर, सुखी	रोगी, पापकृत	स्वल्पपुत्र,अनायु	रिपुहन्ता,विनोदी	कुदार,कृतघ्न	निर्धन, दुःखार्त्त	पापकृत्, निर्दयी	सुखी, विमानी	सौभाग्यवान,विपुत्र	हीनाङ्ग,नीचरत

।। स्त्रीयों की कुण्डली में भावस्थ ग्रहों के फल ।।

श्री	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	पति ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	विधवा,सक्रोधा	दरिद्रा,दुःखार्त्ता	सुतधनान्विता	दरिद्रा, सुपीड़ा	नष्टात्मजा	सुखधनाढ्या	सर्वसुखविमुक्ता	विधवा,दुःखार्त्ता	धनधर्मान्विता	सुकर्मरता	सुलाभा,बहुपुत्रा	सरोगा,विधवा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधनपुत्रान्वित	सुखार्थयुक्ता	सुभगार्थयुक्ता	सुपुत्रा, सुसखा	सरोगा,विधवा	पतिप्रिया,सुदेहा	रोगर्दिता,कुनेत्रा	सुखपुत्रान्विता	धनधर्मयुक्ता	भव्या,विधिज्ञा	हीनाङ्गी,व्ययढ्या
भौम	विधवा,दुःखार्त्ता	वन्ध्या,सरोगा	भ्रातृहीना	दुःखार्त्ता,विधवा	अपुत्रा,कुसंमता	रोगादिरहिता	विधवा,कुलटा	विधर्मा,रोगार्ता	विधर्मा,दुःखिनी	कुकर्मरता,कुपुत्रा	नृपादर्थलाभा	खला,रुगार्ता
बुध	सौभाग्यवती	धनाढ्या,सती	धनाढ्या,पुत्रवती	सुखगृहान्विता	धीकान्तियुक्ता	गतायुषा,सकोपा	विदुषा,पतिव्रता	कृतघ्ना,प्रीतियुक्ता	सुभोगा,सुधर्मा	सत्कर्मबुद्धियुता	सुलाभा,पतिव्रता	कृशांगी,सुपुत्रा
गुरु	सती, सुभगा	वित्तसौभाग्युता	सहजान्विता	सौख्यार्थयुक्ता	साध्वी, सगुणा	बह्मापदासत्यहन्त्री	सौभाग्यकीर्तियुक्ता	सरोगा,विशीला	कृतज्ञा,पुत्राढ्या	साध्वी,सुभगा	सुपुत्रा,सुरूपा	सरुजा,सुव्यया
शुक्र	सुसुखा,पतिव्रता	सधनामुदान्विता	धनाढ्या,परहंत्री	सतसुखाकीर्तियुक्ता	सुखसुतान्विता	विसुखा,दरिद्रा	पतिप्रियाशास्त्ररत	विसुखा,प्रमत्ता	धर्मपरा,सुभगा	सुकर्मार्थयुक्ता	पुत्रार्थ,लाभयुता	सुव्यया,दुःखार्त्ता
शनि	वन्ध्या, दरिद्रा	निर्धना,दुःखार्त्ता	सुभगा, सुवक्षा	हृद्रोगार्त, वन्ध्या	विपुत्रा,विसुखा	सगुण, सुभगा	विधवा,सरोगा	विधवा,दुःखार्त्ता	वन्ध्या,शोकार्ता	पापरता,सधना	सुलाभा,विपुत्रा	रोगार्ता,मूढा
राहु केतु	पुत्रनाश,दुःखार्त्ता	दरिद्रा,दुःखार्त्ता	सवित्ता, रोगाढ्या	रोगार्ता,मातृहन्ता	सुतार्थरहिता	निरोगार्थयुक्ता	सदुःखा,विधवा	सदुःखा,विधवा	वन्ध्या,शोकार्ता	कुकर्मरता	निरोगी,सुभगा	खला,सरोगी

।। बृहज्जातक के अनुसार जन्मकाल में स्वगृहादि स्थित ग्रहों के फल ।।

ग्र.सं.	१	२	३	४	५	६	७	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्यादिग्रह
स्वराशि	कुलसम	कुलमुख्य	बन्धुपूज्य	धनी	सुखान्वित	भोगी	नृपति	३।१०	३।१०	७	३।१०	४।८	३।१०	५।९	एकपाददृष्टि
स्वमित्रराशि	परविभवपोष्य	सुहृदपोष्य	स्वज्ञातिपोष्य	बन्धुपोष्य	गणस्वामी	सेनापति	भूमिपति	५।९	५।९	३।१०	५।९	७	५।९	४।८	द्विपाददृष्टि
स्वशत्रु एवं नीचराशि	धनरहित	दुखान्वित	मूढ़	व्याधिपीड़ित	बन्धनतप्त	बहुदुःखाढ्य	बहुदुःखाढ्य	४।८	४।८	५।९	४।८	३।१०	४।८	७	त्रिपाददृष्टि
स्वउच्चराशि	सुखिन	धनी,सामन्त	सामन्त,भूपति	भूपाल	लोकेश्वर	राजाधिराज	राजाधिराज	७	७	४।८	८	५।९	७	३।१०	सम्पूर्णदृष्टि

।। ग्रहों का अन्तर्दशा काल।।

सूर्यदशावर्ष ६ — कृ.,उ.फा.,उ.षा. — अन्तर्दशा १८

ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८
चं.	०	६	०
मं.	०	४	६
रा.	०	१०	२४
बृ.	०	९	१८
श.	०	११	१२
बु.	०	१०	६
के.	०	४	६
शु.	१	०	०

चन्द्रदशावर्ष १० — रोहि.,हस्त,श्रवण — अन्तर्दशा ३०

ग्र.	व.	मा.	दि.
चं.	०	१०	०
मं.	०	७	०
रा.	१	६	०
बृ.	१	४	०
श.	१	७	०
बु.	१	५	०
के.	०	७	०
शु.	१	८	०
सू.	०	६	०

भौमदशावर्ष ७ — मृ.,चित्रा,ध. — अन्तर्दशा २१

ग्र.	व.	मा.	दि.
मं.	०	४	२७
रा.	१	०	१८
बृ.	०	११	६
श.	१	१	९
बु.	०	११	२७
के.	०	४	२७
शु.	१	२	०
सू.	०	४	६
चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८ — आर्द्रा,स्वा.,शत. — अन्तर्दशा ५४

ग्र.	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२
बृ.	२	४	२४
श.	२	१०	६
बु.	२	६	१८
के.	१	०	१८
शु.	३	०	०
सू.	०	१०	२४
चं.	१	६	०
मं.	१	०	१८

गुरुदशावर्ष १६ — पुन.,वि.,पू.भा. — अन्तर्दशा ४८

ग्र.	व.	मा.	दि.
बृ.	२	१	१८
श.	२	६	१२
बु.	२	३	६
के.	०	११	६
शु.	२	८	०
सू.	०	९	१८
चं.	१	४	०
मं.	०	११	६
रा.	२	४	२४

शनिदशावर्ष १९ — पुष्य,अनु.,उ.भा. — अन्तर्दशा ५७

ग्र.	व.	मा.	दि.
श.	३	०	३
बु.	२	८	९
के.	१	१	९
शु.	३	२	०
सू.	०	११	१२
चं.	१	७	०
मं.	१	१	९
रा.	२	१०	६
बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७ — श्ले.,ज्ये.,रेवती — अन्तर्दशा ५१

ग्र.	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७
के.	०	११	२७
शु.	२	१०	०
सू.	०	१०	६
चं.	१	५	०
मं.	०	११	२७
रा.	२	६	१८
बृ.	२	३	६
श.	२	८	९

केतुदशावर्ष ७ — मघा.,मू.,अश्वि. — अन्तर्दशा २१

ग्र.	व.	मा.	दि.
के.	०	४	२७
शु.	१	२	०
सू.	०	४	६
चं.	०	७	०
मं.	०	४	२७
रा.	१	०	१८
बृ.	०	११	६
श.	१	१	९
बु.	०	११	२७

शुक्रदशावर्ष २० — पू.फा.,पू.षा.,भर. — अन्तर्दशा ६०

ग्र.	व.	मा.	दि.
शु.	३	४	०
सू.	१	०	०
चं.	१	८	०
मं.	१	२	०
रा.	३	०	०
बृ.	२	८	०
श.	३	२	०
बु.	२	१०	०
के.	१	२	०

छिपकली पतन में प्रशस्त तिथि,वार,नक्षत्र

शुभवार	चं.बु.गु.शु.
तिथियाँ	१.२.३.५.६.१०.११.१२
शुभ नक्षत्र	पुष्य अश्विरो.मृ.उ.फा.पुन.हस्त स्वा. अनु. ध.रे. श. एषु शुभः।

पुरुषों के समस्त दक्षिण तथा स्त्रियों के वाम भागों में छिपकली पतन शुभ होता है। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग भद्रा, दग्धादियोग से दूषित दिन, लग्न में पाप ग्रहों की स्थिति तथा चन्द्रमा के अष्टमस्थ होने पर अशुभ फल होता है।

स्वप्न विचार- स्वप्न दो प्रकार के होते हैं। १. इष्ट फल, २. अनिष्ट फल- नदी एवं समुद्रतरण, आकाशगमन, ग्रह, नक्षत्र, सूर्य एवं चन्द्रमण्डल का दर्शन, अट्टालिका आरोहण, प्रसाद, मदिरापान, वसा एवं मांसभक्षण, कृमि एवं विष्ठालेपन, रूधिर से सिंचन, दधि-भात का भोजन, श्वेतवस्त्र धारण, रस, आभूषण आदि का स्वप्न में दर्शन प्रसन्नता दायक होता है। देवता, ब्राह्मण, राजा, अन्नप्राशन, कन्या, बैल, हाथी, पर्वत, दूध, फल, वृक्षारोपण एवं दर्पण, श्वेतपुष्प एवं वस्त्र के स्वप्न दर्शन से अर्थलाभ तथा व्याधियों से मुक्ति मिलती है।

।। सामान्यतया दशान्तर्दशादि फल के लिए सूत्र।।

ग्रह अपने भाव, राशि एवं दृष्टि जनित फलों को अपनी दशा एवं अन्तर्दशा में देता है।१। बलवान तथा परम उच्चस्थ ग्रह की दशा सम्पूर्णा तथा धन एवं आरोग्यता को बढ़ाने वाली तथा निर्बल एवं नीचगत ग्रहों की दशा अनिष्टकारक धन एवं आरोग्यता की नाशक होती है। किञ्चिद् बलवान होकर उच्चगत ग्रह की दशा पूर्णा एवं धनदात्री होती है। परमनीच, नीचांश, या शत्रु नवमांश गत ग्रहों की दशा अनिष्ट एवं धन तथा आरोग्यनाशिनी होती है। नीच से विगत सुप्त ग्रह की अवरोहिणी दशा कष्ट देने वाली परन्तु मित्र एवं उच्च राशिगत होने पर मध्यम होती है। उच्च की ओर अग्रसर ग्रह की दशा शुभ परन्तु नीच एवं शत्रुराशि नवमांश गत ग्रह होने पर अल्प शुभ होती है। उच्च एवं मित्र राशिगत होने पर भी शत्रु एवं नीच नवमांशगत ग्रहों की दशा पूर्वार्द्ध में शुभ तथा परार्ध में मिश्रित फलों को देती है। मित्र, उच्च, मूल त्रिकोण स्ववर्ग एवं वर्गोत्तम नवमांश गत ग्रहों की दशा शुभ तथा अस्त-शत्रु एवं नीच राशि नवमांशगत ग्रहों की दशा अशुभ होती है। अवरोहीणी ग्रह अधम हो तो उसकी दशा कष्ट देने वाली तथा मध्यम हो तो सम्पूर्ण फल देने वाली होती है। शुभ दृष्ट-युत केन्द्र तथा त्रिकोणस्थ ग्रह की दशा शुभ अन्यथा अशुभ होती है। चर राशि का लग्न हो तो द्रेष्टकोण क्रम से श्रेष्ठ, मध्यम, अधम, द्विस्वभाव हो तो अधम, मध्य, श्रेष्ठ तथा स्थिर में नेष्ट होती है। वक्री ग्रह की दशा में स्थान, मान एवं सुख आदि का क्षय होता है। ८,६,१२ से अतिरिक्त स्थानगत ग्रहों की दशा अभीष्ट फल देने वाली, भाग्येश के शत्रु ग्रह की दशा मतिमन्दता तथा राजभय कारक, राहुयुत ग्रह की दशा अरिष्टकारक, अष्टमेश एवं षष्ठेश की दशा अतिपीड़ा कारक, परस्पर पाप ग्रहों की दशान्तर्दशा शत्रुता, धन हानि एवं महाभयकारक, इष्टाधिक ग्रह की श्रेष्ठ, कष्टाधिक की नेष्ट एवं सम की मध्यम, लग्नेश की बल एवं धनदात्री, धनेश की कष्ट एवं धनदात्री, तृतीयेश की अनिष्ट देने वाली, सुखेश की गृहादि सुखों की दात्री, पंचमेश की धनदात्री, षष्ठेश की शत्रुभय कारक, सप्तमेश की शोकदात्री, अष्टमेश की मृत्युदात्री, भाग्येश की धर्माचरणदात्री, दशमेश की राज्य एवं अर्थदात्री, लाभेश की लाभ एवं व्ययेश की अर्थ हानि तथा कष्ट देने वाली होती है। अन्योन्य षष्टाष्टम गत ग्रहों की दशान्तर्दशा महाभयदात्री, पापग्रहों की दशा स्थानच्युति एवं हानिकारक होती है। पापग्रह की दशा में शुभ की अन्तर्दशा प्रारम्भ में कष्ट बाद में सुख तथा शुभ की दशान्तर्दशा सुख एवं शुभ की दशा में पाप की अन्तर्दशा प्रारम्भ में सुख तथा अनन्तर भय देने वाली होती है।

।। यात्रा में शुभाशुभ ज्ञान के लिए चक्र ।।

अश्विनी	पुनर्वसु	अनुराधा	मृगशिर	पुष्य	रेवती	हस्त श्रवण		धनिष्ठा	इन नक्षत्रों में शुभ
रोहिणी	उत्तरा ३		पूर्वा ३		मूल	शतभिष		ज्येष्ठा	इनमें मध्य
भरणी	कृतिका	आर्द्रा	अश्लेषा	मघा	चित्रा	स्वाती		विशाखा	इनमें निन्दा
श्रवण	हस्त	मृगशिर	पुनर्वसु	पुष्य	अश्विनी	अनुराधा	[illegible]		
पू.३	कृतिका	मघा	भरणी	स्वाती	ज्येष्ठा	विशाखा	श्लेषा	चित्रा	अति आवश्यक होने पर
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	३०	यात्रा में त्याज्य घटी

अत्यावश्यक होने पर दिक्शूल दोष निवारणार्थ वार क्रम से वस्तु नाम।

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
घी	पय	गुड़	तिलान्न	दधि	यावान्न	माषान्न	धारण
ताम्बूल	चन्दन	मिट्टी	पुष्प	दधि	घी	तिल	भक्षण

अथवा दोष शान्ति हेतु दान करना चाहिए।

।। यात्रा में वार दोहद ज्ञानार्थ चक्र ।।

रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
रसाल	पायस	कांजी	पक्वदूध	दधि	पयोधि	तिल

।। दोहद में भक्ष्याभक्ष्य विचार।।

ऊपर कथित दोहद का शास्त्रोक्त भक्ष्याभक्ष्य विचार कर ही भक्षण करना चाहिए। अभक्ष्य होने पर दोहद का दर्शन कर तथा अप्राप्य होने पर उसका ध्यान कर यात्रा आरम्भ करनी चाहिए।

।। दिग् लग्न।।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।१०।६	३।७।११	४।८।१२	शुभ
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्य
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	नेष्ट
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	नेष्ट

।। चन्द्रवास।।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

समय शूल चक्र

यात्रा में सम्मुख चन्द्रमा लाभप्रद, दक्षिण भाग में सुख-सम्पत्ति कारक, पृष्ठभाग में मरणप्रद तथा वाम भाग में धननाशक होता है। चन्द्रमा को सम्मुख कर यात्रा करने से समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं।

।। पूर्वादौ लालाटिका।।

ई. बु. २ | अ. शु. १२ | ई. बु. ३ | पू. सू. १० | अ. शु. ११ | उ. बृ. ४ | द. मं. १० | वा. च. ३ | प. श. ७ | रा.नै.९ | वा.च.६ | रा.नै.८

अथ समय शूल चक्र।

पूर्व में	प्रातःकाल
दक्षिण में	मध्याह्न
पश्चिम में	संध्या
उत्तर में	अर्धरात्री

उत्सव के आदि एवं समाप्ति के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए- प्रतिष्ठोद्वाह- मुत्साहं व्रतं चौलश्च सूतकम्। असमाप्य न गन्तव्यमार्तवं योषितामपि।।

यात्रा में शकुनादि का प्राशस्त्य- यात्रायां शकुनं जीव ऊचो गर्गः प्रशंसति। अङ्गिरा मनोत्साहं विष्णुर्वाचं द्विजन्मनाम्।।

यात्रा में चित्त के उत्साहादि का प्राशस्त्य- प्रसादश्चेतसः श्रेष्ठैर्निमित्तैः शकुनैः शुभैः। प्राप्तलग्नबलं राज्ञो गच्छतो विजयो ध्रुवम्।। चेतोविशुद्धिः प्रबला निमित्ताच्छकुनादिभिः। सत्यामस्यामतो यापानैव यायात्तु तां विना।।

आवश्यक तीर्थ यात्रा में दोष नहीं लगता- अर्धोदयोपरागादौ पुण्ययोगे सुदुर्लभे। तीर्थार्थि च सुखं यायात् कालेऽप्यस्तादिकेष्वपि।।

यात्रा समाप्ति पर गृह प्रवेश विचार- यात्रा से निवृत होकर षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी एवं रिक्ता तिथियों, चित्रा उ.३, रोहिणी, मृग, रेवती, अनुराधा नक्षत्रों तथा शनि, बुध, शुक्र एवं गुरु वारों में गृहप्रवेश शुभकर होता है। लग्नशुद्धि- ४,८ के शुद्ध १,४,७,१०,५,९ में शुभग्रह तथा ३,६,११ में पापग्रहों के रहने पर स्थिरलग्नों में प्रवेश शुभ होता है। १ योजन से कम दूरी की यात्रा लघु, २५ योजन तक मध्यम तथा उससे अधिक को दीर्घ संज्ञक होती है।

यात्रा समय विचार- जन्मेश एवं जन्मदशेश के अस्त होने पर यात्रा नहीं करनी चाहिए। प्रथम तीर्थयात्रा में गुरु-शुक्र का बालत्व, वृद्धत्व, अस्तकाल तथा सिंहस्थ एवं नीचराशिगत गुरु का त्याग कर देना चाहिए।

यात्रा में लग्नशुद्धि- जन्मलग्न एवं जन्मराशि से अष्टमराशि, कुम्भलग्न तथा नवमांश, मीन एवं पृष्ठोदयी राशियां त्याज्य है। लग्न से १,४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह ३,६,११ में पापग्रहों के रहने पर शुभ है। दशमस्थ शनि तथा सप्तमस्थ शुक्र नेष्ट होते हैं। लग्न से १,६,७,८ स्थानों चन्द्रमातथा ६,७,८,१२ में लग्नेश शुभ होता है। अष्टमभवन शुद्ध रहने पर शुभ है।

कुलगण- पूर्वा३, अश्विन, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, ज्येष्ठा, चित्रा, विशाखा, मंगल, शुक्रवार। ४,८,१२, १४ तिथियाँ, इसमें स्थायी का विजय होता है।

अकुलगण- भरणी, पुर्नवसु, अश्लेषा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रोहिणी, उत्तरा३, धनिष्ठा, रेवती नक्षत्र, विषम तिथियाँ तथा सूर्य, चन्द्र, गुरु, शनि वार। इसमें यायी का जय होता है।

कुलाकुलगण- आर्द्रा, मूल, अभिजित् शतभिष २।६।१० तिथियाँ। बुधवार। इसमें सन्धि हो जाती है।

पुष्य प्रशंसा- पापग्रहों से युत-विद्ध अथवा तारा एवं चन्द्रबल से हीन रहने पर भी पुष्य नक्षत्र में समस्त मंगलकार्य सिद्ध होते हैं। पापग्रह से विद्ध- युत या वियोग गतिक होने पर भी पुष्य नक्षत्र विवाह को छोड़कर अन्य समस्त मंगलकार्यों की सिद्धि दिलाता है। "क्रूरैर्विद्धोयुतो वापि पुष्यो यदि बलान्वितः। विना पाणिग्रहं सर्वमङ्गलेष्विष्टदः सदा।" जिस प्रकार मृग समूह में सिंह बलवान होता है, उसी प्रकार नक्षत्र समूह में पुष्य नक्षत्र भी बलवान होने पर अन्य दोषों को नष्ट कर देता है।

द्वादशस्थचन्द्रकाशुभत्व- आधान सम्प्रदान, विवाह, राजविग्रह, पाणिग्रहण प्रयाण (यात्रा) में द्वादशस्थ चन्द्रमा शुभ होता है। अन्य आचार्य- अभिषेक, निषेक, गृह, पुंसवनादि संसकार, यात्रा, युद्ध तथा विवाह में द्वादशस्थ चन्द्रमा शुभ होता है। उदित, स्वगृही, मित्रगृही तथा मित्रवर्गी स्थित, मित्रदृष्ट ग्रह बलवान होता है।

यात्रा में प्रस्थान स्थापन काल- राजा को दश, सामन्त को सात तथा सामान्य जनों को पाँच दिन पूर्व प्रस्थान स्थापन करना चाहिए।

दिशा भेद में प्रस्थान स्थापन काल- पूर्व दिशा की यात्रा में सात, दक्षिण में पाँच दिन, पश्चिम में तीन तथा उत्तर की यात्रा में दो दिन पूर्व प्रस्थान रखना चाहिए।

प्रस्थान की वस्तु- ब्राह्मणादि वर्ण के जनों को क्रमशः यज्ञोपवीत, शस्त्र तथा फल का प्रस्थान रखना वृद्धि कारक होता है।

पथिक राहु चक्र द्वारा शुभाशुभ फल ज्ञान- पथिक राहु चक्र में सूर्य, धर्म, मार्ग एवं चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष मार्ग में हो तो यात्रा शुभ होती है। अथवा सूर्य, अर्थ, मार्ग एवं चन्द्रमा धर्म या मोक्ष मार्ग गत हो तो भी यात्रा शुभ होती है। अथवा काम मार्गगामी सूर्य, धर्म या मोक्ष मार्गगामी चन्द्रमा से भी यात्रा शुभ होती है। अथवा मोक्षमार्ग गत सूर्य तथा धर्म मार्गगत चन्द्र हो तो भी यात्रा प्रशस्त होती है। इसके विपरीत सूर्य एवं चन्द्र की स्थितियों की यात्रा शुभ नहीं होती है।

दिशा एवं विदिशा सहित वार शूल ज्ञानार्थ चक्र

यात्रा काल में चन्द्रमा यदि प्रथम, द्वितीयादि द्वादश स्थानों में स्थित हो तो क्रमशः लक्ष्मी, धन-धान्य, राजसम्मान, कलह, ज्ञानवृद्धि, उतमसम्पत्ति, सुख, कष्ट, भाग्यवर्धक, सुख-सम्पत्ति, सर्वलाभ तथा शुभता को देने वाला होता है। आवश्यकता पड़ने पर चन्द्र के अशुभता की स्थिति में भी यथाशक्ति, दधि, चावल, चाँदी तथा मोती दान कर यात्रा की जा सकती है।

वारों के दिक्शूल ज्ञानार्थ चक्र

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा८
चं.श.	चं.बृ.	गुरु	सू.शु.	सू.शु.	भौम	मं.बु.	बु.श.	वार

नक्षत्र शूल चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
ज्ये.	पू.भा.	रोहिणी	उ.फा.	नक्षत्र

यात्रा के दिशा क्रम से वाहन चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
गज	रथ	अश्व	शिविका	वाहन

।। वारक्रम से कालचक्र ।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा८
शनि	शुक्र	गुरु	बुध	भौम	चन्द्र	सूर्य	०	वार

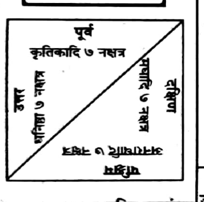
।। वारक्रम से पाशचक्र ।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा८
भौम	चन्द्र	सूर्य	०	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	वार

।। यात्रा में दिशादोष निवारक वस्तु ज्ञानार्थ चक्र ।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिक्८
घी	चावल	तिल	सत्तू	मछली	गेहूँ	दुध	खीर	वस्तु

परिघदण्ड चक्र



आवश्यकता वश परिघ उल्लंघन

दिग्लग्न शुद्धि प्राप्त हो रही हो तो आवश्यकता पड़ने पर परिघनक्षत्रों का उलंघन करके भी यात्रा हो सकती है।

यात्रा में तिथि जनित दोष निवारक वस्तु ज्ञानार्थ चक्र

तिथि	१	२	३	४	५	६	७
वस्तु	अर्क पत्र	तंडुलोदक	घी	हल्वा	हविष्य	स्वर्णजल	पूआ

तिथि	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वस्तु	बीजपूरकफल	जल	गोमूत्र	यव	पायस	गुड़	रक्त	मुँग

।। योगिनी वास चक्र।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

एक दिन में भी आवश्यकतावश योगिनी भोग बोधक चक्र

पू.	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	नै.	दिशा
३	७	११	१५	१८	२२	२६	३०	घटी
४२	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल
३३	३७	४१	४५	४८	५२	५६	६०	घटी
५५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल

योगिनी फल

घुतक्रिया, गमन एवं युद्ध में सम्मुख योगिनी मृत्युकारक तथा वाम भागों में अशुभ तथा पृष्ठ एवं दक्षिण में जय प्रदान करने वाली होती है।

।। यात्रा में छिक्काफल ।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य
अशुभ	दुःख	अनिष्ट	शुभ	सुभोज्य	धनाप्ति	कलह	शुभ	भय

।। पथिंक राहु चक्र ।।

अश्विनी	पुष्य	श्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शतभिष	धर्मनक्षत्र
भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पू.भा.	अर्थनक्षत्र
कृतिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.	कामनक्षत्र
रोहिणी	मृगशिर	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्षनक्षत्र

यात्रा में दिन-रात मान के अष्टमांश से वेला का फल

घं.	सू.दि.	सू.रा.	चं.दि.	चं.रा.	भौ.दि.	भौ.रा.	बु.दि.	बु.रा.	बृ.दि.	बृ.रा.	शु.दि.	शु.रा.	श.दि.	श.रा.
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	रोग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ
४	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	उद्वेग	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग
४	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	चर	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग
४	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	लाभ	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर
४	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	अमृत	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ
४	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	काल	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत
४	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	शुभ	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	रोग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ

यात्रा में विशेष विचार- यात्रा में दक्षिण राहु, वायें योगिनी, पीछे ये दानों तथा सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है। **उत्सवादि में गमनागमन विचार-** आरम्भ होने के बाद विवाह, यज्ञोपवीत, देवप्रतिष्ठा, महोत्सव तथा मरणा शौच की समाप्ति के विना यात्रा नहीं करनी चाहिए। **अभिजित मुहूर्त का प्राशस्त्य-** पञ्चाङ्ग शुद्धि नहीं रहने पर भी अभिजित् मुहूर्त का काल अभीष्ट फल को देने वाला होता है। **गर्गादि ऋषियों के मत से प्रयाण मुहूर्त विचार-** यात्रा में उषा काल को गर्ग, शकुन को बृहस्पति, मन के उत्साह को अंगिरा तथा ब्राह्मण की आज्ञा को जनार्दन प्रशस्त मानते हैं। **घात चन्द्र दोष-** यात्रा, युद्ध कृषिकार्य, व्यापार संग्रह, वाद-विवाद, तथा गृहारम्भ में घात चन्द्रमा का त्याग कर देना चाहिए। **विजययोग-** युद्ध सम्बन्धि यात्रा काल में गुरु एवं चन्द्रमा लग्न में तथा मंगल एवं शनि षष्ठ स्थान में गये हो तो जय प्राप्त होता है। उसी प्रकार लाभ स्थान में बुध, शुक्र एवं बृहस्पति तथा दशम स्थान में सूर्य स्थित हो तो अभीष्ट सिद्धि होती है।

सूर्यनक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र पर्यन्त गणना से प्राप्त तड़ाग चक्र

पूर्व में	२	वारिशेष
अग्नि में	३	बहुजल
दक्षिण में	२	जलनाश
नैऋत्य में	२	अमृतजल
पश्चिम में	३	स्वादुजल
वायव्य में	२	जलशेष
उत्तर में	३	स्थिरजल
ईशान में	२	नष्टजल
मध्य में	५	पूर्णजल
वायव्य में	३	अमृतजल

रोहिणी से गणना द्वारा वापी चक्र

कोष्ठ में	४	शुभ
नाभी में	४	बुद्धिनाश
हृदय में	४	स्थिरता
मध्य में	४	कलह
नेत्र में	४	धनप्राप्ति
पैर में	४	अनर्थ

ग्राम नक्षत्र से वासकर्ता के नक्षत्र पर्यन्त गणना से प्राप्त ग्रामवास चक्र

मस्तक	७	धनमान,लाभ
पृष्ठ	७	हानि,निर्धनता
हृदय	७	सुख,लाभ
पाद	७	पर्यटन

सूर्य नक्षत्र से चुल्ही चक्र

पृष्ठ	६	लक्ष्मीलाभ
शीर्ष	४	मृत्युभय
बाहु	८	सुख
गर्भ	५	विनाश
हस्त	२	सुभुक्ति
पाद	२	पत्नी की मृत्यु

सूर्यनक्षत्र से द्वारशाखा चक्र

स्थान	न.	फल
शिर में	४	श्रीप्राप्ति
कोण में	८	उद्वास
शाखा	८	सुख
देहली में	३	गृहपतिनाश
मध्य में	४	सुख

सूर्य नक्षत्र से अभिजित सहित गणना से प्राप्त गृहारम्भ में प्रयुक्त वत्स चक्र

स्थान	न.	फल
शीर्ष	३	अग्निभय
अग्रपाद	४	शून्यता
पृष्ठपाद	४	स्थिरता
पृष्ठ	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द.कुक्ष	४	लाभ
पुच्छ	३	स्वामिनाश
वाकुक्ष	४	दरिद्रता
मुख	३	पीड़ा

गृहप्रवेश में प्रयुक्त कुम्भ चक्र सूर्य नक्षत्र से गणना

स्थान	न.	फल
मुख	१	अग्निदाह
पूर्व	४	उद्वसन
दक्षिण	४	लाभ
पश्चिम	४	लक्ष्मीप्राप्ति
उत्तर	४	कलह
गर्भ	४	विनाश
नीचे	३	स्थिरताशुभ
कण्ठ	३	स्थिर, शुभ

सूर्यनक्षत्र से हलचक्र

३	अशुभ	३	अशुभ
३	शुभ	५	शुभ
३	अशुभ	३	अशुभ
५	शुभ	३	शुभ

सूर्य के भुक्त नक्षत्र से हलचक्र

२	हानि अशुभ
८	समृद्धि
९	कर्त्ता का नाश
८	द्रव्यलाभ

रोहिणी नक्षत्र से कूप चक्र

स्थान	न.	फल
मध्य में	३	शीघ्रस्वाद
पूर्व में	३	निर्जल
अग्नि में	३	आशुजल
दक्षिण में	३	निर्जल
नैऋत्य में	३	अमृतजल
पश्चिम में	३	निर्मलजल
वायव्य में	३	जलहानि
उत्तर में	३	मधुरजल
ईशान में	३	क्षारजल

कूप चक्र सूर्य नक्षत्र से

स्थान	न.	फल
मध्य	३	स्वादिष्टजल
पूर्व	३	खण्डितजल
अग्नि	३	स्वादिष्टजल
दक्षिण	३	जलहानि
नैऋत्य	३	स्वादिष्टजल
पश्चिम	३	क्षारजल
वायव्य	३	मिश्रितजल
उत्तर	३	मिष्टजल
ईशान	३	क्षारजल

द्वार चक्र सूर्य नक्षत्र से

४	राज्यलाभ	२	मृत्यु
२	हानि	४	द्रव्यप्राप्ति
४	धनप्राप्ति	२	शोकभय
२	भय	३	धनलाभ
४	मृत्युभय	३	धनलाभ

इष्ट नक्षत्र कल्पना तथा इससे गणना विचार

आर्द्रा,पुन.पुष्य.अश्ले.मघा., पू.फा. श. पू.भा. तथा उ.भा. ये नव गृह के इष्ट नक्षत्र होते हैं। इन नक्षत्रों के द्वारा विवाह मेलापक की तरह राशि, कूट आदि का विचार करना चाहिए। सेव्य-सेवक तथा गृह और स्वामी की परस्पर मैत्री एवं एक नाड़ी प्रशस्त होती है। यहाँ केवल नाड़ी मेलापक में विषमता है। शेष विवाह की तरह ही होता है। एक नाड़ी जन्य दोष यहाँ नहीं लगता।

आयों के नाम तथा उपयोग स्थान

१	२	३	४	५	६	७	८
ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	गर्दभ	हस्ती	काक

वापी कूप, एवं तालाब आदि के निर्माण में गज आय, आसन निर्माण में सिंह तथा शयन निर्माण में काक एवं गज आय शुभ होता है। शलाओं में ध्वज, भोजन अग्निशाला एवं पशुशाला निर्माण में वृष आय, श्वान एवं चाण्डलों के गृह के लिए धूम्र, वेश्या गृह के लिए खर, पक्षिपति के गृह के लिए ध्वांक्ष, नगर एवं मंदिर स्थापन में वृष, सिंह एवं गज आय शुभ होते हैं।

शल्यानयन

अ.	क.	च.	द.	त.	प.	य.	श.	ह.प.य.	वर्णा
पूर्व.	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	दिशा
मनुष्य	ऊँट	मनुष्य	शुभ	बालक	मूसी,राख	विप्रश.	गोश.	नृकपा.	शल्य
१।।	२	२	१।।	१।।	४	२	१	३	हस्ता
मृत्यु	राजभ.	स्वा मृ.	वा.भू.	गृ.वि.	दु.स्व.	दरिद्रता	गो.ना.	कु.ना.	फल

प्रश्न कर्त्ता को देवताओं का स्मरण कर प्रश्न करना चाहिए। प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न के आदि अक्षर के द्वारा शल्याशल्य का विचार करना चाहिए।

देवालय, गृह तथा जलाशय के आरम्भ हेतु राहु मुख ज्ञान- जहाँ राहु का मुख हो उसके विपरीत दिशा में पुच्छ होता है, वही भूमि पूजन हेतु खात खोदना शुभ होता है।

०	ईशानकोण	वायव्य में	नैऋत्य में	आग्नेय में
देवालयारम्भ में	मी.मे.वृ.के. सूर्य में राहु मुख	मि.क.सि.के सूर्य में राहु मुख	क.तु.वृ.के सूर्य में राहु मुख	ध.म.कु.के सूर्य में राहु मुख
जलाशयारम्भ में	मं.कुं.मी. के सूर्य में राहु मुख	मं.वृ.मि. के सूर्य में राहु मुख	क.सि.कं. के सूर्य में राहु मुख	तु.वृ.ध. के सूर्य में राहु मुख
गृहारम्भ में	सिं.क.तु. के सूर्य में राहु मुख	क.ध.म. के सूर्य में राहु मुख	कु.मी.मे. के सूर्य में राहु मुख	वृ.मि.क. के सूर्य में राहु मुख

कश्यप के अनुसार- क्षेत्र, भित्ति शिलान्यास एवं स्तम्भ रोपण सर्वदा आग्नेय कोंण में ही करना चाहिए

चैत्रादि मासों में गृहनिर्माण का फल

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद
शोक	धन-धान्य	मृत्यु	पशुहानि	द्रव्यवृद्धि	नाश
आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
युद्ध	भृत्यक्षय	धनलाभ	लक्ष्मीप्राप्ति	अग्निभय	लक्ष्मीप्राप्ति

।। गृहारम्भ मुहूर्त्त विचार ।।

शुभनक्षत्र	उत्तरा३,मृग,पुष्य,अनु.ध.श्रव.चि.ह.स्वा.रो.रे. (चक्रशुद्ध)
शुभमास	वै.श्रा.मार्ग.फा., तथा मे.क.सिं.वृ.,म.,कुम्भ के सूर्य में श्रेष्ठ होता है।
वारा	चं.बु.बृ.शु. एवं शनिवार शुभ है।
तिथियाँ	१।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ एवं १५ शुभ है।
शुभ लग्न	२।३।५।६।९।८।११।१२ अपने स्वामि एवं शुभ ग्रह से दृष्ट।
लग्नशुद्धि	लग्न से १।४।७।१०।५।९ में शुभ ग्रह, ३।६।११ में पाप ग्रह हो तथा ८।१२ के ग्रहवर्जित रहने पर शुभ है।
त्याज्य	भद्रा, कुयोग, अष्टमगतचन्द्र।

इन्हीं गृहारम्भ के नक्षत्र-वार एवं तिथि आदि शुभ समयों में मठ, देवालय आदि का आरम्भ भी शुभकर होता है। सूर्य एवं मंगल, रिक्ता तिथि तथा चर लग्नों में कभी भी गृहारम्भ नहीं करना चाहिए।

वास्तुभूमि के शुभा-शुभत्व का ज्ञान

सायंकाल गृहेश के हाथ से १ हाथ लम्बा, चौड़ा एवं गहरा गड्ढा खोदकर पानी से भर देवें। पुनः प्रातः काल उठकर देखें खात में यदि जल दिखाई दे तो वृद्धि, केवल कीचड़ बचे तो मध्यम एवं दरार फट जाय तो अशुभ समझना चाहिए।

गृह निर्माण में प्रयुक्त शिलाओं के प्रमाण का विचार

ब्राह्मणादि वर्ण के लोगों को क्रमशः २१अंगुल लंबी १०½ अंगुल चौड़ी तथा ५½ अंगुल मोटी, १७ अंगुल लम्बी, ८½ अंगुल चौड़ी तथा ४½ अंगुल मोटी, १३ अंगुल लम्बी, ६½ अंगुल चौड़ी तथा ३½ अंगुल मोटी शिला (ईंट) का प्रयोग करना चाहिए। इससे कम या अधिक मान की शिला अशुभफलदायक होती है। शिलपूजन में प्रयुक्त पाँच मुख्य शिलाओं का नाम क्रमशः नन्दा, भद्रा, जय, रिक्ता, पूर्णा तथा पांच कलशों का नाम पद्म, महापद्म, शंख, मकर एवं समुद्र होता है। प्रधान पञ्चशिलाओं के साथ छोटी-छोटी पाँच आधारशिलाएं (गिट्टी) भी होती हैं।

गृह की ऊँचाई का परिमाण

गृह विस्तार के १६वें हिस्से में ४ हाथ जोड़ने से जितना हो उतने के बराबर गृह की ऊँचाई होनी चाहिए। पुनः दूसरी एवं तीसरी आदि मंजिल बनवाने पर आधार तल में क्रमशः १२वां अंश कम करते जाना चाहिए। जैसे प्रथम से द्वादशांश कम दूसरा, दूसरे से द्वादशांश कम तीसरा आदि। **गृहभित्ति प्रमाण-** चौड़ाई के १६वें भाग के बराबर भित्ति की मोटाई होनी चाहिए। परन्तु यदि पकी हुई ईंट या लकड़ी की भित्ति हो तो कोई विकल्प नहीं होता अर्थात उसका प्रमाण कुछ भी हो सकता है।

गृह में सूर्य एवं चन्द्र वेध का निर्णय

पूर्वापर दैर्घ्य होने पर रविवेध तथा याम्योत्तर लम्बाई होने पर चन्द्रवेध होता है। चन्द्रविद्ध गृह, सूर्यविद्ध जलाशय तथा सूर्य एवं चन्द्र दोनों से विद्ध वाटिका प्रशस्त होती है। अन्यमत मन्दिर देवताओं का घर होता है। इसलिए उसमें पिण्ड विचार नहीं करना चाहिए।

।। जलाशयारम्भ मुहूर्त्त।।

गुरु-शुक्र के अस्तादिदोष से रहित काल, ह.अनु.उ.३.ध.,श.,म.,रो., पुष्य, मृ.,पू.षा., नक्षत्रों, चं.बु.बृ. तथा शुक्र वासरों तथा रिक्ता एवं अमावस्या रहित तिथियों में बुध एवं गुरु के लग्नस्थ, क्रूर ग्रहों के दुर्बल, शुक्र के दशमस्थ, तथा चन्द्रमा के लग्न में रहने पर जलाशयारम्भ शुभ होता है।

गृहप्रवेश मुहूर्त्त विचार

शुभमास	वै.ज्ये.माघ, तथा फा. महीनें में नये घर तथा इनके सहित श्रा.मार्ग. कार्ति. मासों में जीर्णगृह, आअग्निभय से निर्मित नूतनगृह में भी प्रवेश शुभ होता है।।
नक्षत्र	कुम्भचक्र शुद्ध रहने पर उ.३,अनु.रो.मृ.चि.रे. नक्षत्र में शुभ
शुभवार	चं.बु.बृ.शु.श.
तिथि	१,२,३,४,५,६,७,८,२०,११,१२,१३।।
लग्न	२,५,८,११ शुभ तथा ३,६,९,१२ मध्य
लग्नशुद्धि	जन्मलग्न तथा राशिलग्न से उपचय स्थान की स्थिर राशि में, लग्न से १,२,३,५,७,९,१०,११ स्थानों में शुभ ग्रह, ३,६,११ में पापग्रह तथा ४,८ शुद्ध रहने पर वाम रवि में गृहप्रवेश शुभ होता है।

।। जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्त विचार ।।

समय	मीन संक्रान्ति को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में गु.शु. के उदित एवं बलवान तथा चन्द्रमा के बलवान रहने पर शुभ।
नक्षत्र	मृ.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.स्वा.पुन.श्र.ध. शुभ।
लग्नशुद्धि	लग्न से १,२,४,७,१०,५,९ स्थानों में शुभ ग्रह तथा ३,६,११ में पापग्रह हों एवं पञ्चेष्ट शुद्धि हों तो गृह स्वामी के जन्म लग्न से अष्टम को छोड़कर अन्य लग्नों में जलाशयारामसुर प्रतिष्ठा करनी चाहिए

गृहाभ्यन्तर व्यवस्था।

गृह निर्माण में प्रयोग होने वाली लकड़ियाँ- श्रीपर्णी (कायफल), रोहिणी (कुटकी), शाक (सागोन), सर्ज, पतङ्ग, लोध, शाल (सखुआ), ताल, अर्जुन, शीशम, चन्द्रन, अशो, वैर, महुआ एवं कदम्ब, वृक्षों को घर के कामों में लगाना शुभ होता है। तथा पाकड़, गुलर, आम, नीम, सेहुड़, विभीतक (बहेड़ा), जला हुआ, कांटेवाला, वट, पीपल, कैथ, अगस्त, सहिजन, ताल, तिन्तिणी (इमली) के लकड़ियों को घर में नहीं लगाना चाहिए। **गृहपिण्ड-** प्राच्यां स्नानगृहं च पाकसदनं वह्नौ तु सुप्तालयो, याम्यायामथ शस्त्रसद्मदनुजे भत्त्यालयः पश्चिमें। वायव्यां पशुमन्दिरं शुभकरं भंडारवेश्मोत्तरे, शैवे देवगृहं प्रशस्तमखिलं स्वस्वास्थ्य कार्यं सदा।। इन्द्राग्न्योरथ मन्थनस्य सदनं त्याज्यं यमाग्न्योर्गृहं, दैतेयान्तकयोः पुरीषसदनं विद्यागृहं मध्यमे। रक्षोवारुणयोश्च रोदनगृहं तोयेशवायव्ययोः, मध्ये कामगृहं कुबेरमरुतोः कुर्याःसदा भूपतिः।। भाण्डागारं तूत्तरे स्याद्वायव्यां पशुमन्दिरम्।। उत्तरस्यां जलस्थानं पूर्वस्यां श्रीगृहं तथा। पुरन्दरेशयोर्मध्ये सर्ववस्तु संग्रहम्।। कौबेरीश्वरयोश्च वैद्यभवनं शाक्रेशयोः सौतिकं, ज्येष्ठभ्रातृ पितृव्य मातृभवनं स्वस्माद्यमे पश्चिमे। शालानामुपरिस्थितेषु भवनेष्वेवं विचिन्त्यं बुधैः, अत्युच्चं न हि नातिनीचमथवा साम्यं गृहं कारयेत्।। इसका अर्थ निम्न चक्र द्वारा स्पष्ट करें-

पूर्व

देवगृह पूजास्थान	प्रसूति गृह	सर्व वस्तुस्थान	स्नान गृह	गोरस कक्ष	पाकशाला रसोई
चिकित्सा, रोगी कक्ष					घृत स्थान
कोषागार					शयनकक्ष
पेयजल					
मनोरंजन स्थान					शौचालय
पशुशाला वाहन,भण्डार	कोप भवन	भोजन कक्ष	अध्ययन कक्ष		शस्त्रागार

उत्तर (बायीं ओर) · दक्षिण (दायीं ओर) · पश्चिम (नीचे)

आय विचार- गृहपिण्ड को ९ से गुणा कर ८ से भाग देने पर प्राप्त शेष के अनुसार क्रमशः ध्वज, धूम, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज एवं उष्ट्र आय होते हैं। इनमें गृह निर्माण से क्रमशः कीर्ति, शोक, जय, शत्रुता, धन, दरिद्रता, सुख एवं रोग की प्राप्ति होती है। **गृहारम्भ लग्न द्वारा राजयोग-** गुरुवार के दिन कर्क लग्न में गृहनिर्माण हो अथवा कर्क लग्न में गुरु एवं चन्द्रमा के युति के समय गृहनिर्माण हो तो निर्माणकर्त्ता को राजयोग का फल प्राप्त होता है। गुरुवार के दिन धनु या मीन लग्न में शुक्र एवं गुरु की स्थिति के समय गृहनिर्माण से निर्माता राजा के तुल्य होता है। **द्वार निर्धारण-** मकान की लम्बाई (जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस दिशा की लम्बाई) का बराबर-बराबर नव हिस्सा करके ५ भाग दाहिने और ३ भाग वायीं ओर छोड़कर शेष (अर्थात वायें से चौथे) भाग में द्वार बनाना चाहिए। **द्वारस्थापने वैकल्पिक विचार-** सर्वेषामथवा यथारुचिगृहद्वाराणि कुर्युः रवेराचार्यस्य बुधस्य वा प्रतिदिशं भागे समस्तालये। अष्टस्वष्टसु वा त्रिषु त्रिषु गृहे कार्येषु भागेषु तत्, मध्ये वाधिकधामभागसहितं वामे कपाटान्वितम्।। **राशि के अनुसार द्वार दिशा-** कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशि वालों को पूर्व, कन्या, मकर तथा मिथुनराशि वालों को दक्षिण, तुला, कुम्भ तथा वृषराशि वालों को पश्चिम एवं मेष, सिंह तथा धनुराशि वालों को उत्तर दिशा में द्वार (मुख्य द्वार) रखना चाहिए।

सहमसारिणी।। दिनरात्रिवश जिन सहमों के शोध्य शोधक में भेद होता है।

दिन में	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं	दिन में	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं
पुण्य	सूर्य	चन्द्र में	तनु	प्रसूति	बुध	गुरु में	तनु
गुरु	चन्द्र	रवि में	तनु	जाड्य	शनि	भौम में	बुध
यश	पुण्य	गुरु में	तनु	जल	चन्द्र	शनि में	लग्न
मित्र	गुरु	पुण्य में	तनु	शत्रु	शनि	भौम में	लग्न
माहात्म्य	भौम	पुण्य में	तनु	दरिद्र	बुध	पुण्य में	बुध
आशा	शुक्र	शनि में	तनु	शास्त्र	शनि	गुरु में	बुध
राज.	सूर्य	शनि में	तनु	वंदक	बुध	चन्द्र में	तनु
भ्राता	शुक्र	चन्द्र में	तनु	बन्धन	शनि	पुण्य में	तनु
जीविका	गुरु	शनि में	तनु	अश्व	सूर्य	पुण्य में	लाभ
कर्म	बुध	भौम में	तनु	अन्यक	शनि	चन्द्र में	तनु
कलि.	भौम	गुरु में	तनु	वृद्धि	सूर्य	गुरु में	तनु
चेत	भाव	१२भा	तनु	अरि	शनि	भौम में	तनु
रात्रि में	अस्मिन्	एषऊन	युक्तं	रात्रि में	अस्मिन्	एषऊन	युक्तं

विद्या १ ज्ञान २ ज्ञाति ३ सहम गुरु ही होता है। पिता सहम राजा सहम समान है। बल १ देह २ यश के सदृश है। विवाह सहम से स्त्री का विचार होता है। सामर्थ्य सहम के साधन में लग्नेश यदि भौम हो तो भौम को गुरु में घटायें। गौरव सहम के लिये दिन में बृ.-चं.-सू.+रात्रि में बृ.-र.+चं. कार्य सहम दिन में चं.-लग्न प+ ल. रात्रि में लग्न प-चं.+ल. कार्यसिद्धि- श. सु. रा. प. रात्रि में- श.-चं.+चन्द्र रा. प. गुरु दिन में सूर्योच्च- सू.+ल. रात्रि में चन्द्रोच्च-चं.+ल.।।

दिन रात्रि मे समान साधनयुक्त 'सहम'

सहमा	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं	सहमाः	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं
मातृ	शनि	गुरु से	लग्न	श्रद्धा	भौम	शुक्र से	तनु
पुत्र	चन्द्र	गुरु से	लग्न	प्रभात	पुण्य	शुक्र से	तनु
रोग	चन्द्र	तनु से	तनु	व्यापार	बुध	ज्ञान से	तनु
बंधु	चन्द्र	बुध से	तनु	कन्या	चन्द्र	भौम से	तनु
मृत्यु	चन्द्र	८भावा से	शनि	संताप	चन्द्र	शनि से	६भाव
यात्रा	धर्मेशः	धर्म से	तनु	गर्भ	शनि	ज्ञान से	तनु
धन	लग्नेश	धन से	तनु	जलाध्व	शनि	संतश	आयभाव
परस्त्री	सूर्य	शुक्र से	तनु	गज	गुरु	कर्काद्धत	मंतप
वणिक	बुध	भौम से	तनु	घातक	पुण्य	चन्द्र से	तनु
विवाह	शनि	शुक्र से	तनु	घातक	पुण्य	गुरु से	तनु

उदाहरण- दिन में पूर्ण सहम बनाने के लिये चन्द्र से सूर्य को घटाकर लग्न जोड़ना चाहिये। रात्रि में सूर्य में चन्द्र घटाकर लग्न जोड़ दें अतः दिन में जो घटता है उस पर '*एषऊन*' जिसमें घटता है उसपर '*अस्मिन्*' लिखा है। कुछ सहम दिनरात्रि में समान ही रहते हैं। '*एषऊन*' '*अस्मिन्*' यह संकेत दिन के लिये ऊपर तथा रात्रि के लिये नीचे लिखा है। जिसमें से जो घटता है उन दोनों के बीच में लग्न न आये तो स्पष्ट सहम राशि में १ राशि जोड़ना चाहिये।

दीर्घ विस्तारशुद्ध्यादियुता सिद्ध पिण्डसारिणी।।

दीर्घ	विस्त	आय	वार	अंश	द्रव्य	ऋण	नक्षत्र	तिथि	योग	आयु	दीर्घ	विस्त	आय	वार	अंश	द्रव्य	ऋण	नक्षत्र	तिथि	योग	आयु
१७	१५	७	६	९	१२	५	१५	१५	२१	१२०	४९	४५	५	७	९	१२	७	९	१५	१८	१२०
१९	१५	५	३	९	१२	३	१२	१२	६	१२०	५१	३५	१	७	९	१२	३	२४	१५	१२	१२०
२१	१५	३	७	९	१२	१	९	१५	१८	१२०	५१	३७	७	१	९	१२	५	३	६	१५	९६
२१	१७	५	७	९	१२	७	२१	६	२४	९६	५१	४५	७	५	९	१२	५	२७	१५	२७	१२०
२१	१९	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१	४७	५	६	९	१२	७	६	६	३	९६
२५	१५	७	१	९	१२	५	३	१५	१५	१२०	५१	४९	३	७	९	१२	१	१२	१२	६	७२
२५	१९	३	५	६	८	१	२०	५	१०	८०	५५	४९	७	७	६	८	५	२४	५	७	८०
[illegible]																					
४५	३९	३	३	९	१२	१	२७	१५	२७	१२०	७३	६९	५	१	९	१२	७	१२	६	६	९६
४५	४१	५	१	९	१२	७	१८	१५	९	१२०	७५	६३	५	७	९	१२	७	२७	१५	२७	१२०
४५	२५	७	४	९	१२	५	२४	१५	१२	१२०	७५	६५	३	६	९	१२	१	१२	१५	६	१२०
४५	४३	७	६	९	१२	५	९	१५	१८	१२०	७५	६७	१	५	९	१२	३	२४	१५	१२	१२०
४७	४१	७	४	६	८	५	२६	११	१३	५६	७५	६९	७	४	९	१२	५	९	१५	१८	१२०
४७	४५	३	२	९	१२	१	१८	१५	९	१२०	७५	७३	३	२	९	१२	१	६	१५	३	१२०
४९	३७	५	७	६	८	७	५	१४	१६	१०४	७७	६५	५	७	६	८	७	२६	५	१३	८०
४९	४१	१	७	३	४	३	७	७	१७	११२	७७	७१	३	७	६	८	१	२१	११	२५	५६
४९	४३	३	७	६	८	१	८	११	४	५६	७७	७५	७	७	३	१२	५	३	१५	२५	१२०

लग्नानयन- स्पष्ट सूर्य के राशिअंश द्वारा कोष्टक से फल लेकर उसमें इष्टकाल जोड़ दें अब योगफल कोष्टक में जितने राशि अंश पर दिखाई दे वही राश्यादिक लग्न होता है। यह लग्नसारणी गाजीपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, झाँसी, बलिया, बाँदा, इलाहाबाद, छपरा, पटना, मुंगेर, भागलपुर, हाजीपुर, बिहार, हैदराबाद, (सि), चित्रकूट, बूँदी, पूर्णिया, शाहाबाद, सहसराम, कुदरा, जहाँनाबाद, डुमराँव, मालदह के लिए है।

काशी में चैत्रपक्षीय २४।०।० अयनांश सम्बन्धि सायन स्फुटलग्न सारिणी

म.	श्री	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० ७ २२	मे.	[illegible]																													

चैत्र में अयनांश साधनार्थ एकादि गुणक १ गुणोत्तर १० गुणोत्तर

१	०	५०	१०	८	२२
२	१	४०	२०	१६	४४
३	२	३१	३०	२५	७
४	३	२१	४०	३३	२९
५	४	११	५०	४१	५२
६	५	१	६०	५०	१४
७	५	५१	७०	५८	३६
८	६	४२	८०	६६	५९
९	७	३२	९०	७५	२२
०	क.	वि.	१००	८३	४३

इस वर्ष के अयनांश में वार्षिक अयनांश गति जोड़ने से अग्रिम वर्ष के आदि का होगा। शाके १८०० में अयनांश- २२।८।३३ था। उससे आगे या पीछे का अयनांश जानने के लिए उतने वर्ष के फल का योग अन्तर कर लेने से अभीष्ट अयनांश होगा।

काशि का सायन, निरयण तथा पलात्मक लग्नमान एवं लंकोदयमान

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
सा.घ.	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
	४१	१३	४	४२	४५	३५	३५	४५	४२	४	१३	४१
नि.घ.	४	४	५	५	५	५	५	५	५	४	३	३
	५	५९।	३।।	४४।।	३७।।	३५	४२।।	४२	१३।।	२४।।	३९	४१
पलात्म	२२१	२५३	३०४	३४२	३४५	३३५	३३५	३४५	३४२	३०४	२५३	२२१
लंकोदय	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८	२९९	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८

नत काल के विना दशम लग्न ज्ञानार्थ सारिणी। स्पष्ट लग्न के राशि-अंश को

(बगल में राशि तथा ऊपर अंश) कोष्ठक में देखें, तीनों पंक्तियों को मिलाने से राश्यादिक दशम लग्न प्राप्त होता है।

श्री	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
	२३	२४	२५	२६	२६	२७	२८	२९	०	१	१	२	२	३	३	४	५	६	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१०
०	५६	३८	१९	०	४१	२२	३	४४	२५	६	४७	२८	३६	३	५	५७	२४	११	५८	४५	३२	१९	६	७	४७	३३	४५	१५	६	२०
वृष	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१	४७	३४	२९	२०	१०	९	५२	४३	३४	२४	१७	६	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२४	३०	३६	४२
मिथुन	[illegible]																													

पिण्ड द्वारा आय आदि का आनयन- गृहपिण्ड को नव स्थानों में रखकर क्रम से ९।९।६।८।३।८।८।४।८ इन अंकों से अलग-अलग गुणाकर गुणनफल में क्रमशः ८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२० का भाग देने पर प्राप्त शेष क्रमशः आय १ वार २ अंश ३ द्रव्य ४ ऋण ५ नक्षत्र ६ तिथि ७ योग ८ तथा आयु ९ होता है। पिण्ड में ऋण अधिक तथा द्रव्य अल्प हो एवं गृह तथा गृहेश के एक ही नक्षत्र हो तो अशुभ होता है। इन सबका विचार गृहारम्भ के पूर्व कर लेना चाहिए। आय ध्वजादि, वार सूर्यादि तथा अंशक मेषादि होता है। भूमि के लक्षण एवं फल- आयताकार भूमि में गृह निर्माण से सिद्धि, वर्गाकार से धनागम, वृत्ताकार में निर्माण से वृद्धि की वृद्धि एवं कल्याण, चक्राकार में दरिद्रता, विषम में शोक, त्रिकोण में राजभय, शकटाकार में धनक्षय, दण्डाकार में पशुक्षय, सूर्पाकार में गौ क्षय, कूर्माकार में बन्धन एवं पीड़ा, धन्वाकार में भय तथा कुम्भाकार क्षेत्र में गृहनिर्माण से कुष्ठ रोग होता है। भूमिदोष एवं उसका फल- कटी हुई, सशल्य (हड्डीयुक्त), दीमकवाली, तथा ऊँची-नीची भूमि को दूर से ही त्याग देना चाहिए। क्योंकि ऐसी भूमि गृह निर्माण कर्त्ता की आयु, एवं धन का नाश करने वाली होती है। फटी हुई भूमि मृत्युदायक, ऊसर भूमि धन नाशक, सशल्या क्लेश कारक तथा विषमा भूमि शत्रुओं को बढ़ाने वाली होती है। भूमि के पूर्वादि आठो दिशाओं में प्लवत्व का फल- भूमि के पूर्वादि दिशाओं में प्लवत्व से क्रमशः लक्ष्मी प्राप्ति, दाह, मृत्यु, धनहानि, पुत्रक्षय, प्रवास, धनलाभ एवं विद्या लाभ होता है। मध्य प्लवा भूमि नेष्ट तथा चतुर्दिक प्लवा अशुभ होती है। एवं सुखदायिनी, पूर्वप्लवा वृद्धिकरी, उत्तरप्लवा धनदात्री, दक्षिणप्लवा मृत्यु एवं शोकदात्री, नैऋत्यप्लवा गृहक्षयकरी, वरुणप्लवा धनहानिकरी एवं वायव्य प्लवा भूमि उद्वेग कारिणी होती है। गृहभूमि साधनार्थ सूत्र निश्चय- गृहभूमि साधन हेतु ब्राह्मण को कुश क्षत्रिय को मौञ्जि, वैश्य को कपास तथा शूद्र को स्वर्ण कल्पित सूत्र का प्रयोग करना चाहिए। शल्यज्ञान- षडवर्गशुद्ध सूत्र से सूत्रित भूमि पर, सूत्र फैलाते समय मनुष्य, कुत्ता सियार आदि कोई भी जीव उस सूत्र का लंघन कर दे तो उस स्थल पर पुरुष प्रमाण नीचे उसी जीव की अस्थि जाननी चाहिए। सूत्र प्रसारण के समय ही सकाशात कोई आकर सूत्र लंघन कर दे तो भी उस स्थान पर शल्यादेश करना चाहिए। आधी भीत उठ जाने पर या गृह में पैठते समय कारीगर यह देखे कि गृहपति किस अंग का स्पर्श करता है, उसी समय यदि सूर्य किरण से सन्तप्त पक्षी कठोर शब्द से चिल्ला उठे या गृहेश जिस अंग का स्पर्श करे उस अंग की हड्डी जाननी चाहिए। शल्य विचार के समय शंख, नगाड़ा, मृदङ्ग के शब्द, दधि, अक्षत, फूल एवं फल आदि का दर्शन होने पर स्पर्श किए हुए अंग के सदृश शल्य कहना चाहिए। भूमि खोदते समय जो अंग फरक उठे उतने ही नीचे शल्य जानें। तथा प्रश्न काल में हाथी, घोड़ा, गधा, इत्यादि जो जीव बोल उठे उसका शल्य जानना चाहिए। शुभाशुभ लक्षणों का विधिवत विचार करके ही शल्य का आदेश करना चाहिए।

काशी से अन्य देशों के देशान्तर ज्ञानार्थ सारिणी। ग्रीनह्विच (GREENWHICH) नगर से काशी का घट्यात्मक देशान्तर

उत्तरप्रदेश	अक्षांश		दि.	घ.	प.	वि.
अमरोहा	२९	०४	प	०	४५	०
अयोध्या	२६	४८	प	०	७	४०
अल्मोड़ा	२९	३७	प	०	३३	२०
अलीगढ़	२७	५५	[illegible]	०	४९	०
अहरौरा	२४	५९	पू	०	०	२०
आगरा	२७	१०	प	०	४९	१०
आज़मगढ़	२६	३	पू	०	२	१०
इटावा	२६	४७	प	०	३९	४०
इलाहाबाद	२५	२८	प	०	११	०
उन्नाव	२६	३२	प	०	२५	५०
एटा	२७	३५	प	०	४४	१०
कानपुर	२६	२८	प	०	२६	४०
काशी	२५	१८	प	०	०	०
गढ़वाल	३०	१५	प	०	३५	०
ग़ाज़ीपुर	२५	३४	पू	०	५	५०
गोंडा	२७	२८	प	०	९	५०
गोरखपुर	२६	४५	पू	०	४	०
चुनार	२५	०८	प	०	०	४०
चित्रकूट	२५	२२	प	०	२०	०
जालौन	२६	०८	प	०	३६	१०
जौनपुर	२५	४६	प	०	२	४०
झाँसी	२५	२७	प	०	४३	५०
देहरादून	३०	१९	प	०	४९	२०
देवरिया	२६	२३	पू	०	७	०
नैनीताल	२९	२३	प	०	३५	०
पडरौना	२६	५४	पू	०	१०	१०
प्रतापगढ़	२५	५४	प	०	१०	१०
पीलीभीत	२८	४०	प	०	३१	३०
फर्रुखाबाद	२७	२४	प	०	३३	५०
बरेली	२८	२२	प	०	३५	३०
बलिया	२५	४४	पू	०	११	५०
बस्ती	२६	४८	प	०	९	२०
बहराइच	२७	३४	प	०	१५	०
बाँदा	२५	२८	प	०	२७	४०
बाराबंकी	२६	५६	प	०	१७	५०
बिजनौर	२९	२३	प	०	४८	३०
मथुरा	२७	२८	प	०	५३	१०
मिर्ज़ापुर	२५	१०	प	०	३	५०
मुज़फ्फरनगर	२९	२८	प	०	५२	४०
मुरादाबाद	२८	५०	प	०	४१	५०
मेरठ	२९	१	प	०	५२	३०
मैनपुरी	२७	१४	प	०	३९	४०
रामपुर	२८	४९	प	०	३९	५०
रायबरेली	२६	१४	प	०	१७	२०
राबर्ट्सगंज	२४	४९	प	०	०	५०
रुड़की	२९	५२	प	०	५१	१०
लखनऊ	२६	५५	प	०	२०	१०
ललितपुर	२४	२२	प	०	४५	२०
शाहजहाँपुर	२७	५४	प	०	३०	३०
सहारनपुर	२९	५८	प	०	५६	१०
सुल्तानपुर	२६	१६	प	०	८	५०
हमीरपुर	२५	५८	प	०	२८	०
हरदोई	२७	२३	प	०	२८	२०
हरिद्वार	२९	५८	प	०	४७	५०
हाथरस	२७	३६	प	०	४९	०
हल्द्वानी	२९	२३	प	०	३४	०
बिहार झारखण्ड उड़ीसा के प्रमुख नगर						
आरा	२५	३२	पू	०	१५	२०
औरंगाबाद	२४	४५	पू	०	१४	१०
कटक	२०	२८	पू	०	२९	०
कालाहाँडी	१९	४०	पू	०	०	०
किसनगंज	२६	१०	पू	०	५०	०
कोटापाद	११	०४	पू	०	२	४०
गया	२४	४९	पू	०	२०	४०
गंजाम	१९	२२	पू	०	२०	१०
गिद्धौर	२४	५१	पू	०	३३	०
चाइबासा	२२	३४	पू	०	३१	४०
छपरा	२५	४७	पू	०	१७	०
छोटानागपुर	२३	०	पू	०	२०	०
जमशेदपुर	२२	५०	पू	०	३१	४०
जोगबनी	२६	२५	पू	०	२६	२५
झरिया	२३	५०	पू	०	३५	३०
डाल्टेनगंज	२४	२	पू	०	१७	४०
डुमराँव	२५	३३	पू	०	१३	३०
तालचर	२०	५७	पू	०	२२	४०
दरभंगा	२६	१०	पू	०	२९	३०
देवघर	२४	३०	पू	०	३७	३०
बमरा	२०	४८	पू	०	३९	२०
पचगछिया	२५	५५	पू	०	३५	४०
पटना	२५	२५	पू	०	२२	१०
पुर्णिया	२५	२५	पू	०	४५	१०
पुरुलिया	२३	२०	पू	०	४६	१०
पुरी(जगन्नाथ)	१९	५१	पू	०	२८	४०
बक्सर	२५	३४	पू	०	११	४०
बराम्बा	२०	२५	पू	०	२३	५०
बलासोर	२१	३०	पू	०	३९	०
बेतिया	२६	४८	पू	०	१५	३०
भागलपुर	२५	१५	पू	०	४०	२०
भुवनेश्वर	२०	१७	पू	०	२८	४०
मधुबनी	२६	२१	पू	०	३१	१०
मयूरभंज	२१	५६	पू	०	३७	४०
मानभूमि	२३	२४	पू	०	३९	०
मुँगेर	२५	२३	पू	०	३५	०
मुज़फ्फरपुर	२६	७	पू	०	२४	३०
मोतिहारी	२६	४०	पू	०	१९	३०
रक्सौल	२७	०	पू	०	२०	०
रोहतासगढ़	२४	४०	पू	०	९	५०
राँची	२३	२३	पू	०	२३	५०
राउरकेला	२२	१२	पू	०	१९	०
संभलपुर	२१	२८	पू	०	१०	०
समस्तीपुर	२५	५५	पू	०	२८	२०
सासाराम	२४	५७	पू	०	१०	३०
सिवान	२६	१२	पू	०	१२	१०
सीतामढ़ी	२६	३५	पू	०	२५	२०
सोनपुर	२५	४२	पू	०	२२	१०
हजारीबाग	२४	०	पू	०	२४	१०
हथुआ	२६	२५	पू	०	१४	०
हासडीह	२४	३७	पू	०	४१	२०
हाजीपुर	२५	४१	पू	०	२२	२०
भारतवर्ष के प्रमुख नगर						
अकोला	२०	२०	प	०	५६	४०
अद्दूर(सेलम)	११	११	प	०	४३	३०
अनन्तनाग	३३	३३	प	१	१८	२०
अजमेर	२६	२६	प	१	२३	०
अमरावती	२०	२०	प	०	५२	०
अम्बाला	३०	३०	प	१	१	२०
अम्बिकापुर	२३	२३	प	०	८	२०
अलवर	२७	३४	प	१	३	४०
अहमदाबाद	२३	१	प	१	४३	४०
इन्दौर	२२	४४	प	१	११	०
उज्जैन	२३	९	प	१	११	४०
उदयपुर	२४	३२	पू	१	३२	३०
एकलिंगजी	२४	४३	प	१	३१	४०
ॐकारेश्वर	२२	१३	पू	१	९	३०
कच्छ	२३	२०	प	१	४५	५०
कलकत्ता	२२	३५	पू	०	५४	०
करनाल	२९	४२	प	१	०	०
कलिमपोंग	२७	५	पू	०	५५	०
कांगड़ा	३२	५	प	१	५	२०
कोचीन	९	५८	प	१	७	१०
कोयम्बटूर	११	०	प	१	०	०
कोल्हापुर	१६	४२	पू	१	२७	२०
कोहिमा	२५	४०	पू	१	५०	५०
खैरागढ़	२१	२६	प	०	२०	१०
गंगटोक	२७	१०	पू	०	५५	०
ग्वालियर	२६	१४	प	०	४८	२०
गिलगिट	३५	५५	प	१	२८	२०
गोधरा	२२	४५	प	१	३३	२०
गोलकुण्डा	१७	४१	प	०	४	५०
गोवा	१५	३०	प	१	३०	३०
चम्बा	३२	३९	पू	१	८	२०
चेन्नई	१३	७	प	०	२७	१०
जबलपुर	२३	१०	प	०	३०	०
जम्मू	३२	४४	प	१	२१	०
जयपुर	२६	५५	प	१	११	२०
जोधपुर	२६	२०	प	१	३९	२०
टीकमगढ़	२४	४५	पू	०	४०	३०
तिरुपति	१३	४०	प	०	३६	४०
थाणे	१९	२२	प	०	४०	०
दार्जिलिंग	२७	३	प	०	५३	०
दिल्ली	२८	३८	प	०	५८	०
दतिया	२५	३९	प	०	४५	३०
दुर्ग	२१	११	प	१	१६	३०
धवलपुर	२६	४१	प	१	४१	२०
धारवाड़	१५	२७	प	१	२०	०
नागपुर	२१	९	प	२	३९	०
पटियाला	३०	२०	प	१	४	१०
पुणे	१८	३०	प	१	३०	२०
बंगलौर	१२	५८	प	०	५३	४०
बड़ौदा	२२	१५	प	१	३८	१०
बर्दवान	२३	१६	पू	०	४९	०
बूँदी	२५	२७	प	१	१२	२०
भरतपुर	२७	१५	प	०	५५	०
भोपाल	२३	१६	प	०	५७	०
मालदह	२५	३	पू	०	५१	३०
मुम्बई	१८	५५	प	१	३१	०
रायपुर	२३	१५	प	०	१३	१०
रीवाँ	२४	३१	प	०	१५	१०
विजयनगर	१८	७	पू	०	४	३०
विलासपुर	२२	२	प	०	७	५०
शिमला	३१	६	प	०	५७	५०
सागर	२३	५०	प	०	४१	१०
हैदराबाद	१७	२४	प	०	४५	०
त्रिचनापल्ली	१०	५०	प	०	४२	२०
त्रिचूर	१०	३०	प	१	७	३०
त्रिवेन्द्रम्	८	२९	प	०	५५	०
विश्व के प्रमुख नगर						
करांची	२४	५१	प	२	३९	२०
कसूर	३१	७	प	१	२४	५०
कोलम्बो	६	५६	प	०	३०	३०
काठमाण्डो	२७	४२	पू	०	२३	०
काबुल	३४	३०	प	२	१७	०
टोक्यो	३५	४०	पू	९	१७	३०
ढाका	२३	४३	प	१	५	४०
न्यूयार्क	४०	४३	प	२९	११	१०
पेरिस	४८	५०	प	१३	२५	०
पेशावर	३४	२	प	१	५३	५०
पेरू	२७	२४	पू	१	२	२०
बर्लिन	५२	३२	प	१६	३५	५०
मास्को	५५	४५	प	७	३३	५०
रंगून	१६	४५	पू	२	१२	२०
लाहौर	३१	३७	प	१	२५	४०
लन्दन	५१	३०	प	१३	५०	५०
सिंगापुर	१	१७	पू	३	२७	५०
हैदराबाद(सिंध)	२५	२५	प	२	२३	४०

पलभाज्ञान सारिणी

१	०	२२	३४	३३	७	४७	३१
२	०	२५	९	३४	८	५	३८
३	०	३७	४४	३५	८	२४	७
४	०	५०	२१	३६	८	४३	५
५	१	३	०	३७	९	२	३५
६	१	१५	४०	३८	९	२२	३०
७	१	२८	२३	३९	९	४३	१
८	१	४१	१०	४०	१०	४	९
९	१	५४	०	४१	१०	२५	५३
१०	२	६	५०	४२	१०	४८	१८
११	२	१९	५५	४३	११	११	२४
१२	२	३३	०	४४	११	३५	१८
१३	२	४६	१२	४५	१२	०	०
१४	२	५९	२८	४६	१२	२५	३४
१५	३	१२	५४	४७	१२	५२	७
१६	३	२६	२४	४८	१३	१९	३७
१७	३	४०	५	४९	१३	४८	१७
१८	३	५३	५६	५०	१४	१८	५
१९	४	७	५५	५१	१४	४९	८
२०	४	२२	१	५२	१५	२१	३२
२१	४	३६	२२	५३	१५	५५	३
२२	४	५०	५३	५४	१६	३१	१
२३	५	५	३८	५५	१७	८	१४
२४	५	२०	३१	५६	१७	४७	२८
२५	५	३५	४२	५७	१८	२८	४४
२६	५	५१	७	५८	१९	१२	१३
२७	६	६	५२	५९	१९	५८	१८
२८	६	२२	४८	६०	२०	४७	७
२९	६	३९	४	६१	२१	३८	५३
३०	६	५५	४१	६२	२२	३४	६
३१	७	१२	१८	६३	२३	३३	४
३२	७	२९	५३	६४	२४	३६	१३

पलभा साधन– अयोध्या का अक्षांश २६।४८। पलभा चक्र में २६ अंश का फल = ५।५१।७ तथा अग्रिम २७ अंश का फल = ६।६।२५। दोनों फलों का अन्तर = ०।१५।४५। X शेष (अंक्षाश का कलामान) ४८ = ७२०।२१६०, ६० से भाग देने पर १२।३६। अतः इस फल को २६ अंश के जोड़ देने से २६।४८ अंक्षाश की स्फुट पलभा ६।३।४३ होगी। इसी तरह सभी स्थानों की पलभा सिद्ध हो जाएगी।

अवयव सहित पलात्मिका चर सारिणी। बगल में अक्षांश/उपर क्रान्त्यंश

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१३	२	४	७	९	१२	१४	१७	१९	२१	२४	२७	२९	३२	३४	३७	३९	४२	४५	४८	५०	५३	५६	५९	६२
	२५	५०	१६	४२	८	३५	२	३०	५९	३०	१	३३	७	४२	१९	५८	३९	२१	६	५४	४९	३७	३४	३२
१४	२	४	६	८	११	१३	१५	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३२	३४	३६	३९	४१	४४	४७	४९	५२	५५	५७
	१४	२८	४३	५७	१२	२८	४४	१	१९	३८	५७	१८	४०	४	२९	५६	२६	५५	२७	२	३९	१९	२	४८
१५	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२५	२७	२९	३१	३३	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०	५३
	३	६	९	१३	१६	२२	२६	३१	३८	४५	५३	२	१२	२४	३७	५१	८	२६	४६	८	३२	५९	२९	१
१६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३७	३९	४१	४३	४५	४८
	५२	४३	३५	२७	२०	१३	६	०	५५	५०	४७	४४	४३	४२	४३	४६	४९	५५	२	११	२३	३६	५२	११
१७	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४०	२१	१	४२	२३	४	४६	२९	१२	५५	४०	२५	१२	५९	४८	३८	२९	२२	१६	१३	११	१२	१३	१८
१८	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३२	३४	३६	३८
	२९	५८	२६	५६	२५	५५	२५	५६	२७	५९	३१	५	३९	१४	५०	२८	६	४६	२८	११	५६	४२	३१	२१
१९	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१७	३४	५२	९	२७	४५	३	२२	४१	१	२१	४२	४	२७	५१	१६	४२	८	३७	६	३७	१०	४४	२१
२०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	११	११	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८
	५	११	१६	२२	२८	३४	४०	४७	५४	२	१०	१९	२८	३८	४९	१	१४	२७	४२	५८	१६	३४	५४	१६
२१	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२२	२३
	५३	४७	४०	३४	२८	२२	१६	११	६	१	५७	५३	५०	४७	४५	४४	४३	४४	४५	४८	५०	५५	१	८
२२	०	१	२	२	३	४	४	५	६	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१७
	४१	२३	४	४५	२७	९	५१	३३	१६	५८	४१	२५	९	५३	३८	२३	१०	५७	४४	३३	२१	११	२	५४
२३	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५८	२७	५६	२५	५५	२४	५४	२४	५४	२४	५५	२६	५७	२९	१	३३	६	३९	१३	४८	२३	५९	३६
२४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१६	३३	५०	६	२३	४०	५७	१४	३१	४८	५	२३	४०	५८	१६	३५	५३	१२	३१	५०	१०	३०	५१	१२
२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	१	५	९	१४	१८	२३	२८	३२	३७	४२
२६	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	३१	४०	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३
२७	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९
	२२	४४	६	२८	५०	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५३	१७	४१	५	३०	५५	२०	४७	१३	४०	८	३५
२८	०	१	१	२	२	३	४	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५
	३५	११	४६	२२	५७	३३	९	४५	२१	५८	३५	१२	५०	२८	७	४६	२६	६	४७	२९	११	५५	३९	२४
२९	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
	४९	३८	२७	१६	५	५४	४४	३५	२५	१६	७	५९	५१	४४	३७	३२	२७	२३	२०	१८	१६	१७	१८	२१
३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२२	२३	२४	२६	२७
	३	५	८	११	१४	१८	२२	२६	३१	३६	४२	४८	५५	३	२२	२२	३३	४५	५८	१२	२८	४५	४	२५
३१	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१२	१४	१५	१७	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१७	३४	५१	८	२५	४३	१	२०	३९	५९	२०	४१	४	२७	५२	१७	४४	१२	४२	१३	४६	२२	५९	३८
३२	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
	३१	२	३४	६	३८	१०	४३	१७	५१	२६	२	३८	१६	५५	३६	१८	१	४६	३३	२२	१२	६	२	०
३३	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४४	४६
	४६	३२	१८	५	५३	३९	२७	१६	५	५६	४७	३९	३३	२८	२५	२४	२४	२६	३०	३७	४६	५९	१४	३२
३४	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२९	३१	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५३
	१	२	४	५	७	१०	१३	१८	२३	२९	३६	४५	५५	७	२०	३६	५४	१३	३६	१	२९	२	३५	१४
३५	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२३	२३	२५	२७	३०	३२	३५	३७	४०	४३	४५	४८	५१	५४	५७	६०
	१६	३३	५०	७	२५	४३	२	२२	४३	६	२९	५५	२१	५०	२१	५४	३०	८	४९	३३	२१	१२	७	०

इस पञ्चाङ्ग द्वारा किसी इष्टस्थान के शुद्ध इष्टकाल, ग्रहगणित, दिनमान तथा तिथ्यादि के आयनन का संक्षेप में प्रकार।

१. देशान्तर– इष्टस्थान का काशी से देशान्तर देखकर यदि पूर्व हो तो धन (+) और पश्चिम हो तो ऋण (–) चिह्न कर एक स्थान पर लिखें।

२. चरान्तर– क्रान्ति तथा इष्टदेश के अक्षांश से चरान्तर ज्ञात करें। क्रान्ति के अंश और कला का फल, इष्ट देशीय अक्षांश के अंश तथा इसके अग्रिम अंश कला द्वारा अलग–अलग ग्रहण करें इन दोनों फलों के इष्ट अक्षांश से प्राप्त कलातुल्य फल के अनुमान का इष्टदेशीय अक्षांश से प्राप्त पूर्णफल में स्थिति वश योगान्तर ही चरान्तर है। यह फल केवल दो अवस्था में धन होगा। १. यदि इष्ट स्थान का आक्षांश काशी के अक्षांश (२५।१८) से अधिक हो तथा क्रान्ति उत्तरा हो। २. इष्टस्थान का अक्षांश काशी के अक्षांश (२५।१८) से कम तथा क्रान्ति दक्षिणा हो तो फल धन (+) होगा अन्यथा फल ऋण (–) होगा। देशान्तर की तरह इस चरफल को भी + या – संकेत कर देशान्तर के पास लिख लें।

३. इष्टफल– देशान्तर तथा चरान्तर दोनों के धन (+) होने पर योग फल धन (+), दोनों के ऋण (–) होने पर योगफल ऋण (–), दोनों में धन (+) अधिक होने पर अंतर धन (+), ऋण (–) अधिक होने पर अंतर ऋण (–) होगा। इस इष्टफल का भी (+) या (–) जैसा हो तीसरे स्थान पर लिखें और इसकी संज्ञा 'इष्टफल' समझे। *चरान्तर तथा इष्टफल दिनमानादि का साधन निम्नलिखित प्रकार से होगा।*

१. इष्टदेशीय दिनमान– काशी के दिनमान में द्विगुण चरान्तर का संस्कार करने से इष्टदेशीय शुद्ध दिनमान होगा।

२. इष्टदेशीय तिथि नक्षत्रादि– पूर्वागत धन + या ऋण – 'इष्टफल' यदि धन (+) हो तो काशी के तिथ्यादि घटी पल में योग करें। यदि ऋण (–) हो तो घटा देने से इष्टदेशीय तिथ्यादि का मान होगा।

३. इष्टदेशीय जन्मेष्टकाल– यदि जन्म समय रेलवे घड़ी के अनुसार मालूम हो तो उसमें पञ्चाङ्गस्थ रेलवे अन्तर धन (+) का ऋण (–) और ऋण (–) का धन (+) करने से काशी का इष्टकाल घं.मि. में होगा। इस घं.मि. का घटीपल बना लें। पुनः पुर्वागत + या – 'इष्टफल' का संस्कार करने पर इष्टदेशीय स्पष्ट इष्टकाल होगा।

४. ग्रहगणित– तद्देशीय इष्टकालवश ग्रहों के दिनादि चालन में 'इष्टकाल' का विलोम संस्कार धन (+) हो तो ऋण (–) ऋण (–) हो तो धन (+) करने पर इष्टदेशीय ग्रहगणित के लिए शुद्ध चालन होगा।

संदिग्धव्रतोपवास तथा पर्व निर्णय

१) **वटसावित्री व्रत-** ज्येष्ठकृष्ण अमावस्या को वटसावित्री व्रत होता है। वटसावित्री व्रत त्रयोदशी से तीन दिनों का व्रत होता है। अमावस्या के दिन के निर्णय से तीन दिन तक व्रत किया जाता है। इस व्रत में अमावस्या सूर्यास्तकाल से पूर्व तीन मुहूर्त्त व्यापिनी चतुर्दशी विद्धा ग्राह्य है। इस वर्ष ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दशी घट्यादि १३।४९ (दि. १०।५४) तक है तथा इसके बाद अमावस्या लग जाती है, जो सूर्यास्तकाल से पूर्व तीन मुहूर्त्त से भी अधिक मिल रही है। अतः **दिनांक १७ मई रविवार को ही वटसावित्री व्रत होगा। व्रत का प्रारम्भ १५ मई शुक्रवार को होगा।**

२) **रथयात्रा-** आषाढ़शुक्ल द्वितीया को रथयात्रा होती है। द्वितीया को पुष्य नक्षत्र का योग प्रशस्त माना गया है। *''आषाढ़ शुक्ल द्वितीयायां पुष्य नक्षत्र युतायां केवलायां वा श्रीरामरथोत्सवः''* धर्मसिन्धुः। शुद्धआषाढ़शुक्ल ति. १ शुक्रवार को प्रतिपदा घट्यादि ३।२३ (प्रा. ६।३९) तक है। इसके बाद द्वितीया तिथि आ जाती है तथा इसी दिन पुष्य नक्षत्र भी घट्यादि २७।४२ (दि. ४।२३) तक है। द्वितीय दिन शनिवार को द्वितीया तिथि घट्यादि ५।५३ (दि. ७।३९) तक है, जो २ मुहूर्त्त से अधिक औदयिक द्वितीया है अतः इसी दिन दिनांक १८ जुलाई २०१५ दिन शनिवार को रथोत्सव मनाया जायेगा।

३) **दूर्वाष्टमी-** दूर्वाष्टमी व्रत भाद्रपदशुक्लाष्टमी को किया जाता है। लेकिन कन्या के सूर्य तथा अगस्त्योदय में दूर्वाष्टमी व्रत करने का निषेध है। इस वर्ष भाद्रपदशुक्ल अष्टमी के पूर्व अगस्त्योदय तथा कन्याराशि के सूर्य भी आ रहे हैं। अतः **भाद्रपदशुक्लाष्टमी दूर्वाष्टमी।** *सा पूर्वाग्राह्या। इदं दूर्वापूजनव्रतं कन्यार्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम्। अत्रागस्त्योदये भाविनि सति पूर्वकृष्णाष्टम्यामेव कुर्यादिति।* अतः धर्मसिन्धु के इस वचनानुसार **पूर्व पक्ष (भाद्रकृष्णा) में मध्याह्नव्यापिनी अष्टमी में दिनांक ५।९।२०१५ शनिवार को दूर्वाष्टमी व्रत करना चाहिए।**

४) **आश्विनशुक्ल प्रतिपत् कलशस्थापना-** चित्रा नक्षत्र तथा वैधृति योग में कलशस्थापन करने का निषेध है। *''त्वाष्ट्र वैधृति युक्ता चेत्प्रतिपच्चण्डिकार्चने। तयोरन्ते विधातव्यं कलशारोपणं गृहे।।''* आश्विनशुक्ल १ भौम इस दिन सम्पूर्ण चित्रा तथा वैधृति व्याप्त है। सम्पूर्ण प्रतिपदि *चित्रा वैधृति सत्वे मध्यदिनेऽभि जिन्मुहूर्त्ते कलशस्थापनमुक्तम्।''* जब चित्रा तथा वैधृति सम्पूर्ण प्रतिपत् तिथि में व्याप्त रहें तो मध्याह्न में अभिजिन्मुहूर्त्त में कलशस्थापन करना चाहिये। अतः **आश्विनशुक्ल प्रतिपत् मंगलवार (१३।१०।२०१५) को अभिजिन्मुहूर्त्त (दिन में ११।३७ से १२।२३ तक) कलशस्थापन करना चाहिये।**

५) **होलिका दाह-** फाल्गुनशुक्ल पूर्णिमा को होलिकादाह होता है। *''सा प्रदोषव्यापिनी भद्रा रहिता ग्राह्या''* प्रदोषकाल व्यापिनी भद्रा रहित पूर्णिमा होलिका के लिये ग्राह्य है। इस वर्ष पूर्णिमा फाल्गुनशुक्ल मंगलवार को घट्यादि २१।१४ (दि. २।२९) से प्रारम्भ हो रही है तथा बुधवार २३ मार्च को पूर्णिमा घट्यादि २५।२४ (दि. ४।८) पर समाप्त है। पूर्वदिन दिनांक २२ मार्च मंगलवार को ही प्रदोषकाल में पूर्णिमा मिल रही है, लेकिन इस दिन भद्रा भी घट्यादि २१।१४ (दि. २।२९) से घट्यादि ५३।१९ (रा. ३।१९) तक है। भद्रा समाप्ति (रा. ३।१९) के बाद होलिकादाह का शुद्ध समय मिल रहा है। अतः इस वर्ष फाल्गुनशुक्ल १४ मंगलवार (२२।३।२०१६) को भद्रा के बाद होलिकादाह करना चाहिये। दिनांक २३।३।२०१६ बुधवार को सायंकाल प्रतिपदा मिल रही है अतः काशी में होली मनाई जायेगी तथा सायं चतुःषष्ठी देवी यात्रा होगी। **अन्यत्र दिनांक २४।३।२०१६ गुरुवार को होली वसन्तोत्सव मनाया जायेगा।**

(पृष्ठ ३ का शेष)

कार्त्तिकशुक्ल से मार्गशीर्षकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में तेजी का रुख रहेगा। पशुओं को रोग होंगे। पूर्वोत्तर राज्यों में यान दुर्घटना तथा कृषि विनाशक तत्वों का उदय होगा। जनापहरण तथा यान दुर्घटनायें घटित होंगी। कार्तिकशुक्ल के अंत में सर्राफा बाजार में महँगी दीख पड़ेगी। श्वेत पदार्थ सस्ते होंगे। ऊनी वस्त्र मेवे तथा काष्ठ उपकरण महँगे होंगे। गोरस का उत्पादन बढ़ेगा, किन्तु उसके भाव में तेजी पूर्ववत रहेगी। **कार्तिकशुक्ल** ४,६,१०,१३ तथा **मार्गशीर्षकृष्ण** ४,६,१०,१२,१४ उपद्रवकारी रहेंगे।

मार्गशीर्षशुक्ल से पौषकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में सस्ती का रुख रहेगा। पश्चिमोत्तर सीमान्त राज्यों में जन संघर्ष की घटनायें घटित होंगी। शैक्षणिक संस्थाओं में राजनीतिक उपद्रव होंगे। लाल पदार्थ महँगे होंगे। सर्राफा बाजार में सस्ती का रुख रहेगा। मौसम अच्छा रहेगा। खरीफ का उत्पादन संतोषजनक होगा। दुर्घटनायें अधिक होंगी। फल तथा तरकारी के मूल्य में सस्ती का रुख होगा। **मार्गशीर्षशुक्ल** २,४,९,१२ तथा **पौषकृष्ण** २,४,९,११,१४ उपद्रवकारी रहेंगे।

पौषशुक्ल से माघकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। रुई, जूट तथा श्वेत वस्त्रों के मूल्य में तेजी आयेगी। सर्राफा बाजार में भी उत्तरोत्तर तेजी रहेगी। रंगीन वस्त्र महँगे होंगे। चमड़े का सामान, मसाला तथा ऊनी वस्त्र महँगे होंगे। वायुवेग के साथ थोड़ी वर्षा होगी। शीतलहरी का प्रकोप बढ़ेगा। चावल, चीनी के भाव में सस्ती का रुख रहेगा। लाल पदार्थ महँगे होंगे। **पौषशुक्ल** २,७,१०,१४,१५ तथा **माघकृष्ण** २,५,९,१३,१४ उपद्रवकारी रहेंगे।

माघशुक्ल से फाल्गुनकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। वायुवेग के साथ थोड़ी वर्षा भी होगी। सोने-चाँदी के मूल्य में तेजी बनी रहेगी। सूती वस्त्र सस्ते होंगे। यान दुर्घटना तथा अपहरण की घटनायें घटित होंगी। तेलहन के मूल्य में सामान्य सस्ती का रुख रहेगा। पीले पदार्थ महँगे होंगे। गोरस के मूल्य में तेजी बनी रहेगी। साग-तरकारी के मूल्य में सस्ती बनी रहेगी। ग्रह योग वश जन संघर्ष या अपहरण की घटनायें घटित होंगी। **माघशुक्ल** १,६,९,१३,१४ तथा **फाल्गुनकृष्ण** १,५,७,१२,१४ उपद्रवकारी रहेंगे।

फाल्गुनशुक्ल से चैत्रकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में सस्ती का रुख रहेगा। चार ग्रहों का योग आकस्मिक वर्षा, नरसंहार की घटनायें तथा साम्प्रदायिक तनाव को देने वाली है। फाल्गुनशुक्ल के अंत में सोने-चाँदी के मूल्य में सस्ती का रुख रहेगा। गुड़, आलू तथा चावल का संग्रह करना भविष्य के लिए लाभदायक रहेगा। चैत्रकृष्ण में महामारियों की अधिकता दीख पड़ेगी। बालरोग की अधिकता रहेगी। सर्राफा बाजार में सस्ती आयेगी। **फाल्गुनशुक्ल** ४,७,११,१४ तथा **चैत्रकृष्ण** ३,६,१०,१३ उपद्रवकारी रहेंगे।

सिंहस्थ गुरु का विचार

इस वर्ष संवत् २०७२ अधिकआषाढ़शुक्ल १४ बुधवार (१ जुलाई २०१५) से गुरु सिंहराशि के हो जायेंगे। सिंह के गुरु का दोष गोदावरी नदी के उत्तर तट से भागीरथी(गंगा) के दक्षिण तट के मध्य में स्थित प्रदेशों में होने से सिंहस्थ गुरु में विवाहादि शुभ कार्य करने का निषेध है। इसके अन्यत्र के स्थानों में सिंहस्थ गुरु का दोष नहीं लगेगा। जो पञ्चाङ्ग में विवाहादि शुभ मुहूर्त्त लिखे गये हैं, वे केवल गंगा और गोदावरी मध्यवर्त्ती स्थानों को छोड़कर लिखे गये हैं। यथा रामाचार्य नें मुहूर्त्त चिन्तामणि के शुभाशुभ प्रकरण में लिखा है-

सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत्।
भागीरथी याम्यतटे हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे।।

अर्थात् सिंहराशि में सिंह के नवमांश तक गुरु के रहने पर शुभ कार्य करने का निषेध है। अर्थात् मघा नक्षत्र के चारों चरण तथा पूर्वाफाल्गुनी के एक चरण(४।०।० से ४।१६।४०) भोगकाल तक ही निषेध है। इसके बाद सिंहराशि के शेष अंशो में शुभकार्य किये जा सकते हैं।

शनि की साढ़ेसाती तथा ढैया संवत् २०७२

इस बार वर्षपर्यन्त शनिदेव वृश्चिकराशि पर ही रहेंगे। अतः तुला, वृश्चिक तथा धनुराशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती रहेगी। मेष एवं सिंहराशि वालों के लिएं शनि की ढैया रहेगी। धनुराशि वालों के लिए सिर पर, वृश्चिकराशि वालों के लिए हृदय पर तथा तुलाराशि वालों के लिए पैर पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

जिन राशि वालों के लिए शनि की ढैया, साढ़ेसाती चल रही हो उन्हें सुन्दरकाण्ड, रामायण या हनुमान चालीसा का नित्य पाठ तथा शनि का व्रत करना चाहिये। शनिवार को प्रातः काल पीपल वृक्ष में जल दान तथा सायंकाल दीपदान करना चाहिये। काले घोड़े की नाल की अँगूठी शनिवार को मध्यमा अँगुली में धारण करना चाहिये। शनिवार का व्रत तथा शनि का दान करना चाहिये।

नासिक कुम्भ पर्वः- इस वर्ष नासिक में सिंहस्थ महाकुम्भ योग लग रहा है। नासिक महाकुम्भ पर्व के अन्तर्गत सम्पन्न होने वाले कुछ प्रमुख आयोजन तथा शाही स्नान की तिथियाँ श्री गंगा गोदावरी पंचकोठी (पुरोहित) संघ, सिंहस्थ समिति नासिक के निर्णयानुसार दी जा रही है-

श्रावणशुक्ल पञ्चमी- (१९ अगस्त, २०१५ ई०) साधूग्राम अखाड़ा ध्वजारोहण।
प्रथम शाही स्नान- (२९ अगस्त, २०१५ ई०) श्रावणशुक्ल पूर्णिमा।
द्वितीय शाही स्नान- (१३ सितम्बर, २०१५ ई०) भाद्रपदकृष्ण अमावस्या।
तृतीय शाही स्नान- (१८ सितम्बर, २०१५ ई०) ऋषिपञ्चमी।

कन्या के विवाह में अवरोध होने पर सिद्धिप्रद अनुष्ठान

आजकल कन्या के विवाह की समस्या प्रायः प्रत्येक गृहस्थ के समक्ष उपस्थित होती है। इसके लिये माता-पिता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शास्त्रों में वर्णित **'कात्यायनी देवी'** का अनुष्ठान बड़ा ही अनुभूत व सिद्धिप्रद है। जनसाधारण की जानकारी व जनहित में इस मंत्र के अनुष्ठान की विधि दी जा रही है। इसे नियम व श्रद्धापूर्वक करने या कराने से कन्या के विवाह में आने वाले विघ्न दूर होते हैं व विवाह सकुशल सम्पन्न हो जाता है।

जप की विधि- यह जप केले के सूखे पत्ते की आसनी पर बैठ कर कमलगट्टे की माला से किया जाता है। जप के समय कड़ुआ तेल का दीपक जलते रहना चाहिये। जिस व्यक्ति को यह अनुष्ठान करना हो उसे लाल या पीला वस्त्र पहनकर २१ दिन (जप काल) तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। इस मन्त्र का जप जपकर्त्ता को पान खाते हुए करना चाहिये। इस जप का ४१००० पुनश्चरण है, प्रथम दिन मन्त्र का १००० जाप करें व उसके बाद २० दिनों तक प्रतिदिन २००० मन्त्र का जाप करें। जपकाल में प्रतिदिन केले के वृक्ष का पूजन पंचोपचार विधि से करें। भोग व प्रसाद के रूप में पीले पेड़े का प्रयोग करना चाहिये।

मन्त्र- *कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।*
नन्दगोप सुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः।।

अनुष्ठान के अन्त में दशांश हवन, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। भोजन में पीला मिष्ठान्न अवश्य परोसें।

दीपावली पूजन का शुभ मुहूर्त्त

कार्त्तिककृष्ण ३० बुधवार (११।११।२०१५) को दीपावली का शुभ पर्व होगा। दीपावली पूजन का मुख्यकाल **प्रदोषकाल** होता है। जिसमें स्थिर लग्न की प्रधानता होती है। अतः वृष, सिंह या कुम्भ लग्न में दीपावली पूजन करना चाहिये। इस दिन वृषलग्न सायं ५।४७ से रात्रि ७।४३ तक है। जो दीपावली पूजन के लिए उत्तम समय है। इसके पश्चात् अर्धरात्रि में सिंहलग्न में रात्रि १२।१५ से रात्रि २।२९ तक दीपावली का पूजन होगा। इसके अतिरिक्त दिन १।११ से दिन २।४२ तक कुम्भलग्न में गणेश (कुबेरादि देवताओं का पूजन) किया जा सकता है।

सूचना

पाठकगण इस बात का विशेष ध्यान दें कि असली हृषीकेश पञ्चाङ्ग (हृषीकेश पञ्चाङ्ग के आद्य प्रधान संपादक स्व० पं० श्याममूर्ति उपाध्याय के सुपुत्र) पं० शिवमूर्ति उपाध्याय द्वारा सम्पादित होता है तथा विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन- बी. २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी द्वारा ही प्रकाशित होता है।

कुण्डली मिलाने की रीति

फलित ग्रन्थों के द्वारा स्त्री नाशक या पति नाशक जो योग है उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है।

कुण्डली में लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह का होना प्रायः पति नाशक या पत्नी नाशक है, इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते हैं। यह पण्डितों का अनुभव है कि सबसे अधिक दोषकारक मंगल उससे कम बाकी पापग्रह होते हैं।

इस योग को चन्द्रमा शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए। द्वितीय सप्तम भावों में भी पापयोग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम, अष्टम स्थान में पापयोग होना भी अधिक अनिष्ट है। द्वितीय तथा अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश, अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश का सप्तम में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धकयोग भी वैधव्य सूचक प्रायः होते है। इन योगों के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु, सन्तान और भाग्ययोग को देखना युक्ति संगत है।

प्रश्नलग्न या जन्मलग्न से स्त्री की कुण्डली में छठे या आठवें चन्द्रमा हो, लग्न या सातवें पापग्रह हो, लग्न में चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो वैधव्यकारक योग होता है।

यदि कन्या को प्रवल वैधव्ययोग हो तो अश्वत्थ विवाह, कुम्भ विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवी वर के साथ विवाह किया जाय तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता, परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ, सप्तम, नवम् अष्टम्, द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिये अनिष्टप्रद होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना भी अच्छा नहीं होता। ज्योतिष फलित शास्त्र में दो ही वस्तुओं की अधिक प्रधानता है- लग्न और चन्द्रमा। लग्न को शरीर और चन्द्रमा को मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्मराशि के वश मेलापक विचार किया जाता है। गणना जन्मनाम से देखी जाती है। विवाह यात्रा उपनयन, चूड़ा गोचर विचार मंगल कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्मनाम ही प्रधान है। जन्म नाम न मिलने पर प्रसिद्ध नाम से गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हो तो अन्तिम नाम ग्रहण कर गणना देखने का विधान है। किसी का जन्म और प्रसिद्ध और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्मनाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम और दूसरे के जन्मनाम ग्रहण कर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर कन्या यदि एक ही गोत्र के हों तो विवाह नहीं करना चाहिए।

प्रधान सम्पादक एवं सत्वाधिकारी
पं० शिवमूर्ति उपाध्याय 'ज्योतिषी'
मोबाइल- ०९३३५६६०६३१
सहायक सम्पादक
पं० वीरवरमणि त्रिवेदी 'ज्योतिषी' (गणित एवं फलित)

कार्यालय
विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन
बी- २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी।
E-mail : shivmurti.vikrampanchang@gmail.com

सूचित किया जाता है कि हमारे यहाँ कुण्डली बनाने की दक्षिणा निम्नलिखित है :-

कुण्डली	सर्वोत्तम	१५०० रू०
कुण्डली	उत्तम	११५१ रू०
कुण्डली	साधारण	५५१ रू०
वर्षफल	साधारण	१५०० रू०
मेलापक	साधारण	२५१ रू०

भुगतान 'विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन' के नाम ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा रू० ५० डाक व पैकिङ्ग व्यय प्रति कुण्डली अलग से जोड़ कर उपरोक्त पते पर ही भेजें। कुण्डली बनवाने हेतु जन्मसमय, जन्मस्थान, दिनांक मास एवं ई० सन् तथा पिता का नाम स्पष्ट लिख कर भेजना आवश्यक है।
विशेष-अग्रिम भुगतान के बिना पत्र पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

पञ्चाङ्गस्थ विषयों की संक्षिप्त सूची

चैत्रशुक्ल	वास्तुपरीक्षा, रामनवमीव्रतविधि।
वैशाखकृष्ण	नित्यस्मरणीयपाठ, हलप्रवहणचक्र।
वैशाखशुक्ल	मासतिथिशुद्धिफल, यात्रानिषेधयुगादितिथि दानफल।
ज्येष्ठकृष्ण	एकादशीव्रतके अधिकारी, उपवासादिषट्कर्म।
शु.आषाढ़कृष्ण	वृष्टिविचार, एकादशी माहात्म्य।
अ.आषाढ़शुक्ल	अधिमास में कार्यनिरुपण।
अ.आषाढ़कृष्ण	अधिमास में दान।
शु.आषाढ़शुक्ल	शुभाशुभनिर्णय, वायुपरीक्षाकरग्रहण, आखेट मुहूर्त, वृक्षारोपण।
श्रावणकृष्ण	समस्त प्रदोषनिर्णय, सप्तनाड़ीविचार शनि शुक्रादि पद विचार।
श्रावणशुक्ल	कलोत्थान, नागपञ्चमी, स्नानक्षौरक्रियाविचार।
भाद्रकृष्ण	व्रतनक्षत्रकारक, पारणसमय-चन्द्रादिअर्घ्यदान।
भाद्रशुक्ल	हरितालिका, अनन्तव्रतनिर्णय।
आश्विनकृष्ण	श्राद्धकालनिर्णय, जीवत्पुत्रिकानिर्णय।
आश्विनशुक्ल	कलशस्थापन, कन्यापूजनविधि।
कार्तिककृष्ण	हनुमज्जन्मनिर्णय, तुलाके में दीपदानमाहात्म्य।
कार्तिकशुक्ल	सूर्यषष्ठीनिर्णय, यमद्वितीयानिर्णय।
मार्गशीर्षकृष्ण	अस्तविचार, गर्भसम्बन्धीप्रश्न तथा मार्गशीर्षादि मासों में रविवार व्रत में भोज्यपदार्थ।
पौषकृष्ण	विविधव्रतोत्सव।
पौषशुक्ल	मूलिकाग्रामपदसाधन तथा भावकारक निम्न चन्द्रज्ञान भूमिशयन परिहार।
माघशुक्ल	माघस्नानियम, माघ में दानवस्तु।
फाल्गुनकृष्ण	शिवरात्रिव्रत महात्म्य।
फाल्गुनशुक्ल	होलाष्टकनिर्णय, होलिकादहनादि निर्णय।
चैत्रकृष्ण	मन्वादितिथिनिर्णय, तिथिनिर्णय।

पञ्चाङ्ग देखने की विधि

काशी से प्रकाशित यह पञ्चाङ्ग सर्वमान्य है, अतः इसके देखने की विधि पुनः लिखने की आवश्यकता न होने पर भी सुविधार्थ दिया जाता है। इस पञ्चाङ्ग के मुख्यतः दो खण्ड हैं (१) स्थिर विषय- जिसमें पृष्ठ १ से १० तक तथा ३५ से ४२ हैं। प्रत्येक पक्ष में भी कुछ स्थिर विषय हैं, जिनकी सूची पूर्व स्तम्भ में दी गयी है। (२) परिवर्तनीय विषय:- ११-३४ तथा ४० से ४२ पृष्ठों में दिये गये हैं।

चैत्रादि पक्ष- पृष्ठ ११ से ३४ तक चैत्रादि पक्ष दिये गये हैं। प्रत्येक पृष्ठ के चार भाग हैं (१) बीच की काली लाइन के ऊपर का (२) सूर्योदय कालीन ग्रह (३) विविध मुहूर्त तथा लग्नसारिणी, (४) स्थिर विषय।

भाग १- बीच की काली लाइन के ऊपर के भाग (१) में पञ्चाङ्ग विशेष क्रम से दिनमान, तिथि, वार, घटी, घं.मि. में रात्रि (रा.) दिन (दि.) प्रातः (प्रा.) सायं (सा.) के संकेत से समाप्ति का काल दिया गया है। इसी प्रकार नक्षत्र तथा योग का भी सूर्योदय से घटी पल तथा घं.मि. से पूर्वोक्त तिथि की तरह मान दिया गया है। नक्षत्र इत्यादि करणों का मान केवल घटी में दिया गया है। 'योग' कोष्ठ के अन्तर्गत आनन्दादि योग दिये गये हैं। अ.सौ. ने.रा. सांकेतिक चिह्नों का अर्थ क्रमशः अंग्रेजी, फसली, सौर तथा नेपाली राष्ट्रीय सायन दिनांक है। च.रा.प्र. के कोष्ठ के अन्तर्गत चन्द्रमा का राशि परिवर्तन काल घटी पल में दिया जाता है तथा उसका घं.मि. उसी के सामने संस्कृत की पंक्ति में रा.दि.प्रा. के संकेत से दिया गया है। पञ्चाङ्गस्थ सूर्योदय सूर्यास्त तथा सभी घं.मि. काशी के स्पष्ट मान से दिया जाता है। इसी तरह तिथि नक्षत्र आदि का मान घं.मि. में स्पष्ट मान से दिया जाता है। 'औ स्प. सू.' स्तम्भ में सूर्योदय काल में स्पष्ट सूर्य काशी का दिया जाता है। उसके बगल में सूर्यक्रान्ति दी जाती है यह दक्षिणा (द.) उत्तरा (उ.) के संकेत से दी जाती है।

रेलवे टाइम संस्कार- 'रे.अं.' की पञ्चाङ्गस्थ सभी घं.मि. में संकेतानुसार संस्कार करने पर काशी का स्टैण्डर्ड टाइम होगा। भारतीय (रे.प्र.) स्टैण्डर्ड टाइम की सूर्य घड़ी के मान में परिणीत करने के लिये आवश्यक है, कि पञ्चाङ्गस्थ रे.अं. का विलोम संस्कार करें। रेल अं. यदि धन (+) चिह्न का हो तो स्टै. टाइम में घटावें तथा ऋण (-) चिह्न का हो तो जोड़ देने से घं.मि. होगा, उसका घटी पल काशी का स्पष्ट मान हो जायेगा। रेलवे अन्तर के बाद की संस्कृत लाइनों में सर्वप्रथम भ. (भद्रा) और उसके बाद चन्द्रमा जिस राशि पर रहते हैं उसका निर्देश किया जाता है। इन्हीं पंक्तियों में सूर्य का नक्षत्रचार भी दिया जाता है तथा सभी शुद्ध व्रतोपवास पर्व दिये जाते हैं। व्रतोपवास में संदेह होने पर निर्णय ४० पृष्ठ पर दिया जाता है। पंक्ति में सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, यमघंट, द्विपुष्कर, रवियोग तथा यायी स्थायी, संधिकर योग दिया जाता है। इस पञ्चाङ्ग में उ. (उपरान्त) या. (यावत्) समझना चाहिये। योगादि का लिखित घटी पल सभी नक्षत्र या तिथि के घटी पल के बराबर होता है। अतः तिथि नक्षत्र के घ. प. को मिलाकर उसका घं.मि. समझना चाहिये।

भाग २- सूर्योदयकाल के मंगल से राहु तक ग्रह दिये जाते हैं। किसी दिन के ग्रह का द्वितीय दिन के ग्रह से अन्तर करने पर उस दिन की ग्रह की गति होगी। उसका इष्टकाल से गुणा करके ६० से भाग देने पर चालन होगा। उसको इष्ट तिथि के औदयिक ग्रह में जोड़ देने से इष्टकाल का ग्रह होगा। मार्गी ग्रहों का गणित सूर्य की तरह वक्री या राहु की तरह सदैव जानना चाहिये। राहु की राशि में ६ राशि जोड़ देने से केतु का मान हो जायेगा। सूर्योदयकालीन भौमादिग्रहों के नीचे उनका राशि नक्षत्रचार भी दिया गया है।

॥ विविध मुहूर्त ॥

॥ चौलकर्म (मुण्डन) मुहूर्त ॥

वैशाख कृ. ति. ११ बुध को शतभिष में (ल. २)
वैशाख शु. ति. ५ गुरु को मृगशिरा में (ल. ३)
ज्येष्ठ कृ. ति. २ बुध को दि. ११।५१ के बाद ज्येष्ठा में (ल. ४)
ज्येष्ठ शु. ति. २ बुध को मृगशिरा में (ल. ३ वा ४)
ति. ४ शुक्र को रिक्ता बाद पुनर्वसु में (ल. ३ वा ४)
शु.आषा.कृ. ति. ९ गुरु को दि. ११।१९ के बाद रेवती में (ल. ६)
ति. ११ शुक्र को रेवती में (ल. ४)
माघ शु. ति. १० बुध को वैधृति बाद मृगशिरा में (ल. २)
फाल्गुन कृ. ति. ३ गुरु को दि. १०।४२ से भद्रा पूर्व हस्त में (ल. १)

॥ वधूप्रवेश/द्विरागमन मुहूर्त ॥

वैशाख कृ. ति. ११ बुध को शतभिष में द्विरागमन (ल. २ वा ३)
वैशाख शु. ति. ४ बुध को रिक्ता बाद मृगशिरा में द्विरागमन (ल. ३)
ति. ५ गुरु को मृगशिरा में वधूप्रवेश (ल. ३) द्विरागमन (ल. ३)
ति. ६ शुक्र को दि. २।४५ के बाद पुनर्वसु में द्विरागमन (ल. ३)
ति. ११ बुध को भद्रा बाद उ.फा. में द्विरागमन (ल. ६)
ति. १२ गुरु को उ.फा. में वधूप्रवेश (ल. ८)
ज्येष्ठ कृ. ति. ११ गुरु को रेवती में वधूप्रवेश (ल. ३)
ति. १२ शुक्र को रेवती में वधूप्रवेश (ल. ६)
ज्येष्ठ शु. ति. ४ शुक्र को रिक्ता बाद पुनर्वसु में द्विरागमन (ल. ३)
ति. १० गुरु को उ.फा. में वधूप्रवेश-द्विरागमन (ल. ६)

फाल्गुन शु. ति. ३ शुक्र को सा. ६।५३ से रा. १२।४६ तक अश्विनी में वधूप्रवेश-द्विरागमन (ल. ७)

॥ गृहारम्भ / गृहप्रवेश मुहूर्त ॥

वैशाख शु. ति. ७ शनि को दि. ४।२२ से रा. ७।८ तक पुष्य में गृहारम्भ (च.शु.)
ति. ११ बुध को भद्रा बाद उ.फा. में गृहारम्भ-गृहप्रवेश (ल. १२)
ति. १२ गुरु को उ.फा. में गृहारम्भ (ल. ८) गृहप्रवेश (ल. २ वा ८)
ज्येष्ठ कृ. ति. ११ गुरु को रा. २।४४ के बाद रेवती में गृहप्रवेश (च.शु.)
ति. १२ शुक्र को रेवती में गृहप्रवेश (ल. २ वा ६)
ज्येष्ठ शु. ति. ६ बुध को रिक्ता बाद उ.फा. में गृहप्रवेश (ल. ६ वा २)
ति. १० गुरु को उ.फा. में गृहप्रवेश (ल. २)
ति. १२ शनि को व्यतिपात बाद चित्रा में गृहप्रवेश (ल. ६)
श्रावण कृ. ति. २ शनि को दि. ३।४६ के बाद धनिष्ठा में द्वितीया में गृहारम्भ (ल. ८)
ति. ९ शनि को रा. १०।२६ के बाद रोहिणी में जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.)
ति. ११ सोम को मृगशिरा में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ६)
श्रावण शु. ति. ६ गुरु को दि. २।५४ के बाद स्वाती में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ८)
ति. ७ शुक्र को सा. ६।१२ के बाद स्वाती में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ६ वा ८)
ति. ११ बुध को रा. ७।२४ के बाद उ.षा. में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. १२)
ति. १२ गुरु को उ.षा. में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ६ वा ८)
कार्तिक शु. ति. ५ सोम को रा. ७।५ के बाद उ.षा. में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ६)
मार्गशीर्ष कृ. ति. १ गुरु को रोहिणी में द्वितीया में गृहारम्भ (च.शु.) रात्रिशेष में मृगशिरा में गृहारम्भ (ल. ८)
ति. २ शुक्र को मृगशिरा में गृहारम्भ (ल. ८ वा १२)
ति. ११ सोम को सा. ६।३० के बाद स्वाती में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ८)
माघ कृ. ति. १० बुध को अनुराधा में भद्रा पूर्व गृहप्रवेश (च.शु.)
माघ शु. ति. १० बुध को वैधृति बाद मृगशिरा में गृहारम्भ (ल. २ वा ५) गृहप्रवेश (ल. ६)
फाल्गुन कृ. ति. ३ गुरु को दि. १०।४२ के बाद भद्रा पूर्व हस्त में गृहारम्भ (ल. २)
ति. १० शुक्र को रा. १।४६ के बाद उ.षा. में गृहप्रवेश (ल. ९ वा ११)
ति. ११ शनि को उ.षा. में गृहप्रवेश (ल. ११ वा १२)

॥ अक्षरारम्भ / विद्यारम्भ मुहूर्त ॥

वैशाख शु. ति. ५ गुरु को मृगशिरा में विद्यारम्भ (ल. ३)
ति. ६ शुक्र को आर्द्रा में अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. ३)
ज्येष्ठ कृ. ति. ४ शुक्र को रिक्ता बाद मूल में विद्यारम्भ (ल. ३)
ज्येष्ठ शु. ति. २ बुध को मृगशिरा में विद्यारम्भ (ल. ३)
ति. ४ शुक्र को रिक्ता बाद पुनर्वसु में अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. ३)
ति. १० गुरु को उ.फा. में अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. ३)

॥ उपनयन मुहूर्त ॥

ज्येष्ठ कृ. ति. ४ शुक्र को रिक्ता बाद मूल में उपनयन (ल. ३)। दि. १२।१९ के बाद पू.षा. में उपनयन (ल. ५ के.वा.)
ज्येष्ठ शु. ति. २ बुध को मृगशिरा में उपनयन में क्षीणचन्द्र दोष है।
ति. ४ शुक्र को रिक्ता बाद पुनर्वसु में उपनयन (ल. ३ वा ५ के.वा.)
ति. १० गुरु को उ.फा. में उपनयन (ल. ३)
शु.आषा.कृ. ति. २ गुरु को मूल में उपनयन (ल. ३)
ति. ३ शुक्र को भद्रा पूर्व पू.षा. में उपनयन (ल. २)
माघ शु. ति. १० बुध को वैधृति बाद मृगशिरा में उपनयन (ल. २)
ति. ११ गुरु को भद्रा पूर्व आर्द्रा में उपनयन (ल. २)
ति. १२ शुक्र को पुनर्वसु में उपनयन (ल. २)
फाल्गुन कृ. ति. ३ गुरु को दि. १०।४२ से भद्रा पूर्व हस्त में उपनयन (ल. २)

॥ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त ॥

वैशाख शु. ति. ५ गुरु को मृगशिरा में (ल. ३)
ति. ७ शनि को पुष्य में (ल. ३)
ति. ११ बुध को भद्रा बाद उ.फा. में (ल. ६)
ति. १२ गुरु को उ.फा. में (ल. ६)
ज्येष्ठ कृ. ति. ११ गुरु को रेवती में (ल. ३)
ति. १२ शुक्र को रेवती में (ल. ३)
ज्येष्ठ शु. ति. २ बुध को मृगशिरा में (ल. ३)
ति. ५ शनि को पुष्य में (ल. ३)
ति. १० गुरु को उ.फा. में (ल. ६)
माघ शु. ति. १० बुध को वैधृति बाद मृगशिरा में (ल. २)
फाल्गुन कृ. ति. ३ गुरु को दि. १०।४२ के बाद भद्रा पूर्व हस्त में (ल. २)

॥ हलप्रवहण-बीजोप्ति मुहूर्त ॥

वैशाख शु. ति. ४ बुध को रिक्ता बाद मृगशिरा में हलप्रवहण मुहूर्त।
ति. ५ गुरु को मृगशिरा में हलप्रवहण-बीजोप्ति मुहूर्त।
ति. ७ शनि को पुष्य में हलप्रवहण मुहूर्त।
ज्येष्ठ कृ. ति. ११ गुरु को रेवती में हलप्रवहण-बीजोप्ति मुहूर्त।
ज्येष्ठ शु. ति. ५ शनि को पुष्य में हलप्रवहण मुहूर्त।
शु.आषा.कृ. ति. ९ गुरु को रेवती में हलप्रवहण-बीजोप्ति मुहूर्त।
अ.आषा.शु. ति. २ गुरु को पुनर्वसु में हलप्रवहण मुहूर्त। प्रा. ७।२० के बाद पुष्य में हलप्रवहण-बीजोप्ति मुहूर्त।
ति. ८ बुध को व्यतिपात बाद उ.फा. में हलप्रवहण मुहूर्त।
ति. ९ शुक्र को रिक्ता बाद चित्रा में हलप्रवहण मुहूर्त।
अ.आषा.कृ. ति. ८ गुरु को दि. २।५२ तक रेवती में हलप्रवहण-बीजोप्ति मुहूर्त।
ति. ९ शुक्र को रिक्ता बाद अश्विनी में हलप्रवहण मुहूर्त।
ति. १२ सोम को रोहिणी में हलप्रवहण-बीजोप्ति मुहूर्त।
शु.आषा.शु. ति. ५ मंगल को उ.फा. में हलप्रवहण (पंचमी में) मुहूर्त।
ति. ८ शुक्र को प्रा. ६।३३ के बाद स्वाती में हलप्रवहण मुहूर्त।

॥ विपणि (व्यापार) मुहूर्त ॥

चैत्र शु. ति. ५ बुध को प्रा. ६।१५ के बाद रोहिणी में।
ति. ७ गुरु को प्रा. ६।८ के बाद भद्रापूर्व मृगशिरा में।
ति. ९ रवि को दि. ८।४२ के बाद पुष्य में।
ति. १० सोम को पुष्य में।
वैशाख कृ. ति. १ रवि को चित्रा में।
वैशाख शु. ति. ४ बुध को रिक्ता बाद मृगशिरा में।
ति. ५ गुरु को मृगशिरा में।
ति. ७ शनि को दि. ४।११ के बाद पुष्य में।
ति. १२ गुरु को उ.फा. में।
ज्येष्ठ कृ. ति. १२ शुक्र को रेवती में।
ज्येष्ठ शु. ति. २ बुध को मृगशिरा में।
ति. ५ शनि को पुष्य में।
ति. १० गुरु को उ.फा. में।
शु.आषा.कृ. ति. ९ गुरु को दि. ११।१ के बाद भद्रा पूर्व रेवती में।
ति. ११ शुक्र को दि. ९।२७ के बाद अश्विनी में।
अ.आषा.शु. ति. २ गुरु को प्रा. ७।२० के बाद पुष्य में।
ति. ८ बुध को व्यतिपात बाद उ.फा. में।
ति. ९ शुक्र को रिक्ता बाद चित्रा में।
ति. १० शनि को भद्रा पूर्व स्वाती में।
अ.आषा.कृ. ति. ८ गुरु को दि. २।५२ तक रेवती में।
ति. ९ शुक्र को रिक्ता बाद अश्विनी में।
ति. १२ सोम को दि. १।४१ के बाद मृगशिरा में।
शु.आषा.शु. ति. ७ गुरु को भद्रा पूर्व चित्रा में।
ति. ८ शुक्र को प्रा. ६।३३ के बाद स्वाती में।
श्रावण कृ. ति. ७ गुरु को भद्रा बाद अश्विनी में।
ति. १० रवि को भद्रा पूर्व रोहिणी में।
ति. ११ सोम को मृगशिरा में।
श्रावण शु. ति. ५ बुध को दि. ११।२९ के बाद चित्रा में।
ति. ६ शुक्र को प्रा. ६।१२ के बाद स्वाती में।
भाद्रपद कृ. ति. ७ शनि को प्रा. ६।१७ के बाद रोहिणी में।
ति. ८ रवि को दि. ७।३५ तक मृगशिरा में।
ति. ११ बुध को प्रा. ६।९ के बाद पुष्य में।
ति. १२ गुरु को पुष्य में।
भाद्रपद शु. ति. ३ बुध को चित्रा में।
आश्विन कृ. ति. ३ बुध को भद्रा पूर्व अश्विनी में।
ति. ५ शुक्र को दि. २।१६ के बाद रोहिणी में।
ति. ७ रवि को भद्रा बाद मृगशिरा में।
ति. १० बुध को भद्रा पूर्व पुष्य में।
आश्विन शु. ति. ८ बुध को दि. ८।४१ तक उ.षा. में।
कार्तिक कृ. ति. ६ शनि को रिक्ता बाद मृगशिरा में।
मार्गशीर्ष कृ. ति. १ गुरु को रोहिणी में।
ति. २ शुक्र को मृगशिरा में।
ति. ५ सोम को पुष्य में।
मार्गशीर्ष शु. ति. १० रवि को सा. ६।३७ के बाद अश्विनी में।
ति. ११ सोम को भद्रा पूर्व अश्विनी में।
ति. १३ बुध को दि. २।१० के बाद रोहिणी में।
ति. १५ शुक्र को मृगशिरा में।
पौष कृ. ति. २ रवि को दि. १२।२३ के बाद वैधृति पूर्व पुष्य में।
पौष शु. ति. ६ शुक्र को उ.षा. में।
ति. ८ रवि को अश्विनी में।
ति. ११ बुध को भद्रा बाद रोहिणी में।
माघ कृ. ति. ५ शुक्र को हस्त में।
ति. १० बुध को भद्रा पूर्व अनुराधा में।
माघ शु. ति. ५ शनि को अश्विनी में।
ति. ६ रवि को अश्विनी में।
ति. १० बुध को वैधृति बाद मृगशिरा में।
फाल्गुन कृ. ति. ३ गुरु को दि. १०।४२ के बाद भद्रा पूर्व हस्त में।
ति. ११ शनि को उ.षा. में।
फाल्गुन शु. ति. ३ शुक्र को सा. ६।५३ के बाद अश्विनी में।
ति. ६ सोम को दि. २।१० के बाद रोहिणी में।
ति. ८ बुध को मृगशिरा में।
चैत्र कृ. ति. ८ गुरु को मूल में।

फाल्गुन

२३ फरवरी से २३ मार्च तक २०१६ ई०

वार					
रवि	५	१२	५	१२	
	२८फ.	६मा.	१३मा.	२०मा.	
चन्द्र	६	१३	६	१३	
	२९फ.	७मा.	१४मा.	२१मा.	
भौम	१	७	८	१४	
	२३फ.	१मा.	८मा.	१५मा.	२२मा.
बुध	२	८	३०	८	१५
	२४फ.	२मा.	९मा.	१६मा.	२३मा.
गुरु	३	९	२	९	
	२५फ.	३मा.	१०मा.	१७मा.	
शुक्र	४	१०	३	१०	
	२६फ.	४मा.	११मा.	१८मा.	
शनि	५	११	४	११	
	२७फ.	५मा.	१२मा.	१९मा.	

चैत्र
६ मार्च से ४ अप्रैल तक २०१५ ई०

वार					
रवि		३ / ८मा.	१० / १५मा.	२ / २२मा.	९ / २९मा.
चन्द्र		४ / ९मा.	११ / १६मा.	३ / २३मा.	१० / ३०मा.
भौम		५ / १०मा.	१२ / १७मा.	४ / २४मा.	११ / ३१मा.
बुध		५ / ११मा.	१३ / १८मा.	५ / २५मा.	१२ / १ अ.
गुरु		६ / १२मा.	१४ / १९मा.	७ / २६मा.	१३ / २ अ.
शुक्र	१ / ६मा.	७ / १३मा.	३० / २०मा.	८ / २७मा.	१४ / ३ अ.
शनि	२ / ७मा.	९ / १४मा.	१ / २१मा.	९ / २८मा.	१५ / ४ अ.

वैशाख
५ अप्रैल से ४ मई तक २०१५ ई०

वार					
रवि	१ / ५ अ.	८ / १२अ.	१ / १९अ.	८ / २६अ.	१४ / ३ म.
चन्द्र	२ / ६ अ.	९ / १३अ.	२ / २०अ.	९ / २७अ.	१५ / ४ म.
भौम	३ / ७ अ.	१० / १४अ.	३ / २१अ.	१० / २८अ.	
बुध	४ / ८ अ.	११ / १५अ.	४ / २२अ.	११ / २९अ.	
गुरु	५ / ९ अ.	१२ / १६अ.	५ / २३अ.	१२ / ३०अ.	
शुक्र	६ / १०अ.	१४ / १७अ.	६ / २४अ.	१३ / १ म.	
शनि	७ / ११अ.	३० / १८अ.	७ / २५अ.	१३ / २ म.	

ज्येष्ठ
५ मई से २ जून तक २०१५ ई०

वार					
रवि		७ / १०म.	१४ / १७म.	६ / २४म.	१३ / ३१म.
चन्द्र		८ / ११म.	३० / १८म.	७ / २५म.	१४ / १ जू.
भौम	१ / ५ म.	९ / १२म.	१ / १९म.	८ / २६म.	१५ / २ जू.
बुध	२ / ६ म.	१० / १३म.	२ / २०म.	९ / २७म.	
गुरु	३ / ७ म.	११ / १४म.	३ / २१म.	१० / २८म.	
शुक्र	४ / ८ म.	१२ / १५म.	४ / २२म.	११ / २९म.	
शनि	५ / ९ म.	१३ / १६म.	५ / २३म.	१२ / ३०म.	

आषाढ़ (प्रथम)
३ जून से २ जुलाई तक २०१५ ई०

वार					
रवि		५ / ७ जू.	१३ / १४जू.	५ / २१जू.	११ / २८जू.
चन्द्र		६ / ८ जू.	१४ / १५जू.	६ / २२जू.	१२ / २९जू.
भौम		७ / ९ जू.	३० / १६जू.	७ / २३जू.	१३ / ३०जू.
बुध	१ / ३ जू.	८ / १०जू.	१ / १७जू.	८ / २४जू.	१४ / १ जु.
गुरु	२ / ४ जू.	९ / ११जू.	२ / १८जू.	९ / २५जू.	१५ / २ जु.
शुक्र	३ / ५ जू.	११ / १२जू.	३ / १९जू.	९ / २६जू.	
शनि	४ / ६ जू.	१२ / १३जू.	४ / २०जू.	१० / २७जू.	

आषाढ़ (द्वितीय)
३ जुलाई से ३१ जुलाई तक २०१५ ई०

वार					
रवि		४ / ५ जु.	११ / १२जु.	३ / १९जु.	१० / २६जु.
चन्द्र		५ / ६ जु.	१२ / १३जु.	४ / २०जु.	११ / २७जु.
भौम		६ / ७ जु.	१३ / १४जु.	५ / २१जु.	१२ / २८जु.
बुध		७ / ८ जु.	१४ / १५जु.	६ / २२जु.	१३ / २९जु.
गुरु		८ / ९ जु.	३० / १६जु.	७ / २३जु.	१४ / ३०जु.
शुक्र	१ / ३ जु.	९ / १०जु.	१ / १७जु.	८ / २४जु.	१५ / ३१जु.
शनि	३ / ४ जु.	१० / ११जु.	२ / १८जु.	९ / २५जु.	

श्रावण
१ अगस्त से २९ अगस्त तक २०१५ ई०

वार					
रवि		२ / २ अ.	१० / ९ अ.	२ / १६अ.	८ / २३अ.
चन्द्र		३ / ३ अ.	११ / १०अ.	३ / १७अ.	९ / २४अ.
भौम		४ / ४ अ.	१२ / ११अ.	४ / १८अ.	१० / २५अ.
बुध		६ / ५ अ.	१३ / १२अ.	५ / १९अ.	११ / २६अ.
गुरु		७ / ६ अ.	१४ / १३अ.	६ / २०अ.	१२ / २७अ.
शुक्र		८ / ७ अ.	३० / १४अ.	६ / २१अ.	१४ / २८अ.
शनि	१ / १ अ.	९ / ८ अ.	१ / १५अ.	७ / २२अ.	१५ / २९अ.

प्रमुख भारतीय पर्व तथा व्रतोपवास
श्रीसंवत् २०७२ शक १९३७ (सन् २०१५-२०१६ ई०)।

मार्च २१श. - चान्द्रसंवत्सर तथा वासन्तनवरात्रारम्भ।
मार्च २५बु. - श्रीसूर्यषष्ठी व्रत।
मार्च २७शु. - श्रीदुर्गाष्टमी व्रत।
मार्च २८श. - श्री रामनवमी व्रत सबका।
अप्रैल २गु. - श्री महावीर जयन्ती।
अप्रैल ४श. - श्रीहनुमज्जयन्ती। ग्रस्तोदित खण्डचन्द्रग्रहण।
अप्रैल १४मं. - मेषसंक्रान्ति। पुण्यकाल। बैशाखी। डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती।
अप्रैल २१मं. - अक्षयतृतीया। श्री परशुराम जयन्ती।
अप्रैल २३गु. - आद्यजगद्गुरुशंकराचार्य जयन्ती।
मई २श. - श्री नृसिंह चतुर्दशी।
मई ४सो. - बुद्धजयन्ती।
मई १७र. - वटसावित्री व्रत।
मई १८सो. - सोमवती अमावस्या।
मई २८गु. - श्रीगंगादशहरा।
मई २९शु. - निर्जलाएकादशीव्रत। भीमसेनी एकादशी व्रत।
जून २मं. - दाक्षिणात्यवटसावित्री व्रत। सन्त कबीर जयन्ती।
जून १६मं. - भौमवती अमावस्या।
जून १७बु. - अधिमासारम्भ (१६ जुलाई तक)।
जुलाई १८श. - रथयात्रा।
जुलाई ३१शु. - गुरुपूर्णिमा।
अगस्त १५श. - भारतीय स्वतन्त्रता दिवस।
अगस्त १९बु. - श्रीनागपंचमी।
अगस्त २२श. - गोस्वामीतुलसीदास जयन्ती।
अगस्त २९श. - रक्षाबन्धन।
सितम्बर १मं. - कज्जली (कजरी)। सं. (बहुला) श्रीगणेश व्रत। च.उ.रा. ८।१७।
सितम्बर ४शु. - हलषष्ठी व्रत (ललही छठ)।
सितम्बर ५श. - श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत सबका।
सितम्बर १६बु. - हरितालिका (तीज) व्रत।
सितम्बर १७गु. - श्रीविश्वकर्मापूजा।
सितम्बर १८शु. - ऋषिपंचमी।
सितम्बर १९श. - लोलार्कषष्ठी। श्रीसूर्यषष्ठी व्रत।
सितम्बर २७र. - अनन्तचतुर्दशी व्रत।
सितम्बर २८सो. - महालयारम्भ।
अक्टूबर २शु. - महात्मागाँधी-शास्त्री जयन्ती।
अक्टूबर ४र. - महालक्ष्मी व्रत।
अक्टूबर ५सो. - जीवत्पुत्रिका व्रत।
अक्टूबर १२सो. - पितृविसर्जन। महालयसमाप्ति। सोम. अमावस्या।
अक्टूबर १३मं. - शारदनवरात्रारम्भ।
अक्टूबर २१बु. - महाष्टमी व्रत। महानवमी व्रत।
अक्टूबर २२गु. - श्रीविजयादशमी। श्री दुर्गाविसर्जन।
अक्टूबर २६सो. - शरत्पूर्णिमा। कोजागरी।
अक्टूबर २७मं. - महर्षि वाल्मीकि जयन्ती।
अक्टूबर ३०शु. - संकष्टीकरक (करवा) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत। च.उ.रा. ८।४।
नवम्बर ३मं. - अहोई ८ व्रत। च.उ.रा. ११।०३।
नवम्बर ९सो. - धनत्रयोदशी (धनतेरस)। नरकचतुर्दशी।
नवम्बर १०मं. - महाकाली पूजा।
नवम्बर ११बु. - दीपावली।
नवम्बर १२गु. - अन्नकूट। गोवर्धनपूजा।
नवम्बर १३शु. - काशी में गोवर्धनपूजा। भइयादूज।
नवम्बर १७मं. - श्री सूर्यषष्ठी व्रत।
नवम्बर २०शु. - अक्षयनवमी।
नवम्बर २२र. - प्रबोधिनी एकादशी व्रत सबका। तुलसी विवाह
नवम्बर २५बु. - कार्तिकपूर्णिमा। गुरुनानक जयन्ती। देवदीपावली (काशी)।
दिसम्बर ३गु. - श्री भैरवाष्टमी।
जनवरी ५मं. - गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (नवीनतम)।
जनवरी १५शु. - मकरसंक्रान्ति। खरमाससमाप्ति। पुण्यकाल।
जनवरी १६श. - गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (प्राचीनतम)।
जनवरी २६मं. - भारतीय गणतन्त्र दिवस।
जनवरी २७बु. - संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। च.उ.रा. ८।४०।
फरवरी ८सो. - मौनी अमावस्या। सोमवती अमावस्या।
फरवरी १३श. - श्रीवसन्तपंचमी।
फरवरी १६मं. - श्री हरसुब्रह्मदेवजयन्ती।
फरवरी २२सो. - माघीपूर्णिमा। सन्तरविदासजयन्ती।
मार्च ७सो. - श्रीमहाशिवरात्रि व्रत।
मार्च ९बु. - ग्रस्तोदित खण्डसूर्यग्रहण।
मार्च १९श. - रंगभरी एकादशी।
मार्च २२मं. - होलिकादाह।
मार्च २३बु. - काशी में होली। श्री चैतन्यमहाप्रभुजयन्ती।
मार्च २४गु. - होली (काशी से अन्यत्र)। वसन्तोत्सव।
अप्रैल ५मं. - वारुणीपर्वयोग। बुढ़वामंगल पर्व।

उपसंहार।। *आदित्यपुराणे*- यत्तुकार्त्त (सत्य) युगो धर्मो न कर्तव्यः कलौयुगे। पापप्रयुक्ताश्च सदा कलौ नार्यो नरास्तथा। वाग्दानान्तरमन्यस्मैदानमदूषितम्। *विज्ञानेश्वर वचनम्*:- दत्तामपि हरेत्पूर्वां श्रेयांश्चेद्वर आव्रजेत्। त्यज्येद्देशंकृतयुगे त्रेतायांग्राम मुत्सृजेत्। द्वापरेकुलमेकन्तु कर्तारन्तु कलौयुगे।। कृतेतुमानवाधर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः।। द्वापरे शङ्खलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः।। *अन्योपदेशः*:- आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्। ज्ञात्वा पापकरणे न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा पृथ्व्यां पतनाद्दृते। विषवयां सहाधर्मचरणे स पुरुषत्याज्यः। योनरोविषवानारीमुपेयात्कामलोलुपः। सहंतस्योऽथवा त्याज्यो द्विजातिनामयं विधिः। *आशीर्वादः*:- सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु, सर्वेसन्तु निरामयाः। सर्वेभद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।। शुभम् ।।

हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग मिलने का एकमात्र पता :-

विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन
बी. २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी
मो. : ०९३३५६६०६३१

भाद्रपद
३० अगस्त से २८ सितम्बर तक २०१५ ई०

वार					
रवि	१ / ३०अ.	८ / ६ सि.	३० / १३सि.	७ / २०सि.	१४ / २७सि.
चन्द्र	२ / ३१अ.	९ / ७ सि.	१ / १४सि.	८ / २१सि.	१५ / २८सि.
भौम	३ / १ सि.	१० / ८ सि.	२ / १५सि.	९ / २२सि.	
बुध	४ / २ सि.	११ / ९ सि.	३ / १६सि.	१० / २३सि.	
गुरु	५ / ३ सि.	१२ / १०सि.	४ / १७सि.	११ / २४सि.	
शुक्र	६ / ४ सि.	१३ / ११सि.	५ / १८सि.	१२ / २५सि.	
शनि	७ / ५ सि.	१४ / १२सि.	६ / १९सि.	१३ / २६सि.	

आश्विन
२९ सितम्बर से २७ अक्टूबर तक २०१५ ई०

वार					
रवि		७ / ४ अ.	१४ / ११ अ.	५ / १८ अ.	१३ / २५अ.
चन्द्र		८ / ५ अ.	३० / १२ अ.	६ / १९ अ.	१४ / २६अ.
भौम	१ / २९सि.	९ / ६ अ.	१ / १३ अ.	७ / २० अ.	१५ / २७अ.
बुध	३ / ३०सि.	१० / ७ अ.	१ / १४अ.	८ / २१ अ.	
गुरु	४ / १ अ.	११ / ८ अ.	२ / १५ अ.	९ / २२ अ.	
शुक्र	५ / २ अ.	१२ / ९ अ.	३ / १६ अ.	११ / २३ अ.	
शनि	६ / ३ अ.	१३ / १०अ.	४ / १७अ.	१२ / २४अ.	

कार्त्तिक
२८ अक्टूबर से २५ नवम्बर तक २०१५ ई०

वार					
रवि		५ / १ न.	१२ / ८ न.	४ / १५न.	११ / २२न.
चन्द्र		६ / २ न.	१३ / ९ न.	५ / १६न.	१२ / २३न.
भौम		७ / ३ न.	१४ / १०न.	६ / १७न.	१३ / २४न.
बुध	१ / २८अ.	८ / ४ न.	३० / ११न.	७ / १८न.	१५ / २५न.
गुरु	२ / २९अ.	९ / ५ न.	१ / १२न.	८ / १९न.	
शुक्र	३ / ३०अ.	१० / ६ न.	२ / १३न.	९ / २०न.	
शनि	४ / ३१अ.	११ / ७ न.	३ / १४न.	१० / २१न.	

मार्गशीर्ष
२६ नवम्बर से २५ दिसम्बर तक २०१५ ई०

वार					
रवि		४ / २९न.	१० / ६ दि.	२ / १३दि.	१० / २०दि.
चन्द्र		५ / ३०न.	११ / ७ दि.	३ / १४दि.	११ / २१दि.
भौम		६ / १ दि.	१२ / ८ दि.	४ / १५दि.	१२ / २२दि.
बुध		७ / २ दि.	१३ / ९ दि.	५ / १६दि.	१३ / २३दि.
गुरु	१ / २६न.	८ / ३ दि.	१४ / १०दि.	६ / १७दि.	१४ / २४दि.
शुक्र	२ / २७न.	९ / ४ दि.	३० / ११दि.	७ / १८दि.	१५ / २५दि.
शनि	३ / २८न.	१० / ५ दि.	१ / १२दि.	९ / १९दि.	

पौष
२६ दिसम्बर से २४ जनवरी तक २०१५-१६ ई०

वार					
रवि	१५ / २४ज.	२ / २७दि.	९ / ३ ज.	३० / १० ज.	८ / १७ज.
चन्द्र		३ / २८दि.	१० / ४ ज.	२ / ११ज.	९ / १८ज.
भौम		४ / २९दि.	११ / ५ ज.	३ / १२ज.	१० / १९ज.
बुध		५ / ३०दि.	१२ / ६ ज.	४ / १३ज.	११ / २०ज.
गुरु		६ / ३१दि.	१३ / ७ ज.	५ / १४ज.	१२ / २१ज.
शुक्र		७ / १ ज.	१३ / ८ ज.	६ / १५ज.	१३ / २२ज.
शनि	१ / २६दि.	८ / २ ज.	१४ / ९ ज.	७ / १६ज.	१४ / २३ज.

माघ
२५ जनवरी से २२ फरवरी तक २०१६ ई०

वार					
रवि		७ / ३१ज.	१४ / ७ फ.	६ / १४फ.	१४ / २१फ.
चन्द्र	१ / २५ज.	८ / १ फ.	३० / ८ फ.	८ / १५फ.	१५ / २२फ.
भौम	२ / २६ज.	९ / २ फ.	१ / ९ फ.	९ / १६फ.	
बुध	३ / २७ज.	१० / ३ फ.	२ / १०फ.	१० / १७फ.	
गुरु	४ / २८ज.	११ / ४ फ.	३ / ११फ.	११ / १८फ.	
शुक्र	५ / २९ज.	१२ / ५ फ.	४ / १२फ.	१२ / १९फ.	
शनि	६ / ३०ज.	१३ / ६ फ.	५ / १३फ.	१३ / २०फ.	

मुद्रक- मुक्ता मुद्रणालय बी. २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी।
Registered under section 18 & 19 of Act-XXV 1867